शार्ङ्गधरसंहिता

श्रीः ।

श्रीदामोदरसूनुना शार्ङ्गधरेण विरचिता

शार्ङ्गधरसंहिता ।

श्रीमद्बेरीनिवासिपंडितशिवसहायसूनुरविदत्तशास्त्रिराजवैद्यकृतया भाषाटीकया सम्यक्समलंकृता

इयं च

गौडवंशोद्भवशिवदासात्मजपंडितरामचंद्रशास्त्रिद्वारा संशोधय्य

मुंबापुर्यां

गौडवंशीयेन भगीरथात्मजेन हरिप्रसादाभिधेन "निर्णयसागर" मुद्रणालये मुद्रयित्वा प्राकाश्यं नीता.

शकाब्दाः १८१२ संवत् १९४६.

प्रस्तावना.

प्रसिद्धयोगा मुनिभिः प्रदिष्टाश्चिकित्सकैर्ये बहुशोऽनुभूताः ।
विधीयते शार्ङ्गधरेण तेषां सुसंग्रहः सज्जनरंजनाय ॥ १ ॥

इस जगतके सृष्टिक्रममें ब्रह्माजीनें चतुर्विध (जरायुज, अंडज, स्वेदज, उद्भिज्ज ऐसे) प्राणी निर्माण किये, और तिनोंकी उपजीविकाकेविषे नानाविध अन्नादि पदार्थ तथा शरीररक्षाके लिये अनेक प्रकारकी औषधीभी उत्पन्न कियी, और सब जीवोंका जीवन जल तथा अनेकविध रसभी उत्पन्न किये. कितनेक जीव इतर प्राणियोंका मांसादि भक्षण करके अपना निर्वाह चलाते हैं इससें जीवोंका जन्म तथा शरीरधारण परस्परोंके रक्षणार्थ है ऐसा सिद्ध भया. तथापि ८४ लक्ष प्रकारकी योनियोंमें ज्ञानादिकसें श्रेष्ठता मनुष्यजातिमेंही रहती है. कौनसाभी कारण मनुष्योंसें विना नहीं होसक्ता, इस कारण सब प्रकारसें मनुष्योंका रक्षण होना अत्यावश्यक है. शरीरवालोंके शरीरमें कफ, वात, पित्त इन्होंके प्रकोपसें ज्वरादि नानाविध रोग नित्यही रहते हैं; तिनोंके परिहारार्थ दयालु परमेश्वरनें वनस्पति, धातु, रस इत्यादिक औषधीभी उत्पन्न कियी हैं; परंतु मुख्यतासें रोगोंकी परीक्षा, वनस्पति आदिकोंकी परीक्षा, दोषोंकी और रोगिलोगोंकी शक्ति आदि तारतम्यसें औषधोंकी यथायोग्य योजना करना ग्रंथज्ञानाधीन है. यह ज्ञान ग्रंथोंके ज्ञानसें विना नही होता. प्राचीन महाविद्वान अनुभवसिद्ध वैद्योंनें वैद्यकविषयमें लोकोपकारार्थ बहुत संस्कृत ग्रंथ किये हैं परंतु सब लोगोंको संस्कृत साध्य नहीं है, ग्रंथज्ञानकी तो अति आवश्यकता है इसवास्ते भाषांतर करना जरूर है ऐसा मनमें विचारकर और विद्वानोंकी सूचनासेंभी अब वैद्यक ग्रंथमें श्रेष्ठ **शार्ङ्गधर** नामवाले ग्रंथ भाषांतर करनेलायक सबोंके उपयोगी है ऐसा निश्चय होनेसें यह शार्ङ्गधरसंहिताभाषांतर कराय प्रसिद्ध किया.

इस ग्रंथमें तीन खंड हैं. प्रथमखंडके १ अध्यायमें ओषधोंका मान, परिमाणादिकोंकी परिभाषा कही है; २ में औषधभक्षणका काल इत्यादि विषय हैं, ३ में नाडीपरीक्षादि प्रकार है, ४ में दीपन औषधियोंका परिगणन है, ५ में शारीरविषयविवेचन है, ६ में आहारकी गती और व्यवस्था है, ७ रोगोंकि संख्या है. यह प्रथमखंडका संक्षेप भया.

द्वितीयखंडके १ अध्यायमें कषायोंके नानाविध प्रकार हैं, २ में क्वाथकी कल्पना, ३ में फांटकी कल्पाना, ४ में हिमकी कल्पना, ५ में कल्ककी कल्पना, ६ में चूर्णकी कल्पना, ७ में वटकोंकी कल्पना, ८ में अवलेहोंकी कल्पना, ९ में घृत तेल इत्यादिकोंका

साधनप्रकार, १० में आसव और अरिष्टादिकोंकी कल्पना और प्रकार, ११ में स्वर्णादि धातुओंका कथन और शोधन, १२ में पारा आदि धातुओंकी शोधनविधि और कल्पना. यह द्वितीयखंडका संक्षेप भया.

तृतीयखंडके प्रथम १ अध्यायमें स्नेहपानविधि, २ घाम अर्थात् पसेव निकालनेका प्रकार, ३ वमन विरेचनादिकोंका काल, ४ वमनके अनंतर जुलाबकी विधि, ५ बस्तीकी विधि और प्रकार, ६ निरूहबस्तीका विधि, ७ उत्तरबस्तीका विधि, ८ में नस्यके प्रकार और विधि, ९ धूमपानकी विधि, १० गंडूष, कवल, प्रतिसारण इन्होंका विधि, ११ लेपके प्रकार, १२ रक्तस्रावका विधि. ऐसे क्रमसें विषय हैं. इस हेतुसें इस ग्रंथका सुबोध भाषांतर वेरी ग्राममें रहनेवाले पंडित **रविदत्तशास्त्रि** राजवैद्य इन्होंसें महाप्रयत्नसें करवायके और दूसरे पंडित **रामचंद्रशास्त्रि**के द्वारा शुद्ध करवायकर निर्णयसागर मुद्रालयमें छपवायके यह ग्रंथ तय्यार किया है. इसमे कियेहुए परिश्रम और सर्वोपयोग देखकर प्रेमसें आदर करना ऐसी दयालु जनोंकेपास प्रार्थना है.

भगीरथात्मज हरिप्रसादशर्मा.

अथ शार्ङ्गधरस्य सर्वविषयानुक्रमः ।

अथ द्वितीयखंडम् ।

प्रथमोऽध्यायः ।

तृतीयोऽध्यायः ।

सप्तमोऽध्यायः।

अष्टमोऽध्यायः ।

नवमोऽध्यायः ।

दशमोऽध्यायः ।

एकादशोऽध्यायः ।

द्वादशोऽध्यायः ।

तृतीयोऽध्यायः ।

चतुर्थोऽध्यायः ।

पञ्चमोऽध्यायः ।

षष्ठोऽध्यायः ।

॥ श्रीः ॥

शार्ङ्गधरसंहिता।

शिवसहायशर्माणम्प्रणम्यपितरंमुदा ।
शार्ङ्गधरनिबंधस्यभाषाटीकाविरच्यते ॥

अर्थ—शिवसहायनामवाले पिताजीको आनंदसे प्रणाम कर शार्ङ्गधरग्रंथके भाषाटीकाको मैं रचता हूं।

ग्रंथके आदिमें मध्यमें और अंतमें मंगल होना चाहिये ऐसा शिष्टोंका संप्रदाय है इसवास्ते ग्रंथकार शिवपार्वतीरूप मंगलको करता है ॥

मंगलाचरण ॥

श्रियंसदद्याद्भवतांपुरारिर्यदंगतेजःप्रसरेभवानी ॥
विराजतेनिर्मलचंद्रिकायांमहौषधीवज्वलिताहिमाद्रौ ॥ १ ॥

अर्थ—जैसे हिमालयपर्वतविषै निर्मल चांदनीमें संजीवनी आदि ओषधि प्रकाशित हो रही है तैसे महादेवजीके अंगोंका तेजके समूहमें पार्वतीजी प्रकाशित हो रही है ऐसे महादेवजी आप लोगोंको लक्ष्मी देनेवाले हो ॥ १ ॥

ग्रंथका समूलपना और ग्रंथका प्रयोजन ॥

प्रसिद्धयोगामुनिभिःप्रयुक्ताश्चिकित्सकैर्येबहुशोऽनुभूताः ॥
विधीयतेशार्ङ्गधरेणतेषांसुसंग्रहःसज्जनरंजनाय ॥ २ ॥

अर्थ—चरकआदिमुनियोंनें कहे है और जो वैद्योंनें वारंवार अनुभव किये है ऐसे जो प्रसिद्ध योग है तिन्होंका संग्रह सज्जन मनुष्योंको आनंद होनेकेलिये शार्ङ्गधर करता है ॥ २ ॥

हेत्वापिरूपाकृतिसात्म्यजातिभेदैःसमीक्ष्यातुरसर्वरोगान् ॥
चिकित्सितंकर्षणबृंहणाख्यंकुर्वीतवैद्योविधिवत्सुयोगैः ॥ ३ ॥

अर्थ—हेतु १ अर्थात् आदि कारण जिससे रोगकी उत्पत्ति होती है आदि-

रूप २ अर्थात् रोगसे पहले देहका टूटना वा जंभाई आवना आकृति ३ अर्थात् चेष्टाका मलीनपना तृषा मूर्च्छा संभ्रम दाह नींद इन्होंका नाश होना सात्म्य ४ अर्थात् रोगीका मन जिस वस्तुको चाहे जैसे गरमी लगे पौन प्यासमें पानी आदि जाति ५ अर्थात् इंद्रियोंका परिज्ञान अपने अंगमें सावधानपना वा विह्वलपना इन भेदोंसे रोगीके सब रोगोंको देख कुशल वैद्य शास्त्रके अनुसार सुंदर योगोंकरके अति वढे हुए जो वात आदि दोष तिन्होंकी कर्षणरूप चिकित्सा वा अति क्षीण हुए दोषोंकी बृंहणरूप चिकित्साको करै ॥ ३ ॥

दिव्यौषधीनांबहवःप्रभेदावृंदारकाणामिवविस्फुरंति ॥
ज्ञात्वेतिसंदेहमपास्यधीरैःसंभावनीयाविविधप्रभावाः ॥ ४ ॥

अर्थ–जैसे देवतोंके अनेक भेद और श्रेष्ठ गुण प्रकाशित हैं तैसे उत्तम औषधियोंमेंभी प्रकाशित हैं धीर वैद्य ऐसे जान और संदेहको दूर कर औषधियोंके अनेक प्रभावोंको जाने ॥ ४ ॥

स्वाभाविकागंतुककायिकांतरारोगाभवेयुःकिलकर्मदोषजाः ॥
तच्छेदनार्थंदुरितापहारिणःश्रेयोमयान्योगवरान्नियोजयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ–स्वाभाविक १ अर्थात् विनाभूष और भूषके पीछे भोजन करना आदि आगंतुक २ अर्थात् हथियारका लगना और गिरना आदि कायिक ३ अर्थात् कसरत परिश्रम स्त्रीसंग आदि अंतर ४ अर्थात् मनमें खेद क्रोध चिंता आदि ऐसे चार प्रकारके कर्मसे और दोषसे उपजे रोग कहे हैं तिन्होंके नाशकेवास्ते दुःखोंको हरणवाले और पुण्यस्वरूप ऐसे श्रेष्ठ योगोंको योजन करे ॥ ५ ॥

प्रयोगानागमात्सिद्धान्प्रत्यक्षादनुमानतः ॥
सर्वलोकहितार्थायवक्ष्याम्यनतिविस्तरात् ॥ ६ ॥

अर्थ–शास्त्रसे और प्रत्यक्षसे और अनुमानसे सिद्ध जो प्रयोग तिन्होंको संपूर्ण लोगोंके हितकेवास्ते संक्षेप करके कहताहूं ॥ ६ ॥

प्रथमंपरिभाषास्याद्भैषज्याख्यानकंतथा ॥ नाडीपरीक्षादिविधिस्ततोदीपनपाचनम् ॥ ७ ॥ ततःकालादिकाख्यानमाहारादिगतिस्तथा ॥ रोगाणांगणनाचैवपूर्वखंडोऽयमीरितः ॥ ८ ॥

अर्थ–प्रथम अध्यायमें परिभषा १ अर्थात् तोल कहैंगे दूसरा अध्यायमें भैषजाख्यान २ अर्थात् औषधि कहैंगे तीसरा अध्यायमें नाडीपरीक्षा वा दूत स्वप्न

आदि कहैंगे चौथा अध्यायमें दीपन वा पाचन आदि लक्षण अनुलोमविरेचन अर्थात् जुलाब और स्तंभन अर्थात् दस्तवंध करना आदि कहैंगें ॥७॥ पांचवा अध्यायमें औषधिका वक्त और सृष्टिक्रम शरीर आदि कहैंगे छठा अध्यायमें आहारकी गति वा गर्भकी उत्पत्ति वा वालकका पालना वा स्वभावके लक्षण कहैंगे सातवा अध्यायमें रोगोंकी गिन्ती कहैंगे ऐसे सात अध्यायोंकरके पहला खंड कहा है॥८॥

स्वरसःक्वाथफांटौचहिमःकल्कश्चचूर्णकम् ॥ तथैवगुटिकालेहौस्नेहःसंधानमेवच ॥ ९ ॥ धातुशुद्धीरसाश्चैवखंडोऽयंमध्यमःस्मृतः ॥

अर्थ–प्रथम १ अध्यायमें स्वरस पुटकपाक इन्होंकी विधि कहैंगे और दूसरा २ अध्यायमें काढा और मथना वा गरमजल वा दूधका पाक अन्नक्रिया इन्होंकी विधि कहैंगे और तिसरा ३ अध्यायमें फांटविधि चौथा ४ अध्यायमें हिमविधि पांचवा ५ अध्यायमें कल्कविधि छठा ६ अध्यायमें चूर्णविधि सातवा ७ अध्यायमें गोलीयोंकी विधि आठवा ८ अध्यायमें अवलेह अर्थात् चटणीकी विधि नौवां ९ अध्यायमें घृत और तेलकी विधि दशवां १० अध्यायमें मदिराका भेद ॥ ९ ॥ ग्यारहवां ११ अध्यायमें सुवर्ण आदि धातु और उपधातुका शोधना और मारना वारहवां १२ अध्यायमें रस वा उपरसका शोधना वा मारना और सिद्ध रसोंका कथन इसप्रकारसें मध्यमखंड कहा है ॥

स्नेहपानंस्वेदविधिर्वमनंचविरेचनम् ॥ १० ॥ ततस्तुस्नेहबस्तिःस्यात्ततश्चापिनिरूहणम् ॥ ततश्चाप्युत्तरोबस्तिस्ततोनस्यविधिर्मतः ॥११॥ धूमपानविधिश्चैवगंडूषादिविधिस्तथा॥ लेपादीनांविधिःख्यातस्तथाशोणितविस्रुतिः ॥ १२ ॥ नेत्रकर्मप्रकारश्चखंडःस्यादुत्तरस्त्वयम् ॥

अर्थ–प्रथम १ अध्यायमें स्नेहपानविधि कहैंगे दूसरा २ अध्यायमें पसीनाकी विधि तीसरा ३ अध्यायमें वमनकी विधि चौथा ४ अध्यायमें जुलाबकी विधि ॥१०॥ पांचवा ५ अध्यायमें स्नेहवस्ति छठा ६ अध्यायमें निरूहणवस्ति सातवां ७ अध्यायमें उत्तरबस्ति आठवां ८ अध्यायमें नस्यविधि ॥११॥ नौवां ९ अध्यायमें धूमपानविधि दशवां १० अध्यायमें कुरले करनेकी विधि ग्यारहवां ११ अध्यायमें लेपादिकोंकी विधि वारहवां १२ अध्यायमें फस्त खोलना १३ तेरहवां अध्यायमें नेत्रोंका कर्म इसप्रकारसें तेरा अध्यायोंसे उत्तरखंड कहा है ॥ १२ ॥

द्वात्रिंशत्संमिताध्यायैर्युक्तेयंसंहितास्मृता ॥ १३ ॥
षड्विंशतिशतान्यत्रश्लोकानांगणितानिच ॥

अर्थ–यह शार्ङ्गधरसंहिता वत्तीस अध्यायोंसे युक्त कही है ॥१३॥ और इसमें छव्वीससौ २६०० श्लोकोंकी गिनती करी है ॥

नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांज्ञायतेक्कचित् ॥ १४ ॥
अतःप्रयोगकार्यार्थंमानमत्रोच्यतेमया ॥

अर्थ–प्रमाणकेविना औषधियोंकी योजना कहीं नहीं होती ॥१४॥ इसवास्ते प्रयोगोंके लिये मागधपरिभाषा करके तिन्होंका तोल यहां कहिये है ॥

त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशद्भिःपरमाणुभिः ॥ १५ ॥
त्रसरेणुस्तुपर्यायनाम्नावंशीनिगद्यते ॥

अर्थ–तीस परमाणवोंकरके पंडितोंनें एक त्रसरेणु कहा है ॥ १५ ॥ और त्रस-रेणुका पर्यायशब्द अर्थात् दूस रा नाम वंशी कहा है ॥

जालांतरगतेभानौयत्सूक्ष्मंदृश्यतेरजः ॥ १६ ॥
तस्यात्रिंशत्तमोभागःपरमाणुःसउच्यते ॥

अर्थ–जालीमें सूर्यकी किरण पडनेसे तिसमें जो बारीक रज है तिसका तीस-वा भागको परमाणु कहते हैं ॥

षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिस्तुराजिका ॥ १७ ॥ ति-सृभीराजिकाभिश्चसर्षपःप्रोच्यतेबुधैः ॥ यवोऽष्टसर्षपैःप्रोक्तो गुंजास्यात्तच्चतुष्टयम् ॥ १८ ॥

अर्थ–छः वंशीयोंकी एक मरीचि होती है और छः मरीचियोंकी एक राई होती है ॥ १७ ॥ और तीन राइयोंकी पंडितोंनें एक सिरसम कही है और आठ सिरसमोंका एक जव कहा है और चार जोवोंकी एक चिरमठी कही है ॥ १८ ॥

षड्भिस्तुरक्तिकाभिःस्यान्माषकोहेमधान्यकौ ॥

अर्थ–छः चिरमठीयोंका एक मासा कहा है और तिस मासाको हेम औ धान्य कभी कहते हैं ॥

माषैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्धरणःसनिगद्यते ॥१९॥ टंकःसएवक-थितस्तद्द्वयंकोलउच्यते ॥ क्षुद्रभोवटकश्चैवद्रंक्षणःसनिगद्यते २०

अर्थ–चार मासोंका एक शाण तिस शाणको धरणभी कहते हैं ॥ १९ ॥ और टंकभी कहते है और दोशाणोंका एक कोल कहा है और तिस कोलको क्षुद्रभ वा वटक वा द्रंक्षण इननामोंसेभी बोलते है ॥ २० ॥

कोलद्वयंचकर्षःस्यात्सप्रोक्तःपाणिमानिका ॥ अक्षःपिचुःपाणितलंकिंचित्पाणिश्चत्तिंदुकम् ॥ २१ ॥ बिडालपदकंचैवतथाषोडशिकामता ॥ करमध्यंहंसपदंसुवर्णकवलग्रहम् ॥२२॥ उदुंबरंचपर्यायैःकर्षएवनिगद्यते ॥

अर्थ–दो कोलोंका एक कर्ष व पाणिमानिका १ अक्ष २ पिचु ३ पाणितल ४ किंचित्पाणि ५ निंदुक ६ ॥२१॥ बिडालपदक ७ षोडशिका ८ मकरमध्य ९ हंसपद १० सुवर्ण ११ कवलग्रह ॥२२॥ १२ उदुंवर १३ ये संपूर्ण कर्षकेही नाम कहै हैं ॥

स्यात्कर्षाभ्यामर्धपलंशुक्तिरष्टमिकातथा ॥ २३ ॥ शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयंमुष्टिराम्रंचतुर्थिका ॥ प्रकुंचःषोडशीबिल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते ॥ २४ ॥

अर्थ–दोकर्षोंका एक अर्ध पल कहता है और तिसको युक्ति वा अष्टमिकाभी कहते है ॥२३॥ और दो शुक्तियोंका एक पल वा मुष्टि वा आम्र वा चतुर्थिका वा अकुंच वा षोडशी वा बिल्व ये सब पलकेही नाम कहे है ॥ २४ ॥

पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतश्चनिगद्यते ॥ प्रसृतिभ्यामंजलिः स्यात्कुडवोऽर्धशरावकः ॥ २५ ॥ अष्टमानंचसंज्ञेयंकुडवाभ्यां चमानिका ॥ शरावोऽष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः ॥ २६ ॥

अर्थ–दो पलोंकी एक प्रसृति जाननी और प्रसृतिका पर्यायशब्द अर्थात् दूसरा नाम प्रसृतभी कहा है और दो प्रसृतियोंकी एक अंजलि कही है और अंजलिको कुडव वा अर्धशराव ॥२५॥ वा अष्टमानभी कहते हैं और दो कुडवों की एक मानिका होती है और मानिकाको शराव वा अष्टपलभी बुद्धिमानोंनें कहा है२६

शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकम् ॥
भाजनंकंसपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत् ॥ २७ ॥

अर्थ–दो शरावोंका एक प्रस्थ कहा है और चार प्रस्थोंका एक आढक कहा

है और आढकको भाजन वा कंसपात्र कहते है और यह आढक चौंसठ पलका होता है ॥ २७ ॥

चतुर्भिराढकैर्द्रोणःकलशोनल्वणोन्मनौ ॥ उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्यायसंज्ञकाः ॥ २८ ॥ द्रोणाभ्यांशूर्पकुंभौचचतुःषष्टिशरावकाः ॥ शूर्पाभ्यांचभवेद्द्रोणीवहोगोणीचसास्मृता ॥२९॥

अर्थ–चार आढकोंका एक द्रोण और द्रोणको कलश नल्वण वा उन्मन वा उन्मान वा घट वा राशिव द्रोण इननामोंसे बोलते है ॥२८॥ और दो द्रोणोंका शूर्प और कुंभ कहा है और तिस शूर्पके शरावचौसठ होते हैं और दो शूर्पोंकी एक द्रोणी होती है और तिस द्रोणीको वह वा गोणीभी कहते हैं ॥ २९ ॥

द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः ॥
चतुःसहस्रपलिकाषण्णवत्यधिकाचसा ॥ ३० ॥

अर्थ– चार द्रोणीकी एक खारी होती है और यह खारी चार हजार छानवें ४०९६ पलोंकी होती है ॥ ३० ॥

पलानांद्विसहस्रंचभारएकःप्रकीर्तितः ॥
तुलापलशतंज्ञेयासर्वत्रैवैषनिश्चयः ॥ ३१ ॥

अर्थ–दोहजार पलोंका एक भार कहा है और सौ पलोंकी एक तुला सारे ऐसा निश्चय जानना ॥ ३१ ॥

माषटंकाक्षबिल्वानिकुडवःप्रस्थमाढकम् ॥
राशिर्गोणीखारिकेतियथोत्तरचतुर्गुणाः ॥ ३२ ॥

अर्थ–मासासे लेकर खारीपर्यंत यथोक्तचौगुना जानना जैसे चार मासोंका एक शाण चार शाणोंका एक कर्ष चार कर्षोंका एक बिल्व चार बिल्वोंकी एक अंजलि चार अंजलियोंका एक प्रस्थ चार प्रस्थोंका एक आढक चार आढकोंकी एक राशि चार राशियोंकी एक गोणी चार गोणियोंकी एक खारी इसप्रकारसे एकसे दूसरा चौगुना जानना ॥ ३२ ॥

गुंजादिमानमारभ्ययावत्स्यात्कुडवस्थितिः ॥ द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणांतावन्मानंसमंमतम् ॥ ३३ ॥ प्रस्थादिमानमारभ्यद्विगुणंतद्द्रवार्द्रयोः ॥ मानंतथातुलायास्तुद्विगुणंनक्वचित्स्मृतम् ३४

अर्थ–गुंजातोलसे लेकर कुडवपर्यंत द्रव अर्थात् झिरती औषधोंका और गीली औषधोंका और सूखी औषधोंका तोलके अनुसार योजना करनी ॥ ३३ ॥ और प्रस्थ तोलसे लेकर तुलापर्यंत झिरती और गीली औषधोंका दोगुनाप्रमाण जानना और तुलासे लेकर इन्होंका दुगुना प्रमाण नही करना ॥ ३४ ॥

मृदस्तुवेणुलोहादेर्भांडंयच्चतुरंगुलम् ॥
विस्तीर्णंचतथोच्चंचतन्मानंकुडवंवदेत् ॥ ३५ ॥

अर्थ–चार अंगुल लंबा और चार अंगुल चौडा ऐसा जो मिट्टीका वा वांसका वा लोहेका पात्र तिसको कुडव कहते है ॥ ३५ ॥

यदौषधंतुप्रथमंयस्ययोगस्यकथ्यते ॥
तन्नाम्नैवसयोगोहिकथ्यतेऽत्रविनिश्चयः ॥ ३६ ॥

अर्थ–जिस प्रयोगमें जिस औषधिका नाम पहले आवे उसी नामसे वह योग कहना ऐसा निश्चय है जैसे कोहलापाक रास्नादिकाढा कोहलापाककी औषधियोंमे पहले कोहला कहा है इसवास्ते कोहलापाक कहा जाता है ऐसेही रास्ना-आदि काढाभी जानो ॥ ३६ ॥

स्थितिर्नास्त्येवमात्रायाःकालमग्निंवयोबलम् ॥
प्रकृतिंदोषदेशौचदृष्ट्वामात्रांप्रयोजयेत् ॥ ३७ ॥

अर्थ–औषधियोंके सेवनमें प्रमाणही निश्चय नही करना कारण काल १ जठराग्नि २ वय ३ बल ४ प्रकृति ५ दोष ६ देश ७ इन्होंका विचार करके औषधिका प्रमाण योजन करना ॥ ३७ ॥

यतोमंदाग्नयोह्रस्वाहीनसत्त्वानराःकलौ ॥
अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रोच्यतेसुज्ञसंमता ॥ ३८ ॥

अर्थ–जिससे कलियुगमें मनुष्य मंद अग्निवाले और छोटे और हीनबलवाले है इसवास्ते बुद्धिमानीकों मानी हुई तिन्होंके योग्य मात्रा कही है ॥ ३८ ॥

यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्यतेबुधैः ॥ यवद्वयेनगुंजास्यात्त्रिगुंजोवल्लउच्यते ॥ ३९ ॥ माषोगुंजाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्क्वचित् ॥ स्याच्चतुर्माषकैःशाणःसनिष्कष्टंकएवच ॥ ४० ॥ गद्यानोमाषकैःषड्भिःकर्षःस्याद्दशमाषिकः ॥ चतुःकर्षैःपलं

प्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः ॥ ४१ ॥ चतुःपलैश्चकुडवंप्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः ॥

अर्थ—अब कलिंग तोलकी परिभाषा कहते हैं बारह पीली सिरसमके दानोंका एक जव होता है दो जोवोंका एक गुंजा तीन गुंजोंका एक वल्ल ॥ ३९ ॥ आठ गुंजाओंका एक मासा कहीं सात गुंजाओंकाभी मासा जाणना और चार मासाओंका एक शाण और शाणको निष्क वा टंकभी कहते है ॥ ४० ॥ और छः मासोंका एक गद्यान और दश मासोंका एक कर्ष चार कर्षोंका एक पल ॥ ४१॥ चार पलोंका कुडव वा प्रस्थ आदिका परिमाण मागधपरिभाषावाला जानना औषध भक्षण मागध तोलसे करना कालिंगतोलसें नहीं करना ॥

नवान्येवहियोज्यानिद्रव्याण्यखिलकर्मसु ॥ ४२ ॥
विनाविडंगकृष्णाभ्यांगुडधान्याज्यमाक्षिकैः ॥

अर्थ—संपूर्ण कार्योंमें नवीन औषधियोंकी योजना करनी ॥ ४२ ॥ परंतु वायविडंग १ पीपली २ गुड ३ धनियां ४ घृत ५ शहत ६ ये सब पुराणे अर्थात् एक वर्षके उपजे योजित करने ॥

गुडूचीकुटजोवासाकूष्मांडंचशतावरी ॥ ४३ ॥ अश्वगंधासहचरीशतपुष्पाप्रसारिणी ॥ प्रयोक्तव्याःसदैवार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ—गिलोय १ कुडाकी छाल २ वांसा ३ कोहला ४ शतावरी ॥४३॥ असगंध ५ कोरंटा ६ सौंप ७ खींप ८ ये औषधि संपूर्णकालमें गीली योजना करनी और दुगुनी नही करनी ॥ ४४ ॥

शुष्कंनवीनंद्रव्यंचयोज्यंसकलकर्मसु ॥
आर्द्रंचद्विगुणंयुंज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः ॥ ४५ ॥

अर्थ—सूखी और नवीन औषधि संपूर्ण कर्ममें योजना करनी और गीली तिन्होंसे दुगुनी लेनी यह निश्चय सब जगह जानना ॥ ४५ ॥

कालेऽनुक्तेप्रभातंस्यादंगेऽनुक्तेजटाभवेत् ॥
भागेऽनुक्तेतुसाम्यंस्यात्पात्रेऽनुक्तेचमृन्मयम् ॥ ४६ ॥

अर्थ—जिस प्रयोगमें काल नही कहा तहां प्रातःकाल जानना और जहां औ-

षधिका अंग नहीं कहा तहां जड ग्रहण करनी और जहां भाग नहीं कहा तहां औषधें लेनी और जहां पात्र नहीं कहा तहां मिट्टीका पात्र लेना ॥ ४६ ॥

एकमप्यौषधंयोगेयस्मिन्यत्पुनरुच्यते ॥
मानतोद्विगुणंप्रोक्तंतद्द्रव्यंतत्त्वदर्शिभिः ॥ ४७ ॥

अर्थ–एकही औषधि जिस योगमें दोवार कही है सो औषधि तत्त्वदर्शी अर्थात् सद्वैद्योंनें प्रमाणसे दुगुनी कही है ॥ ४७ ॥

चूर्णस्नेहासवालेहाःप्रायशश्चंदनान्विताः ॥
कषायलेपयोःप्रायोयुज्यतेरक्तचंदनम् ॥ ४८ ॥

अर्थ–चूर्ण घृत वा तेल मदिरा आदि चटनी इन्हींमें वहुत करके सफेद चंदन योजित करना काढा और लेपमें वहुत करके रक्तचंदन योजित करना ॥ ४८ ॥

गुणहीनंभवेद्वर्षादूर्ध्वंतद्रूपमौषधम् ॥ मासद्वयात्तथाचूर्णंही-नवीर्यत्वमाप्नुयात् ॥ ४९ ॥ हीनत्वंगुटिकालेहौलभेतेवत्सरा-त्परम् ॥ हीनाःस्युर्घृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकास्तथा ॥ ५० ॥ ओषध्योलघुपाकाःस्युर्निर्वीर्यावत्सरात्परम् ॥ पुराणाःस्युर्गु-णैर्युक्ताआसवाधातवोरसाः ॥ ५१ ॥ व्याधेरयुक्तंयद्द्रव्यंगणो-क्तमपितत्त्यजेत् ॥ अनुक्तमपियुक्तंयद्युज्येततत्रतद्बुधः ॥ ५२ ॥

अर्थ–एक वर्षसे उपर औषधियोंका वीर्य और गुण कम हो जाता है और दो महीनेउपरांत चूरण हीनवल हो जाता है ॥ ४९ ॥ और गोली चटनीभी वर्षके अनंतर हीनवल हो जाती है और घृत तेल चार महीनेके अनंतर हीनवल हो जाते है ॥ ५० ॥ और पाकमें हलकी औषधि अर्थात् तंदुल आदि वर्षके अनंतर वलहीन हो जाते हैं और आसव १ सोना आदि धातुओंकी खाक और ये सव-जितनें पुराणे उतनेही अधिक गुणवाले होते है ॥ ५१ ॥ व्याधिमें अयोग्य औषधि ओषधियोंमें कहीहुईभी निकालदेवे और व्याधिमें गुण करनेवाली नही कहीभी तहां बुद्धिमान् मिलावे ॥ ५२ ॥

आग्नेयाविंध्यशैलाद्याःसौम्योहिमगिरिर्मतः ॥ अतस्तदौष-धानिस्युरनुरूपाणिहेतुभिः ॥ ५३ ॥ अन्येष्वपिप्ररोहंतिवने-षूपवनेषुच ॥

अर्थ–विंध्याचल आदिपर्वत तो गरम है और हिमाचल आदि ठंढे है इसवास्ते तिन्होंकी औषधिभी कारण वैसेही गुणवाली जाननी ॥ ५३ ॥ औरभी वन उपवनोंमें जैसी जमीन हो वैसीही औषधि जाननी ॥

गृह्णीयात्तानिसुमनाःशुचिःप्रातःसुवासरे ॥ ५४ ॥ आदित्यसंमुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥ साधारणधराद्रव्यंगृह्णीयादुत्तराश्रितम् ॥ ५५ ॥ वल्मीककुत्सितानूपश्मशानोषरमार्गजा ॥ जंतुवह्निहिमव्याप्तानौषधिःकार्यसिद्धिदा ॥ ५६ ॥

अर्थ–शुभदिनमें स्वस्थचित्त और पवित्र होके ॥५४॥ और सूर्यके संमुख हुआ हृदयमें शिवका ध्यान करके चुपका हुआ औषधि ग्रहण करे और साधारण जमीनसें, औषधि उत्तरकी ग्रहण करनी ॥ ५५ ॥ और वंवीकी बुरी जगहकी भीगी धरतीकी (अर्थात् जलाश्रय जमीनकी) मसाणकी गधालोटनकी रस्तेकी जीवोंवाली जली हुई जाडाकी मारी ऐसी औषधियां कार्यको सिद्ध करनेवाली नहीं है ॥५६॥

शरद्यखिलकार्यार्थंग्राह्यंसरसमौषधम् ॥
विरेकवमनार्थंचवसंतांतेसमाहरेत् ॥ ५७ ॥

अर्थ–शरदऋतुमें संपूर्ण कार्यकेवास्ते रसवाली औषधि लेनी और दस्त वा छर्दिकेवास्ते वसंतऋतुके अंतमें सरस औषधि लेनी ॥ ५७ ॥

अतिस्थूलजटायाःस्युस्तासांग्राह्यास्त्वचोबुधैः ॥
गृह्णीयात्सूक्ष्ममूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ॥ ५८ ॥

अर्थ–जो मोटी जडवाली औषध हैं तिनकी बुद्धिमानोंनें छाल लेनी और पतली जडवाली औषधि बुद्धिमान् संपूर्ण ग्रहण करे ॥ ५८ ॥

न्यग्रोधादेस्त्वचोग्राह्याःसारंस्याद्बीजकादितः ॥ तालीसादेश्च पत्राणिफलंस्यात्त्रिफलादितः ॥ ५९ ॥ धातक्यादेश्चपुष्पाणिस्नुह्यादेःक्षीरमाहरेत् ॥

अर्थ–वड आदिकोंकी छाल लेनी और विजोरा आदिकोंका सार लेना और तालीस आदिकोंके पत्ते लेने और त्रिफला आदिकोंका फल लेना ॥५९॥ और धाय आदिकोंके फूल लेने और थोहर आदिका दूध लेना ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां प्रथमखंडे परिभाषानामकः प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोध्यायः।

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः ॥ ६० ॥
कषायांश्चविशेषेणतत्रभेदस्तुदर्शितः ॥

अर्थ–बुद्धिमानजन विशेषकरके प्रातःकाल औषधि भक्षण करे ॥ ६० ॥ और काढा क़ल्क फांट हिम इनको विशेषकरके प्रातःकाल भक्षण करे. और कालका भेद तो तहां दिखाया है ॥

ज्ञेयःपंचविधःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् ॥ ६१ ॥ किंचित्सूर्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सायंतनेभोजनेचमुहुश्चापि तथानिशि ॥ ६२ ॥

अर्थ–मनुष्योंके औषधि लेनेमें पांच प्रकारका काल कहा है ॥ ६१ ॥ एक तो १ कुछ सूर्योदयके पीछे दूसरा २ दिनके भोजनसमय तीसरा ३ सायंकालके भोजनसमय चौथा ४ वारंवारमें लेवे पांचवां ५ रात्रिको इस प्रकारसें पांच काल कहे हैं ॥ ६२ ॥

प्रायःपित्तकफोद्रेकेविरेकवमनार्थयोः ॥ लेखनार्थेचभैषज्यं प्रभातेनान्नमाहरेत् ॥ ६३ ॥ एवंस्यात्प्रथमःकालोभैषज्यग्रहणेनृणां ॥

अर्थ–बहुतकरके पित्त और कफका कोपमें जुलाब और वमनवास्ते प्रातःकाल औषधि देवे और लेखन कर्ममेंभी प्रातःकाल देवे और रोगीको अन्न भोजनको नहीं देवे ॥ ६३ ॥ ऐसे मनुष्योंके औषधि लेनेमें प्रथम काल कहा है ॥

भैषज्यंविगुणेऽपानेभोजनाग्रेप्रशस्यते ॥ ६४ ॥ अरुचौचित्रभोज्यैश्चमिश्रंरुचिरमाहरेत् ॥ समानवातेविगुणेमंदेऽग्नावग्निदीपनम् ॥ ६५ ॥ दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ॥ व्यानकोपेचभैषज्यंभोजनांतेसमाहरेत् ॥ ६६ ॥ हिक्काक्षेपककंपेषुपूर्वमंतेचभोजनात् ॥ एवंद्वितीयकालश्चप्रोक्तोभैषज्यकर्मणि ॥ ६७ ॥

अर्थ–जो गुदाकी वायुका कोप होवे तो भोजनसे कुछ पहले औषधि देवे ॥ ६४ ॥ और अरुचिमें अनेक प्रकारके भोजनसे मिली सुंदर औषधि देवे और नाभिका वायु विगडके अग्नि मंद होवे तो जठराग्निको ॥ ६५ ॥ तेज करनेवाली औषध भोजनके बीचमें चतुर वैद्य देवे और संपूर्ण शरीरका वायु कुपित होवे तो भोजनके अंतमें औषधि देवे ॥ ६६ ॥ और हिचकी आक्षेपक अर्थात् वातरोगका भेद कंपना इन्होंमें भोजनसे पहलेभी और पीछेभी औषधि देवे ऐसे औषधि लेनेमें यह दूसरा काल कहा है ॥ ६७ ॥

उदानेकुपितेवातेस्वरभंगादिकारिणि ॥ ग्रासेग्रासांतरेदेयंभैषज्यंसांध्यभोजने ॥ ६८ ॥ प्राणेप्रदुष्टेसांध्यस्यभक्ष्यंस्यांते चदीयते ॥ औषधंप्रायशोधीरैःकालोऽयंस्यात्तृतीयकः ॥ ६९ ॥

अर्थ–कंठमें रहनेवाला वायु कुपित होवे और स्वरभंगादि करदेवे तो सायंकालके भोजनमें ग्रासग्रासके साथ औषधि देवे ॥ ६८ ॥ और हृदयका वायु कुपित हो जावे तो प्रायकरके सायंकालका भोजनके अंतमें औषधि देवे यह बुद्धिमानोंनें तीसरा काल कहा है ॥ ६९ ॥

मुहुर्मुहुश्चतृट्छर्दिहिक्काश्वासगरेषुच ॥
सान्नंचभेषजंदद्यादितिकालश्चतुर्थकः ॥ ७० ॥

अर्थ–तृषा वा छर्दि वा हिचकी वा श्वास वा विष इन्होंमें वारंवार अन्नके साथ औषध भोजन करावे यह चौथा काल कहा है ॥ ७० ॥

ऊर्ध्वजत्रुविकारेषुलेखनेबृंहणेतथा ॥ पाचनंशमनंदेयमनन्नं भेषजंनिशि ॥ ७१ ॥ इतिपंचमकालःस्यात्प्रोक्तोभैषज्यकर्मणि ॥

अर्थ–ऊर्ध्वजत्रु अर्थात् नाडवंधके विकारमें और लेखन बृंहणमें पाचन और शमन औषधि रातको अन्नविना देनी ॥ ७१ ॥ ऐसे पांचवां काल औषधिके देनेमें कहा है ॥

द्रव्येरसोगुणोवीर्यंविपाकःशक्तिरेवच ॥ ७२ ॥
संवेदनक्रमादेताःपंचावस्थाःप्रकीर्तिताः ॥

अर्थ–द्रव्योंमें रस १ गुण २ वीर्य ३ विपाक ४ शक्ति ५ ये पांच अवस्था क्रमसे कही हैं ॥ ७२ ॥

मधुरोऽम्लःपटुश्चैवकटुतिक्तकषायकाः ॥ ७३ ॥
इत्येतेषड्रसाःख्यातानानाद्रव्यसमाश्रिताः ॥

अर्थ–मधुर १ खट्टा २ खारी ३ चर्चरा ४ कडवा ५ कसीला ६ ॥ ७३ ॥ ये छः रस अनेक प्रकारके द्रव्योंके आश्रय कहे हैं ॥

धरांबुक्ष्माननलजज्वलनाकाशमारुतैः ॥ ७४ ॥
वाय्वग्निक्ष्मानिलैर्भूतद्वयैरसभवःक्रमात् ॥

अर्थ–क्रमसे दो दो तत्त्वोंसे एक एक रस उत्पन्न होता है जैसे पृथ्वी वा जलसे मधुर रस होता है पृथ्वी वा अग्निसे खट्टा रस उपजता है जल वा अग्निसे खारी रस उपजता है आकाश वा वायुसे चर्चरा रस उपजता है वायु वा अग्निसे कडवा रस उपजता है पृथ्वी वा वायुसे कसीला रस उपजता है ऐसे छः रस उपजते हैं ॥ ७४ ॥

गुरुःस्निग्धश्चतीक्ष्णश्चरूक्षोलघुरितिक्रमात् ॥ ७५ ॥ धरांबुवह्निपवनव्योम्नांप्रायोगुणाःस्मृताः ॥ एष्वेवांतर्भवत्यन्योगुणेषुगुणसंचयः ॥ ७६ ॥

अर्थ–क्रमसे पृथ्वीका जड गुण है जलका स्निग्ध अर्थात् चिकना गुण है ॥ ७५ ॥ अग्निकी तीक्ष्ण गुण है पवनका रूखा गुण है आकाशका हलका गुण है प्रायकरके ये गुण कहे हैं और इन्ही गुणोंमें औरभी सांद्र मृदु श्लक्ष्ण आदि गुण रहते हैं ॥ ७६ ॥

वीर्यमुष्णंतथाशीतंप्रायशोद्रव्यसंश्रयं ॥ तत्सर्वमग्नीषोमीयं दृश्यतेभुवनत्रये ॥ ७७ ॥ अत्रैवांतर्भविष्यंतिवीर्याण्यन्यानियान्यपि ॥

अर्थ–प्रायकरके उष्ण और शीतवीर्य द्रव्योंके आश्रय है और तीनों भुवनोंमें संपूर्ण वीर्य अग्न्यात्मक और सोमात्मक देखियें हैं ॥ ७७ ॥ और स्निग्ध १ रूक्ष २ पिच्छल ३ मृदु ४ तीक्ष्ण ५ इन्हों आदि वीर्यभी इनहीके अंतर्गत हैं ॥

मिष्टःपटुश्चमधुरमम्लाम्लंपच्यतेरसः ॥ ७८ ॥ कषायकटुतिक्तानांपाकःस्यात्प्रायशःकटुः ॥ मधुराज्जायतेश्लेष्मापित्तमम्लाच्चजायते ॥७९॥ कटुकाज्जायतेवायुःकर्माणीतिविपाकतः ॥

अर्थ–मीठा और खारी रसका पाक मधुर होता है खट्टा रसका खट्टा पाक होता है ॥ ७८ ॥ कसीला चर्चरा कडुवा इनरसोंका पाक प्रायकरके चर्चरा है मधुर रससे तो कफ उपजता है खट्टा रससे पित्त उपजता है ॥ ७९ ॥ कडवा रससे वात उपजता है रसोंके पाकसे ये कर्म होते है ॥

प्रभावस्तुयथाधात्रीलघुश्चापिरसादिभिः ॥ ८० ॥ समापिकुरुतेदोषत्रितयस्यविनाशनम् ॥ क्वचित्तुकेवलंद्रव्यंकर्मकुर्यात्प्रभावतः ॥ ८१ ॥ ज्वरंहंतिशिरेबद्धासहदेवीजटायथा ॥

अर्थ–औषधियोंका प्रभाव कहते है जैसे आंवला हलका है और रस १ गुण २ वीर्य ३ विपाक ४ इन्होंकरके समान है ॥ ८० ॥ तथापि वात पित्त कफ दोषोंको दूर करता है और कहीं तो एक औषधिभी अपने प्रभावसे कार्य सिद्ध कर देती है ॥ ८१ ॥ जैसे शिरमें बांधी सहदेईकी जड ज्वरको नष्ट करती है ॥

क्वचिद्रसोगुणोवीर्यंविपाकःशक्तिरेवच ॥ ८२ ॥
कर्मस्वंस्वंप्रकुर्वंतिद्रव्यमाश्रित्ययेस्थिताः ॥

अर्थ–रस गुण वीर्य विपाक शक्ति ॥ ८२ ॥ ये सबद्रव्योंके आश्रय होके स्थित कहीं कहीं अपना कर्म करते है ॥

चयकोपशमायस्मिन्दोषाणांसंभवंतिहि ॥ ८३ ॥
ऋतुषट्कंतदाख्यातंरवेराशिषुसंक्रमात् ॥

अर्थ–जिन छः ऋतुओंमें रोगोंकी वृद्धि कोप और शांति होती है सो सूर्यका राशियोंपर संक्रमण होनेसे छः ऋतु कही है ॥ ८३ ॥

ग्रीष्मेमेषवृषौप्रोक्तौप्रावृण्मिथुनकर्कयोः ॥ ८४ ॥ सिंहकन्ये स्मृतावर्षातुलावृश्चिकयोःशरत् ॥ धनुर्ग्राहौचहेमंतोवसंतःकुंभमीनयोः ॥ ८५ ॥

अर्थ–मेषकीसंक्रातिसे वृषकीसंक्रांतिपर्यंत ग्रीष्मऋतु जाननी और मिथुनसंक्रातिसे कर्कसंक्रांतिकी समाप्तितक प्रावृट्ऋतु कही है ॥ ८४ ॥ और सिंहकी संक्रांतिसे कन्याकी संक्रांतिकी समाप्तिक वर्षाऋतु कही है और तुलाकी संक्रांतिसे वृश्चिकसंक्रातिकी समाप्तितक शरदऋतु कही है धनकी संक्रांतिसे लेकर मकरसंक्रांतितक हेमंतऋतु कही है और कुंभसंक्रांतिसे मीनसंक्रांतिकी समाप्तितक वसंतऋतु कही है ॥ ८५ ॥

ग्रीष्मेसंचीयतेवायुःप्रावृट्कालेप्रकुप्यति ॥ वर्षासुचीयतेपि-त्तंशरत्कालेप्रकुप्यति ॥८६॥ हेमंतेचीयतेश्लेष्मावसंतेचप्रकु-प्यति ॥ प्रायेणप्रशमंयातिस्वयमेवसमीरणः ॥ ८७ ॥ शर-त्कालेवसंतेचपित्तंप्रावृड्ऋतौकफः ॥

अर्थ—ग्रीष्मऋतुमें वायु वढता है और प्रावृट्कालमें कोप करता है वर्षाकालमें पित्त वढता है और शरत्कालमें कुपित होता है ॥ ८६ ॥ हेमंतऋतुमें कफ वढता है और वसन्तऋतुमें कुपित होता है और प्रायकरके वायु आपही शांत हो जाता है ॥ ८७ ॥ शरत्कालमें और वसंतकालमें पित्त आपशांत हो जाता है और प्रावृट्ऋतुमें कफ आपशांत होजाता है ॥

चयकोपशमान्दोषाविहाराहारसेवनैः ॥ ८८ ॥
समानैर्यात्यकालेऽपिविपरीतैर्विपर्ययम् ॥

अर्थ—समान विहार और आहारके सेवनसे दोष वृद्धि कोप शम ॥ ८८ ॥ इन्होंको प्राप्त होते हैं और विपरीत विहाराहारसे अकालमेंभी दोष हो जाते है ॥

लघुरूक्षमिताहारादतिशिताच्छ्रमात्तथा ॥ ८९ ॥ प्रदोषेकाम-शोकाभ्यांभीचिंतारात्रिजागरैः ॥ अभिघातादपांगाहाज्जीर्णे-न्नेधातुसंक्षयात्॥ ९०॥वायुःप्रकोपंयात्येभिःप्रत्यनीकैश्चशाम्यति॥

अर्थ—हलका और रूखा और मित भोजनसे अति ठंढसे अति परिश्रमसे ॥ ८९ ॥ प्रदोषमें परिश्रमसे और काम शोक चिंता रात्रिको जागना इन्होंसे और शस्त्रकी चोटसे जलमें तिरनेसे अन्नका पाकसे धातुका क्षयसे ॥ ९० ॥ इन्हों-करके वायुका कोप हो जाता है और प्रत्यनीक अर्थात् विरुद्ध उष्ण स्निग्ध पदा-र्थोंसे शांत हो जाता है ॥

विदाहिकटुकाम्लोष्णभोज्यैरत्युष्णसेवनात् ॥ ९१ ॥ मध्याह्ने क्षुत्तृषारोधाज्जीर्यत्यन्नेऽर्धरात्रके ॥ पित्तंप्रकोपंयात्येभिःप्रत्य-नीकैश्चशाम्यति ॥ ९२ ॥

अर्थ—विदाहि पदार्थ तीखा खट्टा गरम इन भोजनोंसे और अति गरम भो-जनसे ॥ ९१ ॥ और मध्यान्हमें भूख तिसके रोकनेसे और अर्धरात्रमें अन्न जीर्ण होनेसे इन्होंकरके पित्त कुपित हो जाता है और विरोधी मधुर शीतादि पदार्थोंसे शांत हो जाता है ॥ ९२ ॥

मधुरस्निग्धशीतादिभोज्यैर्दिवसनिद्रया ॥ मंदेऽग्नौचप्रभाते चभुक्तमात्रेतथाश्रमात् ॥ ९३ ॥ श्लेष्माप्रकोपंयात्येभिःप्रत्य-नीकैश्चशाम्यति ॥

अर्थ–मधुर स्निग्ध ठंढा आदि भोजनोंसे और दिनके सोनेसे और प्रातः-काल मंद अग्निसे भोजन करतेही परिश्रम करनेसे ॥ ९३ ॥ इन्होंकरके कफ कुपित हो जाता है और इनके विरोधी गरम और रूक्ष पदार्थोंसे शांत होता है ॥

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदी-पिकायां प्रथमखंडे भैषज्याख्यानकं नाम द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीयोध्यायः ॥

करस्यांगुष्ठमूलेयाधमनीजीवसाक्षिणी ॥ ९४ ॥
तच्चेष्टयासुखंदुःखंज्ञेयंकायस्यपंडितैः ॥

अर्थ–हाथका अंगूठाके मूल अर्थात् जडमें जो नाडी है सो जीवकी साक्षिणी है ॥ ९४ ॥ तिसकी चेष्टासे पंडितोंनें शरीरका सुख और दुःख जानना ॥

नाडीधत्तेमरुत्कोपेजलौकासर्पयोर्गतिं ॥ ९५ ॥ कुलिंगकाकमं-डूकगतिंपित्तस्यकोपतः ॥ हंसपारावतगतिंधत्तेश्लेष्मप्रकोपतः ९६

अर्थ–वायुका कोपमें नाडी जोक और सर्पकी तरह चलती है ॥ ९५ ॥ पि-त्तका कोपसे नाडी चिडा काग मेंडक इन्होंकी तरह चलती है कफका कोपसे हंस और कबूतरकी तरह नाडी चलती है ॥ ९६ ॥

लावतित्तिरवर्तीनांगमनंसन्निपाततः ॥ कदाचिन्मंदगमना कदाचिद्वेगवाहिनी ॥ ९७ ॥ द्विदोषकोपतोज्ञेयाहंतिचस्थान-विच्युता ॥

अर्थ–लवा तीतर वटेर इन्होंकी तरह सन्निपातसे नाडी चलती है और कभी मंद और कभी वेगवाली हो तो ॥ ९७ ॥ दो दोषोंका कोप जानना और अपने स्थानको त्याग देवे तो मृत्यु कर देती है ॥

स्थित्वास्थित्वाचलतियासास्मृताप्राणनाशिनी ॥ ९८ ॥
अतिक्षीणाचशीताचजीवितंहंत्यसंशयं ॥

अर्थ–जो नाडी ठहर ठहरके चले सो प्राणोंका नाश करनेवाली कही है ९८ और जो बहुत मंद नाडी है और ठंढी है सो जीवको निश्चय नष्ट करती है ॥

ज्वरकोपेनधमनीसोष्णावेगवतीभवेत् ॥ ९९ ॥ कामक्रोधाद्व-वेद्वेगाक्षीणाचिंताभयप्लुता ॥ मंदाग्नेःक्षीणधातोश्चनाड़ीमं-दतराभवेत् ॥१००॥ असृक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीयसी॥

अर्थ–ज्वरका कोपसे नाडी गरम और वेगवाली होती है ॥ ९९ ॥ और काम वा क्रोधसेभी वेगवाली होती है और चिंता वा भयसे युक्त नाडी क्षीण होती है और मंद अग्निवाला पुरुषके और क्षीण धातुवाला पुरुषके नाडी अत्यंत मंद रहती है ॥ १०० ॥ और रुधिरसे पूर्ण नाडी कछुक गरम होती है और आम-युक्त नाडी बहुत जड होती है ॥

लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीभवेत् ॥ १ ॥ सुखितस्य स्थिराज्ञेयातथाबलवतीमता ॥ चपलाक्षुधितस्यापितृप्तस्यव-हतिस्थिरा ॥ २ ॥

अर्थ–तेज जठराग्निवालाकी नाडी हलकी और वेगवाली होती है ॥ १ ॥ और सुखी पुरुषकी नाडी स्थिरा वा बलवाली मानी है और भूखेकी नाडी चपल होती है और तृप्त पुरुषकी नाडी स्थिर रहती है ॥ २ ॥

दूताःस्वजातयोऽव्यंगाःपटवोनिर्बलांबराः ॥ सुखिनोऽश्ववृ-षारूढाःशुभ्रपुष्पफलैर्युताः ॥३॥ सुजातयःसुचेष्टाश्चसजीव-दिशिसंगताः ॥ भिषजंसमयेप्राप्तारोगिणःसुखहेतवे ॥ ४ ॥

अर्थ–दूत अपनी जातिका अथवा उत्तम जातिका अच्छे अंगोंवाला चतुर निर्मल वस्त्रोंवाला सुखी घोडा या बैलपर चढा सफेद पुष्पफलोंसे युक्त ॥ ३ ॥ अच्छी चेष्टावाला वैद्यसे पूछनेको पूर्व और उत्तरदिशामें स्थित रोगीका सुखके वास्ते समयमें वैद्यको प्राप्त होनेवाला ऐसा दूत शुभदायक कहा है ॥ ४ ॥

वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतोरोगिणःकृते ॥
नशुभंसौम्यशकुनंप्रदीप्तंचसुखावहं ॥ ५ ॥

अर्थ-रोगीके वास्ते वैद्यबुलानेको जाते हुए दूतको शुभ शकुन तो अच्छा नही और अपशकुन अच्छा कहा है ॥ ५ ॥

चिकित्सांरोगिणःकर्तुंगच्छतोभिषजःशुभं ॥
यात्रायांसौम्यशकुनंप्रोक्तंदीप्तंनशोभनं ॥ ६ ॥

अर्थ-रोगीकी औषध करनेको चलते हुए वैद्यके मार्गमै अच्छे शकुन शुभदायक है और बुरे शकुन अच्छे नही ॥ ६ ॥

निजप्रकृतिवर्णाभ्यांयुक्तःसत्त्वेनसंयुतः ॥
चिकित्स्योभिषजारोगीवैद्यभक्तोजितेंद्रियः ॥ ७ ॥

अर्थ-जो रोगी अपना पहलास्वभाव और वर्णसे युक्त हो और सत्वगुणसे युक्त हो और वैद्यके विषै भक्तिवाला और इंद्रियको जीतनेवाला हो ऐसा रोगीकी वैद्यनें औषधि करनी उचित है ॥ ७ ॥

स्वप्नेषुनग्नान्मुंडांश्वरक्तकृष्णांबरावृतान् ॥ व्यंगांश्वविकृतान्कृष्णान्सपाशान्सायुधानपि ॥ ८ ॥ बध्नतोनिघ्नतश्वापिदक्षिणां दिशमाश्रितान् ॥ महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोयस्तुपश्यति ॥ ९ ॥ सस्वस्थोलभतेव्याधिंरोगीयात्येवपंचताम् ॥

अर्थ-जो स्वप्नमें नंगे मुंडे हुए लाल या काले कपडोंवाले हाथ पांव टूटे विकराल काला फांसी और शस्त्र लिये ॥ ८ ॥ बांधते हुए मारते हुए और दक्षिणदिशामें खडे और भैंस ऊंट गधोंपर चढे ऐसे स्त्रीपुरुषोंको जो अच्छा मनुष्य देखें ॥ ९ ॥ तो रोगी होवे और रोगी देखे तो मृत्युको प्राप्त हो ॥

अधोयोनिपतत्युच्चाज्जलेऽग्नौवाविलीयते ॥ ११० ॥ श्वापदैर्हन्यतेयोपिमत्स्याद्यैर्गिलितोभवेत् ॥ यस्यनेत्रेविलीयेतेदीपोनिर्वाणतांव्रजेत् ॥ ११ ॥ तैलंसुरांपिबेद्वापिलोहंवालभते तिलान् ॥ पक्वान्नंलभतेऽश्नातिविशेत्कूपरसातलम् ॥ १२ ॥ सस्वस्थोलभतेव्याधिंरोगीयात्येवपंचताम् ॥

अर्थ-जो ऊंचा पर्वतादिकसे नीचे पडे वा जलमें डूबे वा अग्निमें जले॥११०॥ वा कुत्ता फाडें मच्छी आदि निगल लेवे वा अंधा हो जावे वा दीपक गुल हो जाय ॥ ११ ॥ तेल या मदिराको पीवे लोह या तिलोंको प्राप्त हो पकवान्न मिलै

या भोजन करे कूवामें या पातालमें चला जाय ॥ १२ ॥ जो अच्छा पुरुष ऐसे स्वप्न देखे तो व्याधिको प्राप्त होय और रोगी देखे तो मृत्युको प्राप्त हो ॥

दुःस्वप्नानेवमादींश्चदृष्ट्वाब्रूयान्नकस्यचित् ॥ १३ ॥ स्नानंकुर्या-दुषस्येवदद्याद्धेमतिलानथ ॥ पठेत्स्तोत्राणिदेवानांरात्रौदे-वालयेवसेत् ॥ १४ ॥ कृत्वैवंत्रिदिनंमर्त्योदुःस्वप्नात्परिमुच्यते ॥

अर्थ–ऐसे खोटे स्वप्न देखके किसीके आगे नही कहे ॥ १३ ॥ और प्रातःकाल स्नान करे सुवर्ण तिलोंका दान करे देवताओंका स्तोत्र पढे रात्रिमें मंदिर विषै वसे ॥ १४ ॥ मनुष्य ऐसे तीन दिन करे तो खोटे स्वप्नसे छुटे ॥

स्वप्नेषुयःसुरान्भूपान्जीवतःसुहृदोद्विजान् ॥ १५ ॥
गोसमिद्धाग्नितीर्थानिपश्येत्सुखमवाप्नुयात् ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें देवताओंको देखे और जीवते हुए मित्र वा ब्राह्म-णोंको देखे॥ १५॥ और गौ दीप्त अग्नि तीर्थ इन्होंको देखे तो सुखको प्राप्त होय॥

तीर्त्वाकलुषनीराणिजित्वाशत्रुगणानपि ॥ १६ ॥
आरुह्यसौधगोशैलकरिवाहान्सुखीभवेत् ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें अपने शरीरको जलमें तिरा देखे और शत्रुओंसे जीता देखे ॥ १६ ॥ और महल गौ पर्वत हस्ती घोडा इन्होंपर चढा देखे तो सुखी होवे ॥

अगम्यागमनंलेपोविष्ठयारुदितंमृतिम् ॥ १७ ॥
आममांसाशनंस्वप्नेधनारोग्याप्तयेविदुः ॥

अर्थ–जो मनुष्य स्वप्नमें अपने शरीरको अयोग्य स्त्रीसे मैथुन करता देखे अ-थवा अयोग्य स्थानमें गमन करता देखे और विष्ठासे लिपा देखे आप रोवे या दूसरानें रोता देखे अपनी मृत्यु देखे ॥ १७ ॥ कच्चा मांस खाता देखे ऐसा स्वप्न देखे तो पुरुषको धन मिले बीमार देखै तो अच्छा होय ॥

जलौकाभ्रमरीसर्पोमक्षिकावापियंदशेत् ॥ १८ ॥
रोगीसभूयादारोग्यःस्वस्थोधनमवाप्नुयात् ॥

अर्थ–जिस मनुष्यको स्वप्नमें जो कभौंरी सर्प मक्खीडसें ॥ १८ ॥ सो रोगी होवे तो रोग रहित होवे और अच्छा होवे तो धनको प्राप्त हो ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थ-दीपिकायां प्रथमखंडे नाडीपरीक्षादिनामकस्तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ।

पचेन्नामंवह्निकृच्चदीपनंतद्यथामिशिः ॥१९॥ पचत्यामंनवह्निं चकुर्याद्यत्तद्धिपाचनम्॥नागकेशरवद्विद्याच्चित्रोदीपनपाचनः१२०

अर्थ–जो औषधि आंबको नही पकावे और अग्निको दीप्त करे दीपन कहणी जैसे सोंप ॥ १९ ॥ और जो औषध आंबको पकावे और अग्निको प्रदीप्त नही करे सो पाचन कहणी जैसे नागकेसर और जो आंबकोभी पकावे और अग्निकोभी दीप्त करे सो दीपन पाचन कहणी जैसे चित्रक ॥ १२० ॥

नशोधयतिनद्वेष्टिसमान्दोषांस्तथोद्धतान् ॥
शमीकरोतिविषमान्शमनंतद्यथामृता ॥ २१ ॥

अर्थ–जो औषध सम और बढे दोषोंको न शोधे न शांत करे और विषम दोषोंको शांत करे सो शमन औषध कही है जैसे गिलोय ॥ २१ ॥

कृत्वापाकंमलानांयद्भित्त्वाबंधमधोनयेत् ॥
तच्चानुलोमनंज्ञेयंयथाप्रोक्ताहरीतकी ॥ २२ ॥

अर्थ–जो औषध मलोंका पाक करके और बंध दूर करके गुदद्वारा निकास देवे सो औषध अनुलोमन जाणनी जैसे हरडै ॥ २२ ॥

पक्तव्यंयदपक्त्वैवश्लिष्टंकोष्टेमलादिकम् ॥
नयत्यधःस्रंसनंतद्यथास्यात्कृतमालकः ॥ २३ ॥

अर्थ–जो औषध पकानेयोग्य मलादिकको नही पकाके गुदद्वारा निकाल देवे सो स्रंसन औषध कहणी जैसे अमलतास ॥ २३ ॥

मलादिकमबद्धंवायद्बद्धंपिंडितंमलैः ॥
भित्वाधःपातयतितद्भेदनंकटुकीयथा ॥ २४ ॥

अर्थ–जो औषध वातादि दोषोंकरके बंधा अथवा नही बंधा मलादिकको विदीर्ण करके गुदद्वारा निकाल देवे सो भेदन औषध कहणी जैसे कुटकी ॥२४॥

विपक्वंयदपक्वंवामलादिद्रवतांनयेत् ॥
रेचयत्यपितज्ज्ञेयंरेचनंत्रिवृतायथा ॥ २५ ॥

अर्थ–जो औषध पका अथवा नही पका मलादिकको पतला कर दे और गुदद्वारा निकाल देवे तिसको रेचन कहते है जैसे निसोत ॥ २५ ॥

अपक्वपित्तश्लेष्माणौबलादूर्ध्वंनयेत्तुयत् ॥
वमनंतद्धिविज्ञेयंमदनस्यफलंयथा ॥ २६ ॥

अर्थ–जो औषध नही पके पित्त और कफको बलसे वाहिर निकाल दे तिसको वमन कहते हैं जैसे मैंनफल ॥ २६ ॥

स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधोवामलसंचयम् ॥
देहसंशोधनंतत्स्याद्देवदालीफलंयथा ॥ २७ ॥

अर्थ–जो औषध मलसंचयको स्थानसे बाहिर ऊपरको अथवा नीचेको निकाल दे तिसको देहशोधन कहते हैं जैसे देवदाली अर्थात् ताडका फल ॥ २७ ॥

श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयतियद्बलात् ॥
छेदनंतद्यवक्षारोमरिचानिशिलाजतु ॥ २८ ॥

अर्थ–जो औषध मिले हुए कफादि दोषोंको बलसे उखाल देवे तिसको छेदन कहते हैं जैसे जवाखार सूंठ मिरच पीपल शिलाजीत ॥ २८ ॥

धातून्मलान्वादेहस्यविशोष्योल्लेखयेच्चयत् ॥
लेखनंतद्यथाक्षौद्रंनीरमुष्णंवचायवाः ॥ २९ ॥

अर्थ–जो औषध रसादि धातुओंको और वात आदि दोषोंको सुखाके निकाल दे तिसको लेखन कहते है जैसे शहत गरम जल वच जव ॥ २९ ॥

दीपनंपाचनंयत्स्यादुष्णत्वाद्द्रवशोषकम् ॥
ग्राहितच्चयथाशुंठीजीरकंगजपिप्पली ॥ १३० ॥

अर्थ–जो औषध अग्निको दीप्त करे और आम आदिकोंको पाचन करे और गरम होनेसे द्रव द्रव्यको सोखे तिसको ग्राहि कहते है जैसे सूंठ जीरा बडी पीपल ॥ १३० ॥

रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्चयद्भवेत् ॥
वातकृत्स्तंभनंतत्स्याद्यथावत्सकटुंटुकौ ॥ ३१ ॥

अर्थ–जो औषध रूक्ष गुण करे ठंढ करे कसीली हो हलका पाकवाली हो सो वातको करती है तिसको स्तंभन कहते है जैसे कूडा और टेंटू अर्थात् सोहनपत्ती ३१

रसायनंचतज्ज्ञेयंयज्जराव्याधिनाशनम् ॥
यथामृतारुदंतीचगुग्गुलुश्चहरीतकी ॥ ३२ ॥

अर्थ-जो औषध शरीरकी वृद्धता और रोगको नष्ट कर दे तिसको रसायन कहते हैं जैसे गिलोय रुद्रवंती गूगल हरडै ॥ ३२ ॥

यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषुहर्षोवाजीकरंचतत् ॥
यथानागबलाद्यास्तुबीजंचकपिकच्छुजम् ॥ ३३ ॥

अर्थ-जिस औषधसे स्त्रियोंमें हर्ष होवे धातु वढे तिसको वाजीकरण कहते है जैसे गंगेरन आदि और कौंचके बीज ॥ ३३ ॥

यस्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलंचतदुच्यते ॥
यथाश्वगंधामुसलीशर्कराचशतावरी ॥ ३४ ॥

अर्थ-जिस औषधसे वीर्यकी वृद्धि होवे तिसको शुक्रल कहते हैं जैसे आसगंध मुसली मिसरी शतावरी ॥ ३४ ॥

दुग्धंमाषाश्चभल्लातफलमज्जामलानिच ॥
प्रवर्तकानिकथ्यंतेजनकाचीचरेतसः ॥ ३५ ॥

अर्थ-दूध उडद भिलावाका फलकी छाल आंवला ये ओषधि वीर्यको प्रवर्त करती हैं और वढातीभी हैं ॥ ३५ ॥

प्रवर्तनंस्त्रीशुक्रस्यरेचनंबृहतीफलम् ॥
जातीफलंस्तंभकंचशोषणीचहरीतकी ॥ ३६ ॥

अर्थ-कंटालिका फल स्त्रीके वीर्यको प्रवर्तन और रेचन करता है और जायफल स्तंभन करता है और हरडै शोष करती है ॥ ३६ ॥

देहस्यसूक्ष्मच्छिद्रेषुविशेद्यत्सूक्ष्ममुच्यते ॥
तद्यथासैंधवंक्षौद्रंनिंबस्तैलंरुबूद्भवम् ॥ ३७ ॥

अर्थ-शरीरके रोमोंके छिद्रोंके द्वारा जो प्रवेश होवे तिसको सूक्ष्म कहते हैं जैसे सेंधानमक शहत नींब अरंडका तेल ॥ ३७ ॥

पूर्वंव्याप्याखिलंकायंततःपाकंचगच्छति ॥
व्यवायितद्यथाभंगाफेनंचाहिसमुद्भवम् ॥ ३८ ॥

अर्थ-जो औषध पहले संपूर्ण शरीरमें व्यापक होके पीछे पाकको प्राप्त होवे तिसको व्यवायि कहते हैं जैसे भांग और अफीम ॥ ३८ ॥

संधिबंधांस्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत् ॥
विश्लेष्यौजश्चधातुभ्योयथाक्रमुककोद्रवाः ॥ ३९ ॥

अर्थ-जो औषध संपूर्ण शरीरकी संधियोंके बंधोंको शिथिल कर दे और धातुओंसे ओजका विश्लेष कर दे तिसको विकाशि कहते हैं जैसे सुपारी कोदूधान्य ॥ ३९ ॥

बुद्धिंलुंपतियद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते ॥
तमोगुणप्रधानंचयथाद्रव्यंसुरादिकम् ॥ ४० ॥

अर्थ-जो औषध बुद्धिको लुप्त कर दे और तमोगुणप्रधान हो तिसको मदकारि कहते है जैसे मदिरादि ॥ ४० ॥

व्यवायिचविकाशिस्यात्सूक्ष्मंछेदिमदावहम् ॥
आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतंविषम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-जो औषध व्यवायि विकाशि सूक्ष्म छेदि मदकारि गरम जीवको हरनेवाली और योगवाही हो तिसको विष कहते है ॥ ४१ ॥

निजवीर्येणयद्द्रव्यंस्रोतोभ्योदोषसंचयम् ॥
निरस्यतिप्रमाथिस्यात्तद्यथामरिचंवचा ॥ ४२ ॥

अर्थ-जो औषध अपनी शक्तिसे दोषसंचयको स्रोतोंसे दूर कर दे तिसको प्रमाथि कहते है जैसे मिरच और वच ॥ ४२ ॥

पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यंरुध्वारसवहाःशिराः ॥
धत्तेयद्गौरवंतत्स्यादभिष्यंदियथादधि ॥ ४३ ॥

अर्थ-जो औषध अपना पिच्छल गुणकरके रस वहनेवाली नाडियोंको रोकके भारपापनको धारन करे तिसको अभिष्यंदि कहते हैं जैसे दही ॥ ४२ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां प्रथमखंडे दीपनपाचनादिकथनं नाम चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

अथ पंचमोऽध्यायः ।

कलाःसप्ताशयाःसप्तधातवःसप्ततन्मलाः ॥ सप्तोपधातवःस-
प्तत्वचःसप्तप्रकीर्तिताः ॥ ४४ ॥ त्रयोदोषानवशतंस्नायूनां
संधयस्तथा ॥ दशाधिकंचद्विशतमस्थ्नांचत्रिशतंतथा॥४५॥
सप्तोत्तरंमर्मशतंशिराःसप्तशतंतथा ॥ चतुर्विंशतिराख्याताध-
मन्योरसवाहिकाः ॥ ४६ ॥ मांसपेश्यःसमाख्यातानृणांपंचश
तंबुधैः ॥ स्त्रीणांचविंशत्यधिकाःकंडराश्चैवषोडश ॥ ४७ ॥
नृदेहेदशरंध्राणिनारीदेहेत्रयोदश ॥ एतत्समासतःप्रोक्तंविस्त-
रेणाधुनोच्यते ॥ ४८ ॥

अर्थ--वैद्योंने शरीरोंमे सात कला कही हैं और सात आशय सात धातु सात तिन्होंके मल सात उपधातु सात त्वचा कही हैं ॥ ४४ ॥ और तीन दोष हैं नौसै नसों और दोसौ दश संधि और तीनसौ हढियां कहे हैं ॥ ४५ ॥ और एकसौ सात मर्म हैं और सातसौ नाडी हैं और रस वहनेवाली नाडी चौवीस हैं ॥४६॥ और मनुष्योंके मांसकी वोटी पंडितोंनें पांचसौ कही हैं और स्त्रियोंके वीस अ-धिक कही हैं और कंडरा अर्थात् फैलनेसे मिटनेंवाली सोलह कही हैं ॥ ४७ ॥ और मनुष्यके देहमें दशछिद्र है और स्त्रीके शरीरमें तेरह छिद्र यह संक्षेपसे कहा है अब विस्तारसे कहैंगे ॥ ४८ ॥

मांसासृङ्मेदसांतिस्रोयकृत्प्लीन्होश्चतुर्थिका ॥ पंचमीचतथां
त्राणांषष्ठीचाग्निधरामता ॥ ४९ ॥ रेतोधरासप्तमीस्यादिति
सप्तकलाःस्मृताः ॥

अर्थ–मांस रुधिर मेद इन्होंको धारण करनेवाली तीन कला और यकृत् वा तिल्लीको धारण करनेवाली चौथी कला है और आंतोको धारण करनेवाली पांचवी कला है अग्निको धारण करनेवाली छठी कला है ॥ ४९ ॥ वीर्यको धारण करनेवाली सातवी कला ऐसे सात कला कही है ॥

श्लेष्माशयःस्यादुरसितस्मादामाशयस्त्वधः ॥ १५० ॥ ऊर्ध्व-
मग्न्याशयोनाभेर्वामभागेव्यवस्थितः ॥ तस्योपरितिलंज्ञेयंत-

दधःपवनाशयः ॥ ५१ ॥ मलाशयस्त्वधस्तस्यबस्तिर्मूत्राशयः स्मृतः ॥ जीवरक्ताशयमुरोज्ञेयाःसप्ताशयास्त्वमी ॥ ५२ ॥ पुरुषेभ्योऽधिकाश्चान्येनारीणामाशयास्त्रयः ॥ धरागर्भाशयः प्रोक्तःस्तनौस्तन्याशयौमतौ ॥ ५३ ॥

अर्थ–छातीमें श्लेष्माशय अर्थात् कफस्थान कहा है तिस्से नीचे आमाशय है ॥ १५० ॥ और वामभागमें नाभिसे ऊपर अग्न्याशय है और अग्न्याशयके ऊपर तिल है अग्न्याशयके नीचे पवनाशय है ॥ ५१ ॥ अग्न्याशयसे नीचे मलाशय है और वस्तिस्थान मूत्राशय है और हृदय जीव रक्ताशय कहा है ऐसे सात आशय है ॥ ५२ ॥ और पुरुषोंसे तीन आशय स्त्रियोंके अधिक है एक गर्भाशय और दोनों स्तन दो स्तन्याशय माने है ॥ ५३ ॥

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ॥
जायंतेऽन्योन्यतःसर्वेपाचिताःपित्ततेजसा ॥ ५४ ॥

अर्थ–रस रक्त मांस मेद अस्थि मज्जा वीर्य ये सात धातु आपसमें उत्पन्न होता है और पित्तके तेजसे पाचिते है ॥ ५४ ॥

जिह्वानेत्रकपोलानांजलंपित्तंचरंजकं ॥ कर्णविड्रसनादंत-कक्षामेढ्रादिजंमलम् ॥ ५५ ॥ नखानेत्रमलंवक्रेस्निग्धत्वंपि-टिकास्तथा ॥ जायंतेसप्तधातूनांमलान्येतान्यनुक्रमात् ॥ ५६ ॥

अर्थ–जीभ नेत्र कपोल इन्होंमें जो जल है सो रसधातुका मल है रंजक पित्त रक्तका मल है जीभ दांतको कीट मल है वा कांखको जल मल है लिंगका मल मेदका मल है॥५५॥ नख केश रोम अस्थिका मल है आंखकी कींच और मुखकी चिकनाई मज्जाका मल है और मुखमें पिडिका जो है सो वीर्यका मल है ये सातों धातुओंके क्रमसे मल है ॥५६॥

स्तन्यंरजश्चनारीणांकालेभवतिगच्छति ॥ शुद्धमांसभवःस्नेहः सावसापरिकीर्तिता ॥ ५७ ॥ स्वेदोदंतास्तथाकेशास्तथैवौज-श्चसप्तमं ॥ इतिधातुभवाज्ञेयाएतेसप्तोपधातवः ॥ ५८ ॥

अर्थ–रसधातुकी उपधातु दूध रक्तधातुकी उपधातु रज जोकि स्त्रीकै काल-पांकै होती है और कालपाकै चली जाती है ॥ ५७ ॥ शुद्ध मांसकी उपधातुवासा मेदकी उपधातु पसीना अस्थिकी उपधातु दांत मज्जाकी उपधातु वाल वीर्यकी उपधातु बल पुरुषार्थ ऐसे ये सात धातुओंसे उपजे सात उपधातु है ॥ ५८ ॥

ज्ञेयावभासिनीपूर्वेसिध्मस्थानंचसामता ॥ द्वितीयालोहिता ज्ञेयातिलकालकजन्मभूः ॥ ५९ ॥ श्वेतातृतीयासंख्यातास्था-नंचर्मदलस्यच ॥ ताम्राचतुर्थीविज्ञेयाकिलासश्वित्रभूमिका ॥६०॥ पंचमीवेदिनीख्यातासर्वकुष्ठोद्भवस्ततः ॥ विख्याता-रोहिणीषष्ठीग्रंथिगंडापचीस्थितिः ॥६१॥ स्थूलात्वक्सप्तमी-ख्याताविद्रध्यादेःस्थितिश्चसा ॥ इतिसप्तत्वचःप्रोक्ताःस्थू-लाव्रीहिद्विमात्रया ॥ ६२ ॥

अर्थ–पहली त्वचा अवभासिनी है तिसमें सीप होती है दूसरी लोहिता है तिसमें तिल उपजता है ॥५९ ॥ तीसरी श्वेता तिसमें चर्मदल कुष्ठ होता है चौथी ताम्रा है तिसमें किलास कुष्ठ और श्वित्र कुष्ठ होता है ॥ ६० ॥ पांचवी वेदिनी है तिसमें संपूर्ण कुष्ठ उपजते हैं छठी रोहिणी है तिसमें गांठ गंड अपची ये रोग होते हैं ॥ ६१ ॥ और सातवीं स्थूल त्वचा कही है तिसमें विद्रधि उदररोग आदि होते हैं ऐसे सात त्वचा कही है ये सातों मिलकै दो जवोंके समान मोटाई पाती है ॥ ६२ ॥

वायुःपित्तंकफोदोषाधातवश्चमलास्तथा ॥
तत्रापिपंचधाख्याताःप्रत्येकंदेहधारणात् ॥ ६३ ॥

अर्थ–वायु पित्त कफ ये दोष और धातु मल ये देहधारणसे एक एकके प्रति पांचप्रकारके हैं ॥ ६३ ॥

पवनस्तेषुबलवान्विभागकरणान्मतः ॥ रजोगुणमयःसूक्ष्मः शीतोरूक्षोलघुश्चलः ॥ ६४ ॥ मलाशयेचरन्कोष्ठवह्निस्था-नेतथाहृदि ॥ कंठेसर्वांगदेशेषुवायुःपंचप्रकारतः ॥ ६५ ॥ अपानःस्यात्समानश्चप्राणोदानौतथैवच ॥ व्यानश्चेतिसमी-रस्यनामान्युक्तान्यनुक्रमात् ॥ ६६ ॥

अर्थ–विभाग करणेसे तिन्होंमें पवन बलवान् माना है और वायु रजोगुण-मय है सूक्ष्म है ठंढा है रूक्ष है लघु है चंचल है ॥ ६४ ॥ और मलाशयमें विच-रता वायु तथा कोष्ठ वन्हिस्थान हृदय कंठ सर्वांग इन्होंमें विचरता वायु पांचप्र-

कारका है ॥ ६५ ॥ जैसे अपान समान प्राण उदान व्यान ये पूर्वस्थानोंमें वायुके क्रमसे नाम कहे हैं ॥ ६६ ॥

पित्तमुष्णंद्रवंपीतंनीलंसत्त्वगुणोत्तरम् ॥ कटुतिक्तरसंज्ञेयंवि-
दग्धंचाम्लतांव्रजेत् ॥६७॥ अग्न्याशयेभवेत्पित्तमग्निरूध्वैंति-
लोन्मितं ॥ त्वचिकांतिकरंज्ञेयंलेपाभ्यंगादिपाचकं ॥ ६८ ॥
दृश्यंयकृतियत्पित्तंताद्दशंशोणितंनयेत् ॥ यत्पित्तंनेत्रयुगले
रूपदर्शनकारितत् ॥ ६९ ॥

अर्थ–पित्त गरम है झिरता है पीला है नीला है सत्वगुणवाला है चर्चरा खट्टा रसवाला है पका हुआ खट्टापनको प्राप्त होता है ॥ ६७ ॥ अग्न्याशयमें पित्त रहता है सो अग्निरूप तिलके समान है त्वचावाली पित्तकांतिको करता है लेप और उवटनाको शोषता है ॥ ६८ ॥ और जो यकृतिमें दृश्य नामक पित्त है सो रसका रुधिर उपजाता है जो पित्त नेत्रोंमें है वह रूपको दिखाता है ॥ ६९ ॥

यत्पित्तंहृदयेतिष्ठन्मेधाप्रज्ञाचकारतत् ॥ पाचकंभ्राजकंचैव
रंजकालोचकेतथा ॥ १७० ॥ साधकंचेतिपंचैवपित्तनामा-
न्यनुक्रमात् ॥

अर्थ–जो पित्त हृदयमें है वह शुद्ध बुद्धिको करता है और पाचक भ्राजक रंजक आलोचक ॥ १७० ॥ साधक ये पांच नाम क्रमसे पित्तोंके जाणने ॥

कफःस्निग्धोगुरुःश्वेतःपिच्छिलःशीतलस्तथा ॥ ७१ ॥ तमो-
गुणाधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेत् ॥ कफश्चामाशयेमूर्ध्निकं-
ठेहृदिचसंधिषु ॥ ७२ ॥ तिष्ठन्करोतिदेहेषुस्थैर्यंसर्वांगपाट-
वं ॥ क्लेदनःस्नेहनश्चैवरसनश्चावलंबनः ॥ ७३ ॥

अर्थ–कफ सचिक्कन है भारा है सफेद है गल्होंवाला है ठंढा है ॥ ७१ ॥ इसमें तमोगुण अधिक है स्वादु है पकनेमें खारा है कफ जो है आमाशयमें कंठमें मस्तकमें हृदयमें संधियोंमें ॥ ७२ ॥ संपूर्ण अंगोंमें ठहरता हुआ स्थिरता करता है और संपूर्ण अंगोंमें पाटव अर्थात् कुशलता करता है और यह गीला चिकना स्वादु स्थिरतावाला है ॥ ७३ ॥

स्नायवोबंधनंप्रोक्तादेहेमांसास्थिमेदसाम् ॥ ७४ ॥

अर्थ–शरीरोंमें नसें मांस हड्डी मेद इन्होंका बंधना है ॥ ७४ ॥

संधयश्चांगसंधानाद्देहेप्रोक्ताःकफान्विताः ॥

अर्थ–शरीरमें हाथ पैरोंके आपसमें जोडनेसे कफोंसे युक्त संधि कही है ॥

आधारश्चतथासारःकयोऽस्थीनिबुधाविदुः ॥ ७५ ॥

अर्थ–शरीरमें हाड जो है बुधोंने आधार और सार कहे हैं ॥ ७५ ॥

मर्माणिजीवाधाराणिप्रायेणमुनयोजगुः ॥

अर्थ–शरीरोंमें मर्म प्रायकरके मुनियोंनें जीवके आधार कहे हैं ॥

संधिबंधनकारिण्योदोषधातुवहाःशिराः ॥ ७६ ॥

अर्थ–संधिके बंधन करनेवाली और वात आदि दोष वा रस आदि धातु-ओंको वहनेवाली नाडी कही है ॥ ७६ ॥

धमन्योरसवाहिन्योधमंतिपवनंतनौ ॥

अर्थ–शरीरोंमें रस वहनेवाली नाडी पवनको धमती है ॥

मांसपेश्योबलायस्युरवष्टंभायदेहिनां ॥ ७७ ॥

अर्थ–मांसपेशी अर्थात् मांसवोटी जो है सो वल करती है और शरीरियोंके शरीरको करडा रखती है ॥ ७७ ॥

प्रसारणाकुंचनयोरंगानांकंडरामताः ॥

अर्थ–कंडरा जो कही है सो अंगोंको पसारती है और संकोच करती है ॥

नासानयनकर्णानांद्वेद्वेरंध्रेप्रकीर्तिते ॥ ७८ ॥ मेहनापानव-क्त्राणामेकैकंरंध्रमुच्यते ॥ दशमंमस्तकेचोक्तंरंध्राणीतिनृणां विदुः ॥ ७९ ॥ स्त्रीणांत्रीण्यधिकानिस्युःस्तनयोर्गर्भवर्त्मनः॥ सूक्ष्मच्छिद्राणिचान्यानिमतानित्वचिजन्मिनाम् ॥ १८० ॥

अर्थ–नासिका नेत्र कान इन्होंके दो दो छिद्र कहे है ॥ ७८ ॥ लिंग गुद मुख इन्होंका एक एक छिद्र कहा है दशवां मस्तकमें ऐसे मनुष्योंके छिद्र कहे हैं ॥ ७९ ॥ और स्त्रियोंके तीन छिद्र अधिक हैं दो स्तन तीसरा गर्भस्थान है और भी सूक्ष्म छिद्र शरीरियोंके त्वचामें माने हैं ॥ १८० ॥

तद्वामेफुफुसंप्लीहादक्षिणांगेयकृन्मतं ॥ उदानवायोराधारः

फुफुसंप्रोच्यतेबुधैः ॥ ८१ ॥ रक्तवाहिंशिरामूलंप्लीहाख्याता-
महर्षिभिः ॥ यकृद्रंजकपितस्यस्थानंरक्तस्यसंश्रयम् ॥ ८२ ॥

अर्थ—हृदयसे वामभागमें प्लीहा और फुफुस कहा है और दक्षिणभागमें यकृत् माना है और बुधोंनें फुफुस उदानवायुका आधार कहा है ॥८१॥ रुधिर वहनेवाली नाडीकी जड बुद्धिमानोनें प्लीहा अर्थात् तिल्ली कही है और रंजक पित्तका वा रक्तका स्थान यकृत् कहा है ॥ ८२ ॥

जलवाहिशिरामूलंतृष्णाच्छादनकंतिलम् ॥

अर्थ—तृष्णाको आच्छादन करनेवाला और जल वहनेवाली नाडीका मूल तिल कहा है ॥

वृक्कौपुष्टिकरौप्रोक्तौजठरस्थस्यमेदसः ॥ ८३ ॥

अर्थ—वृक्क जो है सो उदरमें स्थित मेदकी पुष्टि करनेवाले कहे हैं ॥ ८३ ॥

वीर्यवाहिशिराधारौवृषणौपौरुषावहौ ॥

अर्थ—वीर्य वहनेवाली नाडीयोंका आधार और पौरुष अर्थात् वीर्यको वहनेवाले ऐसे वृषण अर्थात् अंडकोष कहा हैं ॥

गर्भाधानकरंलिंगमयनंवीर्यमूत्रयोः ॥ ८४ ॥

अर्थ—गर्भका करनेवाला और वीर्य मूत्रका स्थान यह लिंगका लक्षण कहा है८४

हृदयंचेतनास्थानमोजसश्चाश्रयंमतम् ॥

अर्थ—हृदय जो है सो बुद्धिका स्थान और ओज अर्थात् बलका आश्रय माना है ॥

शिराधमन्योनाभिस्थाःसर्वाव्याप्यस्थितास्तनुं ॥ ८५ ॥
पुष्णंतिचानिशंवायोःसंयोगात्सर्वधातुभिः ॥

अर्थ—शिरा और धमनी संपूर्ण शरीरको व्याप्त होकै नाभिमें स्थित हुई ८५ रात्रि दिन वायुके संयोगकरके संपूर्ण धातुओंकरके शरीरोंको पोषण करती है ॥

नाभिस्थःप्राणपवनःस्पष्ट्वाहृत्कमलांतरं ॥ ८६ ॥ कंठाद्बहि-
र्विनिर्यातिपातुंविष्णुपदामृतं ॥ पीत्वाचांबरपीयूषंपुनरायाा-
तिवेगतः ॥ ८७ ॥ प्रीणयन्देहमखिलंजीवंचजठरानलं ॥

अर्थ—नाभिमें स्थित हुआ प्राणपवन हृत्कमलको स्पर्श करकै ॥८६॥ हवाको पीनेको कंठसे बाहिर निकलता है हवाको पीके फिर वेगसे भीतर चला-

जाता है ॥ ८७ ॥ और संपूर्ण देहको और जीवको संतुष्ट और जठराग्निको प्रदीप्त करता हुआ ॥

शरीरप्राणयोरेवंसंयोगादायुरुच्यते ॥ ८८ ॥
कालेनतद्वियोगाद्धिपंचत्वंकथ्यतेबुधैः ॥

अर्थ—ऐसे शरीर और प्राणोंके संयोगसे आयु कही है ॥ ८८ ॥ और कालकरके शरीर प्राणोंका वियोग होनेसे बुधोंनें पंचत्व अर्थात् मृत्यु कहा है ॥

नजंतुःकश्चिदमरःपृथिव्यांजायतेक्वचित् ॥ ८९ ॥
अतोमृत्युरवार्यःस्यात्किंतुरोगान्निवारयेत् ॥

अर्थ—पृथ्वीपर कोई कहीं अमर नहीं जन्मता है ॥ ८९ ॥ इसवास्ते मृत्यु निवारण नहीं हो सक्ता रोग निवारण हो सक्ते हैं ॥

याप्यत्वंयातिसाध्यश्चयाप्योगच्छत्यसाध्यतां ॥ १९० ॥
जीवितंहंत्यसाध्यस्तुनरस्याप्रतिकारिणः ॥

अर्थ—साध्य रोगका इलाज नहीं होनेसे कष्टसाध्य हो जाता है और कष्टसाध्य असाध्य हो जाता है ॥ १९० ॥ और असाध्य रोगका इलाज नहीं करे तो जीवितको हनन करता है ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणांशरीरंसाधनंयतः ॥ ९१ ॥
अतोरुग्भ्यस्तनुंरक्षेन्नरःकर्मविपाकवित् ॥

अर्थ—धर्म अर्थ काम मोक्ष इन्होंका साधन यह शरीर है ॥ ९१ ॥ इसवास्ते शुभ अशुभ कर्मोंके फलको जाननेंवाला मनुष्य रोगोंसे शरीरकी रक्षा करे ॥

धातवस्तन्मलादोषानाशयंत्यसमास्तनुं ॥ ९२ ॥
समाःसुखायविज्ञेयाबलायोपचयायच ॥

अर्थ—धातु और तिन्होंके दोष और मल न्यूनवा अधिक हुए शरीरकों नष्ट कर देते हैं ॥ ९२ ॥ और बराबर रहे सुख बल और वृद्धिको करते हैं ॥

जगद्योनेरनिच्छस्यचिदानंदैकरूपिणः ॥ ९३ ॥
पुंसोस्तिप्रकृतिर्नित्याप्रतिच्छायेवभावस्वतः ॥

अर्थ—जगतकी योनि इच्छारहित ज्ञानमय ऐसे ईश्वरको पुरुष कहते हैं ॥९३॥ और सूर्यके प्रतिबिंबकी तरह नित्य प्रकृति कही है ॥

अचेतनापिचैतन्ययोगेनपरमात्मनः ॥ ९४ ॥
अकरोद्विश्वमखिलमनित्यंनाटकाकृति ॥

अर्थ—जड प्रकृतिभी परमात्माके चैतन्यसंवंधसे इंद्रजाल विद्याकी तरह झूटे जगत्को रचती है ॥

प्रकृतिर्विश्वजननीपूर्वंबुद्धिमजीजनत् ॥ ९५ ॥ इच्छामयींमहद्रूपामहंकारस्ततोऽभवत् ॥ त्रिविधःसोऽपिसंजातोरजःसत्त्वतमोगुणैः ॥ ९६ ॥

अर्थ—विश्वकी माता प्रकृति पहले तो ॥ ९५ ॥ इच्छामयी और महद्रूप ऐसी बुद्धिको रचती भई तिस बुद्धिसे अहंकार होता भया सो अहंकार सत्वगुण रजोगुण तमोगुण भेदोंकरके तीनप्रकारका हुवा ॥ ९६ ॥

तस्मात्सत्वरजोयुक्तादिंद्रियाणिदशाभवन् ॥ मनश्चजातंतान्याहुःश्रोत्रत्वङ्नयनंतथा ॥ ९७ ॥ जिह्वाघ्राणत्वचोहस्तपादोपस्थगुदानिच ॥ पंचबुद्धींद्रियाण्याहुःप्राक्तनानीतराणिच ॥ ९८ ॥ कर्मेंद्रियाणिपंचैवकथ्यंतेसूक्ष्मबुद्धिभिः ॥

अर्थ—इसवास्ते सत्व रजोगुणयुक्त अहंकारसे दशइंद्रिय होती भई और मन उत्पन्न हुवा और सत्वगुणयुक्त अहंकारसे श्रोत्र त्वचा नेत्र ॥ ९७ ॥ जिह्वा नासिका वचन हस्त पाद उपस्थ गुद ये पांच ज्ञानइंद्रिय है ॥ ९८ ॥ और कर्मेंद्रियभी पांच पंडितोंनें कही है ॥

तमःसत्त्वगुणोत्कृष्टादहंकारादथाभवत् ॥ ९९ ॥ तन्मात्रपंचकंतस्यनामान्युक्तानिसूरिभिः ॥ शब्दतन्मात्रकंस्पर्शतन्मात्रंरूपमात्रकं ॥२००॥ रसतन्मात्रकंगंधतन्मात्रंचेतितद्विदुः॥

अर्थ—तमोगुण सत्वगुणयुक्त अहंकारसे ॥ ९९ ॥ तन्मात्रिक पांच तत्व हुआ तिनका नाम पंडितोंनें कहा है शब्दतन्मात्र स्पर्शतन्मात्र रूपतन्मात्र ॥ २०० ॥ रसतन्मात्र गंधतन्मात्र ऐसे ये पांच उत्पन्न भये है ॥

शब्दःस्पर्शश्चरूपंचरसगंधावनुक्रमात् ॥ १ ॥
तन्मात्राणांविशेषाःस्युःस्थूलभावमुपागताः ॥

अर्थ—शब्द स्पर्श रूप रस गंध ये क्रमसे १ पंचतन्मात्राओंके विशेष है इन्होंसे सुख दुःख मोह ये अनुभव होते हैं ॥

तन्मात्रपंचकात्तस्मात्संजातंभूतपंचकं ॥ २ ॥
व्योमानिलानलजलक्षोणीरूपंचतन्मतम् ॥

अर्थ—पांच तन्मात्राओंसे ये आगे कहे पंचभूत उत्पन्न हुए ॥ २ ॥ आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी ॥

बुद्धींद्रियाणांपंचैवशब्दाद्याविषयामताः ॥ ३ ॥ कर्मेंद्रियाणांविषयाभाषादानविहारिताः ॥ आनंदोत्सर्गकौचैवकथितास्तत्त्वदर्शिभिः ॥ ४ ॥

अर्थ—कर्ण त्वचा नेत्र जिव्हा नासिका इन पांच ज्ञानेंद्रियोंके शब्द स्पर्श रूप रस गंध ये क्रमसे पांच विषय हैं ॥ ३ ॥ और वाणी हस्त पाद उपस्थ गुद इन पांच कर्म इंद्रियोंके भाषा आदान विहार आनंद उत्सर्ग ये क्रमसे पांच विषय तत्वके जाननेवालोंनें कहें हैं ॥ ४ ॥

प्रधानंप्रकृतिःशक्तिर्नित्याचाविकृतिस्तथा ॥
एतानितस्यानामानिशिवमाश्रित्ययास्थिता ॥ ५ ॥

अर्थ—ईश्वरके आश्रय होकै स्थित हुई जो शक्ति है तिसके प्रधान प्रकृति शक्ति नित्या अविकृति ये नाम कहे है ॥ ५ ॥

महानहंकृतिःपंचतन्मात्राणिपृथक्पृथक् ॥ प्रकृतिर्विकृतिश्चैवसप्तैतानिबुधाजगुः ॥ ६ ॥ दशेंद्रियाणिचित्तंचमहाभूतानिपंचच ॥ विकाराःषोडशज्ञेयाःसर्वंव्याप्यजगत्स्थिताः॥ ७ ॥

अर्थ—महतत्त्व अहंकार पृथक् पृथक् पांचतन्मात्रा पंडित इन सातोंको प्रकृति और विकृति कहते हैं ॥ ६ ॥ और दशइंद्रिय चित्त पंचमहाभूत ये सोलह विकार संपूर्ण जगत्को व्याप्त होके स्थित हैं ॥ ७ ॥

एवंचतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैःसिद्धेवपुर्गृहे ॥ जीवात्मानियतोनित्यंवसतिंस्वातदूतवान् ॥ ८ ॥ सदेहीकथ्यतेपापपुण्यद्दुःखसुखादिभिः ॥ व्याप्तोबद्धश्चमनसाकृत्रिमैःकर्मबंधनैः ॥ ९ ॥

अर्थ—ऐसे पूर्व कहे चोवीस तत्वोंकरके जब शरीररूप घर उत्पन्न हो गया

तब जीवात्मा उसमें नित्य वसता है ॥ ८ ॥ सो देही कहिये है सो पाप पुण्य दुःख सुखादिकोंकरकै व्याप्त हुआ और कृत्रिम कर्मबंधन और मनकरके बंधा हुआ ॥९॥

आप्नोतिबंधमज्ञानादात्मज्ञानाच्चमुच्यते ॥
तद्दुःखयोगकृद्व्याधिरारोग्यंतत्सुखावहं ॥ २१० ॥

अर्थ–अज्ञानसे तो बंधको प्राप्त होता है और आत्मज्ञानसे छुट जाता है और तिसके दुःख योग करनेवाला व्याधि कहा है और सुख करनेवाला आरोग्य कहा है ॥ २१० ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां प्रथमखंडे कलादिकाख्यानकं नाम पंचमोध्यायः ॥ ९ ॥

अथ षष्ठोध्यायः ।

यात्यामाशयमाहारःपूर्वंप्राणानिलेरितः ॥ माधुर्यंफेनभावं चषड्रसोपिलभेतसः ॥ ११ ॥ अथपाचकपित्तेनविदग्धश्चाम्लतांव्रजेत् ॥ ततःसमानमरुताग्रहणीमभिधीयते ॥ १२ ॥ ग्रहण्यांपच्यतेकोष्ठवह्निनाजायतेकटुः ॥

अर्थ–पहले प्राणवायुसे प्रेरा आहार आमाशयको प्राप्त होता है पीछे सो आहार छः रसवालाभी मधुरता और फेनभावको प्राप्त होता है ॥ ११ ॥ पीछे पाचक पित्तकरके विदग्ध हुआ खटाईको प्राप्त होता है फिर समानवायु करके ग्रहणीमें प्राप्त करिये है ॥ १२ ॥ ग्रहणीमें कोष्ठ अग्निसे पकाइये है पीछे वह कटु हो जाता है ॥

रसोभवतिसंपक्कादपक्कादामसंभवः ॥ १३ ॥

अर्थ–सो भोजन अच्छी तरह पकनेसे रस हो जाता है और नहीं पकनेसे आम हो जाता है ॥ १२ ॥

वह्नेर्बलेनमाधुर्यंस्निग्धतांयातितद्रसः ॥ पुष्णातिधातूनखिलान्सम्यक्पक्कोऽमृतोपमः ॥ १४ ॥ मंदवह्निविदग्धश्चकटुश्चाम्लोभवेद्रसः ॥ विषभावंव्रजेद्वापिकुर्याद्वारोगसंकरम् ॥१५॥

अर्थ–पीछे अग्निके बलसे वह रस स्निग्धता और मधुरताको प्राप्त होता है

और अच्छी तरहसे पका हुआ यह अमृतकी तुल्य संपूर्ण धातुओंको पुष्ट करता है ॥ १४ ॥ और मंद अग्निसे पका हुआ रस खट्टा और खारी हो जाता है और विषकी तुल्य हो जाता है और रोग पैदा कर देता है ॥ १५ ॥

आहारस्यरसःसारःसारहीनोमलद्रवः ॥ शिराभिस्तज्जलंनी-
तंबस्तौमूत्रत्वमाप्नुयात् ॥ १६ ॥ तत्किट्टंचमलंज्ञेयंतिष्ठेत्प-
क्वाशयेचतत् ॥

अर्थ–आहारका रस सार है और सारहीन मल और द्रव अर्थात् जल कहा है सो जल नाडियोंकरके बस्तिमें प्राप्त किया मूत्र हो जाता है ॥ १६ ॥ और तिसका किट्ट जो है सो मल जानना सो पक्वाशयमें ठहरता है ॥

वलित्रितयमार्गेणयात्यपानेननोदितं ॥ १७ ॥
प्रवाहिनीसर्जनीचग्राहिकेतिवलित्रयं ॥

अर्थ–अपान वायुका प्रेरित मल वलित्रितयमार्ग करके निकलता है ॥ १७ ॥ प्रवाहिनी सर्जनी ग्राहिका ऐसे तीन वलि कही हैं ॥

रसस्तुहृदयंयातिसमानमरुतेरितः ॥ १८ ॥
रंजितःपाचितस्तत्रपित्तेनायातिरक्ततां ॥

अर्थ–समानवायुका प्रेरा रस हृदयको प्राप्त होता है ॥ १८ ॥ सो पित्तसे रंजित किया और पकाया रक्त हो जाता है ॥

रक्तंसर्वशरीरस्थंजीवस्याधारमुत्तमं ॥ १९ ॥
स्निग्धंगुरुचलंस्वादुविदग्धंपित्तवद्भवेत् ॥

अर्थ–रक्त संपूर्ण शरीरमें स्थित है और जीवका उत्तम आधार है ॥ १९ ॥ और स्निग्ध है गुरु है चल है स्वादु है पित्तकी तरह विदग्ध है ॥

पाचिताःपित्ततापेनरसाद्याधातवःक्रमात् ॥ २२० ॥
शुक्रत्वंयांतिमासेनतथास्त्रीणांरजोभवेत् ॥

अर्थ–पित्तका ताप करके रसादि धातुक्रमसे पकाई हुई ॥ २२० ॥ वीर्यभावको प्राप्त होता है और तैसेही एक महीना करके स्त्रीके रज हो जाता है ॥

कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः ॥ २१ ॥
गर्भःसंजायतेनार्याःसजातोबालउच्यते ॥

अर्थ–कामसे मिथुनके संयोगमें शुद्ध शोणित और शुक्रसे स्त्रीके गर्भ उत्पन्न होता है सो पश्चात् बालक हो जाता है ॥ २१ ॥

आधिक्येरजसःकन्यापुत्रःशुक्राधिकोभवेत् ॥ २२ ॥
नपुंसकंसमत्वेनयथेच्छापारमेश्वरी ॥

अर्थ–शोणित अधिक होवे तो कन्या होवे और वीर्य अधिक होवे तो पुत्र होवे ॥ २२ ॥ दोनों सम होनेसे नपुंसक होवे अथवा जैसी ईश्वरकी इच्छा होय ॥

बालस्यप्रथमेमासिदेयाभेषजरक्तिका ॥ २३ ॥ अवलेहीकृ-
तैकैवक्षीरक्षौद्रसिताघृतैः ॥ वर्धयेत्तावदेकैकांयावद्भवतिवत्सरः ॥

अर्थ–बालकको पहले महीनेमें दूध शहत मिसरी घृत मिलाके सुवर्ण आदि औषध एक रत्ती देवे ॥ २३ ॥ और जबतक एक वर्ष होवे एक एक रत्ती वढे ॥ २४ ॥

माषैर्वृद्धिस्तदूर्ध्वंस्याद्यावत्षोडशवत्सरः ॥ ततःस्थिराभवे-
त्तावद्यावद्वर्षाणिसप्ततिः ॥ २५ ॥ ततोबालकवन्मात्राह्रास-
नीयाशनैःशनैः ॥ मात्रेयंकल्कचूर्णानांकषायाणांचतुर्गुणा॥२६॥

अर्थ–एक वर्षसे ऊपर एक एक मासाकी वर्ष गैल वृद्धि करे सोलह वर्षप-र्यंत फिर सत्तर वर्षतक स्थिर हो जाता है ॥ २५ ॥ तिसके पीछे बालककी तरह हौलें हौलें मात्रा घटानी उचित है यह मात्रा कल्कचूर्ण और कषायोंकी चौगुनी ग्रहण करनी ॥ २६ ॥

अंजनंचतथालेपःस्नानमभ्यंगकर्मच ॥ वमनंप्रतिमर्शश्चज-
न्मप्रभृतिशस्यते ॥ २७ ॥ कवलःपंचमाद्वर्षादष्टमान्नस्यकर्म-
च ॥ विरेकःषोडशाद्वर्षाद्विंशतेश्चैवमैथुनं ॥ २८ ॥

अर्थ–अंजन लेप स्नान मालिश वमन निरूहण वस्ति ये सब जन्मसे आदि लेकर श्रेष्ठ कहे है ॥ २७ ॥ पांचवा वर्षसे उपरांत कवल आदि कहे हैं और आठ वर्षसे ऊपर नस्य करावे और सोलह वर्षसे उपरांत जुलाब और वीस वर्षसे उप-रांत मैथुन ॥ २८ ॥

बाल्यंवृद्धिर्वपुर्मेधात्वग्दृष्टिःशुक्रविक्रमौ ॥
बुद्धिःकर्मेंद्रियंचेतोजीवितंदशतोह्रसेत् ॥ २९ ॥

अर्थ—बाल्य वृद्धि वपु मेधा त्वग् दृष्टि वीर्य विक्रम बुद्धि कर्मइंद्रिय चेत जीवित ये सब दश दश वर्षके अनंतर ह्रासको प्राप्त होते हैं अर्थात् घटते है ॥ २९ ॥

अल्पकेशःकृशोरूक्षोवाचालश्चलमानसः ॥
आकाशचारीस्वप्नेषुवातप्रकृतिकोनरः ॥ २३० ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके थोडे बाल होवें दुबला हो रूक्ष हो वकवादी हो चंचल मनवाला हो स्वप्नमें आकाशमें उडे ये सब लक्षण वातवाला मनुष्यके कहे है २३०

अकालेपलितैर्व्याप्तोधीमान्स्वेदीचरोषणः ॥
स्वप्नेषुज्योतिषांद्रष्टापित्तप्रकृतिकोनरः ॥ ३१ ॥

अर्थ—विना समयमें सफेद वाल हो जावे बुद्धिमान् होवे पसीना आवे क्रोध होवे स्वप्नमें चंद्रमा सूर्य आदिकोंको देखे इन लक्षणोंसे पित्तवाला पुरुष कहना ३१

गंभीरबुद्धिःस्थूलांगःस्निग्धकेशोमहाबलः ॥
स्वप्नेजलाशयालोकीश्लेष्मप्रकृतिकोनरः ॥ ३२ ॥

अर्थ—गंभीर बुद्धिवाला मोटे अंगवाला चिकने वालोंवाला बहुत बलवान् स्वप्नमें कूवा वापि आदिकोको देखनेवाला ऐसे मनुष्य होवे तो कफकी प्रकृतिवाला कहना ॥ ३२ ॥

ज्ञातव्यामिश्रचिन्हैश्चद्वित्रिदोषोल्बणानराः ॥ तमःकफाभ्यांनिद्रास्यान्मूर्च्छापित्ततमोद्भवा ॥ ३३ ॥ रजःपित्तानिलैर्भ्रान्तिस्तंद्राश्लेष्मतमोनिलैः ॥ ग्लानिरोजक्षयाद्दुःखादजीर्णाच्चश्रमाद्भवेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ—दो दोषोंके मिलेलक्षणों करके द्विदोषज प्रकृति कहनी और तीन दोषोंके मिलेलक्षणों करके त्रिदोषज प्रकृति कहनी तमोगुण और कफ करके निद्रा आती है पित्त और तमोगुणसें मूर्च्छा होती है ॥ ३३ ॥ और रजोगुण पित्तवायु इन्हों करके भ्रांति होती है और कफ तमोगुण वायु इन्हों करके तंद्रा होती है और ओजके क्षयसे दुःखसे अजीर्णसे श्रमसे ग्लानि होती है ॥ ३४ ॥

यःसामर्थ्येप्यनुत्साहस्तदालस्यमुदीर्यते ॥

अर्थ—जो सामर्थ होतेभी उत्साह नहीं होना तिसकों आलस्य कहते हैं ॥

चैतन्यशिथिलत्वाद्यःपीत्वैकश्वासमुद्वमेत् ॥ ३५ ॥
विदीर्णवदनःश्वासंजृंभासाकथ्यतेबुधैः ॥

अर्थ–चैतन्यके शिथिल होनेसे जो पुरुष एक श्वासको पीके ॥ ३५ ॥ और मुख फाडके श्वासको छोडदेवे तिसको बुध जंभाई कहते हैं ॥

उदानप्राणयोरूर्ध्वयोगान्मौलिकफस्रवात् ॥ ३६ ॥
शब्दःसंजायतेतेनक्षुतंतत्कथ्यतेबुधैः ॥

अर्थ–उदान और प्राणवायुका ऊर्ध्वयोग करकै मस्तकसे जो कफ झिरता है ॥ ३६ ॥ और उससे जो शब्द होता है तिसको बुद्धिमान् छींक कहते हैं ॥

उदानकोपादाहारस्वास्थितत्वाच्चयद्भवेत् ॥ ३७ ॥
पवनस्योर्ध्वगमनंतमुद्गारंप्रचक्षते ॥

अर्थ–उदान वायुके कोपसे और आहारके स्वथित होनेसे जो पवनका ऊर्ध्व गमन होवे तिसको डकार कहते हैं ॥ ३७ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थ-दीपिकायां प्रथमखंडे आहारादिगतिकथनं नाम षष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोध्याय।

रोगाणांगणनापूर्वंमुनिभिर्याप्रकीर्तिता ॥ ३८ ॥ मयात्रप्रोच्यतेसैवतद्भेदाबहवोमताः ॥ पंचविंशतिरुद्दिष्टाज्वरास्तद्भेदउच्यते ॥ ३९ ॥

अर्थ–रोगोंकी गिन्ती पहले जो मुनियोंनें कही है ॥ ३८ ॥ सोही अब मैंने कहिये है तिसके भेद बहुत माने हैं ज्वर पच्चीस प्रकारके कहे है तिसको भेद कहियें हैं ॥ ३९ ॥

पृथग्दोषैस्तथाद्वंद्वभेदेनत्रिविधःस्मृतः ॥
एकश्चसन्निपातेनतद्भेदाबहवःस्मृताः ॥ २४० ॥

अर्थ–पृथक् दोषों करके तथा दो दोषों करके तीनप्रकारका माना है और एक ज्वर सन्निपात करके माना है तिसके भेद बहुत माने हैं ॥ २४० ॥

प्रायशःसन्निपातेनपंचस्युर्विषमज्वराः ॥
तथागंतुज्वरोप्येकस्त्रयोदशविधोमतः ॥ ४१ ॥

अर्थ-बहुत करके सन्निपातसे पांच प्रकारके ज्वर होते है और आगंतुक ज्वर एक है सो तेरह प्रकारका माना है ॥ ४१ ॥

अभिचारग्रहावेशशापैरागंतुकस्त्रिधा ॥ श्रमाद्दाहात्क्षताच्छे-
दाच्चतुर्धाघातकज्वरः ॥ ४२ ॥ कामाद्भीतेःशुचोरोषाद्विषा-
दौषधगंधतः ॥ अभिषंगज्वराःषट्स्युरेवंज्वरविनिश्चयः ॥४३॥

अर्थ-अभिचार ग्रहावेश शाप इन भेदोंसे आगंतुक तीन प्रकारका है और श्रम दाह चोट कटना इन भेदोंसे घातक ज्वर चार प्रकारका है ॥ ४२ ॥ और काम भय शोक रोष विष औषधकी गंध इन्होंसे छः प्रकारका अभिषंगज्वर होता है ऐसे ज्वरोंका निश्चय किया है ॥ ४३ ॥

पृथक्त्रिदोषैःसर्वैश्चशोकादामाद्भयादपि ॥ ४४ ॥
अतिसारःसप्तधास्यात्ग्रहणीपंचधामता ॥

अर्थ-पृथक् तीन दोषों करके और संपूर्ण दोषोंकरके शोकसे आमसे भयसे अतिसार सात प्रकारका कहा है ॥४४॥ और संग्रहणी पांच प्रकारकी मानी है ॥

पृथक्दोषैःसन्निपातात्तथाचामेनपंचमी ॥ ४५ ॥

अर्थ-न्यारे न्यारे दोषोंकरके तीन सन्निपात करके चौथी और आम करके पांचमी ऐसे संग्रहणी है ॥ ४५ ॥

अजीर्णत्रिविधंप्रोक्तंविष्टब्धंवायुनामतं ॥ ४६ ॥ पित्ताद्विद-
ग्धंविज्ञेयंकफेनामंतदुच्यते ॥ विषाजीर्णरसादेकंदोषैःस्याद-
लसस्त्रिधा ॥ ४७ ॥

अर्थ-अजीर्ण तीनप्रकारका है विष्टब्धवायु करके होता है ॥ ४६ ॥ पित्तसे तो विदग्ध अजीर्ण होता है और कफ करके आमयुक्त अजीर्ण होता है और रससे विषाजीर्ण होता है दोषोंकरके अलस तीन प्रकारका है ॥ ४७ ॥

विषूचीत्रिविधाप्रोक्तादोषैःसास्यात्पृथक्पृथक् ॥
दंडकालसकश्चैकएकैवस्याद्विलंबिका ॥ ४८ ॥

अर्थ-पृथक् पृथक् दोषोंकरके विषूकी तीनप्रकारकी है और दंडकालस एक है और विलंबिका एकप्रकारकी है ॥ ४८ ॥

अर्शांसिषड्विधान्याहुर्वातपित्तकफास्त्रतः ॥ संनिपाताच्चसं-

सर्गात्तेषांभेदोद्विधास्मृतः ॥ ४९ ॥ सहजोत्तरजन्मभ्यांतथा शुष्कार्द्रभेदतः ॥

अर्थ—ववासीर छः प्रकारका है वात पित्त कफ रक्त इन भेदोंकरके और संनिपातसे संसर्गसे तिनका भेद दो प्रकारका है ॥ ४९ ॥ एक जहस और जन्मसे उपरंत मिथ्या हारादिकूसैं दूजा शुष्क और आर्द्र भेद करके ॥

त्रिधैवचर्मकीलानिवातात्पित्तात्कफादपि ॥ २५० ॥

अर्थ—ववासीरका भेद चर्मकील तीनहीं प्रकारका है वातसे पित्तसे कफसे२५०

एकविंशतिभेदेनकृमयःस्युर्द्विधोच्यते ॥ बाह्यास्तथाभ्यंतरेच-तेष्ठुयूकाबहिश्चराः ॥ ५१ ॥ लिख्याश्चान्येंऽतरचराःकफात्ते हृदयादकाः ॥ अंत्रादाउदरावेष्टाश्चुरवश्चमहागुहाः ॥ ५२ ॥ सुगंधादर्भकुसुमास्तथारक्ताश्चमातराः ॥ सौरसालोमविध्वं-सारोमद्वीपाउदुंबराः ॥५३॥ केशादाश्चतथैवान्येशकृज्जाताम-केरुकाः ॥ लेलिहाश्चमलूनाश्चसौसुरादाःककेरुकाः ॥ ५४ ॥ तथान्यःकफरक्ताभ्यांसंजातःस्नायुकःस्मृतः ॥

अर्थ—कृमि इकीस प्रकारके हैं तिनमैंभी दो भेद है वाहर होनेवाले औ भीतर होनेवाले वाहर होनेवाले जूम् और ल्हीख हैं ॥ ५१ ॥ छोठी जूम हैं अठारह प्रकारके अंदर है सो गिनाते है हृदयादक १ अंत्राद २ उदरावेष्ट ३ चुरव ४ महागुह ॥ ५२ ॥ ५ सुगंध ६ दर्भकुसुम ७ ये सात प्रकारके कृमि कफसे होते हैं और मातर १ सो रस २ लोमविध्वंस ३ रोमद्वीप ४ उदुंवर ५ ॥ ५३ ॥ केशाद ६ ये छः प्रकारके रक्तसे होते हैं और मकेरुक १ लेलिह २ मलून ३ सौसुराद ४ ककेरुक ५ ॥ ५४ ॥ ये पांचप्रकारके मलसैं होते है और कफरक्तसे जो पैदा होवे तिसको स्नायुक कहते हैं ऐसे वाह्य भीतर भेद करके २१ प्रकारके हैं ॥

पांडुरोगाश्चपंचस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा ॥ ५५ ॥ त्रिदोषैर्मृत्ति-काभिश्चतथैकाकामलास्मृता ॥ स्यात्कुंभकामलाचैकातथैव चहलीमकम् ॥ ५६ ॥

अर्थ—पांडुरोग पांचप्रकारका है वात पित्त कफ ॥ ५५ ॥ त्रिदोष मृत्तिका इन्होंकरके कामला और कुंभकामला एक प्रकारका है और हलीमकभी एकही प्रकारका है ॥ ५६ ॥

रक्तपित्तंत्रिधाप्रोक्तमूर्ध्वगंकफसंगतम् ॥
अधोगंमारुताज्ज्ञेयंतद्वयेनद्विमार्गगम् ॥ ५७ ॥

अर्थ–रक्तपित्त तीनप्रकारका है ऊपरको आनेवाला कफसे होता है नीचेको जानेवाला वायुसे और कफवायुसे दोनों मार्ग होके आता है ॥ ५७ ॥

कासाःपंचसमुद्दिष्टास्तेत्रयस्तुत्रिभिर्मलैः ॥
उरःक्षताच्चतुर्थःस्यात्क्षयाद्धातोश्चपंचमः ॥ ५८ ॥

अर्थ–खांसी पांचप्रकारकी कही है तिन्होंमें तीन तो तीन दोषोंकरके होती है और चौथी हृदयमें जोर पडनेसे और पांचवी धातुके क्षय होनेसे ॥ ५८ ॥

क्षयाःपंचैवविज्ञेयास्त्रिभिर्दोषैस्त्रयश्चते ॥
चतुर्थःसन्निपातेनपंचमःस्यादुरःक्षतात् ॥ ५९ ॥

अर्थ–क्षय पांचप्रकारका कहा है तीन तो तीन दोषोंकरके चौथा सन्निपात करके पांचवा उरःक्षत अर्थात् हृदयमें घाव होनेसे ॥ ५९ ॥

शोषाःस्युःषट्प्रकारेणस्त्रीप्रसंगाच्छुचोव्रणात् ॥
अध्वश्रमाच्चव्यायामाद्वार्द्धकादपिजायते ॥ २६० ॥

अर्थ–क्षयका भेद शोषरोग कहा है सो स्त्रीप्रसंगसे शोकसे व्रणसे मार्ग चलनेसे कसरतसे बूढापासे उत्पन्न होता है ॥ २६० ॥

श्वासाश्चपंचविज्ञेयाःक्षुद्रःस्यात्तमकस्तथा ॥
ऊर्ध्वश्वासोमहाश्वासश्छिन्नश्वासश्चपंचमः ॥ ६१ ॥

अर्थ–श्वास पांचप्रकारका कहा है क्षुद्र तमक ऊर्ध्वश्वास महाश्वास छिन्नश्वास ऐसे पांच प्रकारका है ॥ ६१ ॥

कथिताःपंचहिक्कास्तुतासुंक्षुद्रान्नजातथा ॥
गंभीरायमलाचैवमहतीपंचमीतिच ॥ ६२ ॥

अर्थ–हिचकी पांचप्रकारकी है क्षुद्रा अन्नजा गंभीरा यमला महती ॥ ६२ ॥

चत्वारोऽग्निविकाराःस्युर्विषमोवातसंभवः ॥
तीक्ष्णःपित्तात्कफान्मंदोभस्मकोवातपित्तकः ॥ ६३ ॥

अर्थ–चार अग्निके विकार हैं वातसे विषम होता है पित्तसे तीक्ष्ण कफसे मंद वातपित्तसे भस्मक विकार होता है ॥ ६३ ॥

पंचैवारोचकाज्ञेयावातपित्तकफैस्त्रिधा ॥ सन्निपातान्मनस्तापा-

अर्थ-तैसेही अरोचकही पांच प्रकारके जाणने वातसे १ कफसे २ पित्तसे ३ इन तीनवोंसे सन्निपातसे ४ संतापसे ५

च्छर्दयःसप्तधामताः ॥ ६४॥ त्रिभिर्दोषैःपृथक्तिस्त्रःकृमिभिः सन्निपाततः ॥ घृणयाचतथास्त्रीणागर्भाधानाच्चजायते ॥ ६५ ॥

अर्थ-छर्दी अर्थात् कअ सात प्रकारकी कही है ॥ ६४ ॥ वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ कृमियोंसे ४ सन्निपातसे ५ कृपासे अर्थात् अमेध्य वस्तुके ग्लानीसें ६ और स्त्रियोंके गुर्भाधानसे ७ ॥ ६५ ॥

स्वरभेदाःषडेवस्युर्वातपित्तकफैस्त्रयः ॥
मेदसासन्निपातेनक्षयात्षष्ठःप्रकीर्तितः ॥ ६६ ॥

अर्थ-स्वरभेद छः प्रकारका कहा है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ मेदसे ४ सन्निपातसे ५ क्षयसे ६ ॥ ६६ ॥

तृष्णाचषड्विधाप्रोक्तावातात्पित्तात्कफादपि ॥
त्रिदोषैरुपसर्गेणक्षयाद्धातोश्चषष्ठिका ॥ ६७ ॥

अर्थ-तृष्णा अर्थात् प्यास छः प्रकारकी कही है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ इन तीनवोंसे ४ उपसर्गसे ५ धातुका क्षयसे ६ ऐसे छः प्रकारकी है ॥ ६७ ॥

मूर्छाचतुर्विधाज्ञेयावातपित्तकफैःपृथक् ॥ चतुर्थीसन्निपातेन—

अर्थ-मूर्च्छा चार प्रकारकी है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ ॥

तथैकश्चभ्रमःस्मृतः ॥ ६८ ॥ निद्रातंद्राचसंन्यासोग्लानिश्चै-कैकशःस्मृतः ॥

अर्थ-भ्रम एक प्रकारका कहा है ॥ ६८ ॥ और निद्रा तंद्रा संन्यास ग्लानि ये सब एक एक प्रकारके कहे हैं ॥

मदाःसप्तसमाख्यातावातपित्तकफैस्त्रयः ॥ ६९ ॥
त्रिदोषैरसृजोमद्याद्विषादपिचसप्तमः ॥

अर्थ-मदरोग सात प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ ६९ ॥ इ-नतीनवोंसे ४ रुधिरसे ५ मदिरासे ६ सातवों विषसे ७ ॥

मदात्ययश्चतुर्धास्याद्वातात्पित्तात्कफादपि ॥ २७० ॥ त्रिदो-

६

पैरपिविज्ञेयएकःपरमदस्तथा ॥ पानाजीर्णंतथाचैकंतथैकः पानविभ्रमः ॥ ७१ ॥ पानात्ययस्तथाचैको—

अर्थ—मदात्ययरोग चार प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ ७० ॥ त्रिदोषसे ४ और परमद पानाजीर्ण पानविभ्रम ॥ ७१ ॥ पानात्यय ये चार मदात्ययके भेद कहे हैं ॥

दाहाःसप्तमतास्तथा ॥ ७२ ॥ रक्तपित्तात्तथारक्तात्तृष्णायाः पित्ततस्तथा ॥ धातुक्षयान्मर्मघाताद्रक्तपूर्णोदरादपि ॥ ७३ ॥

अर्थ—दाह सात प्रकारका माना है ॥ ७२ ॥ रक्तपित्तसे १ रक्तसे २ तृष्णासे ३ पित्तसे ४ धातुक्षयसे ५ मर्मघातसे ६ रक्त करकै भराउदरसे ७ ॥ ७३ ॥

उन्मादाःषट्समाख्यातास्त्रिभिर्दोषैस्त्रयश्चते ॥
सन्निपाताद्विषाज्ज्ञेयःषष्ठोदुःखेनचेतसः ॥ ७४ ॥

अर्थ—उन्माद रोग छः प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ विषसे ५ छठा दुःख करके ६ ॥ ७४ ॥

भूतोन्मादाविंशतिःस्युस्तद्देवाद्दानवादपि ॥ गंधर्वात्किन्नराद्यक्षात्पितृभ्यो गुरुशापतः ॥ ७५ ॥ प्रेताच्चगुह्यकाद्वृद्धात्सिद्धाद्भूतात्पिशाचतः ॥ जलादिदेवतायाश्चनागाच्चब्रह्मराक्षसात् ॥ ७६ ॥ राक्षसादपिकूष्मांडात्कृत्यावेतालयोरपि ॥

अर्थ—भूतोन्माद वीस प्रकारका है देवतासे १ दानवसे २ गंधर्वसे ३ किन्नरसे ४ यक्षसे ५ पितरोंसे ६ गुरुशापसे ७ ॥ ७५ ॥ प्रेतसे ८ गुह्यकसे ९ वृद्धसे १० सिद्धसे ११ भूतसे १२ पिशाचसे १३ जलादि देवतासे १४ नागसे १५ ब्रह्मराक्षससे १६ ॥ ७६ ॥ राक्षससे १७ कूष्मांडसे १८ कृत्यासे १९ वेतालसे २० ॥

अपस्मारश्चतुर्धास्यात्समीरात्पित्ततस्तथा ॥ ७७ ॥
श्लेष्मणोऽपितृतीयःस्याच्चतुर्थःसन्निपाततः ॥

अर्थ—अपस्माररोग चार प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ ॥ ७७ ॥ कफसे ३ सन्निपातसे ४ ऐसे चार प्रकारके कहे हैं ॥

चत्वारश्चामवाताःस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा ॥ ७८ ॥
चतुर्थःसन्निपाताच्च—

अर्थ–आमवात चार प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ ७८ ॥ और चौथा सन्निपातसे ॥

शूलान्यष्टौबुधाजगुः ॥ पृथग्दोषैस्त्रिधाद्वंद्वभेदेनात्रिविधान्यपि ॥ ७९ ॥ आमेनसप्तमंप्रोक्तंसन्निपातेनचाष्टमं ॥

अर्थ–शूल आठ प्रकारका कहा है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ वातपित्तसे ४ पित्तकफसे ५ कफवातसे ६ ॥ ७९ ॥ आमसे ७ सन्निपातसे ८ ऐसे आठ प्रकारका कहा है ॥

परिणामभवंशूलमष्टधापरिकीर्तितं ॥ ८० ॥ मलैर्यैःशूलसंख्यास्यात्तैरेवपरिणामजे ॥ अन्नद्रवभवंशूलंजरत्पित्तभवंतथा ॥ ८१ ॥ एकैकंगणितंसुज्ञैः—

अर्थ–परिणामज शूल आठ प्रकारका है ॥ ८० ॥ सो पूर्व शूलमें कहे दोषोंसे जाणने और अन्नद्रवज शूल और जरत्पित्त शूल ॥ ९१ ॥ बुद्धिमानोनें एक एक प्रकारका कहा है ॥

उदावर्तास्त्रयोदश ॥ एकःक्षुधानिग्रहजस्तृष्णारोधाद्द्वितीयकः ॥ ८२ ॥ निद्राघातात्तृतीयःस्याच्चतुर्थःश्वासनिग्रहात् ॥ छर्दिरोधात्पंचमःस्यात्षष्ठःक्षवथुनिग्रहात् ॥ ८३ ॥ जृंभारोधात्सप्तमःस्यादुद्गारग्रहतोऽष्टमः ॥ नवमःस्यादश्रुरोधाद्दशमःशुक्रवारणात् ॥ ८४ ॥

अर्थ–उदावर्त्तरोग तेरह प्रकारका कहा है भूषके रोकनेसें एक तृषाके रोकनेंसे दूसरा ॥ ८२ ॥ नींदके रोकनेंसे तीसरा श्वासके रोकनेंसे चौथा छर्दिके रोकनेंसे पांचमां छींकके रोकनेंसे छठा ॥ ८३ ॥ जंभाईके रोकनेंसे सातमां डकारके रोकनेंसे आठमां आंशुके रोकनेंसे नवमां और वीर्यके रोकनेंसे दशमां ॥ ८४ ॥

मूत्ररोधान्मलस्यापिरोधाद्वातविनिग्रहात् ॥
उदावर्तास्त्रयश्चैतेघोरोपद्रवकारकाः ॥ ८५ ॥

अर्थ–मूत्र रोकनेसे ग्यारहमां मलके रोकनेंसे वारहमा वातके रोकनेंसे तेरहमां ऐसे तीन उदावर्त घोर उपद्रव करते हैं ॥ ८५ ॥

आनाहोद्विविधःप्रोक्तएकःपक्काशयोद्भवः ॥
आमाशयोद्भवश्चान्यःप्रत्यानाहःसकथ्यते ॥ ८६ ॥

अर्थ—आनाह अर्थात् आफरा दो प्रकारका कहा है एक पक्काशयसे होने वाला दूसरा आमाशयसे उस आनाहको प्रत्यानाह भी कहते हैं ॥ ८६ ॥

उरोग्रहस्तथाचैकोहृद्रोगाःपंचकीर्तिताः ॥ वातादिभिस्त्रयः प्रोक्ताश्चतुर्थःसन्निपाततः ॥ ८७ ॥ पंचमःकृमिसंजात—

अर्थ—उरोग्रह एक प्रकारका है और हृद्रोग पांच प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सनिपातसे ४ ॥ ८७ ॥ पंचवां कृमियोंसे ५ ॥

स्तथाष्टावुदराणिच ॥ वातात्पित्तात्कफात्त्रीणित्रिदोषेभ्यो जलादपि ॥ ८८ ॥ प्लीहःक्षताद्बद्धगुदादष्टमंपरिकीर्तितम् ॥

अर्थ—उदररोग आठ प्रकारके हैं वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ तीन दोषोंसे ४ जलसे ॥ ८८ ॥ ५ तिल्लीसे ६ क्षतसे ७ गुदके रुकनेसे आठमां कहा है ८ ॥

गुल्मास्त्वष्टौसमाख्यातावातपित्तकफैस्त्रयः ॥ ८९ ॥ द्वंद्वभेदात्त्रयःप्रोक्ताःसप्तमःसन्निपाततः ॥ रक्तस्त्वष्टमआख्यातो—

अर्थ—गुल्मरोग आठ प्रकारका कहा है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ वातपित्तसे ४ पित्तकफसे ५ कफवातसे ६ सन्निपातसे ७ रक्तसे ८ आठमां कहा है

मूत्रघातास्त्रयोदश ॥ ९० ॥ वातकुंडलिकापूर्ववाताष्ठीला ततःपरम् ॥ वातबस्तिस्तृतीयःस्यान्मूत्रातीतश्चतुर्थकः॥९१॥ पंचमंमूत्रजठरंषष्ठोमूत्रक्षयःस्मृतः ॥ मूत्रोत्सर्गःसप्तमःस्यान्मूत्रग्रंथिस्तथाष्टमः ॥ ९२ ॥ मूत्रशुक्रंतुनवमंविड्घातोदशमः स्मृतः ॥ मूत्रासादश्चोष्णवातोबस्तिकुंडलिकातथा ॥ ९३ ॥ त्रयोऽप्येतेमूत्रघाताःपृथग्घोराःप्रकीर्तिताः ॥

अर्थ—मूत्राघात तेरह प्रकारके कहे है ॥ ९० ॥ वातकुंडलिका १ वाताष्ठीला २ वातबस्ति ३ मूत्रातीत ४ ॥ ९१ ॥ मूत्रजठर ५ मूत्राशय ६ मूत्रोत्सर्ग ७ मूत्रग्रंथि ८ ॥ ९२ ॥ मूत्रशुक्र ९ विड्घात १० मूत्रासाद ११ उष्णवात १२ वस्तिकुंडलिका १३ ॥ ९३ ॥ ऐसे तेरह प्रकारके कहे हैं तिन्होंमें पिछले तीन घोरसंकट करणेवाले हैं ॥

मूत्रकृच्छ्राणिचाष्टौस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा ॥ ९४ ॥ सन्निपा-

ताश्चतुर्थस्याच्छुक्रकृच्छ्रंतु पंचमम् ॥ विट्कृच्छ्रंषष्ठमाख्यातं-
घातकृच्छ्रंचसप्तमम् ॥ ९५ ॥ अष्टमंचाश्मरीकृच्छ्रम्—

अर्थ—मूत्रकृच्छ्र आठ प्रकारका कहा है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ ९४ ॥ सन्निपातसे ४ शुक्रसे ५ विष्ठासे ६ घातसे ७ पथरीसे ८ ऐसे आठ प्रकारका है ॥

चतुर्धाचाश्मरीमता ॥ वातात्पित्तात्कफाच्छुक्रात्-

अर्थ—पथरी चार प्रकारकी कही है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ शुक्रसे ४ ऐसे चार प्रकारकी पथरी कही है ॥

तथामेहाश्चविंशतिः ॥ ९६ ॥ इक्षुमेहःसुरामेहःपिष्टमेहश्च
सांद्रकः ॥ शुक्रमेहोदकाख्यौचलालामेहश्चशीतकः ॥ ९७ ॥
सिकताह्वःशनैर्मेहोदशैतेकफसंभवाः ॥ मंजिष्ठाख्योहरिद्रा-
ह्वोनीलमेहश्चरक्तकः ॥ ९८ ॥ कृष्णमेहःक्षारमेहःषडेतेपि-
त्तसंभवाः ॥ हस्तिमेहोवसामेहोमज्जामेहोमधुप्रभः ॥ ९९ ॥
चत्वारोवातजामेहाइतिमेहाश्चविंशतिः ॥

अर्थ—प्रमेहरोग वीस प्रकारका है ॥ ९६ ॥ इक्षुमेह १ सुरामेह २ पिष्टमेह ३ सांद्रकमेह ४ शुक्रमेह ५ उदकमेह ६ लालामेह ७ शीतकमेह ८ ॥ ९७ ॥ सिकतामेह ९ शनैर्मेह १० ये दशप्रकारके प्रमेह कफसे उपजते हैं और मंजिष्ठप्रमेह १ हरिद्रप्रमेह २ नीलप्रमेह ३ रक्तप्रमेह ४ ॥ ९८ ॥ कृष्ण प्रमेह ५ सार प्रमेह ये छः प्रमेह पित्तसे उपजते हैं और हस्तिमेह १ वसामेह २ मज्जामेह ३ मधुमेह ४ ॥ ९९ ॥ ये चार वातसे उपजते है ऐसे मेह वीस हैं ॥

सोमरोगस्तथाचैकः—

अर्थ—सोमरोग एक प्रकारका है संपूर्ण शरीरमें जल क्षुभित होके सफेद योनिमार्गसे पडे उसे सोमरोग कहते हैं ॥

प्रमेहपिटिकादश ॥ ३०० ॥ शराविकाकच्छपिकापुत्रिणी-
विनतालजी ॥ मसूरिकासर्षपिकाजालिनीचविदारिका॥१॥
विद्रधिश्चदशैताःस्युःपिटिकामेहसंभवाः ॥

अर्थ—प्रमेहपिटिका दश प्रकारकी है ३०० शराविका १ कच्छपिका २ पुत्रिणी ३ विनता ४ अलजी ५ मसूरिका ६ सर्षपिका ७ जालिनी ८ विदारिका ९ विद्रधि १० ऐसे दस प्रकारकी प्रमेहपिटिका कही है ॥

मेदोदोषस्तथाचैकः—

अर्थ-मेदरोग एक प्रकारका है ॥

शोथरोगानवस्मृताः॥२॥दोषैःपृथक्द्वयैःसर्वैरभिघाताद्विषादपि ॥

अर्थ-शोथरोग नौ ९ प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ वातपित्तसे ४ पित्तकफसे ५ कफवातसे ६ त्रिदोषसे ७ अभिघातसे ८ विषसे ९ ऐसे नौ प्रकारका है ॥

वृद्धयःसप्तगदितावातात्पित्तात्कफेनच ॥ ३ ॥ रक्तेनमेदसा-मूत्रादंत्रवृद्धिश्चसप्तमा—

अर्थ-वृद्धिरोग अर्थात् अंडकोशका वढना आठ प्रकारसे हैं वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ रक्तसे ४ मेदसे ५ मूत्रसे ६ आंतोंसे ७ ऐसे सात प्रकारकी वृद्धि कही है ॥

अंडवृद्धिस्तथाचैकः—

अर्थ-अंडवृद्धि एक प्रकारकी है ॥

तथैकागंडमालिका ॥ ४ ॥ गंडापचीतिचैकास्याद्—

अर्थ-गंडमालिका एक प्रकारकी कही है और गलगंड अपची भी एकएकही प्रकारकी है ॥ ४ ॥

ग्रंथयोनवधामताः ॥ त्रिभिर्दोषैस्त्रयोरक्ताच्छिराभिर्मेदसो-व्रणात् ॥ ५ ॥ अस्थ्नामांसेननवमः—

अर्थ-ग्रंथिरोग आठ प्रकारका कहा है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ रक्तसे ४ नाडिसे ५ मेदसे ६ व्रणसे ७॥९॥ अस्थिसे ८ मांससे ९ ऐसे नौ प्रकारकी ग्रंथि कही है

षड्विधंस्यात्तथार्बुदम् ॥ वातात्पित्तात्कफाद्रक्तान्मांसादपि-चमेदसः ॥ ६ ॥

अर्थ-अर्बुदरोग छः प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ रक्तसे ४ मांससे ५ मेदसे ६ ॥ ६ ॥

श्लीपदंचत्रिधाप्रोक्तंवातात्पित्तात्कफादपि ॥

अर्थ-श्लीपदरोग तीन प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३

विद्रधिःषड्विधःख्यातोवातपित्तकफैस्त्रयः ॥ ७ ॥ रक्तात्क्षता-त्त्रिदोषैश्च—

अर्थ–विद्रधि रोग छः प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ ७ ॥ रक्तसे ४ क्षतसे ५ त्रिदोषसे ६ ऐसे छः प्रकारका विद्रधि रोग कहा है ॥

व्रणाःपंचदशोदिताः ॥ तेषांचतुर्धाभेदःस्यादागंतुर्देहजस्तथा ॥ ८ ॥ शुद्धोदुष्टश्चविज्ञेयस्तत्संख्याकथ्यतेपृथक् ॥ वातव्रणःपित्तजश्चकफजोरक्तजोव्रणः ॥ ९ ॥ वातपित्तभवश्चान्योवातश्लेष्मभवस्तथा ॥ तथापित्तकफाभ्यांचसन्निपातेनचाष्टमः ॥१०॥ नवमोवातरक्तेनदशमोरक्तपित्ततः ॥ श्लेष्मरक्तभवश्चान्योवातपित्तासृगुद्भवः ॥११॥ वातश्लेष्मासृगुत्पन्नः पित्तश्लेष्मास्रसंभवः ॥ सन्निपातासृगुद्भूतइतिपंचदशव्रणाः॥१२

अर्थ–व्रण अर्थात् घाव पंदरह प्रकारका कहा है तिसके चार भेद कहे हैं आगंतुकव्रण १ देहजव्रण २ ॥ ८ ॥ शुद्धव्रण ३ दुष्टव्रण ४ इसप्रकार और वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ रक्तसे ४ ॥ ९ ॥ वातपित्तसे ५ वातकफसे ६ पित्तकफसे ७ सन्निपातसे ८ ॥ १० ॥ वातरक्तसे ९ रक्तपित्तसे १० कफरक्तसे ११ वातपित्तरक्तसे १२ वातकफरक्तसे ॥ ११ ॥ १३ पित्तकफरक्तसे १४ सन्निपातरक्तसे १५ इसप्रकार पंदरह प्रकारका व्रण जाणना ॥ १२ ॥

सद्योव्रणस्त्वष्टधास्यादवक्रूप्तविलंबितौ ॥
छिन्नभिन्नप्रचलितावृष्टविद्धनिपातिताः ॥ १३ ॥

अर्थ–सद्योव्रण अर्थात् आगंतुकव्रण आठ प्रकारका है अवक्रूप्त १ विलंबित २ छिन्न ३ भिन्न ४ प्रचलित ५ घृष्ट ६ विद्ध ७ निपातित ८ इसप्रकार आगंतुकव्रण आठ प्रकारका कहा है ॥ १३ ॥

कोष्ठभेदोद्विधाप्रोक्तश्छिन्नांत्रोनिःसृतांत्रकः ॥

अर्थ–कोष्ठरोगके दो भेद हैं एक छिन्नांत्रक १ दूसरा निःसृतांत्रक २ ॥

अस्थिभंगोऽष्टधाप्रोक्तोभग्नपृष्ठविदारिते ॥ १४ ॥ विवर्तितश्चविश्लिष्टस्तिर्यक्क्षिप्तस्त्वधोगतः ॥ ऊर्ध्वगःसंधिभंगश्च

अर्थ–अस्थिभंग आठ प्रकारका कहा है भग्नपृष्ठ १ विदारित २ ॥१४॥ विवर्त्तित ३ विश्लिष्ट ४ तिर्यक्क्षिप्त ५ अधोगत ६ ऊर्ध्वग ७ संधिभंग ९ इसप्रकार आठ प्रकारका है ॥

वह्निदग्धश्चतुर्विधः ॥ १५ ॥ प्लुष्टोतिदग्धोदुर्दग्धःसम्यग्दग्धश्चकीर्तितः ॥

अर्थ–अग्निदग्ध चार प्रकारका है ॥ १५ ॥ प्लुष्ट १ अतिदग्ध २ दुर्दग्ध ३ सम्यक्दग्ध ४ इस भेदोंसे ॥

नाड्यःपंचसमाख्यातावातपित्तकफैस्त्रिधा ॥ १६ ॥ त्रिदोषैरपिशल्येन—

अर्थ–नाडी पंचप्रकारकी कही है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥१६॥ तीनो दोषोंसे ४ शल्यसे ५

तथाष्टौस्युर्भगंदराः ॥ शतपोनस्तुपवनादुष्ट्रग्रीवश्चपित्ततः ॥ १७ ॥ परिस्रावीकफाज्ज्ञेयऋजुर्वातकफोद्भवः ॥ परिक्षेपीमरुत्पित्तादर्शोजःकफपित्ततः ॥ १८ ॥ आगंतुजातश्चोन्मार्गीशंखावर्तस्त्रिदोजषः ॥

अर्थ–भगंदररोग आठ प्रकारका है वातसे शतपोनक १ पित्तसे उष्ट्रग्रीव २ ॥१७॥ कफसे परिस्रावी ३ वातकफसे ऋजु ४ वातपित्तसे परिक्षेपी ५ कफपित्तसे अर्शोज ६ ॥ १८ ॥ चोट आदिसे उन्मार्गी ७ उदावर्तसे शंखावर्त ८

मेढ्रेपंचोपदंशाःस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा ॥१९॥ सन्निपातेनरक्ताच्च—

अर्थ–लिंगमें पांच प्रकारका उपदंश कहा है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ १९ ॥ सन्निपातसे ४ रक्तसे ५

मेढ्रशूकामयास्तथा ॥ चतुर्विंशतिराख्यातालिंगार्शोग्रथितंतथा ॥ ३२० ॥ निवृत्तमवमंथश्चमृदितंशतपोनकः ॥ अष्ठीलिकासर्षपिकात्वक्पाकश्चावपाटिका ॥ २१ ॥ मांसपाकःस्पर्शहानिर्निरुद्धमणिरुद्भवः ॥ मांसार्बुदंपुष्करिकासंमूढपिटिकालजी ॥ २२ ॥ रक्तार्बुदंविद्रधिश्चकुंभिकातिलकालकः॥ विरुद्धंप्रकशिःप्रोक्तस्तथैवपरिवर्तिका ॥ २३ ॥

अर्थ–लिगमें शूकरोग चौवीस प्रकारका कहा है लिंगार्श १ ग्रथित२ ॥३२०॥ निवृत्त ३ अवमंथ ४ मृदित ५ शतपोनक ६ अष्ठीलिका ७ सर्षपिका ८ त्वक्पाक

९ अवपाटिका १० ॥ २१ ॥ मांसपाक ११ स्पर्शहानि १२ निरुद्धमणि १३ मांसार्बुद १४ पुष्करिका १५ संमूढपिटिका १६ अलजी १७॥२२॥रक्तार्बुद १८ विद्रधि १९ कुंभिका २० तिलकालक २१ निरुद्ध २२ प्रकशी २३ परिवर्त्तिका २४ ऐसे चौवीस प्रकारका शूकरोग जानना ॥ २३ ॥

कुष्ठान्यष्टादशोक्तानिवातात्कापालिकंभवेत् ॥ पित्तेनौदुंबरं प्रोक्तंकफान्मंडलचर्चिके ॥ २४ ॥ मरुत्पित्तादृष्यजिह्वंश्लेष्मवाताद्विपादिका ॥ तथासिध्मैककुष्ठंचकिटिभंचालसंतथा ॥ २५ ॥ कफपित्तात्पुनर्दद्रूपामाविस्फोटकंतथा ॥ महाकुष्ठंचर्मदलंपुंडरीकंशतारुकं ॥ २६ ॥ त्रिदोषैःकाकणंज्ञेयंतथान्यच्छ्वित्रसंज्ञितं॥तथावातेनपित्तेनश्लेष्मणाचत्रिधाभवेत्॥२७

अर्थ–कुष्ठरोग अठारह प्रकारका है वातसे कापालिक होता है १ पित्तसे औदुंबर २ कफसे मंडल ३ और चर्चिका ४ ॥ २४ ॥ वातपित्तसे ऋष्यजिव्ह ५ कफवातसे विपादिका ६ और सिध्मकुष्ठ ७ किटिभ ८ अलस ९ येभी होते हैं ॥२५॥ कफपित्तसे दाद १० पाम ११ विस्फोटक १२ महाकुष्ठ १३ चर्मदल १४ पुंडरीक १५ शतारुक १६ ॥ २६ ॥ तीन दोषोंसे काकण १७ श्वित्रकुष्ठ १८ और वातपित्तकफसे तीन प्रकारका है ॥ २७ ॥ ऐसे अठारह प्रकारका कुष्ठ है ॥

क्षुद्ररोगाःषष्टिसंख्यास्तेष्वादौशर्करार्बुदं ॥ इंद्रवृद्धापनसिका विवृत्तांध्रालजीतथा ॥ २८ ॥ वराहदंष्ट्रोवल्मीकंकच्छपीतिलकालकः ॥ गर्दभीरकसाचैवयवप्रख्याविदारिका ॥ २९ ॥ कंदरोमसकश्चैवनीलिकाजालगर्दभः ॥ इरिवेल्लीजंतुमणिर्गुदभ्रंशोऽग्निरोहिणी ॥ ३० ॥ सन्निरुद्धगुदःकोठःकुनखोऽनुशयातथा ॥ पद्मिनीकंटकश्चिप्पमलसोमुखदूषिका ॥३१॥ कक्षावृषणकच्छूश्चगंधःपाषाणगर्दभः ॥ राजिकाचतथाव्यंगश्चतुर्धापरिकीर्तितः ॥ ३२ ॥ वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादित्युक्तंव्यंगलक्षणम् ॥

अर्थ–क्षुद्ररोग साठ प्रकारके है तिन्होंके आदिमें शर्करार्बुद १ इंद्रवृद्धा २ पनसिका ३ विवृत्ता ४ अंध्रालजी ५ ॥ २८ ॥ वराहदंष्ट्र ६ वल्मीक ७ कच्छपी ८

तिलकालक ९ गर्दभी १० रकसा ११ यवप्रख्या १२ विदारिका १३ ॥ २९ ॥ कंदर १४ मसक १५ नीलिका १६ जालगर्दभ १७ इरिवेली १८ जंतुमणि १९ गुदभ्रंश २० अग्निरोहिणी २१ ॥ ३३० ॥ सन्निरुद्धगुद २२ कोठ २३ कुनख २४ अनुशया २५ पद्मिनीकंटक २६ चिप्प २७ अलस २८ मुखदूषिका २९ ॥ ३१ ॥ कक्षा ३० वृषणकच्छु ३१ गंध ३२ पाषाणगर्दभ ३३ राजिका ३४ व्यंग ३५ वातपित्तकफरक्तसे चार प्रकारका है ए व्यंगलक्षण कहे है ऐसे अ-ठतीस प्रकारके ये रोग और आठ प्रकारका विस्फोटक और चौदह प्रकारका मसूरिका रोग ऐसे क्षुद्ररोग साठ प्रकारका कहा है ॥ ३२ ॥

विस्फोटाःक्षुद्ररोगेषुतेऽष्टधापरिकीर्तिताः ॥ ३३ ॥ पृथग्दो-षैस्त्रयोद्वंद्वैस्त्रिविधाःसप्तमोऽसृजः ॥ अष्टमःसन्निपातेनक्षुद्र-रूक्षुमसूरिका ॥ चतुर्दशप्रकारेणत्रिभिर्दोषैस्त्रिधाचसा॥३४॥ द्वंद्वजात्रिविधाप्रोक्तासन्निपातेनसप्तमी ॥ अष्टमीत्वग्गताज्ञे-यारक्तजानवमीस्मृता ॥ ३५ ॥ दशमीमांसजाख्याताचतस्रो-ऽन्याश्चदुस्तराः ॥ मेदोऽस्थिमज्जाशुक्रस्थक्षुद्ररोगाइतीरिताः३६

अर्थ–क्षुद्ररोगमें विस्फोट आठ प्रकारका कहा है ॥ ३३ ॥ वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ वातपित्तसे ४ कफपित्तसे ५ वातकफसे ६ रक्तसे ७ सन्निपातसे ८ ऐसे आठ प्रकारका है और क्षुद्ररोगमें मसूरिका चौदह प्रकारकी कही है ॥ ३४ ॥ वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ कफपित्तसे ४ वातपित्तसे ५ वातक-फसे ६ सन्निपातसे ७ और त्वक्जा ८ रक्तजा ९ ॥ ३५ ॥ मांसजा १० मे-दोजा ११ अस्थिजा १२ मज्जासे होनेवाली १३ शुक्रधातुसे होनेवाली १४ ऐसे मसूरिका १५ विस्फोट ८ पूर्व कहे क्षुद्ररोग ऐसे सब मिलके साठ प्रकारका क्षुद्ररोग जानना ॥ ३६ ॥

विसर्परोगोनवधावातपित्तकफैस्त्रिधा ॥ त्रिधाचद्वंद्वभेदेनस-न्निपातेनसप्तमः ॥ ३७ ॥ अष्टमोवह्निदाहेननवमश्चाभिघा-तजः ॥

अर्थ–विसर्परोग नौप्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ वातपित्तसे ४ कफवातसे ५ कफपित्तसे ६ सन्निपातसे ७ ॥ ३७ ॥ आठवां अग्निदाहसे ८ नवमां अभिघातसे ९ ॥

तथैकःश्लेष्मपित्ताभ्यामुदर्दःपरिकीर्तितः ॥ ३८॥ वातपित्तेन चैकस्तुशीतपित्तामयःस्मृतः ॥

अर्थ–कफपित्तसे उदर्दरोग एक प्रकारका है ॥ ३८ ॥ और वातपित्तसे शीतपित्तभी एकही प्रकारका कहा है ॥

अम्लपित्तंत्रिधाप्रोक्तंवातेनश्लेष्मणातथा ॥ ३९ ॥ तृतीयोश्लेष्मवाताभ्याम्—

अर्थ–आम्लपित्त तीन प्रकारका कहा है वातसे १ कफसे २ ॥ ३९ ॥ तीसरा कफवातसे ३

वातरक्तंतथाष्टधा ॥ वाताधिक्येनपित्ताच्चकफाद्दोषत्रयेण च ॥ ३४० ॥ रक्ताधिक्येनदोषाणांद्वंद्वेनत्रिविधःस्मृतः ॥

अर्थ–वातरक्त आठप्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ त्रिदोषसे ४ ॥ ३४० ॥ रक्तसे ५ दो दो दोष मिलके ३ ऐसे आठ प्रकार है ॥

अशीतिर्वातजारोगाःकथ्यंतेमुनिभाषिताः ॥ ४१ ॥ आक्षेपकोहनुस्तंभऊरुस्तंभःशिरोग्रहः ॥ बाह्यायामोंतरायामःपार्श्वशूलःकटिग्रहः ॥ ४२ ॥ दंडापतानकःखल्लीजिह्वास्तंभस्तथार्दितः ॥ पक्षाघातःक्रोष्टुशीर्षोमन्यास्तंभश्चपंगुता ॥ ४३ ॥ कलायखंजतातूणीप्रतितूणीचखंजता ॥ पादहर्षोगृध्रसीच विश्वाचीचावबाहुकः ॥ ४४ ॥

अर्थ–मुनियोंने कहे अस्सी प्रकारके वातज रोग कहे हैं ॥ ४१ ॥ आक्षेपक १ हनुस्तंभ २ ऊरुस्तंभ ३ शिरोग्रह ४ बाह्यायाम ५ आंतरायाम ६ पार्श्वशूल ७ कटिग्रह ८ ॥ ४२ ॥ दंडापतानक ९ खल्ली १० जिह्वास्तंभ ११ अर्दित १२ पक्षाघात १३ क्रोष्टुशीर्ष १४ मन्यास्तंभ १५ पंगु १६ ॥ ४३ ॥ कलायखंज १७ तूणी १८ प्रतितूणी १९ खंज २० पादहर्ष २१ गृध्रसी २२ विश्वाची २३ अवबाहुक २४ ॥ ४४ ॥

अपतानोव्रणायामोवातकंटोऽपतंत्रकः ॥ अंगभेदोंऽगशोषश्चमिम्मिणत्वंचकल्लता ॥ ४५ ॥ प्रत्यष्ठीलाष्ठीलिकाचवामनत्वंचकुब्जता ॥ अंगपीडांगशूलंचसंकोचस्तंभरूक्षता ॥

॥ ४६ ॥ अंगभंगोंऽगविभ्रंशोविड्ग्रहोबद्धविट्कता ॥ मूकत्वमतिजृंभास्यादत्युद्गारोंत्रकूजनम् ॥ ४७ ॥ वातप्रवृत्तिः स्फुरणंशिराणांपूरणंतथा ॥ कंपःकार्श्यंश्यावताचप्रलापःक्षिप्रमूत्रता ॥ ४८ ॥ निद्रानाशःस्वेदनाशोदुर्बलत्वंबलक्षयः ॥ अतिप्रवृत्तिःशुक्रस्यकार्श्यंनाशश्चरेतसः ॥ ४९ ॥ अनवस्थितचित्तत्वंकाठिन्यंविरसास्यता ॥ कषायवक्त्रताध्मानं प्रत्याध्मानंचशीतता ॥ ३५० ॥ रोमहर्षश्चभीरुत्वंतोदःकंडूरसाज्ञता ॥ शब्दाज्ञताप्रसुप्तिश्चगंधाज्ञत्वंदृशःक्षयः ॥५१ ॥

अर्थ—अपतान २५ व्रणायाम २६ वातकंटक २७ अपतंत्रक २८ अंगभेद २९ अंगशोष ३० मिमिणत्व ३१ कल्लता ३२ ॥ ४५ ॥ अष्ठीलिका ३३ प्रत्यष्ठीला ३४ वामनत्व ३५ कुब्जत्व ३६ अंगपीडा ३७ अंगशूल ३८ संकोच ३९ स्तंभ ४० रूक्षता ४१ ॥ ४६ ॥ अंगभंग ४२ अंगविभ्रंश ४३ विड्ग्रह ४४ बद्धविट्कता ४५ मूकत्व ४६ अतिजृंभ ४७ अत्युद्गार ४८ अंत्रकूजन ४९ ॥ ४७ ॥ वातप्रवृत्ति ५० स्फुरण ५१ शिरापूरण ५२ कंपवायु ५३ ॥ ४८ ॥ कार्श्य ५४ श्यावता ५५ प्रलाप ५६ क्षिप्रमूत्रता ५७ निद्रानाश ५८ स्वेदनाश ५९ दुर्बलत्व ६० बलक्षय ६१ शुक्रातिप्रवृत्ति ६२ शुक्रकार्श्य ६३ शुक्रनाश ६४ ॥ ४९ ॥ अनवस्थितचित्तत्व ६५ काठिन्य ६६ विरसता ६७ कषायवक्रता ६८ आध्मान ६९ प्रत्याध्मान ७० शीतता ७१ ॥ ३५० ॥ रोमहर्ष ७२ भीरुत्व ७३ तोद ७४ कंडू ७५ रसाज्ञता ७६ शब्दाज्ञता ७७ प्रसुप्ति ७८ गंधाज्ञत्व ७९ दृष्टिक्षय ८० ॥ ५१ ॥ ऐसे अस्सी प्रकारके वातजरोग जाणने ॥

अथपित्तभवारोगाश्चत्वारिंशदिहोदिताः ॥ धूमोद्गारोविदाहः स्यादुष्णांगत्वंमतिभ्रमः ॥ ५२ ॥ कांतिहानिःकंठशोषोमुखशोषोऽल्पशुक्रता ॥ तिक्तास्यताम्लवक्त्रत्वंस्वेदस्रावोंऽगपाकता ॥ ५३ ॥ क्लमोहरितवर्णत्वमातृप्तिःपीतकायता ॥ रक्तस्रावोंऽगदरणंलोहगंधास्यतातथा ॥ ५४ ॥ दौर्गंध्यंपीतमूत्रत्वमरतिःपीतविट्कता ॥ पीतावलोकनंपीतनेत्रतापीतदंतता ॥ ५५ ॥ शीतेच्छापीतनखतातेजोद्वेषोऽल्पनिद्रता ॥

कोपश्चगात्रसादश्चभिन्नविट्कत्वमंधता ॥ ५६ ॥ उष्णोच्छ्वासत्वमुष्णत्वंमूत्रस्यचमलस्यच ॥ तमसोऽदर्शनंपीतमंडलानांचदर्शनम् ॥५७॥ निःसरत्वंचपित्तस्यचत्वारिंशद्रुजःस्मृताः॥

अर्थ–पित्तरोग ४० प्रकारका है धूमोद्गार १ विदाह २ उष्णांगत्व ३ मतिभ्रम ४ ॥ ५२ ॥ कांतिहानि ५ कंठशोष ६ मुखशोष ७ अल्पशुक्रता ८ तिक्तास्यता ९ अम्लवक्त्रत्व १० स्वेदस्राव ११ अंगपाकता १२ ॥ ५३ ॥ क्लम १३ हरितवर्णत्व १४ अतृप्ति १५ पीतकायता १६ रक्तस्राव १७ अंगदरण १८ लोहगंधास्यता १९ ॥ ५४ ॥ दौर्गंध्य २० पीतमूत्रत्व २१ अरति २२ पीतविट्कता २३ पीतावलोकन २४ पीतनेत्रता २५ पीतदंतता २६ ॥ ५५ ॥ शीतेच्छा २७ पीतनखता २८ तेजोद्वेष २९ अल्पनिद्रता ३० कोप ३१ गात्रसाद ३२ भिन्नविट्कत्व ३३ अंधता ३४ ॥५६ ॥ उष्णोच्छ्वासत्व ३५ उष्णमूत्रत्व ३६ उष्णमलत्व ३७ तमोदर्शन ३८ पीतमंडलदर्शन ३९ ॥ ५७ ॥ निःसरत्व ४० ऐसे चालीस प्रकारके पित्तरोग जाणना ॥

कफस्यविंशतिःप्रोक्तारोगास्तंद्रातिनिद्रता ॥ ५८ ॥ गौरवंमुखमाधुर्यंमुखलेपःप्रसेकता ॥ श्वेतावलोकनंश्वेतविट्कत्वंश्वेतमूत्रता ॥ ५९ ॥ श्वेतांगवर्णताशैत्यमुष्णेच्छातिक्तकामिता ॥ मलाधिक्यंचशुक्रस्यबाहुल्यंबहुमूत्रता ॥ ३६० ॥ आलस्यंमंदबुद्धित्वंतृप्तिर्घर्घरवाक्यता ॥ अचैतन्यंचगदिताविंशतिःश्लेष्मजागदाः ॥ ६१ ॥

अर्थ–कफरोग वीसप्रकारका कहा है तंद्रा १ अतिनिद्रता २ ॥ ५८ ॥ गौरव ३ मुखमाधुर्य ४ मुखलेप ५ प्रसेकता ६ श्वेतावलोकन ७ श्वेतविट्कत्व ८ श्वेतमूत्रता ९ ॥ ५९ ॥ श्वेतांगवर्णता १० उष्णेच्छा ११ तिक्तकामिता १२ मलाधिक्य १३ शुक्रबाहुल्य १४ बहुमूत्रता १५ ॥ ३६० ॥ आलस्य १६ मंदबुद्धित्व १७ तृप्ति १८ घर्घरवाक्यता १९ अचैतन्य २० ऐसे वीस प्रकारके कफजरोग है ॥ ६१ ॥

रक्तस्यचदशप्रोक्ताव्याधयस्तस्यगौरवम् ॥ रक्तमंडलतारक्तनेत्रत्वंरक्तमूत्रता ॥ ६२ ॥ रक्तष्ठीवनतारक्तपिटिकानांचदर्शनम् ॥ उष्णंचपूतिगंधित्वंपीडापाकश्चजायते ॥ ६३ ॥

अर्थ–रक्तरोग दशप्रकारका है सो ऐसे गौरव १ रक्तमंडलता २ रक्तनेत्रत्व

३ रक्तमूत्रता ४ ॥ ६२ ॥ रक्तष्ठीवनता ५ रक्तपिटिकादर्शन ६ उष्ण ७ पूतिगंधित्व ८ पीडा ९ पाक १० ऐसे दश रक्तरोग जाणने ॥ ६३ ॥

चतुःसप्ततिसंख्याकामुखरोगास्तथोदिताः ॥ तेष्वोष्ठरोगागणिताएकादशमिताबुधैः ॥ ६४ ॥ वातपित्तकफैस्त्रेधात्रिदोषैरसृजस्तथा ॥ क्षतमांसार्बुदंचैवखंडौष्ठश्चजलार्बुदम् ॥ ६५ ॥ मेदोऽर्बुदंचार्बुदंचरोगाएकादशौष्ठजाः ॥

अर्थ–चौहत्तर मुखरोग कहे हैं तिन्होंमें बुद्धिमानोंनें ग्यारह होठके रोग कहे हैं ॥ ६४ ॥ वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ रक्तसे ५ क्षतसे ६ मांसार्बुद ७ खंडौष्ठ ८ जलार्बुद ९ ॥ ६५ ॥ मेदोर्बुद १० अर्बुद ११ ऐसे होठके रोग ग्यारह प्रकारके जाणने ॥

दंतरोगादशाख्यातादालनःक्रमिदंतकः ॥ ६६ ॥ दंतहर्षःकरालश्चदंतचालश्चशर्करा ॥ अधिदंतःश्यावदंतोदंतभेदःकपालिका ॥ ६७ ॥

अर्थ–मुखरोगोंमें दंतरोग दश प्रकारका कहा है दालन १ क्रमिदंतक २ ॥ ६६ ॥ दंतहर्ष ३ कराल ४ दंतचाल ५ शर्करा ६ अधिदंत ७ श्यावदंत ८ दंतभेद ९ कपालिका १० ऐसे दश दंतरोग कहे हैं ॥ ६७ ॥

तथात्रयोदशमितादंतमूलामयाःस्मृताः ॥ शीतादोपकुशौद्वौतुदंतविद्रधिपुप्पुटौ ॥ ६८ ॥ अधिमांसोविदर्भश्चमहासौषिरसौषिरौ ॥ तथैवगतयःपंचवातात्पित्तात्कफादपि ॥ ६९ ॥ सन्निपातगतिश्चान्यारक्तनाडीचपंचमी ॥

अर्थ–दंतमूलरोग तेरह प्रकारका है और तिन्होंमें वातादि दोषोंकरके नाडीरोग पांच प्रकारका कहा है शीताद १ उपकुश २ दंतविद्रधि ३ पुप्पुट ४ ॥ ६८ ॥ अधिमांस ५ विदर्भ ६ महासौषिर ७ सौषिर ८ वातनाडी ९ पित्तनाडी १० कफनाडी ११ ॥ ६९ ॥ सन्निपात नाडी १२ रक्तनाडी १३ ऐसे तेर प्रकारका दंतमूलरोग जाणना ॥

तथाजिह्वामयाःषट्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा ॥ ३७० ॥ अलसश्चचतुर्थःस्यादधिजिह्वश्चपंचमः ॥ षष्ठश्चैवोपजिह्वःस्यात्—

अर्थ—मुखरोगोंमें जिव्हारोग छः प्रकारका कहा है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ ३७० ॥ अलससे ४ अधिजिव्ह ५ उपजिह्व ६ ये छः प्रकारके जिव्हारोग कहे हैं ॥

तथाष्टौतालुजागदाः ॥ ७१ ॥ अर्बुदंतालुपिटिकाकच्छपी तालुसंहतिः ॥ गलतुंडीतालुशोथस्तालुपाकश्चपुप्पुटः ॥७२ ॥

अर्थ—मुखरोगोंमें तालुरोग आठ प्रकारका कहा है ॥ ७१ ॥ अर्बुद १ तालुपिटिका २ कच्छपी ३ तालुसंहति ४ गलतुंडी ५ तालुशोथ ६ तालुपाक ७ पुप्पुट ८ ऐसे आठ प्रकारके तालुरोग जाणने ॥ ७२ ॥

गलरोगास्तथाख्याताअष्टादशमिताबुधैः ॥ वातरोहिणिकापूर्वंद्वितीयापित्तरोहिणी ॥७३॥ कफरोहिणिकाप्रोक्तात्रिदोषैरपिरोहिणी ॥ मेदोरोहिणिकावृंदोगलौघोगलविद्रधिः ॥ ॥७४॥स्वरहातुंडिकेरीचशतघ्नीतालुकोऽर्बुदं ॥ गिलायुर्वलयश्चापिवातगंडःकफस्तथा ॥ ७५ ॥ मेदोगंडस्तथैवस्यादित्यष्टादशकंठजाः ॥

अर्थ—मुखरोगोंमें कंठरोग अठारह प्रकारका कहा है ॥ ७३ ॥ वात रोहिणी १ पित्तरोहिणी २ ॥ ७३ ॥ कफ रोहिणी ३ त्रिदोष रोहिणी ४ मेदरोहिणी ५ वृंद ६ गलौघ ७ गलविद्रधि ८ स्वरहा ९ तुंडिकेरी १० शतघ्नी ११ तालुक १२ अर्बुद १३ गिलायु १४ वलय १५ वातगंड १६ कफगंड १७ ॥ ७५ ॥ मेदोगंड १८ ऐसे अठारह प्रकारका कंठरोग जाणना ॥

मुखांतःसंश्रयारोगाअष्टौख्यातामहर्षिभिः ॥७६॥ मुखपाको भवेद्वातात्पित्तात्तद्वत्कफादपि ॥ रक्ताच्चसन्निपाताच्चपूत्यास्योर्ध्वगुदावपि ॥ ७७ ॥ अर्बुदंचेतिमुखजाश्चतुःसप्ततिरामयाः ॥

अर्थ—मुखके भीतर संश्रयरोग मुनियोंनें आठ प्रकारका कहा है ॥ ७६ ॥ वातसे मुखपाक १ पित्तसे २ कफसे ३ रक्तसे ४ सन्निपातसे ५ दुर्गंधास्य ६ ऊर्ध्वगुद ७ ॥ ७७ ॥ अर्बुद ८ ऐसे आठ प्रकारका मुखपाकरोग जाणना और संपूर्ण रोग मिलके चोहत्तर रोग जाणने ॥

कर्णरोगाःसमाख्याताअष्टादशमिताबुधैः ॥ ७८ ॥ वातापि-

त्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपाताच्चविद्रधिः ॥ शोथोऽर्बुदंपूतिकर्णः कर्णार्शःकर्णहल्लिका ॥ ७९ ॥ बाधिर्यंतंत्रिकाकंडूःशष्कुलिः कृमिकर्णकः ॥ कर्णनादःप्रतीनाहइत्यष्टादशकर्णजाः ॥३८० ॥

अर्थ-बुद्धिमानोंनें कर्णरोग अठारह प्रकारके कहे हैं ॥ ७८ ॥ वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ रक्तसे ४ सन्निपातसे ५ विद्रधि ६ शोथ ७ अर्बुद ८ पूतिकर्ण ९ कर्णार्श १० कर्णहल्लिका ११ ॥ ७९ ॥ बाधिर्य १२ तंत्रिका १३ कंडू १४ शष्कुलि १५ कृमिकर्णक १६ कर्णनाद १७ प्रतीनाह १८ ऐसे कानका रोग अठारह प्रकारका जानना ॥ ३८० ॥

कर्णपालीसमुद्भूतारोगाःसप्तइहोदिताः ॥ उत्पातःपालिशोषश्चविदारीदुःखवर्धनः ॥ ८१ ॥ परिपोटश्चलेहीचपिप्पली चेतिसंस्मृताः ॥

अर्थ-कर्णपालीरोग सात प्रकारका है उत्पात १ पालिशोष २ विदारी ३ दुःखवर्धन ४ ॥ ८१ ॥ परिपोट ५ लेही ६ पिप्पली ७ ऐसे कहे हैं ॥

कर्णमूलामयाःपंचवातात्पित्तात्कफादपि ॥ ८२ ॥ सन्निपाताच्चरक्ताच्च—

अर्थ-कर्णमूलरोग पांच प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ ८२ ॥ सन्निपातसे ४ रक्तसे ५ ऐसे पांच प्रकारका है ॥

तथानासाभवागदाः ॥ अष्टादशैवसंख्याताःप्रतिश्यायास्तुतेष्वपि ॥ ८३ ॥ वातात्पित्तात्कफाद्रक्तात्सन्निपातेनपंचमः ॥ अपीनसःपूतिनासोनासार्शोभ्रंशथुःक्षवः ॥ ८४ ॥ नासानाहःपूतिरक्तमर्बुदंदुष्टपीनसम् ॥ नासाशोषोघ्राणपाकःपुटस्रावश्चदीप्तकः ॥ ८५ ॥

अर्थ-नासारोग १८ प्रकारका कहा है तिन्होंमें प्रतिश्याय ॥ ८३ ॥ वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ रक्तसे ४ सन्निपातसे ५ ऐसे पांच अपीनस ६ पूतिनाश ७ नासार्श ८ भ्रंशथु ९ क्षव १० ॥ ८४ ॥ नासानाह ११ पूतिरक्त १२ अर्बुद १३ दुष्टपीनस १४ नासाशोष १५ घ्राणपाक १६ पुटस्राव १७ दीप्तक १८ ऐसे अठारह प्रकारका नासारोग जाणना ॥ ८५ ॥

तथादशशिरोरोगावातेनार्धावभेदकः ॥ शिरस्तापश्चवातेनपित्तात्पीडातृतीयका ॥ ८६ ॥ चतुर्थीकफजापीडारक्तजासन्निपातजा ॥ सूर्यावर्ताच्छिरःपाकात्कृमिभिःशंखकेनच ॥ ८७ ॥

अर्थ—मस्तकके रोग दश प्रकारके कहे हैं अर्धावभेदक १ वातसे शिरस्ताप २ पित्तसे पीडा ३ ॥ ८६ ॥ कफसे पीडा ४ रक्तसे पीडा ५ सन्निपातसे पीडा ६ सूर्यावर्त ७ शिरःपाक ८ कृमिज ९ शंखक १० ऐसे दश प्रकारका मस्तकरोग जानना ॥ ८७ ॥

तथाकपालरोगाःस्युर्नवतेषूपशीर्षकम् ॥ अरूंषिकाविद्रधिश्चदारुणंपिटिकार्बुदम्॥८८॥इंद्रलुप्तं चखालित्यंपलितंचेतितेनव॥

अर्थ—कपालरोग नौ प्रकारका है उपशीर्षक १ अरूंपिका २ विद्रधि ३ दारुण ४ पिटिका ५ अर्बुद ६ ॥ ८८ ॥ इंद्रलुप्त ७ खालित्य ८ पलित ९ ऐसे नौ प्रकारके कपालरोग कहे हैं ॥

तथानेत्रभवाःख्याताश्चतुर्नवतिरामयाः ॥ ८९ ॥ तेषुवर्त्मगदाःप्रोक्ताश्चतुर्विंशतिसंज्ञिताः ॥ कृच्छ्रोन्मीलःपक्ष्मपातःकफोत्क्लिष्टश्चलोहितः ॥ ९० ॥ अरुङ्निमेषःकथितोरक्तोत्क्लिष्टःकुकूणकः ॥ पक्ष्मार्शःपक्ष्मरोधश्चपित्तोत्क्लिष्टश्चपोथकी ॥ ॥ ९१ ॥ श्लिष्टवर्त्माचबहलःपक्ष्मोत्संगस्तथार्बुदम् ॥ कुम्भिकासिकतावर्त्मालगणोऽजननामिकाः ॥ ९२ ॥ कर्दमः श्याववर्त्मापिबिसवर्त्मतथालजी ॥ उत्क्लिष्टवर्त्मेतिगदाःप्रोक्तावर्त्मसमुद्भवाः ॥ ९३ ॥

अर्थ—नेत्ररोग ९४ प्रकारके कहे हैं ॥ ८९ ॥ तिन्होंमें वर्त्मरोग २४ प्रकारके कहे हैं कृच्छ्रोन्मील १ पक्ष्मपात २ कफोत्क्लिष्ट ३ लोहित ४ ॥ ९० ॥ अरुङ्निमेष ५ रक्तोत्क्लिष्ट ६ कुकूणक ७ पक्ष्मार्श ८ पक्ष्मरोध ९ पित्तोत्क्लिष्ट १० पोथकी ११ ॥ ९१ ॥ श्लिष्टवर्त्मा १२ बहल १३ पक्ष्मोत्संग १४ अर्बुद १५ कुंभिका १६ सिकतावर्त्म १७ अलगण १८ अंजननामिका १९ ॥ ९२ ॥ कर्दम २० श्याववर्त्मा २१ बिसवर्त्मा २२ अलजी २३ उत्क्लिष्टवर्त्म २४ ऐसे चौवीस प्रकारके पलकोंके रोग कहे हैं ॥ ९३ ॥

नेत्रसंधिसमुद्भूतानवरोगाःप्रकीर्तिताः ॥ जलस्रावःकफस्रावोरक्तस्रावश्चपर्वणी ॥ ९४ ॥ पूयस्रावःकृमिग्रंथिरुपनाहस्तथालजी ॥ पूयालसइतिप्रोक्तारोगानयनसंधिजाः ॥ ९५ ॥

अर्थ–नेत्रसंधियोंमें नौ प्रकारके रोग कहे हैं जलस्राव १ कफस्राव २ रक्तस्राव ३ पर्वणी ४ ॥ ९४ ॥ पूयस्राव ५ कृमिग्रंथि ६ उपनाह ७ अलजी ८ पूयालस ९ ऐसे नौ प्रकारके नेत्रसंधिजरोग कहे हैं ॥ ९५ ॥

तथाशुक्लगतारोगाबुधैःप्रोक्तास्त्रयोदश ॥ शिरोत्पातःशिराहर्षः शिराजालंचशुक्तिकः ॥ ९६ ॥ शुक्लार्माचाधिमांसार्माप्रस्तार्यर्मचपिष्टकः॥शिराजपिटिकाचैवकफग्रथितकोऽर्जुनः॥९७॥ स्नाय्वर्मचाधिमांसःस्यादितिशुक्लगतागदाः ॥

अर्थ–नेत्रके शुक्लभागमें रोग तेरह प्रकारका है शिरोत्पात १ शिराहर्ष २ शिराजाल ३ शुक्तिक ४ ॥ ९६ ॥ शुक्लार्म ५ अधिमांसार्म ६ प्रस्तार्यर्म ७ पिष्टक ८ शिराजपिटिका ९ कफग्रथितक १० अर्जुन ११ ॥ ९७ ॥ स्नाय्वर्म १२ अधिमांस १३ ऐसे तेरह प्रकारका पांडररोग जानना

तथाकृष्णसमुद्भूताःपंचरोगाःप्रकीर्तिताः ॥ ९८ ॥ शुद्धशुक्रं शिराशुक्रंक्षतशुक्रंतथाजकः ॥ शिरासंगश्चसर्वेऽपिप्रोक्ताः कृष्णगतागदाः ॥ ९९ ॥

अर्थ–नेत्रके कृष्णवर्णमें पांच रोग कहे हैं ॥ ९८ ॥ शुद्धशुक्र १ शिराशुक्र २ क्षतशुक्र ३ अजक ४ शिरासंग ५ ऐसे पांच कृष्णवर्णके रोग कहे हैं ॥ ९९ ॥

काचंतुषड्विधंज्ञेयंवातात्पित्तात्कफादपि ॥
सन्निपाताच्चरक्ताच्चषष्ठंसंसर्गसंभवम् ॥ ४०० ॥

अर्थ–काचरोग अर्थात् मोतीविंद छः प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ रक्तसे ५ संसर्गसे ६ ऐसे छः प्रकारका मोतीविंद कहा है ॥ ४०० ॥

तिमिराणिषडेवस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा ॥
संसर्गेणचरक्तेनषष्ठंस्यात्सन्निपाततः ॥ १ ॥

अर्थ–तिमिररोग छः प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ संसर्गसे ४ रक्तसे ५ सन्निपातसे ६ ॥ १ ॥

लिंगनाशःसप्तधास्याद्वातात्पित्तात्कफेनच ॥
त्रिदोषैरुपसर्गेणसंसर्गेणासृजातथा ॥ २ ॥

अर्थ-लिंगनाशरोग सात प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ त्रिदोषसे ४ उपसर्गसे ५ संसर्गसे ६ रक्तसे ७ ऐसे सात प्रकारका लिंगनाशरोग कहना ॥२॥

अष्टधादृष्टिरोगाःस्युस्तेषुपित्तविदग्धकम् ॥ अम्लपित्तविदग्धंचतथैवोष्णविदग्धकं ॥ ३ ॥ नकुलांध्यंधूसरांध्यंरात्र्यांध्यं ह्रस्वदृष्टिकः ॥ गंभीरदृष्टिरित्येतेरोगादृष्टिगताःस्मृताः ॥ ४ ॥

अर्थ-दृष्टिरोग आठ प्रकारका है पित्तविदग्ध १ आम्लपित्तविदग्ध २ उष्णविदग्ध ३ ॥ ३ ॥ नकुलांध्य ४ धूसरांध्य ५ रात्र्यांध्य ६ ह्रस्वदृष्टि ७ गंभीरदृष्टि ८ ऐसे आठ प्रकारका कहा है ॥ ४ ॥

अभिष्यंदाश्चचत्वारोरक्ताद्दोषैस्त्रिभिस्तथा ॥

अर्थ-अभिष्यंद रोग चार प्रकारका है रक्तसे १ वातसे २ पित्तसे ३ कफसे ४ ऐसे चार प्रकारका है ॥

चत्वारश्चाधिमंथाः स्युर्वातपित्तकफास्त्रतः ॥ ५ ॥

अर्थ-अधिमंथ रोग चार प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ रक्तसे ४ ऐसे चार प्रकारका है ॥ ५ ॥

सर्वाक्षिरोगाश्चाष्टौस्युस्तेषुवातविपर्ययः ॥ अल्पशोफोऽन्यतोवातस्तथापाकात्ययःस्मृतः ॥ ६ ॥ शुष्काक्षिपाकश्चतथा शोफोऽध्युषितएवच ॥ हताधिमंथइत्येतेरोगाःसर्वाक्षिसंभवाः ॥७

अर्थ-सर्व नेत्रमें आठ रोग होते हैं वातविपर्य्यय १ अल्पशोफ २ अन्यतोवात ३ पाकात्यय ४ ॥ ६ ॥ शुष्काक्षिपाक ५ शोफ ६ अध्युषित ७ हताधिमंथ ८ ऐसे संपूर्ण आंखमें होनेवाले ये रोग हैं ॥ ७ ॥

पुंस्त्वदोषाश्चपंचैवप्रोक्तास्तत्रेर्ष्यकः स्मृतः॥
आसेक्यश्चैवकुंभीकःसुगंधिःषंढसंज्ञकः ॥ ८ ॥

अर्थ-षंढ अर्थात् नपुंसकपनाका भेद पांच प्रकारका है ईर्ष्यक १ आसेक्य २ कुंभिक ३ सुगंधि ४ षंढसंज्ञक ५ ऐसे पांच प्रकारका है ॥ ८ ॥

शुक्रदोषास्तथाष्टौस्युर्वातात्पित्तात्कफेनच ॥ कुणपंचास्त्रपि-

त्ताभ्यांपूयाभंश्लेष्मपित्ततः ॥ ९ ॥ क्षीणंचवातपित्ताभ्यांग्रंथिलंश्लेष्मवाततः ॥ मलाभंसन्निपाताच्चशुक्रदोषाइतीरिताः ४१०

अर्थ–वीर्यदोष आठ प्रकारका है वातजन्य १ पित्तजन्य २ कफजन्य ३ रक्तपित्तजन्य कुणप संज्ञक ४ कफपित्तजन्य पूयाभ ५ ॥ ९ ॥ वातपित्तजन्य क्षीण ६ कफवातजन्य ग्रंथिल ७ संनिपातजन्य मलाभ ८ ऐसे आठ प्रकारका शुक्रदोष कहा है ॥ ४१० ॥

अथस्त्रीरोगनामानिप्रोच्यंतेपूर्वशास्त्रतः ॥ अष्टावार्तवदोषाः स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा ॥११॥पूयाभंकुणपंग्रंथिक्षीणंमलसमंतथा

अर्थ–इसके अनंतर स्त्रीयोंके रोगोंके नाम शास्त्रके अनुसार कहते हैं आर्तव दोष आठ प्रकारका है वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ ११ ॥ पूयाभ ४ कुणप ५ ग्रंथि ६ क्षीण ७ मलसम ८ ऐसे आठ प्रकारका आर्तवरोग जानना ॥

तथाचरक्तप्रदरंचतुर्विधमुदाहृतम् ॥ १२ ॥
वातपित्तकफैस्त्रेधाचतुर्थंसन्निपाततः ॥

अर्थ–प्रदररोग चार प्रकारका है ॥ १२ ॥ वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ सन्निपातसे ४ ऐसे चार प्रकारका जानना ॥

विंशतिर्योनिरोगाःस्युर्वातपित्तकफादपि ॥ १३ ॥ सन्निपाताच्चरक्ताच्चलोहितक्षयतस्तथा ॥ शुष्काचवामिनीचैवषंढीचांतर्मुखीतथा ॥ १४ ॥ सूचीमुखीविप्लुताचजातघ्नीचपरिप्लुता ॥ उपप्लुताप्राक्चरणामहायोनिककर्णिका ॥ १५ ॥ स्यान्नंदाचातिचरणायोनिरोगाइतीरिताः ॥

अर्थ–योनिरोग वीस प्रकारके हैं वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ १३ ॥ सन्निपातसे ४ रक्तसे ५ लोहितक्षया ६ शुष्का ७ वामिनी ८ षंढी ९ अंतर्मुखी १० ॥ १४ ॥ सूचीमुखी ११ विप्लुता १२ जातघ्नी १३ परिप्लुता १४ उपप्लुता १५ प्राक्चरणा १६ महायोनि १७ कर्णिका १८ ॥ १५ ॥ नंदा १९ अतिचरणा २० ऐसे वीस प्रकारके योनिरोग कहे हैं ॥

चतुर्विधंयोनिकंदंवातपित्तकफैस्त्रिधा ॥ १६ ॥ चतुर्थंसन्निपातेन—

अर्थ–योनिकंद रोग चार प्रकारके हैं वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ १६ ॥ चौथा सन्निपातसे—

तथाष्टौगर्भजागदाः ॥ १७ ॥ उपविष्टकगर्भःस्यात्तथानागोदरःस्मृतः ॥ मक्कल्लोमूढगर्भश्चविष्टंभोगूढगर्भकः ॥ १८ ॥ जरायुदोषोगर्भस्यपातश्चाष्टमकःस्मृतः ॥

अर्थ-गर्भजरोग आठ प्रकारका है ॥ १७ ॥ उपविष्टक गर्भ १ नागोदर २ मक्कल्ल ३ मूढगर्भ ४ विष्टंभ ५ गूढगर्भ ६ ॥ १८ ॥ जरायुदोष ७ गर्भपात ८ ऐसे आठ प्रकारका गर्भगत रोग जानना ॥

पंचैवस्तनरोगाःस्युर्वातात्पित्तात्कफादपि ॥ १९ ॥ सन्निपातात्क्षताच्चैवतथास्तन्योद्भवागदाः ॥ बालरोगेषुकथिताः—

अर्थ-स्तनरोग पांच प्रकारके कहे हैं वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ॥ १९ ॥ सन्निपातसे ४ क्षतसे ५ और दूधसे होनेवाले रोग बालरोगोंमें कहे हैं ॥

स्त्रीदोषाश्चत्रयःस्मृताः ॥ ४२० ॥ अदक्षपुरुषोत्पन्नःसपत्नीविहितस्तथा ॥ २१ ॥ दैवाज्जातस्तृतीयस्तु—

अर्थ-स्त्रियोंके दोष तीन प्रकारके कहे है ॥ ४२० ॥ अदक्ष पुरुषोत्पन्न १ सपत्नी विहित २ ॥ २१ ॥ दैविक ३ ऐसे तीन प्रकारके हैं ॥

तथाचसूतिकागदाः ॥ ज्वरादयश्चिकित्स्यास्तेयथादोषंयथाबलम् ॥ २२ ॥

अर्थ-बालकपणासे उत्पन्न हुए ज्वरादि रोग दोष और बलके अनुसार चिकित्सा करनी योग्य है ॥ २२ ॥

द्वाविंशतिर्बालरोगास्तेषुक्षीरभवास्त्रयः ॥ वातात्पित्तात्कफाच्चैवदंतोद्भेदश्चतुर्थकः ॥ २३ ॥ दंतघातोदंतशब्दोकालदंतोऽहिपूतनम् ॥ मुखपाकोमुखस्त्रावोगुदपाकोपशीर्षके ॥ २४ ॥ पार्श्वारुणस्तालुकंदोविच्छिन्नंपारिगर्भिकः ॥ दौर्बल्यंगात्रशोषश्चशय्यामूत्रंकुकूणकः ॥ २५ ॥ रोदनंचाजगल्लीस्यादितिद्वाविंशतिःस्मृताः ॥

अर्थ-बालकोंके बाईस प्रकारके रोग कहे हैं तिन्होंमें दूधसे होनेवाले तीन रोग हैं वातसे १ पित्तसे २ कफसे ३ ऐसे तीन दूधके रोग हैं और दंतोद्भेद ४

चौथा है ॥ २३ ॥ दंतघात ५ दंतशब्द ६ अकालदंत ७ अहिपूतनरोग ८ मुखपाक ९ मुखस्राव १० गुदपाक ११ उपशीर्षक १२ ॥ २४ ॥ पार्श्वारुण १३ तालुकंद १४ विच्छिन्न १५ पारिगार्भिक १६ दौर्बल्यं १७ गात्रशोष १८ शय्यामूत्र १९ कुकूणक २० ॥ २५ ॥ रोदन २१ अजगल्ली २२ ऐसे बाईस बालरोग कहे हैं ॥

तथाबालग्रहाःख्याताद्वादशैवमुनीश्वरैः ॥ २६ ॥ स्कंदग्रहो विशाखःस्यात्स्वग्रहश्चपितृग्रहः ॥ नैगमेयग्रहस्तद्वच्छकुनिः शीतपूतना ॥ २७ ॥ मुखमंडनिकातद्वत्पूतनाचांधपूतना ॥ रेवतीचैवसंख्याताततथास्याच्छुष्करेवती ॥ २८ ॥

अर्थ–बारह प्रकारके मुनीश्वरोंनें बालग्रह कहे हैं ॥२६॥ स्कंदग्रह १ विशाखग्रह २ स्वग्रह ३ पितृग्रह ४ नैगमेयग्रह ५ शकुनि ६ शीतपूतना ७ ॥२७॥ मुखमंडनिका ८ पूतना ९ अंधपूतना १० रेवती ११ शुष्करेवती १२ ऐसे बारह प्रकारके बालग्रह जाणने ॥ २८ ॥

तथाचरणभेदास्तुवातरक्तादिकाश्चये ॥ द्विचत्वारिंशदुक्तास्ते रोगेष्वेवमुनीश्वरैः ॥ २९ ॥ द्विषष्टिर्दोषभेदाःस्युःसन्निपातादिकाश्चये ॥ तेऽपिरोगेषुगणिताःपृथक्प्रोक्तानतेक्वचित् ॥४३०॥

अर्थ–वातरक्तादि जो अनुरक्तरोग हैं सो बयालीस कहे हैं तिन्होंमें मुनीश्वरोंनें ॥ २९ ॥ बासठ सन्निपात आदिके रोग कहे हैं सोभी रोगोंमेंही गिने हैं न्यारे नहीं कहे हैं ॥ ४३० ॥

हीनमिथ्यातियोगानांभेदैःपंचदशोदिताः ॥ पंचकर्मभवारोगारोगेष्वेवप्रकीर्तिताः ॥ ३१ ॥

अर्थ–हीन मिथ्या अतियोग इन्होंके भेदोंकरकै पंदरह कहे हैं तिन्होंमें वमन विरेचन निरूहबस्ति अनुवासनबस्ति नस्य इन पांच कर्मोंसे होनेवाले रोग पांच कहे हैं ॥ ३१ ॥

स्नेहस्वेदौतथाधूमोगंडूषोंऽजनतर्पणे ॥ अष्टादशैतज्जाःपीडास्ताश्चरोगेषुलक्षिताः ॥ ३२ ॥

अर्थ–स्नेहपान १ स्वेद २ धूमपान ३ गंडूष ४ अंजन ५ तर्पण ६ इन अठारह प्रकारोंकी पीडा रोगोंमें लक्षित हैं ॥ ३२ ॥

शीतोपद्रवएकःस्यादेकश्चोष्णोपतापकः ॥
शल्योपद्रवएकश्चक्षाराच्चैकःस्मृतस्तथा ॥ ३३ ॥

अर्थ–शीतसे एक उपद्रव कहा है उष्णसेभी एक कहा है एक शल्यसे कहा है एक क्षारसे कहा है ॥ ३३ ॥

स्थावरंजंगमंचैवकृत्रिमंचत्रिधाविषम् ॥ तेषांचकालकूटाद्यै-र्नवधास्थावरंविषम् ॥ ३४ ॥ जंगमंबहुधाप्रोक्तंतत्रलूताभ्रु-जंगमाः ॥ वृश्चिकामूषकाःकीटाःप्रत्येकंतेचतुर्विधाः ॥ ३५ ॥ दंष्ट्राविषनखविषाबालशृंगास्थिभिस्तथा ॥ मूत्रात्पूरीषाच्छु-क्राच्चदृष्टेर्निःश्वासतस्तथा ॥ ३६ ॥ लालायाःस्पर्शतस्तद्वत्त-थाशंकाविषंमतम् ॥ कृत्रिमंद्विविधंप्रोक्तंगरदूषीविभेदतः ३७

अर्थ–स्थावर जंगम कृत्रिम ऐसे तीन प्रकारका विष है और तिन्होंमें काल-कूट आदिकोंसे नौ प्रकारका स्थावर विष है ॥ ३४ ॥ जंगम विष बहुत प्रकारका है सो ऐसे मकडी सर्प वीछू मूषा कीडा ये वात पित्त कफ सन्निपातसे चार प्रकारका है ॥ ३५ ॥ और जाड नख वाल सींग हाड मूत्र विष्ठा वीर्य दृष्टि श्वास इन्होंसे विष पैदा होता है ॥ ३६ ॥ और लालाका स्पर्शसे तथा शंका विष माना है और कृत्रिम विष दो प्रकारका है गर और दूषीभेदकरके ॥ ३७ ॥

सप्तधातुविषंज्ञेयंतथासप्तोपधातुजम् ॥
तथैवोपविषेभ्यश्चजातंसप्तविधंततः ॥ ३८ ॥

अर्थ–सात तो धातुओंसे उत्पन्न हुवे विष जानने सात उपधातुओंसे और उपविषोंसे उत्पन्न हुआ विषभी सात प्रकारका जाणना ॥ ३८ ॥

दुष्टनीरविषंचैकंतथैकंदिग्धजंविषम् ॥

अर्थ–मलमूत्रादि करकै विगडा जलसे उत्पन्न हुवा एक विष है और एक विष घावसे उत्पन्न होता है ॥

कपिकच्छुभवाकंडूर्दुष्टनीरभवातथा ॥ ३९ ॥
तथासूरणकंडूश्चशोथेभल्लातजस्तथा ॥

अर्थ–कौंचसे खाज उत्पन्न होती हैं और अर्थात् विगडा हुवा दुष्ट जलसे खाज

उत्पन्न होती है ॥ ३९ ॥ और जमीकंदसे खाज होती है और भिलावासेभी खाज उत्पन्न होती है ॥

मदश्चतुर्विधश्चान्यःपूगभंगाक्षकोद्रवैः ॥ ४४० ॥
चतुर्विधोऽन्योद्रव्याणांफलत्वङ्मूलपत्रजः ॥

अर्थ–आगंतुकमद चार प्रकारका कहा है सुपारीसे १ भांगसे २ बहेडासे ३ कोदूसे ४ ॥ ४४० ॥ और फल त्वचा मूल पत्ता इन द्रव्योंसेभी चार प्रकारका मद होता है ॥

इतिप्रसिद्धागणितायेकिलोपद्रवाभुवि ॥ ४१ ॥
असंख्याश्चापरेधातुमूलजीवादिसंभवाः ॥

अर्थ–ऐसे प्रसिद्ध जो पृथ्वीपर उपद्रव हैं सो गिने हैं और धातु मूल जीवोंसे होनेवाले उपद्रव असंख्य कहे हैं ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां प्रथमखंडे रोगगणना नाम सप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥

यहां प्रथमखंड समाप्त हुआ
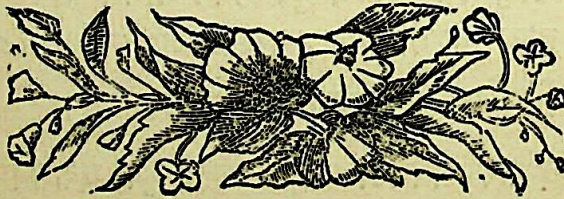
अथ द्वितीयखंडम् ।

अथ मध्यमखंडारंभः ।

अथातःस्वरसःकल्कःक्वाथश्चहिमफांटकौ ॥
ज्ञेयाःकषायाःपंचैतेलघवःस्युर्यथोत्तरम् ॥ १ ॥

अर्थ–अब कषाय अर्थात् काढा पांच प्रकारका है स्वरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हिम ४ फांट ५ ये एकसे एक गुणमें न्यून है जैसे स्वरससे न्यून कल्क ॥ १ ॥

आहतात्तत्क्षणात्कृष्टाद्द्रव्यात्क्षुण्णात्समुद्भवः ॥
वस्त्रनिष्पीडितोयः स रसः स्वरसउच्यते ॥ २ ॥

अर्थ–सुंदर पृथिवीसे तात्काल उखाड जलके विना ओषधीको कूटकै वस्त्रमें घाल निचोडै उस रसको स्वरस कहते है ॥ २ ॥

कुडवंचूर्णितंद्रव्यंक्षिप्तंचेद्द्विगुणेजले ॥
अहोरात्रंस्थितंतस्माद्भवेद्वारसउत्तमः ॥ ३ ॥

अर्थ–चूर्णित किया ओषध १६ तोले लेकै दुगना पानीमें दिन राति भिगोय राखै उस रसकोभी स्वरस कहते है ॥ ३ ॥

आदायशुष्कद्रव्यंवास्वरसानामसंभवे ॥
जलेऽष्टगुणितेसाध्यंपादशेषंचगृह्यते ॥ ४ ॥

अर्थ–स्वरस नहीं मिलै तो सूखी ओषधीको आठ गुना पानीमें ओटावै जब चौथाई शेष रहै तब लेवै ॥ ४ ॥

स्वरसस्यगुरुत्वाच्चपलमर्धंप्रयोजयेत् ॥
निःशोषितंचाग्निसिद्धंपलमात्रंरसंपिबेत् ॥ ५ ॥

अर्थ–आली ओषधीका रस भारी होता है इसकारणसे कार्यमें आधा पल लेना और सूखी ओषधीको रात्रिमें भिगोकै निकाला रस हलका है इसकारणसें पलभर लेना ॥ ५ ॥

मधुश्वेतागुडक्षाराञ्जीरकंलवणंतथा ॥
घृतंतैलंचचूर्णादीन्कोलमात्रंरसांक्षिपेत् ॥ ६ ॥

अर्थ–स्वरस वा काथ वा यंत्रसे निकाला अर्क इन्होंमें शहत खांड गुड खार जीरा नमक घृत तेल और चूरण ये सब आठ आठ मासे भर गेरने ॥ ६ ॥

अमृतायारसःक्षौद्रयुक्तःसर्वप्रमेहजित् ॥
हारिद्रचूर्णयुक्तोवारसोधात्र्याःसमाक्षिकः ॥ ७ ॥

अर्थ–गिलोयके रसमें शहत मिलाय पीनेसे सब प्रमेह नाश होते है अथवा आंवलाके रसमें हलदीका चूरण और शहत मिलाय खानेसे सब प्रमेह नाश होते है ॥ ७ ॥

वासकस्वरसःपेयोमधुनारक्तपित्तजित् ॥
ज्वरकासक्षयहरःकामलाश्लेष्मपित्तहा ॥ ८ ॥

अर्थ–वांसाके स्वरसमें शहत मिलाय पीनेसे रक्तपित्त ज्वर खांसी क्षय कामला कफ और पित्त इन्होंका नाश होता है ॥ ८ ॥

त्रिफलायारसःक्षौद्रयुक्तोदार्वीरसोऽथवा ॥
निंबस्यवागुडूच्यावापीतोजयतिकामलाम् ॥ ९ ॥

अर्थ–त्रिफलाका रसमें शहत वा दारुहलदीके रसमें शहत वा नींबका रसमें शहत मिलाकर पीनेसे कामला रोग दूर होता है ॥ ९ ॥

पीतांमरीचचूर्णेनतुलसीपत्रजोरसः ॥
द्रोणपुष्पीरसोप्येवंनिहंतिविषमज्वरान् ॥ १० ॥

अर्थ–तुलसीका रसमें मिरचोंका चूर्ण गोमाका रसमें मिरचोंका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषमज्वरका नाश होता है ॥ १० ॥

जंब्वाम्रामलकीनांचपल्लवोत्थोरसोजयेत् ॥ मध्वाज्यक्षीरसं-
युक्तोरक्तातीसारमुल्बणम् ॥ ११ ॥ स्थूलबब्बूलिकापत्ररसः
पानाद्व्यपोहति॥सर्वातिसारान्द्वयोनाककुटजत्वग्रसोऽथवा ॥ १२

अर्थ–जामन आंब आंवला इन्होंके पतोंके रसमें शहत घृत दूध इन्होंका मिलाकर पीनेसे रक्तातिसार दूर होता है ॥ ११ ॥ बंबूलकी छालके रसमें शहत

वा कूडाके रसमें शहत वा शोनापाठाके रसमें शहत मिलाकर पीनेसे सब प्रकारका अतिसार दूर होता है ॥ १२ ॥

आर्द्रकस्वरसःक्षौद्रयुक्तोवृषणवातनुत् ॥
श्वासकासारुचीर्हंतिप्रतिश्यायंव्यपोहति ॥ १३ ॥

अर्थ–अदरकके रसमें शहत मिला पीनेंसे पोतोंकी वात श्वास खासी अरुचि और पीनस ज़ुखाम इन्होंका नाश होता है ॥ १३ ॥

बीजपूररसःपानान्मधुक्षारयुतोजयेत् ॥
पार्श्वहृद्बस्तिशूलानिकोष्ठवायुंचदारुणम् ॥ १४ ॥

अर्थ–बिजोरानींबूका रसमें शहत और जवखार मिला पीनेसे पसलीका शूल हृदयका शूल बस्तिशूल उग्ररूपी कोष्ठका बंध इन्होंका नाश होता है ॥१४॥

शतावर्याश्चमधुनापित्तशूलहरोरसः ॥
निशाचूर्णयुतःकन्यारसःप्लीहापचीहरः ॥ १५ ॥

अर्थ–शतावरीका रसमें शहत मिला पीनेसे पित्तका शूल दूर होता है कुवार-पट्ठाका रसमें हलदीका चूर्ण मिला पीनेंसे तिल्लीरोग और अपचीरोगका नाश होता है ॥ १५ ॥

अलंबुषायाःस्वरसःपीतोद्विपलमात्रया ॥
अपचीगंडमालानांकामलायाश्चनाशनः ॥ १६ ॥

अर्थ–मुंडीका रसको ८ तोलेभर ले पीनेंसे अपची गंडमाला कामला इन्होंका नाश होता है ॥ १६ ॥

रसोमुंड्याःसकोष्णोवामरीचैरवधूलितः ॥
जयेत्सप्तदिनाभ्यासात्सूर्यावर्तार्धभेदकौ ॥ १७ ॥

अर्थ–अथवा मुंडीका रसको कछुक गरम कर तिसमें मिरचोंका चूर्ण मिला सातदिन पर्यंत पीनेंसे सूर्य्यावर्त और अर्द्धभेदक रोगका नाश होता है ॥१७॥

ब्राह्मीकूष्मांडषड्ग्रंथाशंखिनीस्वरसःपृथक् ॥
मधुकुष्ठयुतःपीतःसर्वोन्मादापहारकः ॥ १८ ॥

अर्थ–ब्राह्मी कोहला वच कौडी इन्होंका स्वरस पृथक् पृथक् लेकै शहत और कूठका चूरण मिला पीनेंसे सब प्रकारके उन्मादोंका नाश होता है ॥ १८ ॥

कूष्मांडकस्यस्वरसोगुडेनसहयोजितः ॥
दुष्टकोद्रवसंजातंमदंपानाद्व्यपोहति ॥ १९ ॥

अर्थ–सुपेद कोहलाका रसमें गुड मिला पीनेंसे दुष्टकोद्रवका उन्माद दूर होता है ॥ १९ ॥

खड्गादिच्छिन्नगात्रस्यतत्कालपूरितोव्रणः ॥
गांगेरुकीमूलरसैर्जायतेगतवेदनः ॥ २० ॥

अर्थ–तलवारादि शस्त्रके लगे घावमें वरियाराका मूलको रस लगावै तो शीघ्र घाव अच्छा होता है ॥ २० ॥

पुटपाकस्यकल्कस्यस्वरसोगृह्यतेयतः॥अतस्तुपुटपाकानांयुक्तिरत्रोच्यतेमया ॥२१॥ पुटपाकस्यमात्रेयंलेपस्यांगारवर्णता ॥ लेपंचद्व्यंगुलंस्थूलंकुर्याद्वांगुष्ठमात्रकम् ॥२२॥ काश्मरीवटजंब्वाम्रपत्रैर्वेष्टनमुत्तमम् ॥ पलमात्रंरसोग्राह्यःकर्षमात्रंमधुक्षिपेत् ॥ २३ ॥ कल्कचूर्णद्रवाद्यास्तुदेयाःस्वरसवद्बुधैः ॥

अर्थ–पुटपाकका रस लेते है इस्से इसका यत्न कहते है ॥ २१ ॥ कोई आली ओषधी हो तिसको पीसकर गोला बांधै तिसपर अरंड वा वड वा जामनका वा आमके पत्तासे लपेटै पीछे कपडा मंढकर दो अंगल ऊंची माटी चढावै पीछे अग्निमें धरै जब लाल हो तब निकालकै उसका रस निचोडै उसको पुटपाक कहते है तब चार तोले भर रसमें १ तोला भर शहत मिलाना ॥२२॥२३॥ और कल्क चूर्ण पतली ओषधी ये मिलाने हों तो स्वरसके प्रमानसे मिला देनें ॥

तत्कालाकृष्टकुटजत्वचंतंडुलवारिणा ॥ २४ ॥ पिष्टांचतुःपलमितांजंबूपल्लववेष्टिताम् ॥ सूत्रेणबद्धांगोधूमपिष्टेनपरिवेष्टिताम् ॥ २५ ॥ लिप्तांचघनपंकेनगोमयैर्वन्हिनादहेत् ॥ अंगारवर्णांचमृदंदृष्ट्वावन्हेःसमुद्धरेत् ॥ २६ ॥ ततोरसंगृहीत्वाचशीतंक्षौद्रयुतंपिबेत् ॥ जयेत्सर्वानतीसारान्दुस्तरान्सुचिरोत्थितान् ॥ २७ ॥

अर्थ–तात्काल तोडी हुई कूडाकी छाल ४ तोले भर लेकै चावलोंके धोवनमें ॥ २४ ॥ पीसकै गोला बांध जामनके पत्तोंसें लपेटै पीछे सूतसे बांध गेहूंके

चूनसे लेप कर ॥२५॥ माटी लगावै पीछे गौका गोवरके गोसोंकी अग्निसे अर्थात् छाणा जलावै जब अंगाराके वर्ण हो जावै तब अग्निसे निकास ॥ २६ ॥ निचोड शीतल कर शहत मिलाकै पीवै तो बहुत दिनोंका दारुण अतिसार दूर होता है ॥ २७ ॥

कंडितंतंडुलपलंजलेऽष्टगुणितेक्षिपेत् ॥
भावयित्वाजलंग्राह्यंदेयंसर्वत्रकर्मसु ॥ २८ ॥

अर्थ-चार तोले भर शुद्ध चावलोंको आठ गुना पानीमें धोवै वही धोवन सब जगह लेना.॥ २८ ॥

अरलुत्वक्कृतश्चैवपुटपाकोऽग्निदीपनः ॥
मधुमोचरसाभ्यांचयुक्तःसर्वातिसारजित् ॥ २९ ॥

अर्थ-करीलका पुटपाक अग्निको दीपन करता है जब शहत और मोचरस मिलाकै दिया जावै तो सब अतिसारोंको दूर करता है ॥ २९ ॥

न्यग्रोधादेश्चकल्केनपूरयद्गौरतित्तिरेः ॥ निरंत्रमुदरंसम्यक्-पुटपाकेनतत्पचेत् ॥ ३० ॥ तत्कल्कःस्वरसःक्षौद्रयुक्तः सर्वातिसारनुत् ॥

अर्थ-वड पीपल गूलर पिलवन जगन्नाथी पीपल इन्होंकी छालको पानीमें पीस गोला बांध सपेद तीतरका पेटमांहसे आंतोंको निकास उसमें गोलाको धर पुटपाक बनाकर पकावै ॥ ३० ॥ पकनेंपर गोलाको निकास रस निचोड तिसमें शहत मिलाकै देवै तो सब प्रकारके अतिसार नष्ट होते है ॥

पुटपाकेनविपचेत्सुपक्कंदाडिमीफलम् ॥ ३१ ॥
तद्रसोमधुसंयुक्तःसर्वातीसारनाशनः

अर्थ-पकाहुआ अनारका पुटपाक बनाय ॥३१॥ तिसके रसमें शहत मिला पीनेंसे सब अतिसार दूर होते है ॥

बीजपूराम्रजंबूनांपल्लवानिजटाःपृथक् ॥ ३२ ॥ विपचेत्पुटपा-केनक्षौद्रयुक्तश्चतद्रसः ॥छर्दिंनिवारयेद्धोरांसर्वदोषसमुद्भवाम् ३३

अर्थ-बिजोरा नींबू आंव जामन इन्होंके पत्ते अथवा जडके ॥३२॥ पुटपाकका रसमें शहत मिला पीनेंसे सब दोषकी छर्दि दूर होती है ॥ ३३ ॥

पिष्टानांवृषपत्राणांपुटपाकरसोहिमः ॥
मधुयुक्तोजयेद्रक्तपित्तकासज्वरक्षयान् ॥ ३४ ॥

अर्थ–वांसके अर्थात् अडुसाके पत्तोंका पुटपाक वनाकै तिसके रसको शीतलकर तिसमें शहत मिला पीनेंसे रक्तपित्त खांसी ज्वर क्षयरोग इन्होंका नाश होता है॥३४॥

पचेत्क्षुद्रांसपंचांगांपुटपाकेनतद्रसः ॥
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तःकासश्वासकफापहः ॥ ३५ ॥

अर्थ–कटेलीके पंचांगका पुटपाक बनाय तिसके रसमें पीपलका चूरण मिला पीनेंसे खांसी श्वास और कफ इन्होंका नाश होता है ॥ ३५ ॥

बिभीतकफलंकिंचिद्घृतेनाभ्यज्यलेपयेत् ॥ गोधूमपिष्टैरंगारैर्विपचेत्पुटपाकवत् ॥ ३६ ॥ ततःपक्वंसमुद्धृत्यत्वचंतस्यमुखेक्षिपेत् ॥ कासश्वासप्रतिश्यायस्वरभंगाञ्जयेत्ततः॥३७॥

अर्थ–वहेडाका फलपर कछुक घृत लगाय गेहूंके चूनसे लेप कर अंगारपर पकावै ॥ ३६ ॥ पीछे पक जानेपर निकास तिसका छिलकाको मुखमें धरै तो खांसी श्वास जुखाम पीनस स्वरभंग इन्होंका नाश होता है ॥ ३७ ॥

चूर्णंकिंचिद्घृताभ्यक्तंशुंठ्याएरंडजैर्दलैः॥ वेष्टितंपुटपाकेनविपचेन्मंदवन्हिना ॥ ३८ ॥ ततउद्धृत्यतच्चूर्णंग्राह्यंप्रातःसितान्वितम् ॥ तेनयांतिशमंपीडाआमातीसारसंभवाः ॥ ३९ ॥

अर्थ–सूंठके चूरणको कछुक घृतसे चुपड गोला वनाय एरंडके पत्तोंसे लपेट मंद अग्निमें पुट पाक करै ॥ ३८ ॥ पीछे उसमें खांड मिलाय सवैरे खानेंसे आमातिसारकी पीडा दूर होती है ॥ ३९ ॥

शुंठीकल्कंविनिक्षिप्यरसैरेरंडमूलजैः ॥ विपचेत्पुटपाकेनतद्रसः क्षौद्रसंयुतः ॥ ४० ॥ आमवातसमुद्भूतांपीडांजयतिदुस्तराम् ॥

अर्थ–सूंठके चूरणको अरंडकी जडके रसमें सान पुटपाक बनाकै पकाय रस निचोड तिन रसमें शहत मिला पीनेसे ॥ ४० ॥ आमवातकी दारुण पीडा दूर हो जाती है ॥

सौरणंकंदमादायपुटपाकेनपाचयेत् ॥ ४१ ॥
सतैलवणस्तस्यरसश्चार्शोविकारनुत् ॥

अर्थ—जमीकंदको लेकै पुटपाकसे पकावै ॥४१॥ पीछे तिसके रसमें तेल और नमक मिला पीनेसे ववासीरको नाश करता है ॥

शरावसंपुटेदग्धंशृंगंहरिणजंपिबेत् ॥
गव्येनसर्पिषापिष्टंहृच्छूलंनश्यतिध्रुवम् ॥ ४२ ॥

अर्थ—सकोराके संपुटमें हिरणके शींगको दग्ध कर पीछे गौके घृतसे पीस खानेमें हृदयका शूल शीघ्र नाशको प्राप्त होता है ॥ ४२ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदी-पिकायां द्वितीयखंडे स्वरसादिकल्पनानाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः ।

पानीयंषोडशगुणंक्षुण्णेद्रव्यपलेक्षिपेत् ॥ मृत्पात्रेक्वाथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ॥४३॥ तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णंमृद्वग्निसाधितम्॥ शृतःक्वाथः कषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यते॥४४॥ आहाररसंपाकेचसंजातेद्विपलोन्मितम् ॥ वृद्धवैद्योपदेशेन पिबेत्क्वाथंसुपाचितम् ॥ ४५ ॥

अर्थ—च्यार तोलेभर ओषधि और चौंसठ तोलेभर पानीको माटीके पात्रमें घाल मंद अग्निसे औठावै जब आठ तोलेभर वाकी रहै तब उतारै ॥४३॥ कछुक गर्म रहै तब पीवै सृत १ क्वाथ २ कषाय ३ निर्यूह ४ ये च्यार नाम क्वाथके हैं॥४४॥ आहारका रस पक जावै तव वृद्ध वैद्यके उपदेशसे दो पलभर काढाको पीवै ॥४५॥

क्वाथेक्षिपेत्सितामंशैश्चतुर्थाष्टमषोडशैः॥ वातपित्तकफातंकेविपरीतंमधुस्मृतम् ॥४६॥ जीरकंगुग्गुलुंक्षारंलवणंचाशिलाजतु ॥ हिंगुत्रिकटुकंचैवक्वाथेशाणोन्मितंक्षिपेत् ॥ ४७ ॥ क्षीरंघृतंगुडंतैलंमूत्रंचान्यद्द्रवंतथा ॥ कल्कंचूर्णादिकंक्वाथेविक्षिपेत्कर्षसंमितम् ॥ ४८ ॥

अर्थ—जो वात प्रधान होतो मिश्री चार अंश देनी पित्तमें अष्टमांश कफमें षोडशांश देनी वायुमें शहत षोडशांश पित्तमें अष्टमांश कफमें चौथा अंश देना ॥४६॥

जीरा गूगल खार सेंधानमक शिलाजीत हींग सूंठ मिरच पीपल ये काढेमें च्यार मासे देना वा वल समय देखकै देना ॥ ४७ ॥ दूध घृत गुड तेल गोमूत्र और स्वरस आदि कल्क और चूर्ण आदि एक तोला प्रमाण देना ॥ ४८ ॥

अपिधानामुखेपात्रेजलंदूजरतांव्रजेत् ॥
तस्मादावरणंत्यक्त्वाक्वाथादीनांविनिश्चयः ॥ ४९ ॥

अर्थ–ढका हुवा पात्रका मुखसे औषधि जहति नहि तिन कारणसे विना ढक औषध सिद्ध करना ॥ ४९ ॥

गडूचीधान्यकारिष्टरक्तचंदनपद्मकैः ॥ गुडूच्यादिगणक्वाथःसर्वज्वरहरःस्मृतः ॥५०॥ दीपनोदाहहृल्लासतृष्णाछर्द्यरुचीर्जयेत् ॥

अर्थ–गिलोय धनियां नींबकी छाल पद्माष लालचंदन यह गुडूच्यादि क्वाथ पानीसे सब ज्वरोंको नाश करता है दीपन है ॥ ५० ॥ और दाह तृषा लार छर्दि अरुचि इन्होंकोबी नाश करता है ॥

गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैःपाचनंस्मृतम् ॥५१॥ दद्याद्वातज्वरेपूर्णलिंगेसप्तमवासरे ॥ शालिपर्णीबलारास्नागुडूचीसारिवातथा ॥ ५२ ॥ आसांक्वाथंपिबेत्कोष्णंतीव्रवातज्वरच्छिदम् ॥ काश्मरीसारिवाद्राक्षरात्रायमाणामृताभवः ॥ ५३ ॥ कषायः सगुडःपीतोवातज्वरविनाशनः ॥

अर्थ–गिलोय पीपलामूल सूंठ इन्होंका काढा वातज्वरविषैं सातमां दिनमें देना यह पाचन है ॥ ५१ ॥ वनउर्दी खरैंहटी रासन गिलोय सरिवन इन्होंका काढा पीनेंसे दारुण वातज्वर दूर होता है ॥ ५२ ॥ खंभारी सरिवन दाख त्रायमाण गिलोय इन्होंका काढामें ॥ ५३ ॥ गुड मिला पीवै तो वातज्वर दूर होवै ॥

कटूफलेंद्रयवांबष्ठातिक्तामुस्तैःशृतंजलम् ॥ ५४ ॥ पाचनंदशमेह्निस्यात्तीव्रेपित्तज्वरेनृणाम् ॥ पर्पटोवासकस्तिक्ताकिरातोधन्वयासकः ॥ ५५ ॥ प्रियंगुश्चकृतःक्वाथएषांशर्करयायुतः ॥ पिपासादाहपित्तास्रयुक्तंपित्तज्वरंजयेत् ॥ ५६ ॥ द्राक्षाहरीतकीमुस्तंकटुकाकृतमालकः ॥ पर्पटश्चकृतःक्वाथएषांपित्तज्वरापहः ॥ ५७ ॥ तृण्मूर्च्छादाहपित्तास्रक्शमनोभेदनःस्मृतः ॥

अर्थ–कायफल इंद्रजव पाठा कुटकी नागरमोथा इन्होंका काढा पित्तज्वर विषैं दशमांदिनमें देना यह पाचन है ॥ ५४ ॥ पित्तपापडा वांसा कुटकी चिरायता जवासा प्रियंगूदाना इन्होंका काढामें खांड मिला पीनेंसे ॥ ५५ ॥ तृषा दाह रक्तपित्त पित्तज्वर इन्होंका नाश होता है दाख हरडै नागरमोथा कुटकी आमलताश ॥ ५६ ॥ पित्तपापडा इन्होंका काढा पित्तज्वरको हरता है ॥ ५७ ॥ और तृषा मूर्च्छा दाह रक्तपित्त इन्होंको शांत करता है और भेदन है ॥

बीजपूरशिवापथ्यानागरग्रंथिकैःशृतम् ॥ ५८ ॥
सक्षारंपाचनंश्लेष्मज्वरेद्वादशवासरे ॥

अर्थ–विजोराकी जड हरडै सूंठ पीपलामूल इन्होंका काढामें ॥ ५८ ॥ जवखार मिला कफ ज्वरविषैं वारहमां दिनमें पीना यह पाचन है ॥

भूनिंबनिंबपिप्पल्यःशठीशुंठीशतावरी ॥ ५९ ॥ गुडूचीबृहतीचेतिक्काथोहन्यात्कफज्वरम् ॥ पटोलत्रिफलातिक्ताशठीवासामृताभवः ॥ ६० ॥ क्काथोमधुयुतःपीतोहन्यात्कफकृतंज्वरम् ॥

अर्थ–चिरायता नींव पीपल कचूर सूंठ शतावरी ॥ ५९ ॥ गिलोय कांटाली इन्होंका काढा कफज्वरको हरता है परवल त्रिफला कुटकी कचूर वांसा गिलोय ॥ ६० ॥ इन्होंका काढामें शहत मिलाकर पीनेंसे कफज्वर दूर होता है ॥

पर्पटाब्दामृताविश्वकिरातैःसाधितंजलम् ॥ ६१ ॥
पंचभद्रमिदंज्ञेयंवातपित्तज्वरापहम् ॥

अर्थ–पित्तपापडा नागरमोथा गिलोय सूंठ चिरायता ॥ ६१ ॥ इस पंचभद्र काढासे वातपित्त ज्वर दूर होता है ॥

क्षुद्राशुंठीगुडूचीनांकषायःपौष्करस्य च ॥ ६२ ॥ कफवाताधिकेपयोज्वरेवापित्रिदोषजे ॥ कासश्वासारुचिकरेपार्श्वशूलविधायिनि ॥ ६३ ॥

अर्थ–कटेली सूंठ पोहकरमूल यह काढा ॥ ६२ ॥ कफ वात ज्वरमें वा त्रिदोषज ज्वरमें पीना योग्य है यह त्रिदोषज ज्वरमें खांसी श्वास अरुचि पसलीभूल इन्होंको हरता है ॥ ६३ ॥

आरग्वधकणामूलमुस्ततिक्ताभयात्कृतः ॥ क्काथःशमयति क्षिप्रंज्वरंवातकफोत्तरम् ॥ ६४ ॥ आमशूलप्रशमनोभेदीदी-

पनपाचनः ॥ अमृतारिष्टकटुकामुस्तेंद्रयवनागरैः ॥ ६५ ॥ पटोलचंदनाभ्यांचपिप्पलीचूर्णयुक्शृतम् ॥ अमृताष्टकमेतच्चपित्तश्लेष्मज्वरापहम् ॥ ६६ ॥ छर्द्यरोचकहृल्लासदाहतृष्णानिवारणम् ॥ कंटकारीद्वयंशुंठीधान्यकंसुरदारुच ॥ ६७ ॥ एभिःशृतंपाचकंस्यात्सर्वज्वरविनाशनम् ॥

अर्थ—अमलतास पीपलामूल नागरमोथा कुटकी हरडै इन्होंका काढा वात कफ ज्वरको शीघ्र नाश करता है ॥ ६४ ॥ और आमशूलको शांत करता है भेदन करता है दीपन और पाचन है गिलोय नींव कुटकी नागरमोथा इंद्रजव सूंठ ॥६५॥ परबल लाल चंदन इन्होंका काढामें पीपलका चूरण मिलाकर पीना यह अमृताष्टक है यह पित्त कफ ज्वरको हरता है ॥ ६६ ॥ और छर्दि अरोचक लार दाह तृषा इन्होंको निवारण करता है दोनों कटेली सूंठ धनियां देवदार ॥ ६७ ॥ यह पाचनरूप काढा सब ज्वरोंको हरता है ॥

शालिपर्णीपृष्ठपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः ॥६८॥ बिल्वोग्निमंथस्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः ॥ दशमूलमितिख्यातंक्वथितंतज्जलंपिबेत् ॥६९॥ पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंवातश्लेष्महरंपरम् ॥ सन्निपातज्वरहरंसूतिकादोषनाशनम् ॥७०॥ शोषशैत्यश्रमस्वेदकासश्वासविकारनुत् ॥ हृत्कंठग्राहपार्श्वार्तितंद्रामस्तकशूलनुत् ७१

अर्थ—वनउर्दी वनमूंग दोनों कटेली गोखरू ॥६८॥ वेलकीजड अरनी सोहनपत्ता खंभारी पाठा यह दशमूल काढा है ॥६९॥ इसमें पीपलका चूरण मिलाकै पीवै यह वातकफको हरता है और सन्निपात्त ज्वर सूतिकारोग ॥ ७० ॥ शोष शीत पसीना खांसी श्वासके विकार हृद्ग्रह कंठग्रह पंसलीशूल तंद्रा मस्तकशूल इन्होंको नाश करता है ॥ ७१ ॥

अभयामुस्तधान्याकरक्तचंदनपद्मकैः ॥ वासकेंद्रयवोशीरगुडूचीकृतमालकैः ॥ ७२ ॥ पाठानागरतिक्ताभिःपिप्पलीचूर्णयुक्शृतम् ॥ पिबेत्त्रिदोषज्वरजित्पिपासादाहकासनुत् ॥७३॥ प्रलापश्वासतंद्राघ्नंदीपनंपाचनंपरम् ॥ विण्मूत्रानिलविष्टंभवमीशोषारुचिंजयेत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–हरडै नागरमोथा धनियां लालचंदन पद्माष वांसा इंद्रजव खस गिलोय अमलतास ॥७२॥ पाठाकीजड कुटकी इन्होंका काढामें पीपलका चूर्ण मिलाकर पीवै यह सन्निपात तृषा दाह खांसी ॥७३॥ प्रलाप श्वास तंद्रा इन्होंको नाश करता है दीपन है पाचन है वातसे मलमूत्रका रोध वमन कंठशोष अरुचि इन्होंको हरता है ॥७४॥

कैरातकटुकामुस्तंधान्येंद्रयवनागरैः ॥ दशमूलमहादारुगजपिप्पलिकायुतैः ॥ ७५ ॥ कृतःकषायःपार्श्वार्तिसन्निपातज्वरंजयेत् ॥ कासश्वासवमीहिक्कातंद्राहृद्ग्रहनाशनः ॥ ७६ ॥

अर्थ–चिरायता कुटकी नागरमोथा धनियां इंद्रजव सूंठ दशमूल देवदार गजपीपली ॥ ७५ ॥ इन्होंका काढा पसलीशूल सन्निपातज्वर खांसी श्वास छर्दि हिचकी तंद्रा हृद्ग्रह इन्होंको नाशता है ॥ ७६ ॥

कट्फलांबुदभार्ङ्गिभिर्धान्यरोहिषपर्पटैः॥ वचाहरीतकीशृंगीदेवदारुमहोषधैः ॥ ७७ ॥ क्काथःकासज्वरंहंतिश्वासश्लेष्मगलग्रहान् ॥ क्काथोजीर्णज्वरहरोगुडूच्यापिप्पलीयुतः ॥ ७८ ॥ तथापर्पटजःक्काथःपित्तज्वरहरोऽपरः ॥

अर्थ–कायफल नागरमोथा भारंगी धनियां खस पित्तपापडा वच हरडै काकडाशींगी देवदार सूंठ ॥ ७७ ॥ इन्होंका काढा खांसीसहितज्वर श्वास कफ कंठरोग इन्होंको नाश करता है गिलोयका काढामें पीपलका चूर्ण मिलाकै पीवै तो जीर्णज्वर दूर होता है ॥ ७८ ॥ पित्तपापडाका काढामें पीपलका चूरण मिलाके पीवैतो पित्तज्वर दूर होता है ॥

निदग्धिकामृताशुंठीकषायंपाययेद्भिषक् ॥७९॥ पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंश्वासकासार्दितापहम् ॥ पीनसारुचिवैस्वर्यशूलजीर्णज्वरापहम् ॥८०॥ क्षुद्राधान्यकशुंठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्मकैः रक्तचंदनभूनिंबपटोलवृषपौष्करैः॥८१॥ कटुकेंद्रयवारिष्टभार्ङ्गीपर्पटकैःसमैः ॥ क्काथंप्रातर्निषेवेतसर्वशीतज्वरच्छिदम् ॥८२॥

अर्थ–कटेली गिलोय सूंठ इन्होंका काढामें ॥ ७९ ॥ पीपल मिलाकर पीनेसे श्वास खांसी आर्दित वात पीनस अरुचि सरभंग शूल और जीर्णज्वर इन्होंका नाश होता है ॥८०॥ कटेली धनियां सूंठ गिलोय नागरमोथा पद्माक लाल चंदन

चिरायता परवल वांसा पोहकरमूल ॥ ८१ ॥ कुटकी इंद्रजव नींब भारंगी और पित्तपापडा इन्होंका काढा पीनेसे सब प्रकारका शीतज्वर दूर होता है ॥ ८२ ॥

मुस्ताक्षुद्रामृताशुंठीधात्रीक्काथःसमाक्षिकः ॥
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तोविषमज्वरनाशनः ॥ ८३ ॥

अर्थ–नागरमोथा कटेली गिलोय सूंठ आंवला इन्होंका काढामें शहत और पीपलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे विषमज्वरका नाश होता है ॥ ८३ ॥

पटोलत्रिफलानिंबद्राक्षासंपाकवासकैः ॥ क्काथःसितामधुयुतोजयेदेकाहिकंज्वरम् ॥ ८४ ॥ गुडूचीधान्यमुस्ताभिश्चंदनोशीरनागरैः ॥ कृतंक्काथंपिबेत्क्षौद्रसितायुक्तंज्वरातुरः ॥८५॥ तृतीयज्वरनाशायतृष्णादाहनिवारणम् ॥

अर्थ–परवल त्रिफला नींब दाख अमलतास वांसा इन्होंका काढामें मिश्री और शहत मिला पीनेसे एकाहिक ज्वर दूर होता है ॥ ८४ ॥ गिलोय धनियां नागरमोथा चंदन खस सूंठ इन्होंका काढामें शहत और मिश्री मिलाकर ज्वररोगी पीवै ॥ ८५ ॥ तो तृतीय ज्वर तृषा दाह इन्होंका नाश होता है ॥

देवदारुशिवावासाशालिपर्णीमहौषधैः॥८६॥धात्रीयुक्तैःशृतंशीतं दद्यान्मधुसितायुतम् ॥ चातुर्थकज्वरेश्वासेकासेमंदानलेतथा॥८७॥

अर्थ–देवदार हरडै वांसा सरबन सूंठ ॥ ८६ ॥ आंवला इन्होंका काढामें शहत और मिश्री मिला पीनेसे चातुर्थिक ज्वर श्वास खांसी और मंदाग्नि इन्होंका-नाश होता है ॥ ८७ ॥

गुडूचीधान्यकोशीरशुंठीवालकपर्पटैः ॥ बिल्वप्रतिविषापाठारक्तचंदनवत्सकैः ॥ ८८ ॥ किरातमुस्तेंद्रयवैःक्कथितंशिशिरंपिबेत् ॥ सक्षौद्रंरक्तपित्तघ्नंज्वरातीसारनाशनम् ॥ ८९ ॥

अर्थ–गिलोय धनियां खस सूंठ नेत्रवाला पितपापडा बेलगिरि अतीस पाठा लाल चंदन कूडा ॥ ८८ ॥ चिरायता नागरमोथा इंद्रजव यह काढा शीतल कर तिसमें शहत मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त और ज्वरातीसारका नाश होता है ॥८९॥

नागरंकुटजोमुस्तममृतातिविषातथा ॥ एभिःकृतंपिबेत्क्काथंज्वरातीसारनाशनम् ॥ ९० ॥ धान्यनागरविल्वाब्दवा-

ल्कैःसाधितंजलम् ॥ आमशूलहरंग्राह्यंदीपनंपाचनंपरम् ॥ ॥ ९१ ॥ सधान्यनागरक्वाथपाचनोदीपनस्तथा ॥ एरंडमूलयुक्तश्चजयेदामानिलव्यथाम् ॥ ९२॥ वत्सकातिविषाबिल्वमुस्तवालकजःस्मृतः ॥ अतीसारंजयेत्सामंचिरजंरक्तशूलजित् ॥९३॥ कुटजातिविषापाठाधातकीलोध्रमुस्तकैः ॥ ह्रीबेरदाडिमयुतैःकृतःक्वाथःसमाक्षिकः ॥९४॥ पेयोमोचरसेनैवकुटजाष्टकसंज्ञकः॥अतिसारान्जयेद्दाहरक्तशूलामदुस्तरान् ॥९५॥

अर्थ–सूंठ कूडा नागरमोथा गिलोय अतीश इन्होंका काढा पीनेसे ज्वरातीसार दूर होता है ॥ ९० ॥ धनियां सूंठ वेलगिरी नागरमोथा नेत्रवाला इन्होंका काढा आमशूलको हरता है दस्तको बोधता है दीपन और पाचन है ॥ ९१ ॥ धनियां और सूंठका काढा पाचन है दीपन है और एरंडकी जडसे युक्त किया यही काढा आमवातकी पीडाको जीतता है ॥ ९२ ॥ कूडाकीजड अतीस वेलगिरी नागरमोथा नेत्रवाला इन्होंका काढा बहुत कालसे उपजा आमातीसारको और रक्तशूलको जीतता है ॥९३॥ कूडा अतीस पाठा धायके फूल लोध नागरमोथा अथवा हाऊवेर अनार इन्होंका काढामें मोचरस मिलावै ॥ ९४ ॥ यह कुटजाष्टक काढा पीनेसे रक्तशूल आम इन्होंसे दुस्तररूप अतिसार दूर होते हैं ॥ ९५ ॥

ह्रीबेरधातकीलोध्रपाठालज्जालुवत्सकैः॥९६॥ धान्यकातिविषामुस्तागुडूचीबिल्वनागरैः॥ कृतःकषायःशमयेदतिसारंचिरोत्थितम् ॥ अरोचकामशूलांश्चज्वरघ्नःपाचनःस्मृतः ॥९७॥ धातकीबिल्वलोध्राणिवालकंगजपिप्पली ॥ एभिःकृतंसृतंशीतंशिशुभ्यःक्षौद्रसंयुतः॥९८॥प्रदद्यादवलेहंवासर्वातीसारशांतये॥

अर्थ–हाऊवेर धायके फूल लोध लज्जावंती कूडा धनिया अतीश नागरमोथा गिलोय वेलगिरी सूंठ ॥९६॥ इन्होंका काढा पुराना अतिसार अरोचक आमशूल और ज्वर इन्होंको नाश करता है और पाचन कहा है ॥९७॥ धायके फूल वेलगिरी लोध नेत्रवाला गजपीपल इन्होंका काढाको शीतल कर तिसमें शहत मिला अथवा इन्हीं ओषधोंका अवलेह वनाकै ॥ ९८ ॥ वालकोंके अर्थ देना इस्से सब प्रकारके अतीसार शांत होते है ॥

शालपर्णीबलाबिल्वधान्यंशुंठीकृतःसृतः ॥९९॥ आध्मानशूलसहितांवातजांग्रहणींजयेत् ॥ गडूच्यतिविषाशुंठीमुस्तैःक्काथःकृतोजयेत् ॥१००॥ आमानुसक्तांग्रहणींग्राहीदीपनपाचनः ॥

अर्थ–सरवन खरैंहटी वेलगिरी धनियां सूंठ इन्होंका काढा ॥ ९९ ॥ पेटशूल और नाभिशूलसहित वातकी ग्रहणीको जीतता है गिलोय अतीश सूंठ नागरमोथा इन्होंका काढा आमसहित ग्रहणीको दूर करता है ॥ १०० ॥ दस्तको बांधता है और दीपन पाचन है ॥

यवधान्यपटोलानांक्काथःसक्षौद्रशर्करः ॥ १ ॥ योज्यंछर्द्यतिसारेषुबिल्वाम्रास्थिभवस्तथा ॥ त्रिफलादेवदारुश्चमुस्तामूषकपर्णिका ॥ २ ॥ शिग्रुरेतत्कृतःक्काथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः ॥ विडंगचूर्णयुक्तश्चकृमिघ्नःकृमिरोगहा ॥ ३ ॥

अर्थ–इंद्रजव धनियां परवल इन्होंका काढामें खांड और शहत मिला ॥ १ ॥ अथवा आंवकी गुठलीका काढा वनाकै तिसमें शहत और खांड मिला पीनेसे छर्दि अतिसार दूर होता है ॥ २ ॥ त्रिफला देवदार नागरमोथा मूषाकर्णी सहोंजना इन्होंका काढामें पीपल और वायविडंगका चूर्ण मिला पीनेसे कीडोंका नाश होता है और कृमिरोग दूर होता है ॥ ३ ॥

फलत्रिकामृतातिक्तानिंबकैरातवासकैः ॥
जयेत्मधुयुतःक्काथःकामलांपांडुतांतथा ॥ ४ ॥

अर्थ–त्रिफला गिलोय कुटकी नींब चिरायता वांसा इन्होंका काढामें शहत मिला पीनेसे कामला और पांडुरोग दूर होता है ॥ ४ ॥

पुनर्नवाभयानिंबदार्वीतिक्तापटोलकैः ॥ गुडूचीनागरयुतैःक्काथोगोमूत्रसंयुतः ॥ ५ ॥ पांडुकासोदरश्वासशूलसर्वांगशोथहा ॥

अर्थ–सांठी हरडै नींब दारुहलदी कुटकी परवल गिलोय सूंठ इन्होंका काढामें गोमूत्र मिला पीनेसे ॥५॥ पांडुरोग खांसी पेटरोग श्वास सब अंगोंका सोजा इन्होंका नाश होता है ॥

वासाद्राक्षाभयाक्काथःपीतःसक्षौद्रशर्करः ॥ ६ ॥ निहंतिरक्तपित्तार्तिश्वासकासंचदारुणम् ॥ रक्तपित्तंक्षयंकासंश्लेष्मपि-

त्तज्वरंतथा ॥७॥ केवलोवासककाथःपीतःक्षौद्रेणनाशयेत् ॥
वासांक्षुद्रामृताक्काथःक्षौद्रेणज्वरकासहा ॥ ८ ॥ कासघ्नंपिप्प-
लीचूर्णयुक्तक्षुद्रासृतस्तथा ॥ क्षुद्राकुलत्त्थवासाभिर्नागरेण
चसाधितः ॥९॥ क्काथःपौष्करचूर्णाढ्यःश्वासकासौनिवारयेत् ॥

अर्थ—वांसा दाष हरडै इन्होंका काढामें शहत और खांड मिला ॥ ६ ॥ पीनेसे रक्तपित्त रोग और उग्ररूप श्वास खांसीका नाश होता है ॥ ७ ॥ अकेला वांसाका काढामें शहत मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त क्षय खांसी और कफपित्त ज्वर इन्होंका नाश होता है ॥ ८ ॥ वांसा कटेली गिलोय इन्होंका काढामें शहत मिलाकर पीनेसे ज्वर और खांसीका नाश होता है और कटेलीका काढामें पीपलका चूरण मिलाकर पीनेसे खांसी दूर होती है कटेली कुलथी वांसा सूंठ इन्होंका काढामें ॥९॥ पौहकर मूलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे श्वास और खांसीका नाश होता है ॥

रेणुकापिप्पलीक्काथोहिंगुकल्केनसंयुतः ॥ ११० ॥
जयेत्त्रिदोषजांछर्दिंपर्पटःपित्तजांतथा ॥

अर्थ—मेंवडीका बीज पीपल इन्होंका काढामें भुना हुआ हींगका कल्क मिला पीनेसे ॥ ११० ॥ त्रिदोषकी छर्दि दूर होती है पित्तपापडाका काढा पीनेसे पित्तकी छर्दि दूर होती है ॥

बिल्वत्वचोगुडूच्यावाक्काथःक्षौद्रेसणंयुतः ॥ ११ ॥
जयेत् त्रिदोषजांछर्दिंपर्पटःपित्तजांतथा ॥

अर्थ—बिलकी छालको अथवा गिलोयका काढाको शहतसे संयुक्त कर पीनेसे ॥ ११ ॥ त्रिदोषकी छर्दि दूर होती है और पितपापडाका काढामें शहत मिला पीनेसे पित्तकी छर्दि दूर होती है ॥

हिंगपौष्करचूर्णादिदशमूलसृतोजयेत् ॥ १२ ॥ गृध्रसीकेवलः
क्काथःसेफालीपत्रजस्तथा ॥ रास्नामृतामहादारुनागरैरंडजं
शृतम् ॥१३॥ सप्तधातुगतेवातेसामेसर्वांगजेपिबेत् ॥ रास्ना-
गोक्षुरकैरंडदेवदारुपुनर्नवा ॥ १४ ॥ गुडूच्यारग्वधश्चैवक्काथ-
मेषांविपाचयेत् ॥ शुंठीचूर्णेनसंयुक्तंपिबेज्जंघाकटीग्रहे ॥१५॥
पार्श्वपृष्ठोरुपीडायामामवातेसदुस्तरे ॥

अर्थ–हींग और पौहकरमूलके चूर्णको दशमूलका काढामें मिला पीनेसे ॥१२॥ गृध्रसीवात दूर होवै वा मेवडीके पत्तोंका काढामें हींग और पौहकरमूलका चूर्ण मिला पीनेसे गृध्रसीवात दूर होवै रासना गिलोय देवदार सूंठ अरंडकी जड इन्होंका काढा पीनेसे ॥१३॥ सात धातुओंमें प्राप्त हुआ वात आमवात और सर्वांग वात इन्होंका नाश होता है रासना गोखरू अरंडकी जड देवदार सांठी ॥ १४ ॥ गिलोय अमलतास इन्होंका काढामें सूंठका चूर्ण मिला पीनेसे जांघ कटि ॥१५॥ पंसली पीठ छाती इन्होंका वंधा और दारुण रूप आमवात इन्होंका नाश होता है ॥

रास्नाद्विगुणभागास्यादेकभागास्ततोपरे ॥१६॥ धन्वयासबलैरंडदेवदारुशठीवचा ॥ वासकोनागरंपथ्याचव्यामुस्तंपुनर्नवा ॥१७॥ गुडूचीवृद्धदारुश्चशतपुष्पाचगोक्षुरः ॥ अश्वगंधा प्रतिविषाकृतमालशतावरी ॥१८॥ कृष्णासहचरश्चैवधान्यकं बृहतीद्वयम् ॥ एभिःकृतंपिबेत्क्वाथंशुंठीचूर्णेनसंयुतम् ॥ १९ ॥ कृष्णाचूर्णेनवायोगराजगुग्गुलुनाथवा ॥ अजमोदादिनावापि तैलेनैरंडजेनवा ॥१२०॥ सर्वांगकंपेकुब्जत्वेपक्षाघातेऽपबाहुके ॥ गृध्रस्यामामवातेचश्लीपदेचापतंत्रके ॥ २१ ॥ अंडवृद्धौतथाध्मानेजंघाजानुगदेर्दिते ॥ शुक्रामयेमेदरोगेवंध्यायोन्यामयेषुच ॥ ॥ २२ ॥ महारास्नादिराख्यातोब्रह्मणागर्भकारणम् ॥

अर्थ–रासना २ भाग और सब एक भागमें ॥१६॥ धणो जवासा खरैंटी एरंडकी जड देवदार कचूर वच वांसा सूंठ हरडै चव्य नागरमोथा सांठी ॥१७॥ गिलोय वधायरो साफैं गोखरू आसगंध अतीस अमलतास शतावरी ॥१८॥ पीपल इंद्रजव धनियां दोनोंकटेली इन्होंका काढामें सूंठका चूर्ण मिला अथवा पीपलका चूर्णके साथ ॥१९॥ वा योगराज गूगलके साथ वा अजमोदादि चूर्णके साथ वा अरंडी तेलके साथ लेनेमें ॥१२०॥ सर्वांगवात कूवडापन पक्षाघात अपवाहुक गृध्रसी आमवात पीलपाव अपतंत्रक॥२१॥अंडवृद्धि आध्मान जंघारोग जानुरोग अर्दितवात शुक्ररोग मेदरोग इन्होंको दूरकरता है ॥२२॥ और यह महारास्नादि काढा ब्रह्माजीनें गर्भका कारण कहा है ॥

एरंडोबीजपूरश्चगोक्षुरंबृहतीद्वयम् ॥२३॥ अश्मभेदस्तथाबिल्वएतन्मूलैःकृतःशृतः ॥ एरंडतैलहिंग्वाढ्योयवक्षारःससैंधवः ॥ २४ ॥ स्तनबंधकटीमेढ्रहृदयोत्त्थव्यथांजयेत् ॥

अर्थ–एरंड विजोराकी जड गोखरू दोनोंकंटेली ॥२३॥ पाषाणभेद वेल इन्होंकी जडोंसे किया काढामें एरंडीका तेल हींग जवखार इन्होंको मिला पीनेंसे स्तनवंध कटिपीडा लिंगपीडा हृदयपीडा इन्होंका नाश होता है ॥ २४ ॥

नागरैरंडयोःक्काथःक्काथइंद्रयवस्यवा ॥२५॥ हिंगुसौवर्चलोपेतोवातशूलनिवारणः ॥ त्रिफलारग्वधक्काथःशर्कराक्षौद्रसंयुतः ॥ २६ ॥ रक्तपित्तहरोदाहपित्तशूलनिवारणः ॥ एरंडमूलंद्विपलंजलेऽष्टगुणितेपचेत् ॥ २७ ॥ तत्क्काथोयावशूकाढ्यःपार्श्वहृत्कफशूलहा ॥

अर्थ–सूंठ और एरंडकी जडका काढामें अथवा इंद्रजवोंका काढामें ॥ २५ ॥ हींग और कालानमक मिला पीनेंसे वातशूल दूर होता है त्रिफला अमलतास इन्होंका काढा बना तिसमें खांड और शहत मिला पीनेंसे ॥ २६ ॥ रक्तपित्त दाह और पित्तशूल इन्होंका नाश होता है एरंडकी जडको आठगुणा जलमें पकावै तिस काढामें जवखार मिला पीनेंसे पसलीशूल हृदयशूल ॥ २७ ॥ कफका शूल इन्होंका नाश होता है ॥

दशमूलकृतःक्काथःसयवक्षारसैंधवः ॥ २८ ॥ हृद्रोगगुल्मशूलार्तिकासंश्वासंचनाशयेत् ॥ हरीतकीदुरालंभाकृतमालकगोक्षुरैः ॥ २९ ॥ पाषाणभेदसहितैःक्काथोमाक्षिकसंयुतः ॥ विबंधेमूत्रकृच्छ्रेचसदाहेसरुजेहितः ॥ १३० ॥

अर्थ–दशमूलका काढामें जवखार और सेंधानमक मिलाकर पीनेंसे ॥ २८ ॥ हृद्रोग गुल्म शूल खांसी श्वास इन्होंका नाश होता है हरडै जवासा अमलतास ॥ २९ ॥ पाषाणभेद गोखरू इन्होंका काढामें शहत मिला पीनेसे दाह और शूलसहित मूत्रकृच्छ्रमें और मलरोधमें हित होता है ॥ १३० ॥

वीरतरुर्वृक्षवंदाकाशःसहचरत्रयम् ॥ कुशद्वयंनलोगुंद्राबकपुष्पोऽग्निमंथकः ॥ ३१ ॥ मूर्वापाषाणभेदश्चस्योनाकोगोक्षुरस्तथा ॥ अपामार्गश्चकमलंब्राह्मीचेतिगणोवरः ॥ ३२ ॥ वीरतर्वादिरित्युक्तःशर्कराश्मरिकृच्छ्रहा ॥ मूत्राघातंवायुरोगान्नाशयेन्निखिलानपि ॥ ३३ ॥

अर्थ–कौहवृक्ष वांडगूल कांस तीनों कटसैरैयाके मूल दोनों कुशा नरसलमूल गौंदी शिवलिंगी अरनी ॥ ३१ ॥ मरोडफली पाषाणभेद सोहनपत्ता गोखरू अर्थात् (अंधा झाड) कमल ब्राह्मी ॥ ३२ ॥ यह वीरतर्वादि गण श्रेष्ठ है. यह शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात सब वायुरोग इन्होंको नाश करता है ॥ ३३ ॥

एलामधूकगोकंटरेणुकैरंडवासकाः ॥ कृष्णाश्मभेदसहिताः क्वाथएषांसुसाधितः ॥ ३४ ॥ शिलाजतुयुतःपेयःशर्कराश्मरिकृच्छ्रहा ॥ समूलगोक्षुरक्वाथःसितामाक्षिकसंयुतः ॥ ३५ ॥ नाशयेन्मूत्रकृच्छ्राणितथाचोष्णसमीरणम् ॥

अर्थ–इलायची मलहटी गोखरू मेवडीबीज एरंड वांसा पीपल पाषाणभेद इन्होंका काढामें ॥ ३४ ॥ शिलाजीत मिला पीनेसे शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंका नाश होता है ॥ ३५ ॥ जडसहित गोखरूके क्वाथमें मिश्री और शहत मिला पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और उष्णवात दूर होता है ॥

वरादार्व्यब्ददारूणांक्वाथःक्षौद्रेणमेहहा ॥ ३६ ॥ वत्सकत्रिफलादार्वीमुस्तकोबीजकस्तथा ॥ फलत्रिकाब्ददार्वीणांविशालायाःशृतंपिबेत् ॥३७॥ निशाकल्कयुतंसर्वप्रमेहविनिवृत्तये ॥

अर्थ–त्रिफला दारुहलदी नागरमोथा देवदार इन्होंका काढामें शहत मिला पीनेसे प्रमेहका नाश होता है ॥ ३६ ॥ त्रिफला नागरमोथा दारुहलदी इंद्रायणकी जड इन्होंका काढामें हलदीका कल्क मिला पीनेसे ॥ ३७ ॥ सब प्रकारके प्रमेह दूर होते हैं ॥

दार्वीरसांजनंमुस्तंभल्लातःश्रीफलंवृषः ॥ ३८ ॥ कैरातश्च पिबेदेषांक्वाथंशीतंसमाक्षिकम् ॥ जयेत्सशूलंप्रदरंपीतश्वेतासितारुणम् ॥ ३९ ॥ न्यग्रोधप्लक्षकोशाम्रवेतसोबदरीतुणिः॥ मधुयष्टीप्रियालुश्चलोध्रद्वयमुदुंबरः ॥ १४० ॥ पिप्पलश्चमधूकश्चतथापालाशपिप्पलः ॥ सल्लकीतिंदुकीजंबूद्वयमाम्रतरुः शिवा ॥ ४१ ॥ कदंबककुभौचैवभल्लातकफलानिच ॥ न्यग्रोधादिगणक्वाथंयथालाभंचकारयेत् ॥ ४२ ॥ अयंक्वाथोम-

हाग्राहीव्रण्योभग्नंचसाधयेत् ॥ योनिदोषहरोदाहमेदोमेह-
विषापहः ॥ ४३ ॥

अर्थ-हलदी रसोत नागरमोथा भिलावा वेलगिरी वांसा ॥ ३८ ॥ चिरायता इन्होंका काढामें शहत मिला पीनेसे शूलसहित और पीला सपेद काला लाल ऐसा प्रदर अर्थात् पैरारोग दूर होता है ॥ ३९ ॥ वड पिलवन आंवला वेतस वेर तुनि मुलेहटी चिरोंजी लोध गूलर ॥ १४० ॥ पीपल महुआ जगन्नाथी पी-पल पलाश तेंदू दोनों जामन आंव हरडै ॥ ४१ ॥ कदंव कौह वृक्ष भिलावाका फल इन्होंमें, जितने औषध मिलै तिन्होंको लेवै ॥ ४२ ॥ यह न्यग्रोधादि गणका काढा दस्तको वांधता है और विगडा घावको साधता है और योनिदोष दाह मेद प्रमेह और विष इन्होंको नाश करता है ॥ ४३ ॥

बिल्वोऽग्निमंथःस्योनाकःकाश्मरीपाटलातथा ॥ क्वाथएषांज-
येन्मेदोदोषंक्षौद्रेणसंयुतः ॥ ४४ ॥ क्षौद्रेणत्रिफलाक्वाथःपी-
तोमेदहरःस्मृतः ॥ शीतीभूतंतथोष्णांबुमेदोहृत्क्षौद्रसंयुतम् ॥४५

अर्थ-वेलगिरी अरनी सोहनपत्ता कंभारी सिरस इन्होंका काढामें शहत मिला पीनेसे मेदका दोष दूर होता है ॥ ४४ ॥ त्रिफलाका काढामें शहत मिला पीनेसे मेददोष दूर होता है शीतल जलमें शहत मिला पीनेसे मेद दूर होता है ४५

चव्यचित्रकविश्वानांसाधितोदेवदारुणा ॥
क्वाथस्त्रिवृच्चूर्णयुतोगोमूत्रेणोदरान्जयेत् ॥ ४६ ॥

अर्थ-चव्य चित्रक सूंठ देवदार इन्होंका काढामें निशोतका चूर्ण और गोमूत्र मिला पीनेसे उदर अर्थात् पेटके रोग दूर होते है ॥ ४६ ॥

पुनर्नवामृतादारुपथ्यानागरसाधितः ॥ गोमूत्रगुग्गुलुयुतः
क्वाथःशोथोदरापहः ॥ ४७ ॥ पथ्यारोहीतकक्वाथंयवक्षारक-
णायुतम् ॥ प्रातःपिबेद्यकृत्प्लीहगुल्मोदरनिवृत्तये ॥ ४८ ॥

अर्थ-साटीजड गिलोय देवदार हरडै सूंठ इन्होंका काढामें गोमूत्र और गू-गल मिलाकर पीनेसे पेटका शोजा दूर होता है ॥ ४७ ॥ हरडै रक्तरोहिडा इन्होंका काढामें जवखार और पीपलका चूरण मिला प्रभातमें पीनेसे यकृत्‌रोग तिल्लीरोग वायका गोला इन्होंका नाश होता है ॥ ४८ ॥

पुनर्नवादारुनिशानिशाशुंठीहरितकी ॥ गुडूचीचित्रकोभा-

र्गीदेवदारुचतैःशृतः ॥ ४९ ॥ पाणिपादोदरमुरःप्राप्तशोथंनि-
वारयेत् ॥ फलत्रिकोद्भवंक्काथंगोमूत्रेणैवपाययेत् ॥ १५० ॥
वातश्लेष्मकृतंहंतिशोथंवृषणसंभवम् ॥

अर्थ–साटीजड दारुहलदी सूंठ हरडै गिलोय चित्रक भारंगी देवदार इन्होंका काढा ॥ ४९ ॥ हाथ पैर पेट छाती इन्होंमें प्राप्त हुआ शोजाको नाश करता है त्रिफलाका काढामें गोमूत्र मिलाकर पीनेसे ॥ १५० ॥ वात कफसे उपजा पोताका शोजा दूर होता है ॥

रास्नामृताबलायष्टीगोकंटैरंडजःशृतः ॥ ५१ ॥ एरंडतैलसं-
युक्तोवृद्धिमंत्रभवांजयेत् ॥ कांचनारत्वचःक्काथःशूंठीचूर्णेन
नाशयेत् ॥ ५२ ॥ गंडमालांतथाक्काथःक्षौद्रेणवरुणत्वचः ॥
शाखोटवल्कलक्काथंगोमूत्रेणयुतंपिबेत् ॥ ५३ ॥ श्लीपदानां
विनाशायमेदोदोषनिवृत्तये ॥

अर्थ–रासना गिलोय खरैंहटी मुलैहटी गोखरू ॥ ५१ ॥ एरंड इन्होंका काढामें एरंडीका तेल मिला पीनेसे अंत्रवृद्धि दूर होती है कचनारकी छालका काढामें सूंठका चूर्ण मिला पीनेसे अथवा वरनाकी छालका काढामें शहत मिला पीनेसे ॥५२॥ गंडमाला दूर होती है सहोराका काढामें शहत मिला पीनेसे ॥५३॥ पीलपावरोग और मेदरोग दूर होता है ॥

पुनर्नवावरुणयोःक्काथोऽतर्विद्रधीन्जयेत् ॥ ५४ ॥ तथाशिग्रु-
भवःक्काथोहिंगुसैंधवसंयुतः ॥ वरुणादिगणक्काथमपक्केमध्य-
विद्रधौ ॥ ५५ ॥ उषकादिरजोयुक्तंपिबेच्छमनहेतवे ॥

अर्थ–सांठी और वरनाका काढा पीनेसे ॥ ५४ ॥ अथवा सहोंजनाका काढामें हींग और सेंधानमक मिलाकर पीनेसे अंतर्विद्रधि दूर होता है वरुणादिगणका काढामें उपकादिगणके ओषधोंका चूरण मिलाकर पीनेसे ॥ ५५ ॥ नहीं पकी हुई मध्य विद्रधी अच्छी होती है ॥

वरुणोबकपुष्पश्चबिल्वापामार्गचित्रकाः ॥५५॥ अग्निमंथद्व-
यंशिग्रुद्वयंचबृहतीद्वयम् ॥ सैरेयकत्रयंमूर्वामेषशृंगीकिरात-
कः ॥ ५७ ॥ अजशृंगीचबिंबीचकरंजश्चशतावरी ॥ वरुणा-

दिगणक्काथःकफमेदोहरःस्मृतः ॥ ५८ ॥ हंतिगुल्मंशिरःशूलं तथाभ्यंतरविद्रधीन् ॥ उषकस्तुत्थकंहिंगुकासीसद्वयसैंधवम् ॥ ५९ ॥ सशिलाजतुकृच्छ्राश्मगुल्ममेदःकफापहम् ॥

अर्थ–वरनाका पत्ता मौलसिरी वेलगिरी ऊंगा चित्रक ॥ ५६ ॥ दोनों अरनी दोनों सहोंजने दोनों कटेली तीनों कटसरैया मरोडफली मेढासिंगी चिरायता ॥ ५७ ॥ मेढासिंगी वनकुंदरुकीजड करंजुवा शतावरी यह वरुणादिगण है इसका काढा ॥ ५८ ॥ कफ मेददोष गुल्म शिरका शूल विद्रधि और पीनस इन्होंका नाश करता है खारीमाटी शुद्ध मोरथुता भुंदाहुआ हिंग दो कासीस ॥५९॥ सैंधानमक शिलाजित यह सात औषधियोंके चूर्ण सेवनेसें मूत्रकृच्छ्र कठिनमूत्र-गुल्म और मेदोरोग जाता है ॥

खदिरत्रिफलाक्काथोमहिषीघृतसंयुतः ॥ १६० ॥ विडंगचूर्णयुक्तश्चभगंदरविनाशनः ॥ पटोलत्रिफलारिष्टकिरातखदिरासनैः ॥ ६१ ॥ क्काथःपीतोजयेत्सर्वानुपदंशान्सगुग्गुलुः ॥

अर्थ–खैर त्रिफला इन्होंका चूर्णमें भैंसका घृतयुक्त ॥ १६० ॥ और वायविडंगका चूरण मिलाकर पीनेसे भगंदरका नाश होता है परवल त्रिफला नींब चिरायता खैरका गूंद ॥ ६१ ॥ आशना इन्होंका काढाको गूगलके साथ पीनेसे सब प्रकारका उपदंशरोग अर्थात् आत्तशके रोग दूर होता हैं ॥

अमृतैरंडवासानांक्काथएरंडतैलयुक् ॥ ६२ ॥ पीतःसर्वांगसंचारिवातरक्तंजयेद्ध्रुवम् ॥ पटोलंत्रिफलातिक्तागुडूचीचशतावरी ॥ ६३ ॥ एतत्क्काथोजयेत्पीतोवातास्त्रंदाहसंयुतम् ॥

अर्थ–गिलोय एरंड वांसा इन्होंका काढामें एरंडीका तेल मिलाकर पीनेसे ॥ ६२ ॥ सब अंगोंमें विचरनेंवाला वातरक्त निश्चय दूर होता है परवल त्रिफला कुटकी गिलोय शतावरी ॥ ६३ ॥ इन्होंका काढा पीनेंसे दाहकरकै सहित वातरक्त दूर होता है ॥

क्काथोवल्गुजचूर्णाढ्योधात्रीखदिरसारयोः ॥ ६४ ॥ जयेत्सुशीलितोनित्यंश्वित्रंपथ्याशिनांनृणाम् ॥ मंजिष्ठात्रिफलातिक्तावचादारुनिशामृता ॥ ६५ ॥ निंबश्चैषांकृतःक्काथोवातरक्तविनाशनः ॥ पामाकपालिकाकुष्ठरक्तमंडलजिन्मतः ॥६६॥

अर्थ–आंवला और खैरसारका काढामें वावचीका चूरण मिला पीवै तो ॥६४॥ पथ्यको सेवनेवालोंका श्वित्रकुष्ठ दूर होता है मजीठ त्रिफला कुटकी वच दारुहलदी गिलोय ॥ ६५ ॥ नींब इन्होंका काढा वातरक्त पाम कपालिका कुष्ठ रक्तमंडल इन्होंका नाश करता है ॥ ६६ ॥

मंजिष्ठामुस्तकुटजोगुडूचीकुष्ठनागरैः ॥ भार्गीक्षुद्रावचानिंबनिशाद्वयफलत्रिकैः ॥ ६७ ॥ पटोलकटुकीमूर्वाविडंगासनचित्रकैः ॥ शतावरीत्रायमाणाकृष्णेंद्रयववासकैः ॥ ६८ ॥ भृंगराजमहादारुपाठाखदिरचंदनैः ॥ त्रिवृद्वरुणकैरातबाकुचीकृतमालकैः ॥ ६९ ॥ शाखोटकमहानिंबकरंजातिविषाजलैः ॥ इंद्रवारुणिकानंतासारिवापर्पटैःसमैः ॥ १७० ॥ एभिःकृतंपिबेत्क्वाथंकणागुग्गुलुसंयुतम् ॥ अष्टादशसुकुष्ठेषुवातरक्तार्दितेतथा ॥ ७१ ॥ उपदंशेश्लीपदेचप्रसुप्तेपक्षघातके ॥ मेदोदोषेनेत्ररोगेमंजिष्ठादिःप्रशस्यते ॥ ७२ ॥

अर्थ–मजीठ नागरमोथा कूडा गिलोय कूठ सूंठ भारंगी कटेली वच नींब दोनों हलदी त्रिफला ॥ ६७ ॥ परवल कुटकी मरोडफली वायविडंग आसन चित्रक सतावर त्रायमाण पीपल इंद्रजव वांसा ॥ ६८ ॥ भंगरा देवदार पाठा खैरसार लाल चंदन निशोथ वरना चिरायता बावची अमलतास ॥ ६९ ॥ सहोरा वकायन करंजुवा अतीस खस इंद्रायण जवासा अनंतमूल पित्तपापडा ॥ १७० ॥ ये सब समानभाग लेने इन्होंका काढामें पीपल और गूगलका चूरण मिला पीना अठारह प्रकारके कुष्ठ वातरक्त अर्दितवात ॥ ७१ ॥ उपदंश पीलपान शुनवहरी पक्षाघात मेददोष नेत्ररोग इन रोगोंमें यह मंजिष्ठादि काढा श्रेष्ठ है ७२

पथ्याक्षधात्रीभूनिंबनिशानिंबामृतायुतैः ॥
कृतःक्वाथःषडंगोऽयंसगुडःशीर्षशूलहा ॥ ७३ ॥

अर्थ–हरडै बहेडा आंवला चिरायता हलदी नींब गिलोय इन्होंका काढामें गुड मिला पीवै यह षडंग काढा शिरके शूलको नाश करता है ॥ ७३ ॥

भ्रूशंखकर्णशूलानितथार्धशिरसोरुजं ॥ सूर्यावर्तंशंखकंचदंतपातंचतद्रुजं ॥ ७४ ॥ नक्तांध्यंपटलंशुक्रंचक्षुःपीडांव्यपो-

हर्ति ॥ वासाविश्वामृतादार्वीरक्तचंदनचित्रकैः ॥७५॥ भूनिंब- निंबकटुकापटोलत्रिफलांबुदैः ॥ यवकालिंगकुटजैःक्काथःस- र्वाक्षिरोगहा ॥ ७६ ॥ वैस्वर्यपीनसंश्वासंनाशयेदुरसःक्षतम् ॥

अर्थ–कनपटी कान इन्होंके शूल आधासीसी सूर्यावर्त शंखक दंतपात ॥७४॥ दंतरोग रतोंधा पटल फूली नेत्ररोग नेत्रपीडा इन्होंका नाश होता है वांसा सूंठ गिलोय दारुहलदी लाल चंदन चित्रक ॥ ७९ ॥ चिरायता नींव कुटकी परवल त्रिफला नागरमोथा जव इंद्रजव कूडा इन्होंका काढा पीनेसे ॥ ७६ ॥ सब प्रका- रके नेत्ररोग स्वरभंग पीनस श्वास और छातीका घाव इन्होंका नाश होता है ॥

अमृतात्रिफलाक्काथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः ॥ ७७ ॥ सक्षौद्रः शीलितोनित्यंसर्वनेत्रव्यथांजयेत् ॥ अश्वत्थोदुंबरप्लक्षवटवे- तसजंशृतम् ॥७८॥ व्रणशोथोपदंशानांनाशनंक्षालनात्स्मृतम् ॥

अर्थ–गिलोय और त्रिफलाका काढामें पीपलका चूरण ॥ ७७ ॥ और शहत मिला शीतलकर पीनेसें सब प्रकारकी नेत्रपीडा दूर होती है पीपल गूलर पिलवन वड वेत इन्होंका काढा करकै ॥७८॥ धोवनेसे घावका शोजा और उपदंशका नाश होता है ॥

प्रमथ्यादिककषायभेद ॥

प्रमथ्याप्रोच्यतेद्रव्यपलात्कल्कीकृताच्छृतात् ॥ ७९ ॥ तो- येऽष्टगुणितेतस्याःपानमाहुःपलद्वयम् ॥ मुस्तकेंद्रयवैःसिद्धाप्र- मथ्याद्विपलोन्मिता ॥ १८० ॥ सुशीतामधुसंयुक्तारक्तातीसारनाशिनी ॥ साध्यंचतुःपलंद्रव्यंचतुःषष्टिपलेंबुनि ॥८१ ॥ तत्क्काथेनार्धशिष्टेनयवागूंसाधयेद्बुधाम् ॥ आम्राम्रातकजंबू- त्वक्कषायेविपचेद्बुधः ॥ ८२ ॥ यवागूंशालिभिर्युक्तांतांभु- क्त्वाग्रहणींजयेत् ॥

अर्थ–ओषधियोंको पीसकै गोला बनावै पीछे आठगुना पानीमें मिला काढा करै ॥ ७९ ॥ जव चौथाई जल वाकीर है तव उतारै तिसको प्रमथ्या कहते है इसके जलकी मात्रा दो पल है ॥ १८० ॥ नागरमोथा इंद्रजव इन्होंमें सिद्धकरी और सुंदर शीतल और शहतसे संयुक्त ऐसे दो पल प्रमथ्या पीनेसे रक्तातीसा-

रको नाश करती है ॥ ८१ ॥ चौसठ पल पानीमें चार पलभर द्रव्यको पकाके आधाशेष रक्खै ऐसे करडी यवागूको साधै आंव आंवला जांबून इन्होंकी छालके काढेमें चावलोंकी यवागू अर्थात् गुडपाणीको पकावै ॥ ८२ ॥ तिसको पीनेंसे ग्रहणीरोग दूर होता है ॥

कल्कद्रव्यपलंशुंठीपिप्पलीचार्धकार्षिकी ॥ ८३ ॥
वारिप्रस्थेनविपचेत्सद्रव्योयूषउच्यते ॥

अर्थ—सूंठका कल्क एक पल और पीपल ५ मासे ॥ ८३ ॥ इन्हींको ६४ तोलेभर पानीमें पकावै तिसको यूष कहते है ॥

कुलत्थयवकोलैश्चमुद्गैर्मूलकशुष्ककैः ॥ ८४ ॥ शुंठीधान्यकयुक्तैश्चयूषःश्लेष्मानिलापहः ॥ सप्तमुष्टिकइत्येषसन्निपातज्वरंजयेत् ॥ ८५ ॥ आमवातहरःकंठहृद्वक्राणांविशोधनः ॥ क्षुण्णंद्रव्यपलंसाध्यंचतुःषष्टिपलेऽम्बुनि ॥ ८६ ॥ अर्धशिष्टंचतद्देयंपानेभक्तादिसंविधौ ॥

अर्थ—कुलथी जव बेर मूंग मूलीकी पेंदी ये सब सूखे द्रव्य हों ॥ ८४ ॥ इस सबोंका यूषमें सूंठ और धनियां मिलाके पीवै यह यूष कफ और वातको नाश करता है यह सप्तमुष्टिक यूष है ॥ ८५ ॥ सन्निपात ज्वर आमवात इनको हरता है हृदयको और मुखको शोधता है चौंसठ तोले पानीमें कूटा हुआ एकपलभर दव्यको पकावै ॥ ८६ ॥ जब आधा शेष रहै तब तिसको भक्त कहते है इसको भोजनसमयमें थोडाथोडा देता रहै ॥

उशीरपर्पटोदीच्यमुस्तनागरचंदनैः ॥ ८७ ॥ जलंशृतंहिमं देयंपिपासाज्वरनाशनम् ॥ अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्धकेनवा ॥ ८८ ॥ अथवाक्कथनेनैवसिद्धमुष्णोदकंपिबेतत् ॥ श्लेष्मामवातमेदोघ्नंबस्तिशोधनदीपनम् ॥ ८९ ॥ कासश्वासज्वरहरंपीतमुष्णोदकंनिशि ॥

अर्थ—खस पित्तपापडा नेत्रवाला नागरमोथा सूंठ लाल चंदन ॥ ८७ ॥ इन्होंको पकाके शीतल करि देवै तो तृषासहित ज्वर दूर होता है आठमां अंश चौथा अंश आधा शेष रहा ॥ ८८ ॥ अथवा अति तप्त किया तिसको उष्णोदक

कहते है यह पीनेसें कफ आमवात मेद खांसी श्वास ज्वर इन्होंको नाश करता है ॥ ८९ ॥ वस्तिको शोधता है दीपन है यह पानी रात्रिमें पीना योग्य है ॥

क्षीरमष्टगुणंद्रव्यात्क्षीरान्नीरंचतुर्गुणम् ॥ १९० ॥ क्षीरावशेषंतत्पीतंशूलमामोद्भवंजयेत् ॥ सर्वज्वराणांजीर्णानांक्षीरंभैषज्यमुत्तमम् ॥ ९१ ॥ श्वासात्कासाच्छिरःशूलात्पार्श्वशूलात्सपीनसात् ॥ मुच्यतेज्वरितःपीत्वापंचमूलीशृतंपयः ॥ ९२ ॥ त्रिकंटकबलाव्याघ्रीगुडनागरसाधितम् ॥ वर्चोमूत्रविबंधघ्नंकफज्वरहरंपयः ॥ ९३ ॥ अथान्नप्रक्रियात्रैवप्रोच्यतेनातिविस्तरात्॥ यवागूःषड्गुणजलेसिद्धास्यात्कृसराघना ॥ ९४ ॥ तंडुलैर्माषमुद्गैश्चतिलैर्वासाधिताहिता ॥ यवागूर्ग्राहिणीबल्यातर्पणीवातनाशिनी ॥ ९५ ॥ विलेपीचघनासिक्थासिद्धानीरेचतुर्गुणे ॥ बृंहणीतर्पणीहृद्यामधुरापित्तनाशिनी ॥९६॥ द्रवाधिकास्वल्पसिक्थाचतुर्दशगुणेजले ॥ सिद्धापेयाबुधैर्ज्ञेयायूषःकिंचिद्घनःस्मृतः ॥ ९७ ॥ पेयालघुतराज्ञेयाग्राहिणीधातुपुष्टिदा ॥ यूषोबल्यस्ततःकंठ्योलघुपाकः कफापहः ॥ ९८ ॥

अर्थ–द्रव्यसे आठगुणा दूध और दूधसे चौगुना पानी लेकै ॥ १९० ॥ पकानेसें जब दूधमात्र शेष रहै तब पीनेसे आमसे उपजा शूल दूर होता है सर्व जीर्णज्वरवाले रोगीकूं दूग्ध उत्तम औषध है ॥ ९१ ॥ और पंचमूलसे पका हुआ दुग्ध पीनेसें श्वास कास मस्तकशूल पसवाडेका शूल और ख़ुषामसे छुट जाता है ॥ ९२ ॥ गोषरु नागबला कंटाली गुड और सूंठ इनसे पका हुवा दुग्ध मलबंध और मूत्रबंधकूं नाश करता है तथा कफज्वरकूं नाश करता है ॥ ९३ ॥ अब संक्षेपसे अन्नकी प्रक्रिया कहते है अन्नकी यवागूसें छहगुणा पानी देकै पकावै तिसको कृशरा और घना कहते है ॥ ९४ ॥ चावल मूंग उडद अथवा तिल इन्होंसे साधित करी यवागू दस्तको बांधती है बलमें हित है तृप्त करती है और वातको नाश करती है ॥९५॥ एक पलभर अन्नमें चौगुना जल देकै पकावै तिसको विलेपी कहते है यह विलेपी वीर्यको वढाती है तृप्तिको करती है ॥९६॥

मनको प्रसन्न करती है प्रिय है मधुर है और पित्तको नाशती है अन्नको चौदह गुणा पानीमें पकावै पतला और गाढा नहीं हो सके और पीया जावै तिसको पेया कहते है और कछुक गाढा हो तिसको यूष कहते है ॥ ९७ ॥ पेया अत्यंत हलकी है दस्तको बांधती है धातुओंको पुष्ट करती है यूष बलमें अत्यंत हित है शीघ्रपाकवाला है और कफको नाश करता है ॥ ९८ ॥

जलेचतुर्दशगुणेतंदुलानांचतुःपलम् ॥ विपचेत्स्रावयेन्मंडंस-भक्तोमधुरोलघुः ॥ ९९ ॥ नीरेचतुर्दशगुणेसिद्धोमंडस्त्वसि-क्थकः ॥ शुंठीसैंधवसंयुक्तःपाचनोदीपनःपरः ॥ २०० ॥ धान्यत्रिकटुसिंधूत्थयुक्तस्तक्रेणयोजितः ॥ भृष्टश्चहिंगुतैला-भ्यांसमंडोऽष्टगुणःस्मृतः ॥ १ ॥ दीपनःप्राणदोबस्तिशोध-नोरक्तवर्धनः ॥ ज्वरजित्सर्वदोषघ्नोमंडोऽष्टगुणउच्यते ॥ २॥

अर्थ—सोलह तोलेभर चावलोंको चौदहगुणा पानीमें पकाकै मांडको नि-चोरै वोह मांड मधुर है और हलका है तिसको भक्तमंड कहते है ॥ ९९ ॥ चौ-दहगुणा पानीमें किणकासे रहित और सिद्ध किया मंडमें सूंठ और सैंधानमक मिलावै यह पाचन और दीपन कहा है ॥ २०० ॥ धनियां सूंठ मिरच पीपल सैंध-वनिमक तक्र तेलमें भुना हुआ हींग ऐसे आठ गुण मंड बनता है १ यह दीपन है प्राणोंको देता है बस्तिको शोधता है रक्तको वढाता है ज्वरको जीतता है और सब दोषोंको हरता है यह अष्टगुण मंड कहाता है ॥ २ ॥

सुकंडितैस्तथाभृष्टैर्वाद्यमंडोयवैर्भवेत् ॥ कफपित्तहरःकंठ्यो रक्तपित्तप्रसादनः ॥ ३ ॥ लाजैर्वातंडुलैर्भृष्टैर्लाजमंडःप्रकी-र्तितः ॥ श्लेष्मपित्तहरोग्राहीपिपासाज्वरजिन्मतः ॥ ४ ॥

अर्थ—अच्छी तरह कूटिकै और भूनिकै तैय्यार किये जवोंका वाद्यमंड बनता है यह कफ पित्तको हरता है कंठमें हितकारी है और रक्त पित्तको साफ करता है ॥ ३ ॥ भुनी हुई धानकी खील अथवा भुने हुये चावलोंकरकै लाजा मंड बनता है यह कफ और पित्तको हरता है दस्तको बांधता है और पिपासा ज्वरको नाश करता है ॥ ४ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थ-दीपिकायां मध्यमखंडे क्वाथादिकल्पो नाम द्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ।

क्षुण्णेद्रव्यपलेसम्यग्जलमुष्णंविनिक्षिपेत् ॥ मृत्पात्रेकुडवोन्मानंततस्तुस्रावयेत्पटात् ॥ ५ ॥ तस्यचूर्णद्रवःफांटस्तन्मानंद्विपलोन्मितम् ॥ सितामधुगुडादींश्चक्वाथवत्तत्रनिक्षिपेत् ॥६॥

अर्थ–चार तोलेभर कूटा हुआ द्रव्यमें १६ तोलेभर गरम पानीको मिला माटीके पात्रमें वनावै पीछे शीतल हो जावै तब वस्त्रमांहकै छान लेवै ॥ ५ ॥ तिसको फांट कहते है इसकी मात्रा आठ तोलेभरकी है तिसमें काढाकी तरह मिश्री शहत और गुड आदिको मिलाना ॥ ६ ॥

मधूकपुष्पंमधुकंचंदनंसपरूषकम् ॥ मृणालंकमलंलोध्रंगंभारींनागकेशरम् ॥ ७ ॥ त्रिफलांसारिवांद्राक्षांलाजान्कोष्णेजलेक्षिपेत् ॥ सितामधुयुतःपेयःफांटोवासौहिमोऽथवा ॥ ८ ॥ वातपित्तज्वरंदाहंतृष्णामूर्च्छारतिभ्रमान् ॥ रक्तपित्तंमदंहन्यान्नात्रकार्याविचारणा ॥ ९ ॥

अर्थ–महुआ मुलहटी चंदनफालसा कमलकी नाल कमलवीज लोध गंभारी नागकेशर ॥ ७ ॥ त्रिफला अनंतमूल दाष धानकी खील इन्होंको कछुक गरम किया जलमें गेरै पीछे मिश्री और शहत मिलाकर पीवै यह फांट अथवा हिम ॥८॥ वात पित्त ज्वर दाह तृषा मूर्च्छा ग्लानि भ्रम रक्तपित्त और मद इन्होंको नाश करता है इसमें कछु विचार नहीं करना ॥ ९ ॥

आम्रजंबूकिसलयैर्वटशुंगप्ररोहकैः ॥ उशीरेणकृतःफांटः सक्षौद्रोज्वरनाशनः ॥ २१० ॥ पिपासाच्छर्द्यतीसारान्मूर्च्छांजयतिदुर्जयाम् ॥

अर्थ–आंव और जामनकी कोंपल वडकी कोंपल और जड खस इन्होंका फांट बनाय तिसमें शहत मिलाकर पीनेसे ज्वर ॥ २१० ॥ पिपासा छर्दि अतिसार और दुर्जयरूपी मूर्च्छा इन्होंका नाश होता है ॥

मधूकपुष्पगंभारीचंदनोशीरधान्यकैः ॥ ११ ॥ द्राक्षायाश्चकृतःफांटःशीतशर्करयायुतः ॥ तृष्णापित्तहरःप्रोक्तोदाहमूर्च्छा-

भ्रमान्जयेत् ॥ १२ ॥ मंथोऽपिफांटभेदःस्यात्तेननात्रैवकथ्यते ॥ जलेचतुःपलेशीतेक्षुण्णंद्रव्यपलंक्षिपेत् ॥ १३ ॥ मृत्पात्रेमंथयेत्सम्यक्तस्माच्चद्विपलंपिबेत् ॥

अर्थ—महुआके फूल गंभारी चंदन खस धनियां ॥ ११ ॥ दाख इन्हींका फांट वनाय शीतल कर तिसमें खांड मिला पीवै तो तृषा पित्त दाह मूर्च्छा और भ्रम इन्हींका नाश होता है ॥ १२ ॥ मंथभी फांटका भेद है सो कहते हैं चौगुणा जलमें द्रव्यको माटीके पात्रमें घाल मथै ॥ १३ ॥ तिस जलको छान आठ तोलेभर पीवै ॥

खर्जूरंदाडिमंद्राक्षातिंतिडीकाम्लिकामलैः ॥ १४ ॥ सपरूषैःकृतोमंथःसर्वमद्यविकारनुत् ॥ क्षौद्रयुक्तामसूराणांसक्तवोदाडिमांभसा ॥१५॥ मथितावारयंत्याशुच्छर्दिंदोषत्रयोद्भवाम् ॥

अर्थ—खजूर अनार दाख चिंतडी अमली आंवला और फालसा ॥ १४ ॥ इन्हींका मंथ वनाय पीवै यह सव मदिराके विकारोंको नाश करता है मसूरके सचूको अनारका रसमें ॥ १५ ॥ मथ तिसमें शहत मिला पीवै तो त्रिदोषसे उपजी छर्दि दूर होती है ॥

प्लावितैःशीतनीरेणसघृतैर्यवसक्तुभिः ॥ १६ ॥
नातिसांद्रद्रवैर्मंथस्तृष्णादाहास्रपित्तहा ॥ १७ ॥

अर्थ—यवोंके सत्तुको शीतल पानीमें मथै ॥ १६ ॥ वहुत गाढा नहीं रहै ऐसा मंथ पीनेसे तृषा दाह और रक्तपित्त इन्हींका नाश होता है ॥ १७ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे फांटकल्पना नाम तृतीयोध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ।

क्षुण्णंद्रव्यपलंसम्यक्षड्भिर्नीरपलैःप्लुतम् ॥ निःशोषितंहिमःसस्यात्तथाशीतकषायकः ॥ १८ ॥ तन्मानंफांटवज्ज्ञेयंसर्वत्रैषविनिश्चयः ॥ आम्रजंबूचककुभंचूर्णीकृत्यजलेक्षिपेत् ॥१९॥

हिमंतस्यपिबेत्प्रातःसक्षौद्रंरक्तपित्तजित् ॥ मरीचंमधुयष्टिंच काकोदुंबरपल्लवैः ॥ २२० ॥ नीलोत्पलंहिमस्तज्जस्तृष्णाछर्दिनिवारणः ॥

अर्थ–कुटा हुआ द्रव्य चार तोलेभर ले तिसको २४ तोलेभर पानी विषै रातिमें भिगोय प्रातःकालमें निचोडकै छाणै इसको हिम कहते हैं और शीत कषाय कहते है ॥ १८ ॥ इसकी मात्रा फांटकी तरह आठ तोलेभरकी है यह सब जगह निश्चय है आंब जामन कौह इन्होंको कूट पानीमें भिगोवै॥१९॥ तिसका हिम प्रभातमें शहतसे संयुक्त कर पीवै यह रक्तपित्तको जीतता है मिरच मुलहटी काली गूलरकी कोंपल॥२२०॥ नील कमल इन्होंका हिम तृषा और छर्दिको नाश करता है॥

नीलोत्पलंबलाद्राक्षामधूकंमधुकंतथा ॥ २१ ॥ उशीरंपद्मकंचैवकाश्मरीचपरूषकम् ॥ एतच्छीतकषायश्चवातपित्तज्वरंजयेत् ॥ २२ ॥ सप्रलापभ्रमच्छर्दिमोहतंद्रानिवारणः ॥ अमृतायाहिमःपेयोजीर्णज्वरहरःस्मृतः ॥ २३ ॥ वासायाश्चहिमःकासरक्तपित्तज्वरंजयेत् ॥ प्रातःसशर्करःपेयोहिमो धान्याकसंभवः ॥ २४ ॥ अंतर्दाहंतथातृष्णांजयेत्स्रोतोविशोधनः ॥ धान्याकधात्रीवासानांद्राक्षापर्पटयोर्हिमः ॥२५॥ रक्तपित्तंज्वरंदाहंतृष्णांशोषंचनाशयेत् ॥ २६ ॥

अर्थ–नीलकमल खरैंहटी दाख मुलहटी महुआ ॥ २१ ॥ खस पद्माष गंभारी फालसा इन्होंका शीत कषाय बनाकर पीनेसे वात पित्त ज्वर ॥ २२॥ प्रलाप भ्रम छर्दि मोह और तंद्रा इन्होंका नाश होता है गिलोयका हिम बनाकर पीनेसे जीर्णज्वर दूर होता है ॥ २३ ॥ वांसाका हिम बना पीनेसे खांसी और रक्तपित्त दूर होता है धनियांका हिम बनाय प्रभातमें खांडसे युक्तकर पीवै तो ॥ २४ ॥ शरीरका भीतरकी दाह और तृषा दूर होती है और स्रोतोंकी शुद्धि होती है धनियां आंवला वांसा दाष पित्तपापडा इन्होंका हिम बनाय पीनेसे ॥ २५ ॥ रक्तपित्त ज्वर दाह और तृषा इन्होंका नाश होता है ॥ २६ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे हिमकल्पना नाम चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

अथ पंचमोऽध्यायः ।

द्रव्यमार्द्रंशिलापिष्टंशुष्कंवासजलंभवेत् ॥ प्रक्षेपाएवकल्कास्तेतन्मानंकर्षसंमितम् ॥ २७ ॥ कल्केमधुघृतंतैलंदेयंद्विगुणमात्रया ॥ सितागुडौसमौदद्याद्द्रवादेयाश्चतुर्गुणाः ॥ २८ ॥

अर्थ–सूखा द्रव्यको पानीमें पीसै ओर आला द्रव्यको पानीसे वर्जित करकै पीसै तिसको कल्क और प्रक्षेप कहते है तिसकी मात्रा दशमासेकी है ॥ २७ ॥ कल्कमें शहत घृत वा तेल ये दुगुना मात्रासे देने मिश्री और गुड कल्कके बराबर देने द्रव पदार्थ चौगुने देने ॥ २८ ॥

त्रिवृद्धयापंचवृद्ध्यावासप्तवृद्ध्याथवाकणाः ॥ पिबेत्पिष्ट्वादशदिनंतास्तथैवापकर्षयेत् ॥ २९ ॥ एवंविंशद्दिनैःसिद्धंपिप्पलीवर्धमानकम् ॥ अनेनपांडुवातास्रकासश्वासारुचिज्वराः ॥ २३० ॥ उदरार्शःक्षयश्लेष्मवातानश्यंत्युरोग्रहाः ॥

अर्थ–तीन वा पांच अथवा सात इस वृद्धिसे पीपलको पीसकै दशदिनपर्यंत पीवै फिर जैसे जितनें पीपलोंका आरंभ करै तैसे तितने पीपलोंको नित्य प्रति घटाता जावै ॥ २९ ॥ ऐसे वीस दिनोंमें वर्द्धमानपिप्पल सिद्ध होता है इस करकै पांडु वात खांसी श्वास अरुचि ज्वर ॥ २३० ॥ पेटको रोग ववासीर कफ वात ये नाशकों प्राप्त होते है ॥

लेपान्निंबदलैःकल्कोव्रणशोधनरोपणः ॥ ३१ ॥ भक्षणाच्छर्दिकुष्ठानिपित्तश्लेष्मकृमीन्जयेत् ॥ महानिंबजटाकल्कोगृध्रसीनाशनःस्मृतः ॥ ३२ ॥ शुद्धकल्कोरसोनस्यतिलतैलेन मिश्रितः ॥ वातरोगान्जयेत्तीव्रान्विषमज्वरनाशनः ॥ ३३ ॥

अर्थ–नींबके पत्तोंका कल्क लेपसे घावको शोधता है और अंकुर लाता है ॥ ३१ ॥ और खानेसे छर्दि कुष्ठ और पित्त कफकी छर्दि इन्होंको नाश करता है बकायनकी जडका कल्क गृध्रसीवातको नाश करता है ॥ ३२ ॥ लहसनका कल्क अर्थात् पीसकर तिसमें तिलोंका तेल मिला खानेसे दारुण वातरोगोंको और विषमज्वरको नाश करता है ॥ ३३ ॥

पक्ककंदरसोनस्यगुलिकानिस्तुषीकृताः ॥ पाटयित्वाचतन्मध्यंदूरीकुर्यात्तदंकुरम् ॥ ३४ ॥ तदुग्रगंधनाशायरात्रौतक्रेविनिक्षिपेत् ॥ अपनीयचतन्मध्याच्छिलायांपेषयेत्ततः ॥ ३५॥ तन्मध्येपंचमांशेनचूर्णमेषांविनिक्षिपेत् ॥ सौवर्चलंयवानी चभर्जितंहिंगुसैंधवम् ॥ ३६ ॥ कटुत्रिकंजीरकंचसमभागानि चूर्णयेत् ॥ एकीकृत्यततःसर्वकल्कंकर्षप्रमाणतः ॥ ३७ ॥ खादेदग्निबलापेक्षीऋतुदोषाद्यपेक्षया ॥ अनुपानंततःकुर्यादेरंडशृतमन्वहम् ॥ ३८ ॥ सर्वांगैकांगजंवातमर्दितंचापतंत्रकम् ॥ अपस्मारमथोन्मादमूरुस्तंभंचगृध्रसीम् ॥३९॥ उरःपृष्ठकटीपार्श्वकुक्षिपीडांकृमीन्जयेत् ॥ अजीर्णमातपंरोषमतिनीरंपयोगुडम् ॥ २४० ॥ रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरंतरम् ॥ मद्यंमांसंतथाम्लंचरसंसेवेतनित्यशः ॥ ४१ ॥

अर्थ–पका हुआ लहसनको छीलकै अंकुर निकाल तिसकी दुर्गंधको दूर करनेंके अर्थ तक्रविषैं रातिमें भिगोवै ॥ ३४ ॥ पीछे तक्र अर्थात् मट्ठामांहसे निकासकै पत्थरपर पीस तिसमें आगै कहे चूर्णको पांचमां भागसे मिलावै ॥ ३५ ॥ काला नमक अजमान भुना हींग सेंधानमक सूंठ मिरच पीपल जीरा ये सब बराबर भाग ले चूर्ण करै ॥ ३६ ॥ पीछे सबको मिला कल्क बना दशमासेभर लेकै जठराग्निका ॥ ३७ ॥ बलकी अपेक्षा और ऋतु दोषकी अपेक्षा करकै खावै पीछे अरंडका काढाका नित्य प्रति अनुपान करै ॥ ३८ ॥ इससे सर्वांगवात एकांगवात अपतंत्र मृगीरोक उन्माद गठिया गृध्रसी ॥ ३९ ॥ छातीकी पीडा पृष्ठपीडा कटिपीडा कुक्षिपीडा कृमिरोग इन्होंका नाश होता है इस लहसनके कल्कको खाता हुआ मनुष्य अजीर्ण घाव क्रोध असंत पानी दूध गुड ॥ २४० ॥ इन्होंको निरंतर सागै और मदिरा मांस खट्टा रस इन्होंको नित्य प्रति सेवता रहै ॥ ४१ ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंभल्लातकफलानिच ॥ एतत्कल्कश्चसक्षौद्रऊरुस्तंभनिवारणः ॥ ४२ ॥ विष्णुक्रांताजटाकल्कःसिताक्षौद्रघृतैर्युतः ॥ परिणामभवंशूलंनाशयेत्सप्तभिर्दिनैः ॥४३॥

शुंठीतिलगुडैःकल्कंदुग्धेनसहयोजयेत् ॥ परिणामभवंशूल-
मामवातंचनाशयेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ—पीपल पीपला मूल भिलावाके फल इन्होंका कल्कमें शहत मिलाकर खानेंसे ऊरुस्तंभको नाश करता है ॥ ४२ ॥ विष्णुक्रांताकी जडका कल्कमें मिश्री शहत और घृत इन्होंको मिलाकर सातदिनपर्य्यंत खानेंसे परिणामशूलका नाश होता है ॥ ४३ ॥ सूंठ तिल गुड इन्होंका कल्क बनाकर तिसको दूधमें मिला पीनेसे परिणामशूल और आमवातका नाश होता है ॥ ४४ ॥

अपामार्गस्यबीजानांकल्कस्तंडुलवारिणा ॥ पीतोरक्तार्शसांनाशंकुरुतेनात्रसंशयः ॥ ४५ ॥ बदरीमूलकल्केनतिलकल्कश्चयोजितः ॥ मधुक्षीरयुतःकुर्याद्रक्तातीसारनाशनः ॥४६॥

अर्थ—अपामार्गकाबीजोंका कल्क बनाय चावलोंका पानीसे पीवै तो रक्तकी ववासीरका नाश होता है इसमें संशय नहीं ॥ ४५ ॥ वडवेरकी जडके कल्कमें तिलोंका कल्क मिलाय तिसको शहत और दूधसे युक्त कर पीनेसे रक्तातीसारका नाश होता है ॥ ४६ ॥

कुष्मांडकरसोपेतांलाक्षांकर्षमितांपिबेत् ॥ रक्तक्षयमुरोघातंक्षयरोगंचनाशयेत् ॥ ४७ ॥ तंदुलीयजटाकल्कःसक्षौद्रःसरसांजनः ॥ तंडुलोदकसंपीतोरक्तप्रदरनाशनः ॥ ४८ ॥ अंकोलमूलकल्कश्चसक्षौद्रस्तंडुलांबुना ॥ अतीसारहरःप्रोक्तस्तथा विषहरःस्मृतः ॥ ४९ ॥ वंध्याकर्कोटकीमूलंपाटलायाजटाथवा ॥ घृतेनबिल्वमूलंवाद्विविधंनाशयेद्विषम् ॥ २५० ॥

अर्थ—कोहलाके रसमें दशमासेभर लाषको पीस पीवै यह रक्तक्षय छातीकी पीडा क्षयरोग इन्होंको नाश करता है ॥ ४७ ॥ चौलाईकी जडका कल्कमें शहत मिलाय चावलोंका पानीकेसाथ पीवै तो रक्तप्रदरका नाश होता है ॥ ४८ ॥ अंकोलकी जडका कल्क बनाय तिसमें शहत मिलाकै चावलोंका पानीके साथ पीवै तो अतीसार वा विषका नाश होता है ॥ ४९ ॥ वांझ ककोडीकी जडको अथवा शिरसकी जडको अथवा वेलवृक्षकी जडको घृतकेसाथ पीवै तो स्थावर वा जंगम विष दूर होता है ॥ २५० ॥

अभयासैंधवकणाशुंठीकल्कस्त्रिदोषहा ॥ पथ्यासैंधवशुंठी-

भिःकल्कोदीपनपाचनः ॥ ५१ ॥ त्रिवृत्पलाशबीजानिपारसीययवानिका ॥ कंपिल्लकंविडंगंचगुडश्चसमभागकः ॥ ५२ ॥ तक्रेणकल्कमेतेषांपिबेत्क्रमिगणापहम् ॥ नवनीततिलैःकल्कोजेतारक्तार्शसांस्मृतः ॥ ५३ ॥ नवनीतसितानागकेशरैश्चापितद्विधः ॥ पीतोमसूरयूषेणकल्कःशुंठीशलाटुजः ॥ जयेत्संग्रहणींतद्वत्तक्रेणबृहतीभवः ॥ ५४ ॥

अर्थ–हरडै सेंधानमक पीपल सूंठ इन्होंका कल्क त्रिदोषको हरता है हरडै सेंधानमक सूंठ इन्होंका कल्क दीपन और पाचन है ॥ ५१ ॥ निशोथ पलाशके बीज खुरासानी अजमायन कपिला वायविडंग और गुड ये समभाग लेके इन्होंको कल्क तक्रके साथ पीनेसे क्रमिरोगकों नाश करता है ॥ ५२ ॥ तिलोंका कल्कमें नौंनीत घृत मिला खानेसे रक्तका ववासीर दूर होता है नागरकेशरका कल्कमें नौंनीत घृत और मिश्री मिलाकर खानेसे रक्तका ववासीर दूर होता है ॥ ५३ ॥ सूंठ और कच्चा वेलका कल्कको मसूरिकाकों यूषके संग पीवै अथवा वडी कटेलीके कल्ककों तक्रके संग पीवै तो संग्रहणीरोग दूर होता है ॥ ५४ ॥

इति श्रीवेरीम्निवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे कल्ककल्पना नाम पंचमोध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोध्यायः ।

अत्यंतशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवस्त्रगालितम् ॥ तत्स्याच्चूर्णंरजःक्षोदस्तन्मात्राकर्षसंमिता ॥ ५५ ॥ चूर्णेगुडःसमोदेयःशर्करा द्विगुणाभवेत् ॥ चूर्णेषुभर्जितंहिंगुदेयंनोत्क्लेदकृद्भवेत् ॥ ५६ ॥ लिहेच्चूर्णंद्रवैःसर्वैर्घृताद्यैर्द्विगुणोन्मितैः ॥ पिबेच्चतुर्गुणैरेवचूर्णमालोडितंद्रवैः ॥ ५७ ॥ चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानामनुपानकम् ॥ वातपित्तकफातंकेत्रिद्व्येकपलमाहरेत् ॥ ५८ ॥ यथातैलंजलेक्षिप्तंक्षणेनैवप्रसर्पति ॥ अनुपानबलादंगेतथासर्पतिभेषजम् ॥ ५९ ॥

अर्थ-असंत सुखे ओषधोंको अच्छीतरह पीसकर वस्त्रमांहकै छानै तिसको चूर्ण रज और क्षोद कहते है इसको खानेकी मात्रा दश मासेभर है ॥ ५५ ॥ चूर्णमें गुड बराबर मिलाना और खांड दुगुनी मिलानी चूर्णोंमें भुना हुआ हींग मिलाना नहीं तो ग्लानिको करता है ॥ ५६ ॥ घृत आदि द्रवपदार्थ दुगुने मिलाकै चाटै और पीनेका पदार्थ चूरणके साथ चौगुना देना ॥ ५७ ॥ चूरण अवलेह गोली और कल्क इन्होंका अनुपान वातमें १२ तोले पित्तमें आठ तोले और कफमें चार तोले पीना ॥ ५८ ॥ जैसे पानीमें तेल क्षणभरमें फैल जाता है तैसे अनुपानके बलसे अंगोंविषै औषध फैल जाता है ॥ ५९ ॥

द्रवेणयावतासम्यक्चूर्णंसर्वंप्लुतंभवेत् ॥ भावनायाःप्रमाणंतुचूर्णेप्रोक्तंभिषग्वरैः ॥ २६० ॥ अमलंचित्रकंपथ्यापिप्पलीसैंधवंतथा ॥ चूर्णितोऽयंगणोज्ञेयःसर्वज्वरविनाशनः ॥६१॥

अर्थ-जितना द्रवकरकै अच्छीतरह संपूर्ण चूरण भीजै वोही भावनाका प्रमाण वैद्योंनें चूर्णविषै कहा है ॥ २६० ॥ आंवला चित्रक हरडै पीपल सेंधानमक इन्होंका चूरण करना यह गण सब ज्वरोंको नाश करता है ॥ ६१ ॥

भेदीरुचिकरःश्लेष्मजेतादीपनपाचनः ॥ मधुनापिप्पलीचूर्णंलिहेत्कासज्वरापहम् ॥ ६२ ॥ हिक्काश्वासहरंकंठ्यंप्लीहघ्नं बालकोचितम् ॥ एकाहरीतकीयोज्याद्वौचयोज्यौबिभीतकौ ॥ ६३ ॥ चत्वार्यामलकान्येवत्रिफलैषाप्रकीर्तिता ॥ त्रिफलामेहशोथघ्नीनाशयेद्विषमज्वरान् ॥ ६४ ॥ दीपनीश्लेष्मपित्तघ्नीकुष्ठहंत्रीरसायनी ॥ सर्पिर्मधुभ्यांसंयुक्तासैवनेत्रामयाञ्जयेत् ॥ ६५ ॥

अर्थ-मलभेद न करता है रुचिको उपजाता है कफको जीतता है और दीपन तथा पाचन है पीपलके चूर्णको शहतमें मिलाके चाटै तो कास और ज्वरको नाश करता है ॥ ६२ ॥ हिचकी श्वास तिल्लीरोग इन्होंका नाश होता है कंठमें हितकर है और बालरोगमें हितकर है एक हरडै बहेडाके फल दो ॥ ६३ ॥ और आंवले चार इन्होंके मिलनेसे त्रिफला कहाती है यह त्रिफला प्रमेह शोजा विषमज्वर इन्होंको नाश करती है दीपन है ॥६४॥ और कफ पित्त कुष्ठ इन्होंको नाश करती है रसायन है घृत और शहतसे संयुक्त करी नेत्रके रोगोंको हरती है ॥ ६५ ॥

पिप्पलीमरिचंशुंठीत्रिभिरूयूषणमुच्यते ॥ दीपनंश्लेष्मदोषघ्नं कुष्ठपीनसनाशनम् ॥ ६६ ॥ जयेदरोचकंसामंमेहगुल्मगलामयान् ॥ पिप्पलीचविकाविश्वापिप्पलीमूलचित्रकैः ॥६७॥ पंचकोलमितिख्यातंरुच्यंपाचनदीपनम् ॥ आनाहप्लीहगुल्मघ्नंशूलश्लेष्मोदरापहम् ॥ ६८ ॥ त्रिगंधमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातंसकेसरं ॥ त्रिगंधंसचतुर्जातंरूक्षोष्णंलघुपित्तकृत् ॥६९॥ वर्ण्यंरुचिकरंतीक्ष्णंविषश्लेष्मामयान्जयेत् ॥

अर्थ–पीपल मिरच सूंठ इन्होंको त्र्यूषण कहते है यह दीपन है कफदोषको हरता है कुष्ठ और पीनसको नाश करता है ॥ ६६ ॥ और अरुचि आमदोष प्रमेह गुल्म गलके रोग इन्होंको नाश करता है पीपल चवक सूंठ पीपलामूल चित्रक ॥ ६७ ॥ यह पांच औषधियोंको पंचकोल कहते हैं इसका सेवन करनेसें रुचि अग्नि प्रदीप्त अन्नपचन होता है और प्लीह गुल्म शूल कफोदरको नाशता है ॥६८॥ इलायची तज पत्रज इन्होंको त्रिगंध कहते है और इन्होंमें नागकेशर मिलै तब चतुर्जातक कहाता है ये दोनों रूक्ष है गरम है कछुक पितको करते है ॥६९॥ वर्णमें हित है रुचिको करते है तीक्ष्ण है विष और कफके रोगोंको जीतते है ॥

कृष्णारुणामुस्तकशृंगिकाणांतुल्येनचूर्णेनसमाक्षिकेण २७० ज्वरातिसारःप्रशमंप्रयातिसश्वासकासःसवमिःशिशूनाम् ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीजीवकर्षभकौतथा ॥ ७१ ॥ मेदाचान्यामहामेदाजीवंतीमधुकंतथा ॥ मुद्गपर्णीमाषपर्णीजीवनीयोगणस्त्वयम् ॥७२॥ जीवनीयोगणःस्वादुर्गर्भसंधानकृद्गुरुः॥ स्तन्यकृद्बृंहणोवृष्यःस्निग्धःशीतस्तृषापहः ॥ ७३ ॥ रक्तपित्तंक्षयंशोषंज्वरदाहानिलाञ्जयेत् ॥ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौजीवकर्षभकौतथा ॥ ७४ ॥ ऋद्धिवृद्धीचतैःसर्वैरष्टवर्गउदाहृतः ॥ अष्टवर्गोबुधैःप्रोक्तोजीवनीयसमोगुणैः ॥ ७५ ॥

अर्थ–पीपल अतिविष मुस्ता शृंगी यह चार औषधोंका चूर्ण शहतसें बालकको देना ॥२७०॥ इससें श्वास खांसी वमन इन्होंसें युक्त ज्वरातिसारको नाश होता

है काकोली क्षीरकाकोली जीवक ऋषभक मेदा ॥७१॥ महामेदा दूधियालता मुलहटी मूंगफली उर्दफली यह जीवनीय गण है ॥ ७२ ॥ यह स्वादु है गर्भको स्थित करता है भारी है दूधको वढाता है धातुको पोषता है धातुको शोधता है चिकना है सीतल है और तृषा ॥ ७३ ॥ रक्तपित्त क्षयी शोष ज्वर दाह वायु इन्हींको हरता है ॥ ७४ ॥ मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली जीवक ऋषभक ऋद्धि वृद्धि यह अष्टवर्ग कहाता है यह जीवनीयगणके समान गुणोंमें वैद्योंनें कहा है ७५

सिंधुसौवर्चलंचैवबिडंसामुद्रिकंगडम् ॥
एकद्वित्रिचतुःपंचलवणानिक्रमाद्विदुः ॥ ७६ ॥

अर्थ–सेंधा काला मनयारी खारी गड नीलसांभर ये पांच नमक वैद्योंनें क्रमसे कहे है ॥ ७६ ॥

तेषुमुख्यंसैंधवंस्यादनुक्तेतच्चयोजयेत् ॥ सैंधवाद्यंरोमकांतंज्ञेयंलवणपंचकम् ॥ ७७ ॥ मधुरंसृष्टविण्मूत्रंस्निधंसूक्ष्मंबलापहम् ॥ वीर्योष्णंदीपनंतीक्ष्णंकफपित्तविवर्धनम् ॥ ७८ ॥ स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारयुग्ममुदाहृतम् ॥ ज्ञेयौवह्निसमौक्षारौस्वर्जिकायावशूकजौ ॥ ७९ ॥ क्षाराश्चान्येऽपिगुल्मार्शोग्रहणीरुक्छिदःसराः ॥ पाचनाःक्रमिपुंस्त्वघ्नाःशर्कराश्मरिनाशनाः ॥ २८० ॥

अर्थ–तिन सब नमकोंमें सेंधानमक प्रधान है जिस योगमें नमकका नाम नहीं कहा हो तहां सेंधा प्रयुक्त करना सेंधासे आदि ले सांभरतक पांच नमक जानना ॥ ७७ ॥ पाकमें मधुर है विष्ठा और मूत्रको पकाकै गिराता है चिकना है सूक्ष्म है वलको नाशता है वीर्यमें गरम है दीपन है तीक्ष्ण है कफ और पित्तको वढाता है ॥ ७८ ॥ साजीका खार और जवाखार ये दो खार कहे है दोनों अग्निके समान है अर्थात् दीपन है ॥ ७९ ॥ अन्यभी खार गुल्म ववासीर संग्रहणी इन्होंको नाशते हैं सर है पाचन है क्रमिको और पुरुषपनेंको नाशते है शर्करा और पथरीको नाशते है ॥ २८० ॥

त्रिफलारजनीयुग्मंकंटकारीयुगंसठी ॥ त्रिकटुग्रंथिकंमूर्वा गुडूचीधन्वयासकः ॥ ८१ ॥ कटुकापर्पटोमुस्तंत्रायमाणाच

वालुकम्॥ निंबःपुष्करमूलंचमधुयष्टीचवत्सकः॥८२॥यवानींद्रयवोभार्ङ्गीशिग्रुबीजंसुराष्ट्रजा॥ वचात्वक्पद्मकोशीरचंदनातिविषाबलाः॥८३॥ शालिपर्णीपृष्टिपर्णीविडंगंतगरंतथा॥ चित्रकोदेवकाष्ठंचचव्यंपत्रंपटोलजम्॥८४॥ जीवकर्षभकौचैवलवंगंवंशलोचना॥ पुंडरीकंचकाकोलीपत्रजंजातिपत्रकम्॥ ८५॥ तालीसपत्रंचतथासमभागानिचूर्णयेत्॥ सर्वचूर्णस्यचार्धांशंकिरातंप्रक्षिपेत्सुधीः॥ ८६॥ एतत्सुदर्शननामचूर्णंदोषत्रयापहम्॥ ज्वरांश्चनिखिलान्हन्यान्नात्र कार्याविचारणा॥ ८७॥ पृथग्द्वंद्वागंतुकांश्चधातुस्थान्विषमज्वरान्॥ सन्निपातोद्भवांश्चापिमानसानपिनाशयेत्॥८८॥ शीतज्वरैकाहिकादीन्मोहंतंद्रांभ्रमंतृषाम्॥ श्वासंकासंचपांडुंचहृद्रोगंहंतिकामलाम्॥ ८९॥ त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनिवारणम्॥ शीतांबुनापिबेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये॥ २९०॥ सुदर्शनंयथाचक्रंदानवानांविनाशनम्॥ तद्वज्ज्वराणांसर्वेषामेतच्चूर्णंविनाशनम्॥ ९१॥

अर्थ–त्रिफला हलदी दारुहलदी बडी कटेली छोटी कटेली कचूर सूंठ मिरच पीपल पीपलामूल मरोडफली गिलोय जवासा॥ ८१॥ कुटकी पित्तपापडा नागरमोथा त्रायमाण नेत्रवाला नींबकी छाल पोहकरमूल मलैहटी कूडाकी छाल॥ ८२॥ अजमायन इंद्रजव भारंगी सहोंजनाके बीज फटकडी वच तज पद्माक खस सपेद चंदन अतीस खरैंहटी॥ ८३॥ बनउर्दी वनमूंग वायविडंग तगर चीता देवदार चव्य (पटोलपत्र)॥ ८४॥ जीवक ऋषभक लौंग वंशलोचन कमलपत्र काकोली तेजपात जावित्री॥ ८५॥ और तालीसपत्र इन सबोंको बराबर भाग लेकै चूर्ण करना पीछे सब चूर्णसे आधा चिरायता मिलाना॥ ८६॥ इसको सुदर्शनचूर्ण कहते है यह त्रिदोषको नाशता है और सब प्रकारके ज्वरोंको नाशता है इसमें संशय नहीं है॥ ८७॥ और एकाहिक द्वंद्वज सन्निपातज और मानस ऐसे ज्वरोंको नाशता है॥ ८८॥ शीतज्वर एकांतरा ज्वर तृतीयकज्वर चातुर्थिकज्वर मोह तंद्रा भ्रम तृषा श्वास खांसी पांडु हृद्रोग कामला

॥ ८९ ॥ पेटशूल पृष्ठशूल कटिशूल जानुशूल पसलीशूल इन्होंको दूर करता ह शीतल पानीके संग इस चूर्णको पीवै तो सब ज्वर दूर होते हैं ॥ २९० ॥ जैसे दैत्योंको सुदर्शनचक्र नाशता है तैसे सब प्रकारके ज्वरोंको यह सुदर्शनचूर्ण नाशता है ॥ ९१ ॥

कासश्वासज्वरहरात्रिफलापिप्पलीयुता ॥
चूर्णितामधुनालीढाभेदिन्यग्निप्रबोधिनी ॥ ९२ ॥

अर्थ–त्रिफला और पीपलका चूर्ण बना तिसमें शहत मिला चाटनेंसे खांसी श्वास ज्वर इन्होंका नाश होता है और यह चूर्ण भेदी है और अग्निको जगाता है ९२

कट्फलंमुस्तकंतिक्ताशठीशृंगीचपौष्करम् ॥ चूर्णमेषांचमधुनाशृंगबेररसेनवा ॥ ९३ ॥ लिहेज्ज्वरहरंकंठ्यंकासश्वासारुचीर्जयेत् ॥ वायुंछर्दितथाशूलंक्षयंचैवव्यपोहति ॥ ९४ ॥

अर्थ–कायफल नागरमोथा कुटकी कचूर काकडाशींगी पोहकरमूल इन्होंके चूर्णमें शहत मिला अदरकका रसके संग चाटै तो ॥ ९३ ॥ कंठमें गुण होता है और खांसी श्वास अरुचि वात छर्दि शूल और क्षय इन्होंका नाश होता है ९४

कट्फलंपौष्करंशृंगीमुस्तात्रिकटुकंशठी ॥ समस्तान्येकशोवापिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ ९५ ॥ आर्द्रकस्वरसक्षौद्रैर्लिह्यात्कफविनाशनम् ॥ शूलानिलारुचिच्छर्दिकासश्वासक्षयापहम् ॥ ९६ ॥ कट्फलंपौष्करंकृष्णाशृंगीचमधुनासह ॥ श्वासकासज्वरहरःश्रेष्ठोलेहःकफांतकृत् ॥ ९७ ॥

अर्थ–कायफल पोहकरमूल काकडाशिंगी नागरमोथा सूंठ मिरच पीपर नागरमोथा इन औषधोंका बारीक चूर्ण करके ॥ ९५ ॥ अदरखका रससें अथवा शहतसे लेनेसें कफ शूल वात वांति कास श्वास और क्षयरोग ये दूर होते हैं ॥९६॥ कायफल पोहकरमूल पीपल काकडाशिंगी यह चार औषधोंका चूर्ण कर शहतके साथ लेनेसें श्वास कास श्लेष्मज्वर दूर होते हैं ॥ ९७ ॥

शृंगीप्रतिविषाकृष्णाचूर्णितामधुनालिहेत् ॥ शिशोःकासज्वरच्छर्दिशांत्यैवाकेवलाविषा॥९८॥यवक्षारविषाशृंगीमागधीपौष्करोद्भवम्॥ चूर्णंक्षौद्रयुतंलीढंपंचकासाञ्जयेच्छिशोः॥९९॥

शुंठीप्रतिविषाहिंगुमुस्ताकुटजचित्रकैः ॥ चूर्णमुष्णांबुनापीतमामातीसारनाशनम् ॥ ३०० ॥ हरीतकीप्रतिविषासिंधुसौवर्चलंवचा ॥ हिंगुचेतिकृतंचूर्णपिबेदुष्णेनवारिणा ॥ १ ॥ आमातीसारशमनंग्राहिचाग्निप्रबोधनम् ॥

अर्थ–काकडाशींगी अतीस पीपल इन्होंको शहतमें मिलाके चाटै तो बालककी खांसी ज्वर छर्दि ये दूर होते हैं तैसेही अतीससेभी दूर होते है ॥ ९८ ॥ जवखार अतिविष काकडाशिंगी पिंपली पोहकरमूल इन पांच औषधोंका चूर्ण बालकोंको शहतके साथ देवे तो इससे पांच प्रकारकी खांसी दूर होती है ॥ ९९ ॥ सूंठ अतीस हींग नागरमोथा कूडाकी छाल चीता इन्होंका चूर्णको गरमपानीसे पीवैतो आमातीसारका नाश होता है ॥ ३०० ॥ हरडै अतीस सेंधानमक कालानमक वच हींग इन्होंका चूर्ण बना गर्मपानीसे पीवै तो ॥ १ ॥ आमातीसारका नाश होता है दस्त बांधता है और अग्नि जगता है ॥

मुस्तमिंद्रयवंबिल्वंलोध्रंमोचरसंतथा ॥ २ ॥ धातकींचूर्णयेत्तक्रगुडाभ्यांपाययेत्सुधीः ॥ सर्वातिसारशमनंन्यरुणद्धिप्रवाहिकाम् ॥ ३ ॥ लघुगंगाधरंनामचूर्णसंग्राहकंपरम् ॥

अर्थ–नागरमोथा इंद्रजव वेलगिरी लोध मोचरस ॥ २ ॥ धायके फूल इन्होंका चूर्ण बनाय तक्र और गुडके साथ पीवै यह सब प्रकारके अतीसारोंको शांत करता है और प्रवाहिकाको रोकता है ॥ ३ ॥ यह लघुगंगाधरचूर्ण कहाता है यह कवजको बहुत करता है अर्थात् मलको बांधता है ॥

मुस्तारलुकशुंठीभिर्धातकीलोध्रवासकैः ॥ ४ ॥ बिल्वमोचरसाभ्यांचपाठेंद्रयववत्सकैः ॥ आम्रबीजंप्रतिविषालज्जालुरितिचूर्णितम् ॥ ५ ॥ क्षौद्रतंदुलपानीयैःपीतैर्यातिप्रवाहिका ॥ सर्वातिसारग्रहणीप्रशमंयातिवेगतः ॥ ६ ॥ वृद्धगंगाधरंचूर्णसरिद्वेगविबंधकम् ॥

अर्थ–नागरमोथा सोनापाठा सूंठ धायके फूल लोध नेत्रवाला ॥ ४ ॥ वेलगिरी मोचरस पाठा इंद्रजव कूडा आंवके बीज अतीस लज्जावंती इन्होंका चूरण कर ॥ ५ ॥ शहतमें मिला चावलोंके पानीसे पीवै तो प्रवाहिका सब प्रकारके अतीसारवेगसे शांत होते हैं ॥ ६ ॥ यह वृद्धगंगाधर चूर्ण मलको उत्तम बांधता है॥

अजमोदामोचरसंसशृंगवेरंसधातकीकुसुमम् ॥ ७ ॥
मथितेनयुतंपीतंगंगामपिवाहिनींरुंध्यात् ॥

अर्थ–अजमायन मोचरस अदरक धायके फूल इन चार औषधोंका चूरण कर ॥ ७ ॥ जलसे रहित गाईके तक्रसाथ पीनेसे अतिसारका गंगाप्रवाहसरी-काभी प्रवाह बंद हो जाता है ॥

तक्रेणयःपिबेन्नित्यंचूर्णमरिचसंभवम् ॥८॥ चित्रसौवर्चलोपे-तंग्रहणीतस्यनश्यति ॥ उदरप्लीहमंदाग्निगुल्मार्शोनाशनंभवेत् ९

अर्थ–मिरच चित्रक काला नमक इन्होंका चूरण बना तक्र अर्थात् मठाके संग पीवै तो संग्रहणी पेटका रोग तिल्लीरोग मंदाग्नि गुल्म और बवासीर इन्होंका नाश होता है ॥ ८ ॥ ९ ॥

अष्टौभागाःकपित्थस्यषड्भागाशर्करामता ॥ दाडिमंतिन्ति-डीकंचश्रीफलंधातकीतथा ॥३१०॥ अजमोदाचपिप्पल्यःप्र-त्येकंस्युस्त्रिभागिकाः ॥ मरिचंजीरकंधान्यंग्रंथिकंवालकं तथा ॥ ११ ॥ सौवर्चलंयवानीचचातुर्जातंसचित्रकम् ॥ ना-गरंचैकभागाःस्युःप्रत्येकंसूक्ष्मचूर्णितम् ॥ १२ ॥ कपित्थाष्ट-कसंज्ञंस्याच्चूर्णमेतज्जलामयान् ॥ अतिसारंक्षयंगुल्मंग्रहणीं चव्यपोहति ॥ १३ ॥

अर्थ–कैथ ८ भाग खांड ६ भाग और अनार अमली वेलगिरी धायके फूल ॥ ३१० ॥ अजमोद पीपल ये सब तीन तीन भाग और मिरच जीरा ध-नियां पीपलामूल नेत्रवाला काला नमक अजमायन तज तेजपात ॥ ११ ॥ इला-यची नागकेशर चित्रक सूंठ ये सब एक एक भाग इन सबोंका मिहीन चूरण करै ॥ १२ ॥ यह कपित्थाष्टक चूरण जलका रोग अतीसार क्षय गुल्म ग्रहणी इन्होंको दूर करता है ॥ १३ ॥

पिप्पलीबृहतीव्याघ्रीयवक्षारकलिंगकाः ॥ चित्रकंसारिवा-पाठासठीलवणपंचकम् ॥ १४ ॥ तच्चूर्णपाययेद्दध्नासुरयो-ष्णांबुनापिवा ॥ मारुतग्रहणीदोषशमनंपरमंहितम् ॥ १५ ॥

अर्थ–पीपल रिंगणी मोतरिंगणी जवखार इंद्रजव चित्रक उपलसरी पहाडका

मूल निशोत और पांच प्रकारका लवण ॥ १४ ॥ इन औषधोंका चूर्णकर दधि मद्य वा गरम जलके साथ सेवन करनेसे वातसंग्रहणीका नाश होता है ॥ १५ ॥

दाडिमीद्विपलाग्राह्याखंडाचाष्टपलानिवा ॥ त्रिगंधस्यपलं चैकंत्रिकटुस्यात्पलत्रयम् ॥ १६ ॥ एतदेकीकृतंसर्वंचूर्णंस्या- द्दाडिमाष्टकम् ॥ रुचिकृद्दीपनंकंठ्यंग्राहिकासज्वरापहम् ॥ १७ ॥

अर्थ–अनार ८ तोले खांड ३२ तोले तज तेजपात इलायची इन्होंका चूरण ४ तोले सूंठ मिरच पीपल इन्होंका चूरण १२ तोले ॥ १६ ॥ इन सबोंको मिलानेसे दाडिमाष्टक चूरण बनता है यह रुचिको उपजाता है दीपन है कंठमें गुण करता है दस्तको बांधता है खासीसहित ज्वरको नाश करता है ॥ १७ ॥

दाडिमस्यपलान्यष्टौशर्करायाःपलाष्टकम् ॥ पिप्पलीपिप्प- लीमूलंयवानीमरिचंतथा ॥ १८ ॥ धान्यकंजीरकंशूंठीप्रत्येकं पलसंमितम् ॥ कर्षमात्रातुगाक्षीरीत्वक्पत्रैलाश्चकेशरम् ॥ १९ ॥ प्रत्येकंकोलमात्राःस्युस्तच्चूर्णंदाडिमाष्टकम् ॥ अतिसारंक्षयं गुल्मंग्रहणींचगलग्रहम् ॥ ३२० ॥ मंदाग्निंपीनसंकासंचू- र्णमेतद्व्यपोहति ॥

अर्थ–अनार ३२ तोले खांड ३२ तोले पीपल पीपलामूल अजमायन कालीमिरिच ॥ १८ ॥ धनियां जीरा सूंठ ये सब चार चार तोले वंशलोचन १० तोलेभर तज तेजपात इलायची नागकेशर ॥ १९ ॥ ये आठ आठ मासे इन सबोंको मिलाकै चूरण करै यह दाडिमाष्टक चूरण अतीसार क्षय गुल्म ग्रहणी गलग्रह ॥ ३२० ॥ मंदाग्नि पीनस खांसी इन्होंको नाश करता है ॥

तालीसंमरिचंशुंठीपिप्पलीवंशरोचना ॥ २१ ॥ एकद्वित्रि- चतुःपंचकर्षैर्भागान्प्रकल्पयेत् ॥ एलात्वचोस्तुकर्षार्धंप्रत्येकं भागमावहेत् ॥ २२ ॥ मृतवंगंमृततांम्रंसमभागानिकारयेत् ॥ द्वात्रिंशत्कर्षतुलिताप्रदेयाशर्कराबुधैः ॥ २३ ॥ तालीसाद्य- मिदंचूर्णंरोचनंपाचनंस्मृतम् ॥ कासश्वासज्वरहरंछर्द्यतीसा- रनाशनम् ॥ २४ ॥ शोषाध्मानहरंप्लीहग्रहणीपांडुरोगजित् ॥

अर्थ–तालीसपत्र १ कर्ष मरिच २ कर्ष सूंठ ३ कर्ष पीपल ४ कर्ष वांसा ५ कर्ष

॥ २१ ॥ इलायची और दालचिनी आधा आधा कर्ष ॥ २२ ॥ वंगभस्म और ताम्रभस्म दोनों एक एक कर्ष खांड ३२ कर्ष इन औषधोंका चूर्ण कर उसमें मिश्री मिला देनी ॥ २३ ॥ यह तालीसादि चूर्ण सेवन करनेसे मुखमें रुचि तथा अन्नका पाचन होता है और कास श्वास ज्वर वमन अतिसार ॥२४॥ शोष अफरा प्लीहा संग्रहणी पांडुरोग दूर होते हैं ॥

लवंगंशुद्धकर्पूरमेलात्वङ्नागकेशरम् ॥ २५ ॥ जातीफलमुशीरंचनागरंकृष्णजीरकम् ॥ कृष्णागुरुस्तुगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलंकणा ॥ २६ ॥ चंदनंतगरंवालंकंकोलंचेतिचूर्णयेत् ॥ समभागानिसर्वाणिसर्वेभ्योर्धासिताभवेत् ॥ २७ ॥ लवंगाद्यमिदंचूर्णराजार्हंवह्निदीपनम् ॥ रोचनंतर्पणंवृष्यंत्रिदोषघ्नं बलप्रदम् ॥ २८ ॥ हृद्रोगंकंठरोगंचकासंहिक्कांचपीनसम् ॥ यक्ष्माणंतमकंश्वासमतीसारमुरःक्षतम् ॥ २९ ॥ प्रमेहारुचिगुल्मादीन्ग्रहणीमपिनाशयेत् ॥

अर्थ—लौंग शुद्ध कपूर इलायची तज नागकेशर ॥ २५ ॥ जायफल खस सूंठ काला जीरा काला अगर वंशलोचन बालछड नीलाकमल पीपल ॥२६॥ चंदन तगर नेत्रवाला कंकोल इन्होंका समभाग चूरण करै और चूरणसे आधी मिश्री मिलावै २७ यह लवंगादिचूरण राजालोगोंको योग्य है अग्निको जगाता है रुचिको उपजाता है तृप्तिको करता है पुष्टीमें हित है त्रिदोषको हरता है बलको देता है और २८ हृद्रोग कंठरोग खासी हिचकी पीनस क्षयी तमक श्वास अतीसार छातीका फटना ॥ २९ ॥ प्रमेह अरुचि गुल्म आदि और ग्रहणीरोग इन्होंको नाश करता है ॥

जातीफललवंगैलापत्रत्वङ्नागकेशरान् ॥ ३३० ॥ कर्पूरचंदनतिलैस्त्वक्क्षीरीतगरामलैः ॥ तालीसपिप्पलीपथ्याचित्रकस्थूलजीरकैः ॥३१ ॥ शुंठीविडंगमरिचान्समभागान्विचूर्णयेत् ॥ यावंत्येतानिसर्वाणिकुर्याद्भंगांचतावतीम् ॥ ३२ ॥ सर्वचूर्णसमादेयाशर्कराचभिषग्वरैः ॥ कर्षमात्रंततःखादेन्मधुनाप्लावितंसुधीः ॥ ३३ ॥ अस्यप्रभावाद्ग्रहणीकासश्वासारुचिक्षयाः ॥ वातश्लेष्मप्रतिश्यायाःप्रशमंयांतिवेगतः ॥३४॥

अर्थ–जायफल लौंग इलायची तेजपात दालचीनी नागकेशर ॥ ३३० ॥ कपूर चंदन तिल वंशलोचन तगर आंवला तालीसपत्र पीपल हरडै चित्रक कालां जीरा ॥ ३१ ॥ सूंठ वायविडंग मिरच इन्होंको बराबर भाग. लेकै चूरण करै और इस चूरणके बराबर भांग मिलावै ॥ ३२ ॥ और भांग सहित चूरणके बराबर खांड मिलाकै पीछे शहतमें संयुक्त कर १ तोलाभर खावै ॥ ३३ ॥ इसके प्रभावसे ग्रहणी खासी श्वास अरुचि क्षय वात कफ जुखाम इन्होंका वेगसे नाश होता है ॥ ३४ ॥

मरिचंनागपुष्पाणितालीसंलवणानिच ॥ प्रत्येकमेकभागाः स्युःपिप्पलीमूलचित्रकैः ॥ ३५ ॥ त्वक्कणातित्तिडीकंचजीरकंचद्विभागिकम् ॥ धान्याम्लवेतसौविश्वभद्रैलाबदराणिच ॥ ३६ ॥ अजमोदाजलधरःप्रत्येकंस्युस्त्रिभागिकाः ॥ सर्वौषधचतुर्थांशंदाडिमस्यफलंभवेत् ॥ ३७ ॥ द्रव्येभ्योनिखिलेभ्यश्चसितादेयार्धमात्रया ॥ महाखांडवसंज्ञंस्याच्चूर्णमेतत्सुरोचनम् ॥ ३८ ॥ अग्निदीप्तिकरंहृद्यंकासातीसारनाशनम् ॥ हृद्रोगकंठजठरमुखरोगप्रणाशनम् ॥ ३९ ॥ विषूचिकांतथाध्मानमर्शोगुल्मकृमीनपि ॥ छर्दिपंचविधांश्वासंचूर्णमेतद्व्यपोहति ॥ ३४० ॥

अर्थ–मिरच नागकेशर तालीसपत्र पांचो नमक ये सब बराबर भाग लेने और पीपलामूल चित्रक ॥ ३५ ॥ दालचिनी पीपल डांसरपा जीरा ये सब दोदो भाग लेने और धनियां सूंठ अमलवेत वडीइलायची वेर ॥ ३६ ॥ अजमोद नागरमोथा ये तीन तीन भाग लेने और सब ओषधोंसे चौथाई भाग अनारदाना ॥ ३७ ॥ और सब ओषधोंसे आधी मिश्री लेनी इन्होंका चूरण बनावै यह महाखांडवचूरण रोचन है ॥ ३८ ॥ दीपन है हृदयमें बल देता है खासी अतीसार हृद्रोग कंठरोग पेटरोग मुखरोग ॥ ३९ ॥ विषूचिका अफारा ववासीर गुल्म कृमि छर्दि और पांच प्रकारकी श्वास इन्होंको नाश करता है ॥ ३४० ॥

चित्रकस्त्रिफलाव्योषंजीरकंहपुषावचा ॥ यवानीपिप्पलीमूलं शतपुष्पाजगंधिका ॥ ४१ ॥ अजमोदाशठीधान्यंविडंगंस्थू-

लजीरकम् ॥ हेमाह्वापौष्करंमूलंक्षारौलवणपंचकम् ॥४२॥ कुष्ठंचेतिसमांशानिविशालास्याद्विभागिका ॥ त्रिवृत्त्रिभागा विज्ञेयादंत्याभागत्रयंभवेत् ॥ ४३ ॥ चतुर्भागाशातलास्या-त्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् ॥ पाचनस्नेहनाद्यैश्चस्निग्धकोष्ठस्यरोगि-णः ॥ ४४ ॥ दद्याच्चूर्णविरेकायसर्वरोगप्रणाशनम् ॥ हृद्रो-गेपांडुरोगेचकासेश्वासेभगंदरे ॥ ४५ ॥ मंदेऽग्नौचज्वरेकुष्ठे ग्रहण्यांचगलग्रहे ॥ दद्याद्युक्तानुपानेनतथाध्मानेसुरादिभिः ॥ ४६ ॥ गुल्मेबदरनीरेणविट्भेदेदधिमस्तुना ॥ उष्णांबुभि-रजीर्णेचवृक्षाम्लैःपरिकीर्तिषु ॥ ४७ ॥ उष्ट्रीदुग्धेनोदरेषुतथा-तक्रेणवागवाम् ॥ प्रसन्नयावातरोगेदाडिमांभोभिरर्शसि ॥४८॥ द्विविधेचविषेदद्याद्घृतेनविषनाशनम् ॥ चूर्णनारायणंनामदु-ष्टरोगगणापहम् ॥ ४९ ॥

अर्थ–चित्रक त्रिफला सूंठ मिरच जीरा हाऊवेर वच अजमायन पीप-लामूल सौंफ तुलसी ॥ ४१ ॥ अजमोद कचूर धनियां वायविडंग कालाजीरा चोक पोहकरमूल दोनों खार पांचों नमक ॥ ४२ ॥ कूठ ये सब बराबर भाग लेने और इंद्रायण २ भाग और निशोथ ३ भाग और जमालगोटा ३ भाग ॥४३॥ और थोहर ४ भाग इन सबोंको मिलाकै चूरण बनाना पाचन और स्नेहन आ-दिकरकै स्निग्ध किंया कोष्ठवाला मनुष्यको ॥४४॥ यह चूरण जुलाब लगानेके अर्थ देना यह सब रोगोंको नाश करता है हृद्रोग पांडुरोग खासी श्वास भगंदर॥४५॥ मंदाग्नि ज्वर कुष्ठ ग्रहणी गलग्रह इन्होंमें यथायोग्य अनुपानसे देना अफारामें म-दिरा आदिके संग देना ॥ ४६ ॥ गुल्मरोगमें बेरोंका पानीके साथ देना मलके बंधेमें दहीका पानीके साथ देना अजीर्णमें गरम पानीके साथ देना पेटके रोगोंमें अमलीके साथ देना ॥ ४७ ॥ पेटके उग्ररोगोंमें ऊंटनीका दूधके साथ अथवा गौका तक्रके साथ देना वायुरोगमें मदिराका मंडके साथ देना ववासीरमें अ-नारका रसके संग ॥ ४८ ॥ और दोनों प्रकारके विषोंमें घृतके संग ऐसे यह चू-रण देना यह नारायणचूरण दुष्टरोगोंके समूहको नाश करता है ॥ ४९ ॥

हपुषात्रिफलाचैवत्रायमाणाचपिप्पली ॥ हेमक्षीरीत्रिवृच्चै-

वशातलाकटुकावचा ॥ ३५० ॥ नीलिनीसैंधवंकृष्णलवणं चेतिचूर्णयेत् ॥ उष्णोदकेनमूत्रेणदाडिमत्रिफलारसैः ॥५१॥ तथामांसरसेनापियथायोग्यंपिबेन्नरः ॥ अजीर्णेप्लीहिगुल्मेषु शोफार्शोविषमाग्निषु ॥ ५२ ॥ हलीमकामलापांडुकुष्ठा- ध्मानो रेष्वपि ॥

अर्थ–हाऊवेर त्रिफला त्रायमाण पीपल चोक निशोथ थोहर कुटकी वच ॥ ३५० ॥ नीलकी पत्ती सेंधानमक काला नमक इन्होंका चूर्ण कर गरम पानी वा गोमूत्र वा अनारका रस वा त्रिफलाका रस ॥ ५१ ॥ वा मांसका रस इन्होंमां- हसे एक कोइसाके संग चूरणको पीवै तो अजीर्ण तिल्लीरोग गुल्मरोग शोजा ववा- सीर विषमअग्नि ॥ ५२ ॥ हलीमक कामला पांडु कुष्ठ अफारा उदरके रोग इ- न्होंमें सुख होता है ॥

शुंठीहरीकतीकृष्णात्रिवृत्सौवर्चलंतथा ॥ ५३ ॥ समभागा- निसर्वाणिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ ज्ञेयंपंचसमंचूर्णमेतच्छू- लहरंपरम् ॥ ५४ ॥ आध्मानजठरार्शोघ्नमामवातहरंस्मृतम् ॥

अर्थ–सूंठ हरडै पीपल निशोथ कालानमक ॥ ५३ ॥ इन सर्वोंको वरावर भाग ले मिहीन चूरण वनावे इसको पंचसमचूर्ण जानना यह शूल ॥ ५४ ॥ अफरा पेटका रोग ववासीर और आमवात इन्होंको हरता है ॥

कर्षमात्राभवेत्कृष्णात्रिवृतास्यात्पलोन्मिता ॥५५॥ खंडात्प- लंचविज्ञेयंचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥ कर्षोन्मितंलिहेदेतत्क्षौद्रेणा- ध्माननाशनम् ॥५६॥ गाढविट्कोदरकफान्पित्तशूलंचनाशयेत् ॥

अर्थ–पीपल १ तोला निशोथ ४ तोले ॥ ५५ ॥ खांड ४ तोले इन्होंका चूर्ण कर मिलावै पीछे शहतमें मिला एक तोलाभर खावै यह अफरा ॥ ६६ ॥ म- लका वंधा पेटरोग कफ पित्त शूल इन्होंको नाश करता है ॥

लवणत्रितयंक्षारौशतपुष्पाद्वयंवचा ॥ ५७ ॥ अजमोदाजगं- धाचहपुषाजीरकद्वयम् ॥ मरिचंपिप्पलीमूलंपिप्पलीगजपि- प्पली ॥ ५८ ॥ हिंगुश्चहिंगुपत्रीचशठीपाठोपकुंचिका ॥ शुं- ठीचित्रकचव्यानिविडंगंचाम्लवेतसम् ॥ ५९ ॥ दाडिमंति-

त्तिडीकंचत्रिवृद्दंतीशतावरी ॥ इंद्रवारुणिकाभार्ङ्गीदेवदारुय-
वानिका ॥ ३६० ॥ कस्तुंबुरुस्तंबुरूणिपौष्करंबदराणिच ॥
शिवाचेतिसमांशानिचूर्णमेकत्रकारयेत् ॥ ६१ ॥ भावयेदार्द्र-
करसैर्बीजपूररसैस्तथा ॥ तत्पिबेच्छर्कराजीर्णमद्येनोष्णोद-
केनवा ॥ ६२ ॥ कोलांभसावातक्रेणदुग्धेनौष्ट्रेणमस्तुना ॥
यकृत्पृष्ठकटीशूलगुदकुक्षिहृदामयान् ॥ ६३ ॥ अर्शोविष्टं-
भमंदाग्निगुल्माष्ठीलोदराणिच ॥ हिक्काध्मानश्वासकासान्ज-
येदेतान्नसंशयः ॥६४॥ एतैरेवौषधैःसम्यग्घृतंवासाधयेद्भिषक् ॥

अर्थ–तीनों नमक दोनों खार दोनों सौंफ वच ॥ ५७ ॥ अजमोद तुलसी हाऊवेर दोनों जीरे मिरच पीपलामूल पीपल गजपीपल ॥ ५८ ॥ हींग हुरहुरा कचूर पाठा कलौंजी सूंठ चित्रक चव्य वायविडंग अम्लवेत ॥ ५९ ॥ अनार डासरपा निशोथ जमालगोटा शतावरी इंद्रायण भारंगी देवदार अजमायन ॥ ३६० ॥ धनियां तुंवरु पोहकरमूल वेर और हरडै इन सवोंको बराबर भाग ले चूरण वनाके मिलावै ॥ ६१ ॥ पीछे अदरकके रसमें और विजोराके रसमें भावना देवै पीछे खांड पुराणीकेसाथ मदिराकेसाथ अथवा गरमपानीकेसाथ ॥ ६२ ॥ अथवा वेरका पानीकेसाथ वा तक्र ऊंटनीका दूध दहीका पानी इन्होंमांहसे एक कोईसाके साथ पीवै यह यकृद्रोग पृष्ठशूल कटिशूल गुदरोग कुक्षिरोग हृद्रोग ॥ ६३ ॥ ववासीर मंदाग्नि विष्टंभ गुल्म अष्ठीला उदररोग हिचकी अफरा श्वास और खांसी इन्होंको नाश करता है इसमें संशय नहीं ॥६४॥ अथवा इन्ही ओषधोंकरकै बुद्धिमान् वैद्य घृतको साधै ॥

तुंबरूणित्रिलवणंयवानीपुष्कराह्वयम् ॥ ६५ ॥ यवक्षाराभ-
याहिंगुविडंगानिसमानिच ॥ त्रिवृत्त्रिभागाविज्ञेयासूक्ष्मचू-
र्णानिकारयेत् ॥६६॥ पिबेदुष्णेनतोयेनयवक्काथेनवापिबेत् ॥
जयेत्सर्वाणिशूलानिगुल्माध्मानोदराणिच ॥ ६७ ॥

अर्थ–तुंवरु तीनों नमक अजमायन पोहकरमूल ॥ ६५ ॥ जवाखार हरडै हींग वायविडंग ये सब बराबर भाग लेवैं निशोथ तीन भाग लेवै इन्होंका मिहीन चूर्ण कर ॥ ६६ ॥ गरमपानीके साथ अथवा जवोंका क्काथके साथ पीवै यह सब प्रकारके शूल गुल्म अफारा उदररोग इन्होंको नाश करता है ॥ ६७ ॥

चित्रकोनागरंहिंगुपिप्पलीपिप्पलीजटा॥ चव्याजमोदामरिचं प्रत्येकंकर्षसंमितम् ॥६८॥ स्वर्जिकाचयवक्षारःसिंधुसौवर्चलं बिडम् ॥ सामुद्रकंरोमकंचकोलमात्राणिकारयेत् ॥ ६९ ॥ एकीकृत्वाखिलंचूर्णंभावयेन्मातुलुंगजैः ॥ रसैर्दाडिमजैर्वापिशोषयेदातपेनच ॥ ३७० ॥ एतच्चूर्णंजयेद्गुल्मंग्रहणीमामजांरुजम् ॥ अग्निंचकुरुतेदीप्तंरुचिकृत्कफनाशनम् ॥ ७१ ॥

अर्थ—चीता सूंठ हींग पीपल पीपलामूल चव्य अजमोद मिरच ये सब एक एक तोलाभर लेने ॥ ६८ ॥ और साजीखार जवाखार सेंधानमक कालानमक मनयारीनमक खारीनमक सांभरनमक ये सब आठ आठ मासे लेने ॥ ६९ ॥ इन सबोंको मिलाकै चूर्ण बना बिजोराके रसमें अथवा अनारके रसमें भावना देवै पीछे घाममें सुखावै ॥ ३७० ॥ यह चूरण गुल्म ग्रहणी आमरोग इन्होंको जीतता है अग्निको दीप्त करता है रुचिको उपजाता है और कफको नाशता है७१

गंधकंपिप्पलीमूलंपिप्पलीचव्यचित्रकम् ॥ शुंठीहरीतकीचेतिक्रमवृद्ध्याविचूर्णयेत् ॥ ७२ ॥ वडवानलनामैतच्चूर्णंस्यादग्निदीपनम् ॥

अर्थ—गंधक पीपलामूल पीपल चव्य चीता सूंठ हरडै इन्होंको क्रमवृद्धिसे अर्थात् गंधक १ भाग पीपलामूल २ भाग ऐसे लेकै चूरण करै ॥ ७२ ॥ यह वडवानलचूरण अग्निको जगाता है ॥

अजमोदाविडंगानिसैंधवंदेवदारुच ॥ ७३ ॥ चित्रकःपिप्पलीमूलंशतपुष्पाचपिप्पली ॥ मरिचंचेतिकर्षांशंप्रत्येकंकारयेद्बुधः ॥ ७४ ॥ कर्षास्तुपंचपथ्यायादशस्युर्वृद्धदारुकात् ॥ नागराच्चदशैवस्युःसर्वाण्येकत्रकारयेत् ॥ ७५ ॥ पिबेत्कोष्णजलेनैवचूर्णंश्वयथुनाशनम् ॥ आमवातरुजंहंतिसंधिपीडांचगृध्रसीम् ॥ ७६ ॥ कटिपृष्ठगुदस्थांचजंघयोश्चरुजंजयेत् ॥ तूणीप्रतूणीविश्वाचीकफवातामयाञ्जयेत् ॥ ७७ ॥ समेनवागुडेनास्यवटकान्कारयेत्सुधीः ॥

अर्थ-अजमोद वायविडंग सेंधानमक देवदार ॥ ७३ ॥ चीता पीपलामूल सौंफ पीपल मिरच ये सब एक एक तोला लेने ॥ ७४ ॥ और हरडै ५ तोले भिदारा १० तोले सूंठ १० तोले ऐसे लेकै सबोंको मिला चूरण करै पीछे ॥ ७५ ॥ कछुक गरम किया पानीके संग पीवै यह चूरण शोजा आमवात संधिपीडा गृध्रसी ॥ ७६ ॥ कटिरोग पृष्ठरोग गुदरोग जंघारोग तूनीवात प्रतूनीवात विश्वाचीवात कफके रोग और वातके रोग इन्हींको जीतता है ॥ ७७ ॥ अथवा इस चूर्णके समभाग गुड डाल गोली वनाय सेवन किया होय तो चूरणसें जो फायदा है वैसाही गोलीसेभी है ॥

शुंठीसौवर्चलंहिंगुदाडिमंचाम्लवेतसम् ॥ चूर्णमुष्णाम्बुना पेयंश्वासहृद्रोगशांतये ॥ ७८ ॥ हिंगूग्रगंधाबिडविश्वकृष्णा-कुष्टाभयाचित्रकयावशूकम् ॥ पिबेत्ससौवर्चलपुष्कराह्वंहि-मांभसाशूलहृदामयघ्नम् ॥ ७९ ॥

अर्थ-सूंठ संचलखार भूना हिंग अनारकी जड अम्लवेतस इन्होंका चूर्ण कर गरम जलकेसाथ सेवनेसे श्वास और हृदयरोग नष्ट होते हैं ॥ ७८ ॥ हिंग वच विडनोन सूंठ पीपल कूठ हरडै चीताका मूल जवाखार संचलखार पाहकरमूल इन ग्यारह औषधोंका चूर्ण शीतल जलके साथ पीनेसें शूल हृद्रोग (छातीकी पीडा) नष्ट होते हैं ॥ ७९ ॥

हिंगुपाठाभयाधान्यंदाडिमंचित्रकःशठी ॥ अजमोदात्रिक-टकंहपुषाचाम्लवेतसम् ॥ ३८० ॥ अजगंधातिंतिडीकंजी-रकंपौष्करंवचा ॥ चव्यंक्षारद्वयंपंचलवणानीतिचूर्णयेत् ॥ ८१ ॥ प्राग्भोजनस्यमध्येवाचूर्णमेतत्प्रयोजयेत् ॥ पिबे-द्वाजीर्णमद्येनतक्रेणोष्णोदकेनवा ॥ ८२ ॥ गुल्मेवातकफो-द्भूतेविड्ग्रहेऽष्ठीलिकासुच ॥ हृद्बस्तिपार्श्वशूलेषुशूलेचगुदयो-निजे ॥८३॥ मूत्रकृच्छ्रेतथानाहेपांडुरोगेऽरुचौतथा ॥ हिक्का-यांयकृतिप्लीह्निश्वासेकासेगलग्रहे ॥ ८४ ॥ ग्रहण्यर्शोविकारे-षुचूर्णमेतत्प्रशस्यते ॥ भावितंमातुलुंगस्यबहुशःस्वरसेनवा ॥ ८५ ॥ कुर्याच्चगुटिकाःपथ्यावातश्लेष्मामयापहाः ॥

अर्थ–हींग पाठा हरडै धनियां अनार चित्रक कचूर अजमोद सूंठ मिरच पीपल हाऊवेर अल्मवेतस ॥ ३८० ॥ तुलसी डासरवा जीरा पोहकरमूल वच चव्य साजीखार जवखार पांचों नमक इन्होंका चूरण करै ॥ ८१ ॥ भोजनकी आदिमें अथवा मध्यमें इस चूरणको प्रयुक्त करै और पुरानी मदिराके संग अथवा तक्र वा गरम पानीके संग पीवै ॥ ८२ ॥ वातकफका गुल्म मलका बंधा अष्ठीलिका हृच्छूल वस्तिशूल पसलीशूल गुदशूल योनिशूल ॥ ८३ ॥ मूत्रकृच्छ्र अफारा पांडुरोग अरुचि हिचकी यकृत्रोग तिल्लीरोग श्वास ॥ ८४ ॥ खासी गलग्रह ग्रहणी ववासीर इन रोगोंमें यह चूरण हित करता है विजोराका स्वरसमें बहुतवार भावना देकै बहुतसी गोलियां बनावै ॥ ८५ ॥ ये गोली वात और कफके रोगोंको नाश करती है ॥

यवानीदाडिमंशुंठीतित्तिडीकाम्लवेतसौ ॥ ८६ ॥ बदराम्लंचकुर्वीतचतुःशाणमितानिच ॥ सार्धद्विशाणंमरिचंपिप्पलीदशशाणिका ॥ ८७ ॥ त्वक्सौवर्चलधान्याकंजीरकंद्विद्विशाणकम् ॥ चतुःषष्टिमितैःशाणैःशर्करामत्रयोजयेत् ॥८८॥ चूर्णितंसर्वमेकत्रयवानीखांडवाभिधम् ॥ चूर्णंजयेत्पांडुरोगंहृद्रोगंग्रहणीज्वरम् ॥ ८९ ॥ छर्दिशोषातिसारांश्चप्लीहानाहविबंधताम् ॥ अरुचिंशूलमंदाग्नीमर्शोजिह्वागलामयान्॥३९०॥

अर्थ–अजमायन अनार सूंठ डासरपा अमलवेत ॥ ८६ ॥ अडीकेवेर ये सब चार चार शाण लेने मिरच अढाईशाण पीपल १० शाण ॥ ८७ ॥ दालचिनी कालानमक धनियां जीरा ये सब दोदो शाण खांड ६४ शाण यहां ४ मासेको शाण कहते है इन सबोंको मिलाकै चूरण करना ॥ ८८ ॥ यह जवानीखांडव कहाता है यह पांडुरोग हृद्रोग ग्रहणी ज्वर ॥८९॥ छर्दि शोष अतीसार तिल्लीरोग पेटका फूलना कोष्टबद्ध अरुचि शूल मंदाग्नि ववासीर जीभरोग गलकारोग इन सबोंको नाश करता है ॥ ३९० ॥

तालीसंमरिचंशुंठीपिप्पलीवंशरोचना ॥ एकद्वित्रिचतुःपंचकर्षैर्भागान्प्रकल्पयेत् ॥ ९१ ॥ एलात्वचोस्तुकर्षार्धंप्रत्येकंभागमावहेत् ॥ द्वात्रिंशत्कर्षतुलिताप्रदेयाशर्कराबुधैः ॥९२॥ तालीसाद्यमिदंचूर्णंरोचनंपाचनंस्मृतम् ॥ कासश्वासज्वर-

हरंछर्द्यतीसारनाशनम् ॥९३॥ शोषाध्मानहरंप्लीहग्रहणीपां-
डुरोगजित् ॥ पक्त्वावाशर्करांचूर्णेक्षिपेत्स्याद्गुटिकाततः ॥९४॥

अर्थ–तालीसपत्र १ तोले मिरच २ तोले सूंठ ३ तोले पिपल ४ तोले वंश-
लोचन ५ तोले ऐसे भाग लेवै ॥ ९१ ॥ इलायची और दालचिनी आधा-
आधा तोला और खांड ३२ तोले ऐसे लेवै ॥ ९२ ॥ यह तालीसआदि चूरण
पाचन है रोचन है खासी श्वास ज्वर छर्दि अतिसार इन्होंका नाश करता है॥९३॥
और शोष अफारा तिल्लीरोग ग्रहणी पांडुरोग इन्होको नाश करता है अथवा इस
चूरणको खांडकी चासणीमें देके गोलियां बांधै ॥ ९४ ॥

सितोपलाषोडशस्यादष्टौस्याद्वंशरोचना ॥ पिप्पलीस्याच्च-
तुःकर्षास्यादेलाचद्विकार्षिकी ॥ ९५ ॥ एककर्षस्त्वचःकार्य-
श्चूर्णयेत्सर्वमेकतः ॥ सितोपलादिकंचूर्णमधुसर्पिर्युतंलिहेत्
॥ ९६ ॥ श्वासकासक्षयहरंहस्तपादांगदाहजित् ॥ मंदाग्निं
सुप्तजिह्वत्वंपार्श्वशूलमरोचकम् ॥ ९७ ॥ ज्वरमूर्ध्वगतंरक्तं
पित्तमाशुव्यपोहति ॥

अर्थ–मिश्री १६ तोले वंशलोचन ८ तोले पीपल ४ तोले छोटी इलायची
२ तोले ॥ ९५ ॥ दालचिनी १ तोला इन सबोंको मिलाकै चूरण करना यह
सितोपलादि चूरण है इसमें घृत और शहत मिलाकै चाटै॥९६॥ यह श्वास खासी
क्षयी हाथ पैर और शरीरका दाह इन्होंको नाश करता है और मंदाग्नि सुप्तजिव्हा
पसलीशूल अरोचक ॥ ९७ ॥ ज्वर ऊर्ध्वगत रक्तपित्त इन्होंको तत्काल दूर क-
रता है ॥

सामुद्रलवणंकार्यमष्टकर्षमितंबुधैः ॥ ९८ ॥ पंचसौवर्चलं
ग्राह्यंबिडंसैंधवधान्यके ॥ पिप्पलीपीप्पलीमूलंकृष्णजीरकप-
त्रकम् ॥९९॥ नागकेशरतालीसमम्लवेतसकंतथा ॥ द्विकर्ष-
मात्राण्येतानिप्रत्येकंकारयेद्बुधः ॥४००॥ मरिचंजीरकंविश्व-
मेकैकंकर्षमात्रकम्॥दाडिमंस्याच्चतुःकर्षंत्वगेलाचार्धकार्षिकी
॥१॥बीजपूररसेनैवभावितंसप्तवारकम्॥ एतच्चूर्णीकृतंसर्वंल-
वणंभास्कराभिधम् ॥ शाणप्रमाणंदेयंतुमस्तुतक्रसुरासवैः ॥२॥

वातश्लेष्मभवंगुल्मंप्लीहानमुदरंक्षयम् ॥ अर्शांसिग्रहणींकुष्ठं विबंधंचभगंदरम् ॥ ३ ॥ शोफंशूलंश्वासकासमामदोषंचहृ-द्रुजम् ॥ मंदाग्निंनाशयेदेतद्दीपनंपाचनंपरम् ॥ ४ ॥ सर्वलो-कहितार्थायभास्करेणोदितंपुरा ॥

अर्थ—सांभरनमक ८ तोले ॥९८॥ कालानमक ५ तोले मनयारीनमक सेंधानमक धनियां पीपल पीपलामूल कालाजीरा तेजपात ॥ ९९ ॥ नागकेशर तालीसपत्र अमलवेतस ये सब दो दो तोले ॥ ४०० ॥ और मिरच जीरा सूंठ ये एक एक तोला अनारदानां ४ तोले और इलायची दालचिनी ये आधा आधा तोला ॥१॥ इन सबोंका चूरण कर बिजोराके रसमें सातवार भावना देनी पीछे इसका चू-रण करना इसको लवणभास्कर कहते है चार मासेभर इस चूरणको दहीका पानी मठा मदिरा आसव इन्होंमांहसे एक कोईसाके संग देवै ॥ २ ॥ यह वात-कफसे उपजा गुल्म तिल्लीरोग उदररोग क्षयी ववासीर संग्रहणी कुष्ठ मलबंध भगं-दर ॥ ३ ॥ शोजा शूल श्वास खासी आमदोष हृद्रोग और मंदाग्नि इन्होंको नाश करता है दीपन है उत्तम पाचन है ॥४॥ सब लोकोंको सुखके अर्थ पहले भास्करनें कहा है ॥

एलाप्रियंगुमुस्तानिकोलमज्जाचपिप्पली ॥ ५ ॥ श्रीचंदनं तथालाजालवंगंनागकेशरम् ॥ एतच्चूर्णीकृतंसर्वंसिताक्षौ-द्रयुतंलिहेत् ॥ ६ ॥ वातपित्तकफोद्भूतांछर्दिंहंत्यातिवेगतः ॥

अर्थ—इलायची प्रियंगु नागरमोथा वेरकी मींगी पीपल ॥ ५ ॥ सुपेदचंदन धानकी खील लौंग नागकेशर इन सबोंका चूरण कर तिसमें शहत और मिश्री मिलाकै चाटै ॥ ६ ॥ यह वात पित्त और कफसे उपजी छर्दिको अत्यंत वेगसे नाश करता है ॥

मूलंपत्रंफलंपुष्पंत्वचंनिंबात्समाहरेत् ॥७॥ सूक्ष्मचूर्णमिदंकृ-त्वापलैःपञ्चदशोन्मितैः॥ लोहभस्महरीतक्यौचक्रमर्दकचित्र-कौ ॥८॥ भल्लातकविडंगानिशर्करामलकंनिशा ॥ पिप्पलीम-रिचंशुंठीबाकुचीकृतमालकः ॥ ९ ॥ गोक्षुरश्चपलोन्मानमेकैकं कारयेद्बुधः ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंभृंगराजेनभावयेत् ॥ ४१० ॥

अष्टभागावशिष्टेनखदिरासनवारिणा ॥ भावयित्वाचसंशुष्कं कर्षमात्रंततःपिबेत् ॥ ११॥ खदिरासनतोयेनसर्पिषापयसा-थवा ॥ मासेनसर्वकुष्ठानिविनिहंतिरसायनम् ॥ १२ ॥ पंच-निंबमिदंचूर्णंसर्वरोगप्रणाशनम् ॥

अर्थ–नींबके जड पत्ता फल फूल छाल इन्हींको ६० तोलेभर लेकै ॥७॥ मि-हीन चूरण कर पीछे लोहाका भस्म हरडै पुवाड चित्रक ॥ ८ ॥ भिलावा वाय-विडंग खांड आंवला हलदी पीपल मिरच सूंठ बावची अमलतास ॥ ९ ॥ गिलोय ये सब चार चार तोलेभर लेने पीछे सबको मिलाकै चूरण कर भंगराके रसमें भावना देवै ॥ ४१० ॥ पीछे आठमा हिस्सा शेष रहे खैर और आसनके काढेमें भावना देवै पीछे सुखाकै १ तोलाभर चूरणको लेकै ॥ ११ ॥ खैर और आस-नका काढाकेसंग वा दूध अथवा घृतके संग १ महिनापर्यंत लेनेसे सबप्रकारके कुष्ठोंको यह रसायन नाश करता है ॥ १२ ॥ यह पंचनिंबचूरण सब रोगोंको दूर करता है ॥

शतावरीगोक्षुरश्चबीजंचकपिकच्छुजम् ॥ १३ ॥ गांगेरुकी चातिबलाबीजमिक्षुरकोद्भवम् ॥ चूर्णितंसर्वमेकत्रगोदुग्धेन पिबेन्निशि ॥ १४ ॥ नतृप्तिंयातिनारीभिर्नरश्चूर्णप्रभावतः ॥

अर्थ–शतावरी गोखरू क्रौंचके बीज ॥ १३ ॥ गंगेरन बलबीज तालमखाना इन सबोंका चूरण कर गौका दूधकेसंग रात्रिमें पीवै ॥ १४ ॥ इस चूरणके प्रता-पसे पुरुष बहुतसी स्त्रियोंकेसाथ भोग करनेमें तृप्त नहीं होता है ॥

अश्वगंधादशपलातन्मात्रोवृद्धदारकः ॥ १५ ॥ चूर्णीकृत्यो-भयंविद्वान्घृतभांडेनिधापयेत् ॥ कर्षैकंपयसापीत्वानारीभि-र्नैवतृप्यति ॥ १६ ॥ अगत्वाप्रमदांभूयोवलीपलितवर्जितः ॥ मुसलीकंदचूर्णंतुगुडूचीसत्त्वसंयुतम् ॥ १७ ॥ सक्षीरीगोक्षु-राभ्यांचशाल्मलीशर्करामलैः ॥ आलोड्यघृतदुग्धेनपायये-त्कामवर्धनम् ॥ १८ ॥

अर्थ–आसगंध ४० तोले भिदारा ४० तोले ॥ १५ ॥ इन दोनोंका चूरण कर घृतके पात्रमें स्थापित करै इसमांहसे तोलाभर चूरणको दूधकेसंग पीनेसे नारीके-

साथ वारंवार भोग करनेसे नहीं तृप्त होता ॥ १६ ॥ और शरीरपर गुलझट नहीं पडती और वाल सुपेद नहीं होते सफेदमुसली अमृतवेलीका सत्व ॥ १७ ॥ कवचबीज गोखरू शतावरीको कंद खांड आमला इन सात ओषधियोंका चूर्ण कर गाईके दूधमे घृत मिलाय सेवन करनेसें धातुकी वृद्धि होती है और कामदेव वढता है ॥ १८ ॥

चित्रकंत्रिफलामुस्तंविडंगंत्र्यूषणानिच ॥ समभागानिसर्वाणिनवभागाहतायसः ॥ १९॥ एतदेकीकृतंचूर्णमधुसर्पिर्युतंलिहेत् ॥ गोमूत्रमथवातक्रमनुपानेप्रशस्यते ॥ ४२० ॥ पांडुरोगंजयत्युग्रंत्रिदोषंचभगंदरम् ॥ शोथकुष्ठोदरार्शांसिमंदाग्निमरुचिंकृमीन् ॥ २१ ॥

अर्थ–चित्रक त्रिफला नागरमोथा वायविडंग सूंठ मिरच पीपल ये सब बराबर भाग लेने और लोहाका भस्म नवमां भाग लेना ॥ १९ ॥ इन सर्वोंका चूरण कर शहत और घृतके संग चाटै और गोमूत्र अथवा मट्ठाका अनुपान करै ॥४२०॥ यह पांडुरोग उग्रसन्निपात भगंदर शोजा कुष्ठ उदररोग ववासीर मंदाग्नि अरुचि कृमिरोग इन्होंका नाश करता है ॥ २१ ॥

अकारकरभःशुंठीकंकोलंकुंकुमंकणा ॥ जातीफलंलवंगंच चंदनंचेतिकार्षिकान् ॥ २२ ॥ चूर्णानिमानतःकुर्यादहिफेनंपलोन्मितम् ॥ सर्वमेकीकृतंसूक्ष्मंमाषैकंमधुनालिहेत् ॥ २३ ॥ शुक्रस्तंभकरंचूर्णंपुंसामानंदकारकम् ॥ नारीणां प्रीतिजननंसेवेतनिशिकामुकः ॥ २४ ॥ बकुलत्वग्भवंचूर्णं घर्षयेद्दंतपंक्तिषु ॥ वज्रादपिदृढीभूतादंताःस्युश्चपलाध्रुवम् ॥२५॥

अर्थ–अकरकरा सूंठ कंकोल केसर पीपल जायफल लौंग सपेदचंदन ये एक एक तोलाभर लेने ॥ २२ ॥ इन सर्वोंका चूरण कर तिसमें अफीम ४ तोलेभर मिलावै पीछे सर्वोंका चूरण कर कपडांमांहकै छान लेवै ॥ २३ ॥ सर्वोंके बराबर मिश्री मिलाकै एक मासाभर चूरणमें शहत मिलाकै चाटै यह वीर्यको थांभता है पुरुषोंको आनंद देता है नारियोंके प्रीति उपजाता है भोग करनेंकी इ-

च्छावाला मनुष्य इसको रात्रिविषैं सेवै ॥ २४ ॥ बकुलवृक्षके जडका चूर्णसें दांतोंका घर्षण करनेसें वे दांत वज्रसेंभी असंत दृढ होते हैं ॥ २५ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे चूर्णकल्पना नाम षष्ठोध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः ।

वटिकाश्चाथकथ्यंतेतन्नामगुटिकावटी ॥ मोदकोवटिकापिंडीगुंडीवर्तिस्तथोच्यते ॥ २६ ॥ लेहवत्साध्यतेवह्नौगुडोवा शर्कराथवा ॥ गुग्गुलुंवाक्षिपेत्तत्रचूर्णतन्निर्मितावटी ॥ २७॥ कुर्यादवह्निसिद्धेनक्वचिद्गुग्गुलुनावटी ॥ द्रवेणमधुनावापि गुटिकांकारयेद्बुधः ॥ २८ ॥ सिताचतुर्गुणादेयावटीषुद्विगुणोगुडः ॥ चूर्णाच्चूर्णसमःकार्योगुग्गुलुर्मधुतत्समम् ॥ २९ ॥ द्रवंचद्विगुणंदेयंमोदकेषुभिषग्वरैः ॥ कर्षप्रमाणात्तन्मात्राबलंदृष्ट्वाप्रयुज्यताम् ॥ ४३० ॥

अर्थ–वटिका गुटिका वटी मोदक पिंडी गुंडी ये नाम गोलीके हैं ॥ २६ ॥ गुड और खांडको अग्निमें पकावै जैसे अवलेह बनता है पीछे गूगल वा चूरण मिलाके गोली बांधनी ॥ २७ ॥ अग्निका संयोगके विनाभी गूगलसे गोली बनती है और गीली वस्तु तथा शहतसेभी बंधती है ॥ २८ ॥ मिश्री चौगुनी गुड दूना चूरण लिखाके प्रमाणसें गूगल और शहत बराबर भाग देना ॥२९॥ पतली वस्तु दूनी देनी वैद्योंनें गोलीका प्रमाण एक तोलाभर अथवा रोगीका बलके प्रमाण कहा है ॥ ४३० ॥

इंद्रवारुणिकामुस्तंशुंठीदंतीहरीतकी ॥ त्रिवृत्सठीविडंगानि गोक्षुरश्चित्रकस्तथा ॥ ३१ ॥ तेजोह्वाचद्विकर्षाणिपृथग्द्रव्याणिकारयेत् ॥ सूरणस्यपलान्यष्टौवृद्धदारुचतुष्पलम् ॥३२॥ चतुःपलंस्याद्भल्लातःक्वाथयेत्सर्वमेकतः ॥ जलद्रोणेचतुर्थांशंगृह्णीयात्क्वाथमुत्तमम् ॥ ३३ ॥ क्वाथद्रव्यात्त्रिगुणितंगुडं

क्षिप्त्वापुनःपचेत् ॥ सम्यक्पक्कंचविज्ञायचूर्णमेतत्प्रदापयेत् ॥ ३४ ॥ चित्रकस्त्रिवृतादंतीतेजोह्वापलिकाःपृथक् ॥ पृथक्त्रिपलिकाःकार्याव्योषैलामरिचत्वचः ॥ ३५ ॥ निक्षिपेन्मधुशीतेचतस्मिन्प्रस्थप्रमाणतः ॥ एवंसिद्धोभवेच्छ्रीमान्बाहुशालगुडःशुभः ॥ ३६ ॥ जयेदर्शांसिसर्वाणिगुल्मंवातोदरंतथा ॥ आमवातंप्रतिश्यायंग्रहणीक्षयपीनसान् ॥ ३७ ॥ हलीमकंपांडुरोगंप्रमेहंचविनाशयेत् ॥

अर्थ-इंद्रायण नागरमोथा सूंठ जमालगोटाकी जड हरडै निशोथ कचूर वायविडंग गोखरू चित्रक ॥ ३१ ॥ वच ये सब दोदो तोले जमीकंद ३२ तोले भिदारा १६ तोले ॥३२॥ भिलावा १६ तोले इन सबोंको १०२४ तोलेभर पानीमें ओटावै जब चौथाई भाग बाकी रहै तब उतारै ॥ ३३ ॥ काढाके द्रव्यसे तिगुणा गुड मिलाकै फिर पकावै अच्छी तरह पका हुआको जानकै जो आगै औषधी कही जावेंगी तिन्होंका चूरणको मिलावै ॥ ३४ ॥ चूर्णोंका प्रमाण चित्रक निशोत दांतीमूल तेजपात्र यह चार औषधि एक एक पल प्रमाण लेनी और सूंठ मिरच पीपल अमला दालचिनी यह पांच औषधि तीन तीन पल प्रमाण लेनी ॥ ३५ ॥ इन सब औषधोंका चूर्ण कर पाकमे डालना और उसमें एक प्रस्थप्रमाण शहत मिलानेसें वो बाहुशालगुड बनता है ॥ ३६ ॥ उसका सेवन करनेसें अर्श गुल्म वातोदर आमवात झुषाम संग्रहणी क्षय पीनस ॥३७॥ हलीमक पांडुरोग और प्रमेह इतने रोग दूर होते हैं ॥

मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसंमिता ॥ ३८ ॥ अर्धकर्षो यवक्षारःकर्षयुग्मंचदाडिमम् ॥ एतच्चूर्णीकृतंयुंज्यादष्टकर्षगुडेनहि ॥ ३९ ॥ शाणप्रमाणांगुटिकांकृत्वावक्त्रेविधारयेत् ॥ अस्याःप्रभावात्सर्वेऽपिकासायांत्येवसंक्षयम् ॥ ४४० ॥

अर्थ-मिरच १ तोला पीपल १ तोला ॥ ३८ ॥ जवाखार आधा तोला अनार २ तोले इन्होंका चूरण कर आठ तोलेभर गुड मिला ॥ ३९ ॥ चार मासेकी गोली बनाय मुखमें स्थापित करै इसके प्रभावसे सब प्रकारकी खासी नाशको प्राप्त होती है ॥ ४०० ॥

व्याघ्रीजीरकधात्रीणांचूर्णमधुयुतंलिहेत् ॥ ऊर्ध्ववातमहा-
श्वासतमकैर्मुच्यतेक्षणात् ॥ ४१ ॥ गुडशुंठीशिवामुस्तैर्गु-
टिकांधारयेन्मुखे ॥ श्वासकासेषुसर्वेषुकेवलंवाबिभीतकम्॥४२॥

अर्थ–कटेली जीरा और आंवला इन तीन औषधोंका चूर्ण शहतसे खाय तो ऊर्ध्ववायु महाश्वास और तमकश्वास इतने रोग तत्काल दूर होते हैं ॥ ४१ ॥ गुड सूंठ हरडै नागरमोथा इन्होंकी गोली बना मुखमें धारै तो श्वासमें और सब प्रकारकी खासीमें सुख करती है अथवा अकेला बहेडाको मुखमें रखनेंसे सुख होता है ॥ ४२ ॥

आमलंकमलंकुष्ठंलाजाश्चवटरोहकम् ॥ एतच्चूर्णस्यमधुनागु-
टिकांधारयेन्मुखे ॥४३॥ तृषांप्रवृद्धांहंत्येषामुखशोषंचदारुणम् ॥

अर्थ–आंवला कमल कूठ धानकी खील वडके अंकुर इन्होंका चूरण कर तिसमें शहत मिला मुखमें धारण करै ॥ ४३ ॥ यह गोली बढी हुई तृषाको और दारुण-रूप मुखशोषको नाश करती है ॥

विडंगंनागरंकृष्णापथ्यामलबिभीतकौ ॥ ४४ ॥ वचागुडू-
चीभल्लातंसविषंचात्रयोजयेत् ॥ एतानिसमभागानिगोमूत्रे-
णैवपेषयेत् ॥ ४५ ॥ गुंजाभागुटिकाकार्यादद्यादार्द्रकजैर-
सैः ॥ एकामजीर्णगुल्मेषुद्वेविषूच्यांचदापयेत् ॥ ४६ ॥ ति-
स्रश्चसर्पदष्टेतुंचतस्रःसांनिपातिके ॥ वटीसंजीवनीनाम्नासं-
जीवयतिमानवम् ॥ ४७ ॥

अर्थ–वायविडंग सूंठ पीपल हरडै आंवला बेहेडा वच गिलोय भिलावा ४४ शोधा हुआ मीठा तेलिया शींगीमुहरा इन्होंको बराबर भाग लेकै गोमूत्रमें पीसै ॥ ४५ ॥ पीछे चिरमठीके समान गोली बांध अदरकका रसकेसाथ देवै अजीर्णमें १ गोली विषूचिकामें २ गोली ॥ ४६ ॥ सर्पके डसनेमें तीन गोली सन्निपातमें चार गोली ऐसे देवै यह संजीवनी वटी मनुष्यको जिवाती है ॥ ४७ ॥

व्योषाम्लवेतसंचव्यंतालीसंचित्रकस्तथा ॥ जीरकंतिंतिडी-
कंचप्रत्येकंकर्षभागिकम् ॥ ४८ ॥ त्रिसुगंधंत्रिशाणंस्याद्र-

डःस्यात्कर्षविंशतिः ॥ व्योषादिगुटिकासेयंपीनसश्वासका-
सजित् ॥ ४९ ॥ रुचिस्वरकराख्याताप्रतिश्यायप्रणाशिनी ॥

अर्थ–सूंठ मिरच पीपल अमलवेत तालीसपत्र चित्रक जीरा डासरपा ये एक-एक तोला ॥४८॥ दालचिनी इलायची तेजपात ये एक एक तोला गुड २० तोले इन्होंकी गोली बनावै यह व्योषादिगुटिका पीनस श्वास खासी इन्होको नाश करती है ॥ ४९ ॥ रुचि और स्वरको उपजाती है और झुषामको दूर करती है ॥

आमेषुसगुडांशुंठीमजीर्णेगुडपिप्पलीम् ॥ ४५० ॥ कृच्छ्रेजी-
रगुडंदद्यादर्शःसुचगुडाभयाम् ॥ वृद्धदारकभल्लातशुंठीचूर्णे-
नयोजितः ॥ ५१ ॥ मोदकःसगुडोहन्यात्षड्विधार्शःकृतांरुजम् ॥

अर्थ–सूंठके चूरणमें गुड मिला गोली वना खानेसे आमदोष दूर होता है पीपलके चूरणमें गुड मिला गोली वना खानेसे अजीर्ण दूर होता है ॥ ४५० ॥ जीराके चूरणमें गुड मिला गोली वना खानेसे मूत्रकृच्छ्र दूर होता है हरडैके चूरणमें गुड मिला गोली बना खानेसे ववासीर दूर होता है भिदारा भिलावा सूंठ इन्होंके चूरणमें ॥ ५१ ॥ दुगुना गुड मिला गोली बना खानेसे छः प्रकारके ववासीर दूर होते हैं ॥

शुष्कसूरणचूर्णस्यभागान्द्वात्रिंशदाहरेत् ॥ ५२ ॥ भागा-
न्षोडशचित्रस्यशुंठ्याभागचतुष्टयम् ॥ द्वौभागौमरिचस्या-
पिसर्वाण्येकत्रकारयेत् ॥ ५३ ॥ गुडेनपिंडिकांकुर्यादर्शसां
नाशिनींपरम् ॥

अर्थ–सुखा हुआ जमीकंदका चूरण कर ३२ भाग ॥ ५२ ॥ चित्रक १६ भाग सूंठ ४ भाग मिरच २ भाग इन सबोंका चूरण कर मिलावै ॥ ५३ ॥ पीछे दुगुना गुड मिला गोली बना खानेसे छः प्रकारके ववासीर दूर होते हैं ॥

सूरणोवृद्धदारुश्चभागैःषोडशभिःपृथक् ॥ ५४ ॥ मुसलीचि-
त्रकौज्ञेयावष्टभागमितौपृथक् ॥ शिवाबिभीतकौधात्रीविडंगं
नागरंकणा ॥ ५५ ॥ भल्लातःपिप्पलीमूलंतालीसंचपृथक्पृ-
थक् ॥ चतुर्भागप्रमाणानित्वगेलामरिचंतथा ॥ ५६ ॥ द्वि-
भागमात्राणिपृथक्कृतस्त्वेकत्रचूर्णयेत् ॥ द्विगुणेनगुडेनाथव-

टकान्कारयेद्बुधः ॥ ५७ ॥ प्रबलाग्निकराएतेतथार्शोनाश-
नाःपरम् ॥ ग्रहणींवातकफजांश्वासंकासंक्षयामयम् ॥५८॥
प्लीहानंश्लीपदंशोफंहिक्कांमेहंभगंदरम् ॥ निहन्युःपलितंवृ-
ष्यास्तथामेध्यारसायनाः ॥ ५९ ॥

अर्थ—जमीकंद १६ भात्र भिदारा १६ भाग ॥५४॥ मुसली ८ भाग चित्रक ८ भाग हरडै १ वहेडा २ आंवला ३ वायविडंग ४ सूंठ ५ पीपल ६ ॥ ५५ ॥ भिलावा ७ पीपलामूल ८ और तालीसपत्र ९ ये नवों ओषध चार चार भाग और दालचिनी इलायची मिरच ॥ ५६ ॥ ये दोदो भाग ऐसे लेकै पीछे मिलाकै चूरण करना पीछे दुगुना गुड मिलाकै गोलियां बनावै ॥ ५७ ॥ ये गोली जठराग्निको बहुत जगाती है और ववासीर वातकी ग्रहणी कफकी ग्रहणी श्वास खासी और क्षयी ॥ ५८ ॥ तिल्लीरोग श्लीपद शोजा हिचकी प्रमेह भगंदर वालोंका सुपेद होना इन्होंको नाश करती है स्त्रीसंगकी इच्छा करती है बुद्धिको बढाती है और बुढापाको दूर करती है ॥ ५९ ॥

त्रिफलात्र्यूषणंचव्यंपिप्पलीमूलचित्रकौ ॥ दारुमाक्षिकधा-
तुस्त्वग्दार्वीमुस्तंविडंगकम् ॥ ४६० ॥ प्रत्येकंकर्षमात्राणि
सर्वाद्द्विगुणितंतथा ॥ मंडूरंचूर्णयेत्सर्वंगोमूत्रेऽष्टगुणेक्षिपेत्
॥६१॥ पक्त्वाचवटकान्कृत्वादद्यात्तक्रानुपानतः ॥ कामला-
पांडुमेहार्शःशोथकुष्ठकफामयान् ॥ ६२ ॥ ऊरुस्तंभमजीर्णंच
प्लीहानंनाशयंतिच ॥

अर्थ—हरडै बहेडा आंवला सूंठ मिरच पीपल चवक पीपलामूल चित्रक देवदार सोनामाखीका भस्म दालचिनी दारुहलदी नागरमोथा वायविडंग ॥ ४६० ॥ ये पंदरह ओषध एकएक तोला और सब ओषधोंसे दुगुना गुड और आठगुना गोमूत्र लेकै तिसमें मंडूरका चूरणको पका पीछे तिसमें सबको मिला ॥ ६१ ॥ और पकाय गोली बनाय तक्र अर्थात् मट्ठाके अनुपानसे लेवै ये गोली कामला पांडु प्रमेह ववासीर शोजा कुष्ठ कफका रोग ॥ ६२ ॥ ऊरुस्तंभ अजीर्ण तिल्लीरोग इन्होंको नाश करती है ॥

क्षौद्राद्द्विगुणितंसर्पिर्घृताद्द्विगुणापिप्पली ॥ ६३ ॥ सिताद्विगु-
णितातस्याःक्षीरंदेयंचतुर्गुणम् ॥ चातुर्जातंक्षौद्रतुल्यंपक्त्वा

कुर्याच्चमोदकान् ॥ ६४ ॥ धातुस्थांश्चज्वरान्सर्वान्श्वासंका-
संचपांडुताम् ॥ धातुक्षयंवह्निमांद्यंपिप्पलीमोदकोजयेत् ॥६५॥

अर्थ-शहतसे दुगुना घृत और घृतसे दुगुनी पीपल ॥६३॥ और पीपलसे दुगुनी मिश्री और मिश्रीसे चौगुना दूध देना और शहतके बराबर दालचिनी तेजपात इलायची नागकेशर इन्होंका चूरण कर सबोंको मिला और पकाय गोली बनावै ॥ ६४ ॥ धातुओंमें स्थित हुये सब ज्वर श्वास खासी पांडु धातुक्षय मंदाग्नि इन्होंको यह पिप्पलीमोदक जीतता है ॥ ६५ ॥

चंद्रप्रभावचामुस्तंभूनिंबामृतदारुकम् ॥ हरिद्रातिविषादा-
र्वीपिप्पलीमूलचित्रकौ ॥ ६६ ॥ धान्याकंत्रिफलाचव्यंवि-
डंगंगजपिप्पली ॥ व्योषंमाक्षिकधातुश्चद्वौक्षारौलवणत्रयम्
॥ ६७ ॥ एतानिशाणमात्राणिप्रत्येकंकारयेद्बुधः ॥ त्रिवृद्दं-
तीपत्रकंचत्वगेलावंशरोचना ॥ ६८ ॥ प्रत्येकंकर्षमात्रंचकु-
र्यादेतानिबुद्धिमान् ॥ द्विकर्षहतलोहंस्याच्चतुःकर्षासिताभवे-
त् ॥ ६९ ॥ शिलाजत्वष्टकर्षस्यादष्टौकर्षास्तुगुग्गुलोः ॥
एभिरेकत्रसंक्षुण्णैःकर्तव्यागुटिकाशुभा ॥ ४७० ॥ चंद्रप्रभे-
तिविख्यातासर्वरोगप्रणाशिनी ॥ प्रमेहान्विंशतिंकृच्छ्रंमूत्रा-
घातंतथाश्मरीम् ॥ ७१ ॥ विबंधानाहशूलानिमेहनग्रंथिम-
र्बुदम् ॥ अंडवृद्धिंतथापांडुंकामलांचहलीमकम् ॥ ७२ ॥
अंत्रवृद्धिंकटीशूलंश्वासंकासंविचर्चिकाम् ॥ कुष्ठान्यर्शांसिकं-
डूंचप्लीहोदरभगंदरे ॥ ७३ ॥ दंतरोगंनेत्ररोगंस्त्रीणामार्तवजां
रुजम् ॥ पुंसांशुक्रगतान्दोषान्मंदाग्निमरुचिंतथा ॥ ७४ ॥
वायुंपित्तंकफंहन्याद्बल्यावृष्यारसायनी ॥ चंद्रप्रभायांकर्ष-
स्तुचतुःशाणोविधीयते ॥ ७५ ॥

अर्थ-कचूर वच नागरमोथा चिरायता गिलोय देवदार हलदी अतीस दारुहलदी पीपलामूल चित्रक ॥६६॥ धनियां हरडै बहेडा आंवला चवक वायविडंग गजपीपल मिरच सोनामाखी साजीखार जवखार सेंधानमक काला नमक

मनयारीनमक ॥ ६७ ॥ ये सताईस ओषधी चारचार मासे और निशोत जमालगोटाकी जड तेजपात दालचिनी इलायची वंशलोचन ॥ ६८ ॥ ये सब एकएक तोला और लोहका भस्म २ तोले और मिश्री ४ तोले ॥६९॥ शिलाजीत ८ तोले गूगल ८ तोले इन सर्वोंका चूरण कर सुंदर गोली बनानी ॥ ४७० ॥ ये गोली चंद्रप्रभानामसे विख्यात है सब रोगोंको नाश करती है और वीस प्रकारके प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात पथरी ॥ ७१ ॥ बंधा अफारा शूल प्रमेह पिटिका अर्बुदरोग अंडवृद्धि पांडु कामला हलीमक ॥ ७२ ॥ अंत्रवृद्धि कटीशूल श्वास खासी विचर्चिका सब कुष्ठ ववासीर खाज तिल्लीरोग पेटरोग भगंदर ॥७३॥ दंतरोग नेत्ररोग स्त्रियोंके आर्तवसे उपजा रोग पुरुषोंके वीरजके दोष मंदाग्नि अरुचि ॥ ७४ ॥ वात पित्त कफ इन्होंको नाश करती है बलमें हित है वीर्यको बढाती है बुढापाको दूर करती है इस चंद्रप्रभा गोलीमें चार शाणोंका कर्ष लिया जाता है ॥ ७५ ॥

यवानीजीरकंधान्यंमरीचंगिरिकर्णिका ॥ अजमोदोपकुंचीचचतुःशाणाःपृथक्पृथक् ॥ ७६ ॥ हिंगुषट्शाणिकंकार्यक्षारौलवणपंचकम् ॥ त्रिवृच्चाष्टमितैःशाणैःप्रत्येकंकल्पयेत्सुधीः ॥ ७७ ॥ दंतीशठीपौष्करंचविडंगंदाडिमंशिवा ॥ चित्रोम्लवेतसःशुंठीशाणैःषोडशभिःपृथक् ॥ ७८ ॥ बीजपूररसेनैषांगुटिकाःकारयेद्बुधः ॥ घृतेनपयसामद्यैरम्लैरुष्णोदकेनवा ॥ ७९ ॥ पिबेत्कांकायनप्रोक्तांगुटिकांगुल्मनाशिनीम् ॥ मद्येनवातिकंगुल्मंगोक्षीरेणचपैत्तिकम् ॥ ४८० ॥ मूत्रेणकफगुल्मंचदशमूलैस्त्रिदोषजम् ॥ उष्ट्रीदुग्धेननारीणांरक्तगुल्मंनिवारयेत् ॥ ८१ ॥ हृद्रोगंग्रहणींशूलंकृमीनर्शांसिनाशयेत् ॥

अर्थ—अजमायन धनियां जीरा मिरच विष्णुक्रांता अजमोद कलोंजी ये सोलहसोलह मासे ॥ ७६ ॥ हींग २४ मासे जवखार साजीखार सेंधानमक कालानमक मनयारीनमक खारीनमक सामरनमक निशोत ये आठ ओषध बत्तीस बत्तीस मासे ॥ ७७ ॥ और जमालगोटाकी जड कचूर पोहकरमूल वायविडंग अनारकी छाल छोटी हरडै चित्रक अमलवेत सूंठ ये चौसठ तोले ऐसे लेवै ॥ ७८ ॥ पीछे विजोराके रसमें गोली बनावै घृत दूध मदिरा खट्टारस

गरमपानी इन्होंमांहसे एक कोईसाके संग ॥ ७९ ॥ कांकायनमुनिकी कही इस गोलीको पीवै यह गुल्मको नाश करती है मदिराके संग वातका गुल्म नाश होता है गौका दूधकेसंग पित्तका गुल्म नष्ट होता है ॥ ४८० ॥ गोमूत्रकेसंग कफका गुल्म नष्ट होता है दशमूलकेसंग त्रिदोषका गुल्म नष्ट होता है ऊंटनीका दूधकेसंग स्त्रियोंको रक्तगुल्म नष्ट होता है ॥ ८१ ॥ हृद्रोग ग्रहणी शूल कृमि सबप्रकारके ववासीर इन्होंका नाश होता है ॥

नागरंपिप्पलीचव्यंपिप्पलीमूलचित्रकौ ॥ ८२ ॥ भृष्टंहिंग्वजमोदंचसर्षपाजीरकद्वयम् ॥ रेणुकेंद्रयवाःपाठाविडंगंगजपिप्पली ॥ ८३ ॥ कटुकातिविषाभार्ङ्गीवचामूर्वेतिभागतः ॥ प्रत्येकंशाणिकानिस्युर्द्रव्याणीमानिविंशतिः ॥ ८४ ॥ द्रव्येभ्यःसकलेभ्यश्चत्रिफलाद्विगुणाभवेत् ॥ एभिश्चूर्णीकृतैःसर्वैःसमोदेयस्तुगुग्गुलुः ॥ ८५ ॥ वंगंरौप्यंचनागंचलोहसारंतथाभ्रकम् ॥ मंडूरंरससिंदूरंप्रत्येकंपलसंमितम् ॥ ८६ ॥ गुडपाकसमंकृत्वाइमंदद्याद्यथोचितम् ॥ एकपिंडंततःकृत्वाधारयेद्घृतभाजने ॥ ८७ ॥ गुटिकाःशाणमात्रास्तुकृत्वाग्राह्यायथोचिताः ॥ गुग्गुलुर्योगराजोयंत्रिदोषघ्नोरसायनम् ॥ ८८ ॥ मैथुनाहारपानानांत्यागोनैवात्रविद्यते ॥ सर्वान्वातामयान्कुष्ठानर्शांसिग्रहणीगदम् ॥ ८९ ॥ प्रमेहंवातरक्तंचनाभिशूलंभगंदरम् ॥ उदावर्तंक्षयंगुल्ममपस्मारमुरोग्रहम् ॥ ४९० ॥ मंदाग्निश्वासकासांश्चनाशयेदरुचिंतथा ॥ रेतोदोषहरःपुंसांरजोदोषहरःस्त्रियाम् ॥ ९१ ॥ पुंसामपत्यजनकोवंध्यानांगर्भदस्तथा ॥ रास्नादिक्काथसंयुक्तोविविधंहंतिमारुतम् ॥ ९२ ॥ काकोल्यादिशृतात्पित्तंकफमारग्वधादिना ॥ दार्वीशृतेनमेहांश्चगोमूत्रेणैवपांडुताम् ॥ ९३ ॥ मेदोवृद्धिंचमधुनाकुष्ठंनिंबशृतेनवा ॥ छिन्नाक्काथेनवातास्रंशोथंशूलंकणाशृतात् ॥ ९४ ॥ पाटलाक्काथसहितोविषंमूषकजंजयेत् ॥ त्रिफलाक्काथसहि-

तोनेत्रार्तिंहंतिदारुणाम् ॥ ९५ ॥ पुनर्नवादेःक्काथेनहन्यात्सर्वोदराण्यपि ॥

अर्थ—सूंठ पीपल चवक पीपलामूल चित्रक ॥८२॥ भुना हुवा हींग अजमोद सरसों दोनोंजीरे मेवडीबीज इंद्रजव पाठा वायविडंग गजपीपल ॥ ८३ ॥ कुटकी अतीस भारंगी वच मरोरफली ये वीस ओषध चार चार मासे ॥ ८४ ॥ और इन ओषधोंसे दुगुना त्रिफला लेवै पीछे सब ओषधोंको कूट चूरण कर तिसके समान शुद्ध किया गूगलको ॥८५॥ ले वारीक पीस पीछे रांग चांदी सीसा लोहसार भोडर मंडूर रससिंदूर ये सब चार चार तोले ॥ ८६ ॥ पीछे गुडकी पात वना तिसमैं इस संपूर्ण चूरणको मिला एक गोला वना घृतके पात्रमें धरै॥ ८७ ॥ पीछे चार मासेकी गोली बना यथायोग्य ग्रहण करै यह योगराज गूगल त्रिदोषको हरता है बुढापाको दूर करता है ॥ ८८ ॥ इसपर स्त्रीभोग भोजन पान इन्होंका त्याग नहीं है यह सब प्रकारके वातरोग कुष्ठ ववासीर ग्रहणीरोग ॥ ८९ ॥ प्रमेह वातरक्त नाभिशूल भगंदर उदावर्त क्षय गुल्म मृगीरोग उरोग्रह ॥ ४९० ॥ मंदाग्नि श्वास खासी अरुचि इन्होंको नाश करता है पुरुषोंकै वीर्यदोषको और स्त्रियोंकै रजोदोषको हरता है ॥ ९१ ॥ पुरुषोंकै संतान देता है वांझस्त्रियोंकै गर्भको देता है रास्नादि क्काथकेसंग अनेक प्रकारके वायुको हरता है ॥ ९२ ॥ काकोल्यादि क्काथकेसंग पित्तको हरता है आरुग्वधादि क्काथकेसंग कफको हरता है दारुहलदीका क्काथकेसंग प्रमेहोंको और गोमूत्रकेसंग पांडुरोगको ॥ ९३ ॥ शहतकेसंग मेदकी वृद्धिको और नींबका क्काथकेसंग कुष्ठको गिलोयका क्काथकेसंग वातरक्तको पीपलका क्काथकेसंग शोजाको और शूलको ॥ ९४ ॥ शिरसका क्काथकेसंग मूषाके विषको जीतता है त्रिफलाका क्काथकेसंग उग्ररूप नेत्ररोगको हरता है ॥ ९५ ॥ पुनर्नवादि क्काथकेसंग सब प्रकारके उदररोगोंको हरता है ॥

त्रिफलायास्त्रयःप्रस्थाःप्रस्थैकाचामृताभवेत् ॥ ९६ ॥ संकुट्यलोहपात्रेतुसार्धद्रोणांबुनापचेत् ॥ जलमर्धशृतंज्ञात्वागृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ ९७ ॥ क्काथेक्षिपेत्तुशुद्धंचगुग्गुलुंप्रस्थसंमितम् ॥ पुनःपचेदयःपात्रेदर्व्यासंघट्टयेन्मुहुः ॥ ९८ ॥ सांद्रीभूतंचतंज्ञात्वागुडपाकसमाकृतिम् ॥ चूर्णीकृत्यततस्तत्रद्रव्याणीमानिनिक्षिपेत् ॥ ९९ ॥ त्रिफलार्धपलाज्ञेयागुडू-

चीपलिकामता ॥ षडक्षंत्र्यूषणंप्रोक्तंविडंगानांपलार्धकम् ॥ ५०० ॥ दंतीकर्षमिताकार्यात्रिवृत्कर्षमितास्मृता ॥ ततः पिंडीकृतंसर्वंघृतपात्रेविनिक्षिपेत् ॥ १ ॥ गुटिकाःशाणिकाः कार्यायुंज्याद्दोषाद्यपेक्षया ॥ अनुपानेभिषग्दद्यात्कोष्णनीरं पयोऽथवा ॥ २ ॥ मंजिष्ठादिशृतंवापियुक्तियुक्तमतःपरम् ॥ जयेत्सर्वाणिकुष्ठानिवातरक्तंत्रिदोषजम् ॥ ३ ॥ सर्वव्रणां-श्चगुल्मांश्चप्रमेहपिटिकास्तथा ॥ प्रमेहोदरमंदाग्निकासश्वय-थुपांडुजान् ॥ ४ ॥ हंतिसर्वामयान्नित्यमुपयुक्तोरसायनम् ॥ कैशोरकाभिधानोयंगुग्गुलुःकांतिकारकः ॥ ५ ॥ वासादि-नानेत्रगदान्गुल्मादीन्वरुणादिना ॥ क्वाथेनखदिरस्यापिव्रण-कुष्ठानिनाशयेत् ॥ ६ ॥ अम्लंतीक्ष्णमजीर्णंचव्यवायंश्रम-मातपम् ॥ मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यग्गुणार्थीपुरसेवकः ॥ ७ ॥

अर्थ–त्रिफला तीन प्रस्थ गिलोय एक प्रस्थ ॥ ९६ ॥ इन्होंको कूट लोहाके पात्रमें डेढ द्रोणभर पानी विषै पकावै जब जलनेमें पानी आधा शेष रहै तब जानकै ग्रहण कर वस्त्रमांहसे छानै ॥ ९७ ॥ पीछे क्वाथमें एक प्रस्थभर गूगल मिलाकर फिर लोहाके पात्रमें पकावै और करछीसे वारंवार चलाता जावै ॥९८॥ गुडकी पाकके समान करडा होजावै तव जानकै सब ओषधोंका चूरण कर तिसमें डारै ॥ ९९ ॥ त्रिफला २ तोले गिलोय ४ तोले सोंठ-मिरच पीपल ये ६ तोले वायविडंग २ तोले ॥ ५०० ॥ जमालगोटाकी जड १ तोला निशोत १ तोला पीछे गोली वनाय घृतके पात्रमें घाल धरै ॥ १ ॥ पीछे चार मासेकी गोली बनाकै दोष आदिकी अपेक्षाकरकै युक्त करै अनुपानमें वैद्यजन कछुक गरम-पानी अथवा दूधको देवै ॥ २ ॥ अथवा मंजिष्ठादि क्वाथको इस्से परै यु-क्तिसे देवै यह सव प्रकारके कुष्ठ त्रिदोषसे उपजा वातरक्त ॥ ३ ॥ सब प्रकारके घाव गुल्म प्रमेहकी पिटिका प्रमेह उदररोग मंदाग्नि खासी शोजा पांडुरोग ॥४॥ सब प्रकारके रोग इन्होंको नित्य प्रयुक्त किया यह कैशोरनामवाला गूगल हरता है और बुढापाको दूर करता है और कांतिको उपजाता है ॥ ५ ॥ वासादि-क्वाथके संग नेत्ररोगोंको वरुणादि क्वाथके संग गुल्म आदिको और खैरका क्वा-थके संग घाव और कुष्ठोंको हरता है ॥ ६ ॥ गूगलको सेवनेवाला और गुणको

चाहनेवाला ऐसा मनुष्य खटाई तीक्ष्ण पदार्थ अजीर्ण स्त्रीसंग परिश्रम घाम मदिरा क्रोध इन्होंको अच्छी तरह त्यागै ॥ ७ ॥

त्रिपलंत्रिफलाचूर्णंकृष्णाचूर्णपलोन्मितम् ॥ गुग्गुलुःपंचपलिकःक्षोदयेत्सर्वमेकतः ॥ ८ ॥ ततस्तुगुटिकांकृत्वाप्रयुंज्याद्वन्ह्यपेक्षया ॥ भगंदरंगुल्मशोथावर्शांसिचविनाशयेत् ॥ ९ ॥

अर्थ–त्रिफलाका चूरण १२ तोले पीपलका चूरण १ तोला गूगल २० तोले इन सबोंको मिलाकै पीसै ॥ ८ ॥ पीछे गोली वना पेटकी अग्निके अनुसार खावै ये गोली भगंदर गुल्म शोजा ववासीर इन्होंका नाश करती है ॥ ९ ॥

अष्टाविंशतिसंख्यानिपलान्यानीयगोक्षुरात् ॥ विपचेत्षड्गुणेनीरेकाथोग्राह्योऽर्धशेषितः ॥५१०॥ ततःपुनःपचेत्तत्रपुरंसप्तपलंक्षिपेत् ॥ गुडपाकसमाकारंज्ञात्वातत्रविनिक्षिपेत् ॥ ॥ ११ ॥ त्रिकटुत्रिफलामुस्तंचूर्णितंपलसप्तकम् ॥ ततःपिंडीकृतंचास्यगुटिकामुपयोजयेत् ॥ १२ ॥ हन्यात्प्रमेहंकृच्छ्रंचप्रदरंमूत्रघातकम् ॥ वातास्रंवातरोगांश्वशुक्रदोषंतथाश्मरीम् ॥१३॥ एलासकर्पूरसितासधात्रीजातीफलंगोक्षुरशाल्मलीत्वक् ॥ सूतेंद्रवंगायसभस्मसर्वमेतत्समानंपरिभावयेच्च॥१४॥ गुडूचिकाशाल्मलिकाकषायैर्निष्कार्धमात्रामधुनाततश्च ॥ बद्धागुटीचंद्रकलेतिनाम्नामेहेषुसर्वेषुचयोजनीया ॥ १५ ॥

अर्थ–गोखरू २८ पलभर लेकै छः गुना पानीमें पकावै जव आधा पानी बाकी रहै तब लेवै ॥ ५१० ॥ पीछे तिसमें सात पल गूगल मिला फिर पकावै जब गुडका पाकके समान होजावै तब तिसको जानकै तिसमें ॥ ११ ॥ सोंठ मिरच पीपल त्रिफला नागरमोथा इन्होंका चूरण सात पलभर लेकै मिलावै पीछे गोला बनाकै धरै फिर गोली बनाय देवै ॥ १२ ॥ ये गोली प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदररोग मूत्रघात वातरक्त वातरोग वीर्यदोष और पथरीरोग इन्होंको नाश करता है ॥ १३ ॥ इलायची कपूर मिश्री आंवला जायफल गोखरू शंभलकी छाल रससिंदूर रांगका भस्म लोहाका भस्म ये सब बराबर भाग लेकै ॥ १४ ॥ पीछे गिलोय और शंभलका काथमें भावना देकै दोदो मासेकी गोली शहतमें बांधै ये चंद्रकला गोली सब प्रकारके प्रमेहोंमेंयुक्त करनी योग्य है ॥ १५ ॥

त्रिफलाष्टपलाकार्याभल्लातानांचतुःपलम् ॥ बाकुचीपंचपलिकाविडंगानांचतुःपलम् ॥१६॥ हतलोहंत्रिवृच्चैवगुग्गुलुश्चशिलाजतु ॥ एकैकंपलमात्रंस्यात्पलार्धंपौष्करंभवेत् ॥ १७ ॥ चित्रकस्यपलार्धंस्यात्त्रिशाणंमरिचंभवेत् ॥ नागरंपिप्पलीमुस्तात्वगेलापत्रकुंकुमम् ॥ १८ ॥ शाणोन्मितंस्यादेकैकंचूर्णयेत्सर्वमेकतः ॥ ततस्तत्प्रक्षिपेच्चूर्णंपक्वखंडेचतत्समे ॥१९॥ मोदकान्पलिकान्कृत्वाप्रयुंजीतयथोचितम् ॥ हन्युःसर्वाणिकुष्ठानित्रिदोषप्रभवामयान् ॥ ५२० ॥ भगंदरप्लीहगुल्माञ्जिह्वातालुगलामयान् ॥ शिरोक्षिभ्रूगतान्रोगान्मन्यापृष्ठगतानपि ॥ २१ ॥ प्राग्भोजनस्यदेयंस्यादधःकायस्थितेगदे ॥ भेषजंभक्तमध्येचरोगेजठरसंस्थिते ॥ २२ ॥ भोजनस्योपरिग्राह्यमूर्ध्वजत्रुगदेषुच ॥

अर्थ–त्रिफला ८ पल भिलावा ४ पल बावची ५ पल वायविडंग ४ पल ॥१६॥ लोहाका भस्म निशोत गूगल शिलाजीत ये सब एक एक पल पोहकरमूल आधा पल ॥ १७ ॥ चित्रक आधा पल मिरच १ तोला सोंठ पीपल नागरमोथा दालचिनी इलायची तेजपात केशर ॥ १८ ॥ ये सब चार चार मासे इन सबका चूरण कर पीछे बराबर भाग खांडकी चासनी बनाय तिसमें चूरणको मिलावै ॥ १९ ॥ फिर ४ तोलेका लड्डु बनाकर यथायोग्य देवै ये लड्डु सब प्रकारके कुष्ठ त्रिदोषसे उपजे रोग ॥५२०॥ भगंदर तिल्लीरोग गुल्मरोग जीभकेरोग तालुकेरोग गलकेरोग शिरकेरोग नेत्ररोग भृकुटीकेरोग कंधाकेरोग पीठकेरोग ॥ २१ ॥ इन्होंको नाश करते हैं नीचाके शरीरमें रोग स्थित हो तो भोजनसे पहले ओषध देना पेटमें रोगकी स्थिति हो तो भोजनके मध्यमें ओषध देना ॥ २२ ॥ ऊपरला छाति आदि मस्तकमैं रोगकी स्थिति हो तो भोजनके ऊपर ओषध देना ॥

कांचनारत्वचोग्राह्यंपलानांदशकंबुधैः ॥ २३ ॥ त्रिफलाष्टपलाकार्यात्रिकटुस्यात्पलत्रयम् ॥ पलैकंवरुणंकुर्यादेलात्वक्पत्रकंतथा ॥ २४ ॥ एकैकंकर्षमात्रंस्यात्सर्वाण्येकत्र

चूर्णयेत् ॥ यावच्चूर्णमिदंसर्वंतावन्मात्रस्तुगुग्गुलुः ॥ २५ ॥ संकुट्यसर्वमेकत्रपिंडंकृत्वाचधारयेत् ॥ गुटिकाःशाणिकाःकार्याःप्रातर्ग्राह्यायथोचिताः ॥ २६ ॥ गंडमालांजयत्युग्रामपचीमर्बुदानिच ॥ ग्रंथीन्व्रणांश्चगुल्मांश्चकुष्ठानिचभगंदरम् ॥२७॥ प्रदेयश्चानुपानार्थंक्वाथोमुंडनिकाभवः ॥ क्वाथःखदिरसारस्यपथ्याक्वाथोष्णकंजलम् ॥ २८ ॥

अर्थ—कचनार वृक्षकी छाल ४० तोले ॥ २३ ॥ त्रिफला २४ तोले सोंठ मिरच पीपल १२ तोले वरना ४ तोले इलायची दालचिनी तेजपात ॥ २४ ॥ ये एक एक तोला इन सबको मिलाकै चूरण करै चूरणके बराबर गूगल ॥ २५ ॥ सबको एक जगह कूट कर गोला बनाकर पात्रमें धरै पीछे चार मासेकी गोली बनाकर यथायोग्य प्रभातमें खावै ॥२६॥ ये गोली भयंकर गंडमाला अपची अर्बुद रोम ग्रंथिरोग गुल्म कुष्ठ भगंदर इन्होंको जीतती है ॥ २७ ॥ गोरख मुंडीका क्वाथ बनाकर अनुपानके अर्थ देना वा खैरसारका क्वाथ वा हरडैके क्वाथ वा गरम जल देना ॥ २८ ॥

निस्तुषंमाषचूर्णंस्यात्तथागोधूमसंभवम् ॥ निस्तुषंयवचूर्णंच शालितंदुलजंतथा ॥२९॥ सूक्ष्मंचपिप्पलीचूर्णंपलिकान्युपकल्पयेत् ॥ एतदेकीकृतंसर्वंभर्जयेद्गोघृतेनच ॥५३०॥ अर्धमात्रेणसर्वेभ्यस्ततःखंडंसमंक्षिपेत् ॥ जलंचद्विगुणंदत्वापाचयेच्चशनैःशनैः ॥ ३१ ॥ ततःपक्वंसमुद्धृत्यवृत्तान्कुर्वीत मोदकान् ॥ भुक्त्वासायंपलैकंचपिबेत्क्षीरंचतुर्गुणम् ॥३२॥ वर्जनीयौविशेषेणक्षाराम्लौद्वौरसावपि ॥ कृत्वैवंरमयेन्नारीर्बह्वीर्नक्षीयतेनरः ॥ ३३ ॥

अर्थ—तुषरहित उडदोंका चून तुषरहित गेहुओंका चून तुषरहित जवोंका चून तुषरहित शालिचावलोंका चून ॥ २९ ॥ मिहीन पिसा हुआ पीपलका चूरण ये सब चार चार तोले इन सबको मिलाकै गौके घृतमें भूनै ॥ ५३० ॥ सबोंसे आधा भाग खांड और दुगुना पानी देकै हौलें हौलें पकावै ॥३१॥ जब पक जावै तब उतारकै गोल मोदक बनावै सायंकालमें ४ तोले भर खाकै ऊपर चौ-

गुना दूध पीवै ॥ ३२ ॥ खट्टा और खारा रसको विशेष करके वर्जित करै ऐसे करनेसे बहुतसी नारियोंसे पुरुष भोग करता है और तिसका वीर्य क्षीण नहीं होता ॥ ९३३ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे कल्ककल्पना नाम सप्तमोध्यायः ॥ ७ ॥

अथाष्टमोऽध्यायः ।

क्काथादीनांपुनःपाकाद्घनत्वंसारसक्रिया ॥ सोवलेहश्चलेहः स्यात्तन्मात्रास्यात्पलोन्मिता ॥ ३४ ॥ सिताचतुर्गुणाकार्याचूर्णाच्चद्विगुणोगुडः ॥ द्रवंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्रनिश्चयः ॥ ३५ ॥ सुपक्वेतंतुमत्त्वंस्यादवलेहोऽप्सुमज्जति ॥ खरत्वं पीडितेमुद्राग‍ंधवर्णरसोद्भवः ॥ ३६ ॥ दुग्धमिक्षुरसंयूषंपंचमूलकषायजम् ॥ वासाक्काथंयथायोग्यमनुपानंप्रशस्यते ॥ ३७ ॥

अर्थ–काथआदिकोंके फिर पकानेसे खांडका पाककी तरह फिर करडा होजावै तिसको रसक्रिया अवलेह लेह ऐसे कहते है तिसकी मात्रा ४ तोलेभरकी है ॥ ३४ ॥ तिस अवलेहमें मिश्री चौगुनी देनी और चूरणसे दुगुना गुड देना द्रवपदार्थ चौगुना देना इस प्रकार सबजगह निश्चय है ॥ ३५ ॥ सम्यक् पक जानेसैं तांत छुटता करती है अवलेह पानीमें डूब जाता है और अंगुलीसे दबानेमें करडा हो जाता है गंध वर्ण रस इन्होंकी उत्पत्ति होती है तब अवलेह सिद्ध हुआ.जानना ॥ ३६ ॥ दूध ईखका रस पंचमूलके काढाका यूष वांसाका काथ ये अनुपान यथायोग्य श्रेष्ठ है ॥ ३७ ॥

कंटकारीतुलांनीरद्रोणेपक्त्वाकषायकम् ॥ पादशेषंगृहीत्वा चतस्मिंश्चूर्णानिदापयेत् ॥ ३८ ॥ पृथक्पलानिचैतानिगुडूचीचव्यचित्रकाः ॥ मुस्तंकर्कटशृंगीचत्र्यूषणंधन्वयासकः ॥३९॥ भार्ङ्गीरास्नाशठीचैवशर्करापलविंशतिः ॥ प्रत्येकंचप-

लान्यष्टौप्रदद्याद्घृततैलयोः ॥ ५४० ॥ पक्त्वालेहत्वमानीयशीतेमधुपलाष्टकम् ॥ चतुःपलंतुगाक्षीर्याःपिप्पलीनांचतुःपलम् ॥ ४१ ॥ क्षिप्त्वानिदध्यात्सुदृढेमृण्मयेभाजनेशुभे ॥ लेहोऽयंहंतिहिक्कार्तिश्वासकासानशेषतः ॥ ४२ ॥

अर्थ–कटेली ४०० तोले लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें काढा बनावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब तिसमें इन ओषधोंका चूरण मिलावै ॥ ३८ ॥ गिलोय चव्य चित्रक नागरमोथा काकडाशींगी सोंठ मिरच पीपल धमासा ॥ ३९ ॥ भारंगी रास्ना कचूर ये सब चार चार तोले खांड ८० तोले घृत ३२ तोले तेल ३२ तोले ॥५४०॥ इन सबको मिलाकै पका अवलेह बनावै शीतल होनेपर शहत ३२ तोले वंशलोचन १६ तोले पीपल १६ तोले ॥ ४१ ॥ इन सबको मिलाय दृढरूप सुंदर माटीके पात्रमें घालकै धरै यह अवलेह हिचकी श्वास खासी इन्होंको जडसे नाश करता है ॥ ४२ ॥

पाटलारणिकाश्मर्यबिल्वारलुकगोक्षुराः ॥ पर्ण्यौबृहत्यौपिप्पल्यःशृंगीद्राक्षामृताभयाः ॥ ४३ ॥ बलाभूम्यामलीवासाऋद्धिर्जीवंतिकाशठी ॥ जीवकर्षभकौमुस्तंपौष्करंकाकनासिका ॥ ४४ ॥ मुद्गपर्णीमाषपर्णीविदारीचपुनर्नवा ॥ काकोल्यौकमलंमेदेसूक्ष्मैलागरुचंदनम् ॥ ४५ ॥ एकैकंपलसंमानंस्थूलचूर्णितमौषधम् ॥ एकीकृत्यबृहत्पात्रेपंचामलशतानिच ॥ ४६ ॥ पचेद्द्रोणजलेक्षिप्त्वाग्राह्यमष्टांशशेषितम् ॥ ततस्तुतान्यामलानिनिष्कुलीकृत्यवाससा ॥ ४७ ॥ दृढहस्तेनसंमर्द्यक्षिप्त्वातत्रततोघृतम् ॥ पलसप्तमितंतानिकिंचिद्भृष्ट्वाल्पवह्निना ॥ ४८ ॥ ततस्तत्रक्षिपेत्क्वाथंखंडंचार्धतुलोन्मितम् ॥ लेहवत्साधयित्वाचचूर्णानीमानिदापयेत् ॥ ४९ ॥ पिप्पलीद्विपलाज्ञेयातुगाक्षीरीचतुःपला ॥ प्रत्येकंचत्रिशाणाःस्युस्त्वगेलापत्रकेसराः ॥ ५५० ॥ ततस्त्वेकीकृते तस्मिन्क्षिपेत्क्षौद्रंचषट्पलम् ॥ इत्येवंच्यवनप्रोक्तंच्यवनप्रा-

शसंज्ञकम् ॥ ५१ ॥ लेहंवह्निबलंदृष्ट्वाखादेत्क्षीणोरसायनम् ॥ बालवृद्धक्षतक्षीणानारीक्षीणाश्चशोषिणः ॥ ५२ ॥ हृद्रोगिणःस्वरक्षीणायेनरास्तेषुयुज्यते ॥ कासंश्वासंपिपासांचवातास्त्रमुरसोग्रहम् ॥ ५३ ॥ वातंपित्तंशुक्रदोषंमूत्रदोषंचनाशयेत् ॥ मेधांस्मृतिंस्त्रीषुहर्षकांतिंवर्णप्रसन्नताम् ॥५४॥ अस्यप्रयोगादाप्नोतिनरोऽजीर्णविवर्जितः ॥

अर्थ–शिरस् अरनी शिवण वेलवृक्षकी जड स्योनापाठा गोखरू शालपर्णी पृष्टपर्णी दोनों कटेली पीपल काकडाशींगी दाष गिलोय हरडै ॥ ४३ ॥ खरैंहटी भूमिआंवला वांसा ऋद्धि जीवंती कचूर जीवक ऋषभक नागरमोथा पोहरमूल कावलीमूल ॥ ४४ ॥ मूंगपर्णी माषपर्णी विदारीकंद सांठी काकोली क्षीरकाकोली कमल मेदा महामेदा छोटी इलायची अगर चंदन ॥ ४५ ॥ ये सब चार चार तोलेभर लेकै मोठा चूरण कर बडा पात्रमें मिला और आंवले मिलाकै ॥४६॥ एक द्रोणभर पानीमें पकावै जब चौथाई हिस्सा शेष रहै तब ग्रहण करना पीछे तिन आंवलोंको छीलकै वस्त्रसे ॥ ४७ ॥ करडा हाथकरकै मर्दित कर पीछे तिसमें घृत २८ तोलेभर घाल पीछै कछुक अग्निसे अल्प भूनकै ॥ ४८ ॥ पीछे तिसमें पूर्वोक्त काथको और २०० तोलेभर खांडको मिलावै अवलेहकी तरह साधित कर पीछे इन ओषधोंके चूरणको मिलावै ॥ ४९ ॥ पीपल ८ तोले वंशलोचन १६ तोले दालचिनी इलायची तेजपात केशर ये एक एक तोला ॥५०॥ पीछे सबको मिलाकै २४ तोले शहत मिलावै ऐसे च्यवनप्राशसंज्ञक अवलेह च्यवनमुनिनें कहा है ॥५१॥ क्षीण पुरुष अग्निके बलको देखकर खावै यह बुढापाको हरता है बालक वृद्ध क्षतक्षीण नारीक्षीण शोषी ॥ ५२ ॥ हृद्रोगी स्वरक्षीण ऐसे जो मनुष्य है तिन्होंके अर्थ यह अवलेह देना यह खासी श्वास पिपासा वातरक्त उरोग्रह ॥ ५३ ॥ वात पित्त वीर्यदोष मूत्रदोष इन्होंको नाश करता है और शुद्धबुद्धि स्मृति स्त्रियोंमें आनंद कांति वर्ण प्रसन्नता ॥ ५४ ॥ इन्होंको देता है इसके प्रयोगसे मनुष्य अजीर्णकरकै रहित रहता है ॥

निष्कुलीकृतकूष्मांडखंडान्पलशतंपचेत् ॥ ५५ ॥ निक्षिप्य द्वितुलंनीरमर्धशिष्टंचगृह्यते ॥ तानिकूष्मांडखंडानिपीडयेद्दृढवाससा ॥ ५६ ॥ आतपेशोषयेत्किंचिच्छूलाग्रैर्बहुशोऽन्य-

धेत् ॥ क्षिप्त्वाताम्रकटाहेचदद्यादष्टपलंघृतम् ॥ ५७ ॥ ते-नकिंचिद्भर्जयित्वापूर्वोक्तंचजलंक्षिपेत् ॥ खंडंपलशतंदत्वा सर्वमेकत्रपाचयेत् ॥ ५८ ॥ सुपक्वेपिप्पलीशुंठीजीराणांद्वि-पलंपृथक् ॥ पृथक्पलार्धंधान्याकंपत्रैलामरिचंत्वचम् ॥५९॥ चूर्णीकृत्यक्षिपेत्तत्रघृतार्धंक्षौद्रमावपेत् ॥ खादेदग्निबलंदृष्ट्वा रक्तपित्तीक्षयीज्वरी ॥ ५६० ॥ शोषतृष्णातमश्छर्दिकास-श्वासक्षतातुरः ॥ कूष्मांडकावलेहोऽयंबालवृद्धेषुयुज्यते ॥ ६१ ॥ उरःसंधानकृद्वृष्योबृंहणोबलकृन्मतः ॥

अर्थ—अच्छा पका हुआ कोहलाको लेकै छील तिसके वारीक टुकडे कर ४०० तोलेभर ले ॥ ५५ ॥ ८०० तोलेभर पानीमें मिला पकावै जब आधा पानी शेष रहै तब ग्रहण करै पीछे कोहलाके तिन टुकडोंको दृढ वस्त्रसे पीडित करै ॥ ५६ ॥ पीछे घाममें कछुक सुखाकै शूलके अग्रभागसे वहुत वींधै पीछे तां-बाकी कढाईमें घाल ३२ तोले घृत मिलावै ॥ ५७ ॥ तिस्से कछुक भून पूर्वोक्त-जलको घालै पीछे ४०० तोले खांड मिलाकै सबको एक जगह पकावै ॥ ५८ ॥ सुंदर पकजावै तब पीपल सोंठ जीरा ये आठ आठ तोलेभर देने और धनियां तेजपात इलायची मिरच दालचिनी ये सव दोदो तोले ॥ ५९ ॥ इन सबका चूरण कर तिसमें घृतसे आधा शहत मिलावै पीछे अग्निका वल देखकै रक्तपित्त-वाला क्षयवाला ज्वरवाला ॥ ५६० ॥ शोष तृषा अंधेरी छर्दि खासी श्वास क्ष-तरोग इन्होंसे पीडित्त होनेंवाला मनुष्य खावै यह कूष्मांडका अवलेह वालक और वृद्धोंमें युक्त किया जाता है ॥ ६१ ॥ यह छातीको जोडता है वीर्यको वढाता है धातुओंको पुष्ट करता है और वलको करनेवाला माना है ॥

युक्त्याकूष्मांडखंडंचसूरणंविपचेत्सुधीः ॥ ६२ ॥
अर्शसांमूढवातानांमंदाग्नीनांचयुज्यते ॥

अर्थ—कोहलेके बारीक टुकडे कर वा जमीकंदको ले मिलाकै पकावै अर्थात् घृतमें भून और दुगुनी खांडमें मिलाके पाक करै ॥ ६२ ॥ ववासीरवाले अपान-वायु जिसका नहीं सरता हो तिसको वा मंदाग्निवालोंको यह देना ॥

हरीतकीशतंभद्रंयवानामाढकंतथा ॥ ६३ ॥ पलानिदशमू-लस्यविंशतिश्चनियोजयेत् ॥ चित्रकःपिप्पलीमूलमपामार्गः

शठीतथा ॥ ६४ ॥ कपिकच्छूःशंखपुष्पीभार्ङ्गीचगजपिप्पली ॥ बलापुष्करमूलंचपृथग्द्विपलमात्रया ॥ ६५ ॥ पचेत्पंचाढकेनीरेयवैःस्विन्नैःशृतंनयेत् ॥ तच्चाभयाशतंदद्यात्काथेतस्मिन्विचक्षणः ॥ ६६ ॥ सर्पिस्तैलाष्टपलकंक्षिपेद्गुडतुलांतथा ॥ पक्त्वालेहत्वमानीयसिद्धशीतेपृथक्पृथक् ॥६७॥ क्षौद्रंचपिप्पलीचूर्णंदद्यात्कुडवमात्रया ॥ हरीतकीद्वयंखादेत्तेनलेहेननित्यशः ॥ ६८ ॥ क्षयंकासंज्वरंश्वासंहिक्काशोंऽरुचिपीनसान् ॥ ग्रहणींनाशयत्येषवलीपलितनाशनः ॥ ६९ ॥ बलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसायनम् ॥ विहितोऽगस्त्यमुनिनासर्वरोगप्रणाशनः ॥ ५७० ॥

अर्थ–बहुत अच्छी हरडै १०० जव २५६ तोले ॥ ६३ ॥ दशमूल ८० तोले और चित्रक पीपलामूल आंधाझाडा कचूर ॥६४॥ कौंचके बीज शंखपुष्पी भारंगी गजपीपल खरैंहटी पोहकरमूल ये सब आठ आठ तोले ॥ ६५ ॥ इन सबको १२८० तोलेभर पानीमें पकावै जब जब सीज जावै तब वे १०० हरडै तिस क्वाथमें मिलावै ॥ ६६ ॥ पीछे घृत ३२ तोले तिलोंका तेल ३२ तोले गुड ४०० तोले इन सबको मिला पकावै जब अवलेहसरीखा बनजावै तब शीतल होनेंपर ॥ ६७ ॥ शहत १६ तोले पीपलका चूरण १६ तोले इन्होंको मिलावै पीछे तिस अवलेहके संग २ हरडैको नित्य प्रति खावै ॥ ६८ ॥ यह क्षयी खासी ज्वर श्वास हिचकी ववासीर अरुचि पीनस ग्रहणी शरीरमें बलींका पडना वालोंका सपेद होना इन्होंको नाश करता है ॥ ६९ ॥ और पुरुषोंकै बल और वर्णको करता है बुढापाको दूर करता है सब रोगोंको नाश करनेवाला यह अवलेह अगस्त्यमुनिनें कहा है ॥ ५७० ॥

कुटजत्वक्तुलांद्रोणेजलस्यविपचेत्सुधीः ॥ कषायंपादशेषंच गृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ ७१ ॥ त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रदत्वाच विपचेत्पुनः ॥ सांद्रत्वमागतंज्ञात्वाचूर्णानीमानिदापयेत् ॥ ॥ ७२ ॥ रसांजनंमोचरसंत्रिकटुत्रिफलांतथा ॥ लज्जालुं चित्रकंपाठांबिल्वमिंद्रयवंवचाम् ॥ ७३ ॥ भल्लातकंप्रतिवि-

षांविडंगानिचवालकम् ॥ प्रत्येकंपलसंमानंघृतस्यकुडवंतथा ॥ ७४ ॥ सिद्धशीतेततोदद्यान्मधुनःकुडवंतथा ॥ जयेदेषोवलेहस्तुसर्वाण्यर्शांसिवेगतः ॥ ७५ ॥ दुर्नामप्रभवान्रोगानतीसारमरोचकम् ॥ ग्रहणींपांडुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम् ॥ ७६ ॥ अम्लपित्तंतथाशोषंकार्श्यंचैवप्रवाहिकाम् ॥ अनुपानेप्रयोक्तव्यमाजंतक्रंपयोदधि ॥ ७७ ॥ घृतंजलंवाजीर्णेचपथ्यभोजीभवेन्नरः ॥

अर्थ—कूडाकी छाल ४०० तोले लेकै १०२४ तोले पानीमें क्वाथ पकावै जव चौथाई भाग शेष रहै तव वस्त्रमांहकै छान ग्रहण करै ॥ ७१ ॥ पीछे १२० तोले गुड मिलाकै फिर पकावै जव करडा होजावै तव इन चूर्णोंको देवै ॥ ७२ ॥ रसोत मोचरस सोंठ मिरच पीपल त्रिफला लज्जावंती चित्रक पाठा वेलगिरी इंद्रजव वच ॥ ७३ ॥ भिलावा अतीस वायविडंग नेत्रवाला ये सब चार चार तोले घृत ३२ तोले ॥ ७४ ॥ इन सवको मिला पकावै जव सिद्ध होकै शीतल होजावे तब १६ तोले शहत मिलावै ॥७५॥ यह अवलेह सब प्रकारके ववासीर ववासीरसे उपजे रोग अतीसार अरुचि ग्रहणी पांडुरोग रक्तपित्त कामला ॥७६॥ अम्लपित्त शोष कार्श्यरोग प्रवाहिका इन्होंको वेगसे नाश करता है इसके अनुपानमें वकरीकी छाछ दूध दही ये देनें योग्य है ॥ ७७ ॥ जीर्ण होनेपर घृत अथवा पानी देना इसको खानेंवाला मनुष्य पथ्यको भोजन करता रहै ॥

कुटजत्वक्तुलामार्द्रांद्रोणनीरेविपाचयेत् ॥ ७८ ॥ पादशेषंशृतंनीत्वाचूर्णान्येतानिदापयेत् ॥ लज्जालुर्धातकीबिल्वंपाठामोचरसस्तथा ॥ ७९ ॥ मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकंस्यात्पलंपलम् ॥ ततस्तुविपचेद्भूयोयावद्दर्वीप्रलेपनम् ॥ ५८० ॥ जलेनच्छागदुग्धेनपीतोमंडेनवाजयेत् ॥ सर्वातिसारान्घोरांस्तुनानावर्णान्सवेदनान् ॥ असृग्दरंसमस्तंचसर्वार्शांसिप्रवाहिकाम् ॥ ८१ ॥

अर्थ—कूडाकी गीली छाल ४०० तोले लेकै १०२४ तोले पानीमें पकावै ॥ ७८ ॥ जब चौथाई भाग शेष रहै तव इन ओषधोंके चूरणको मिलावै लज्जा-

वंती धायके फूल वेलगिरी पाठा मोचरस ॥ ७९ ॥ नागरमोथा अतीस ये चार-चार तोले लेकै मिलाके फिर पकावै जव करछीपर चिपनें लगै तवपर्यंत ॥५८०॥ पानी वकरीका दूध मंड इन्होंमांहसे एक कोईसाके संग पीनेसे सब प्रकारके घोररूपी और पीडासहित ऐसे अनेक वर्णवाले अतीसार सब प्रकारके प्रदररोग सब प्रकारके ववासीर प्रवाहिका इन्होंका नाश होता है ॥ ५८१ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे अवलेहकल्पना नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नवमोऽध्यायः।

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातैलमेववा ॥ चतुर्गुणेद्रवेसाध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता ॥ ८२ ॥ निक्षिप्यक्काथयेत्तोयंक्काथ्यद्रव्याच्चतुर्गुणम् ॥ पादशिष्टंगृहीत्वाचस्नेहंतेनैवसाधयेत्॥८३॥ चतुर्गुणंमृदुद्रव्येकठिनेऽष्टगुणंजलम् ॥ तथाचमध्यमेद्रव्येदद्यादष्टगुणंपयः ॥ ८४ ॥ अत्यंतकठिनेद्रव्येनीरंषोडशिकंमतम् ॥ कर्षादितःपलंयावत्क्षिपेत्षोडशिकंजलम् ॥ ८५ ॥ तदूर्ध्वंकुडवंयावत्क्षिपेदष्टगुणंपयः ॥ प्रस्थादितःक्षिपेन्नीरंखारीयावच्चतुर्गुणम् ॥ ८६ ॥ अंबुक्काथरसैर्यत्रपृथक्स्नेहस्यसाधनम् ॥ कल्कस्यांशंतत्रदद्याच्चतुर्थंषष्ठमष्टमम् ॥ ८७ ॥ दुग्धेदधिरसेतक्रेकल्कोदेयोऽष्टमांशकः ॥ कल्कस्यसम्यक्पाकार्थंतोयमत्रचतुर्गुणम् ॥ ८८ ॥ द्रव्याणियत्रस्नेहेषुपंचादीनिभवंतिहि ॥ तत्रस्नेहसमान्याहुर्यथापूर्वंचतुर्गुणम् ॥ ८९ ॥ द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ॥ तत्राम्बुपिष्टःकल्कःस्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ॥ ५९० ॥ क्काथेनकेवलेनैवपाकोयत्रेरितःक्वचित् ॥ क्काथ्यद्रव्यस्यकल्कोपितत्रस्नेहेप्रयुज्यते ॥ ९१ ॥ कल्कहीनस्तुयःस्नेहःससाध्यःकेवलद्रवे ॥ पुष्पकल्कस्तुयःस्ने-

हस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् ॥ ९२ ॥ स्नेहेस्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कः प्रयुज्यते ॥ वर्तिवत्स्नेहकल्कःस्याद्यदांगुल्याविमर्दितः ॥९३॥ शब्दहीनोग्निनिक्षिप्तःस्नेहःसिद्धोभवेत्तदा ॥ यदाफेनोद्भवस्तैलेफेनशांतिश्चसार्पिषि ॥ ९४ ॥ गंधवर्णरसोत्पत्तिःस्नेहसिद्धिस्तदाभवेत् ॥ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा ॥९५॥ ईषत्सरसकल्कस्तुस्नेहपाकोमृदुर्भवेत् ॥ मध्यपाकस्यसिद्धिश्चकल्केनीरसकोमले ॥ ९६ ॥ ईषत्कठिनकल्कश्चस्नेहपाको भवेत्खरः ॥ तदूर्ध्वंदग्धपाकःस्याद्दाहकृन्निष्प्रयोजनः ॥९७॥ आमपाकश्चनिर्वीर्योवह्निमांद्यकरोगुरुः ॥ नस्यार्थेस्यान्मृदुः पाकोमध्यमःसर्वकर्मसु ॥ ९८ ॥ अभ्यंगार्थेखरःप्रोक्तोयुंज्यादेवंयथोचितम् ॥ घृततैलगुडादींश्चसाधयेन्नैकवासरे ॥९९॥ प्रकुर्वंत्युषिताह्येतेविशेषाद्गुणसंचयम् ॥

अर्थ—कल्ककी जो ओषध तिन्होंसे चौगुना तेल अथवा घृतको लेकै चौगुने द्रवपदार्थमें साधै तिसकी मात्रा ४ तोलेकी है ॥ ८२ ॥ काढाके जो ओषध है तिन्होंसे चौगुना पानी ले काढा करै जब चौथाई भाग शेष रहै तब तिसकरकै स्नेहको साधै ॥ ८३ ॥ कोमल ओषधमें चौगुना पानी और करडा ओषधमें आठगुना पानी और मध्यम ओषधमेंभी आठगुना पानी देना ॥ ८४ ॥ असंत करडा ओषध हो तो सोलहगुना पानी देना कर्षसे लेकै पलपर्यंत ओषध हो तो सोलहगुना पानी देना ॥८५॥ ४ पलभरसे उपरांत कुडव अर्थात् सोलह तोलेपर्यंत ओषध हो तो आठगुना पानी देना प्रस्थतोलसे लेकै खारीतोलपर्यंत ओषध हो तो चौगुना पानी देना ॥ ८६ ॥ केवल पानीमें स्नेह सिद्ध करना हो तो चौथा भाग कल्क देना काढामें स्नेह सिद्ध करना हो तो स्नेहसे छठा भाग कल्क देना मांसका रसमें स्नेह सिद्ध करना हो तो स्नेहसे आठमां भाग कल्क देना ॥ ८७ ॥ दूधमें अथवा दहीमें अथवा धत्तूरा आदिके रसोंमें स्नेह सिद्ध करना हो तो स्नेहसे आठमां भाग कल्क देना कल्कका अच्छी तरह पाकके अर्थ यहां चौगुना पानी देना ॥ ८८ ॥ स्नेहके विषै दूध गोमूत्र आदि पांच द्रवपदार्थोंसे अधिक द्रवपदार्थ हों तो स्नेहका समभाग लेना पांचसे कम द्रवपदार्थ हो तो चौगुना

लेना ॥ ८९ ॥ जो कदाचित् केवल ओषधकरकै स्नेहका पाक होवै तहां पानीमें पिसा हुआ कल्क होय और यहां पानी चौगुना लेना ॥ ५९० ॥ और जहां कहीं केवल क्वाथ करकै स्नेहका पाक कहा होय तहां क्वाथके योग्य द्रव्यका कल्कभी तिस स्नेहमें प्रयुक्त करना ॥ ९० ॥ जहां कल्कसे हीन स्नेह करना होय तहां केवल दूध आदि पतली वस्तु देकै पकावै जो फूलोंके कल्कमें स्नेह करना हो तो तहां पानी चौगुना देना ॥ ९२ ॥ स्नेहविषै स्नेहका आठमां हिस्सा फूलोंका कल्क देना जब अंगुलीसे मर्दित किया वत्तीके तरह स्नेहका कल्क हो जावै ॥ ९३ ॥ और अग्निमें डालनेसे शब्दको नहीं करै तव स्नेहकी सिद्धि होती है तेलमें जब झागोंकी उत्पत्ति होनें लगै और घृतमें जब झागोंकी शांति होजावै ॥९४॥ और गंध वर्ण रस इन्होंकी उत्पत्ति होवै तव स्नेहकी सिद्धि जाननी स्नेहका पाक मृदु मध्य खर इन भेदोंसे तीन प्रकारका कहा है ॥ ९५ ॥ कछुक सरस कल्कवाला स्नेहपाक मृदु होता है पानीसे वर्जित और कोमल ऐसा कल्कवाला स्नेहपाक मध्यम होता है ॥ ९६ ॥ कछुक करडा कल्कवाला स्नेहपाक खर अर्थात् तेज होता है तिस्से उपरांत दग्धपाक होता है यह दाहको करता है और निष्पल है ॥ ९७ ॥ कच्चा पाकवाला स्नेह वीर्यसे रहित है अग्निको मंद करता है भारी है नस्य लेनेंके अर्थ मृदुपाक ठीक है और सब कर्मोंमें मध्यमपाक ठीक है ॥ ९८ ॥ अभ्यंग करनेंके अर्थ खरपाक ठीक है ऐसे यथायोग्य विचारकै प्रयुक्त करै घृत तेल गुड आदि इन्होंको एक दिनमें नहीं साधै ॥ ९९ ॥ सब ओषधोंको मिला रात्रिमें भिगोय दूसरे दिनमें सिद्ध किये हुये स्नेह आदि गुणको करता है ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ॥ ६०० ॥ ससैंधवैश्चपलिकैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ क्षीरंचतुर्गुणंदत्वातात्सिद्धं प्लीहनाशनम् ॥ १ ॥ विषमज्वरमंदाग्निहरंरुचिकरंपरम् ॥

अर्थ–पीपल पीपलामूल चविक चित्रक सोंठ ॥ ६०० ॥ सेंधानमक ये चार-चार तोले लेकै कल्क बनाकर तिसमें ६४ तोलेभर गायके घृत और चौगुना दूध देकै पकावै जब घृतमात्र शेष रहै तव सिद्ध जानै यह तिल्लीरोग ॥ १ ॥ विषमज्वर मंदाग्नि इन्होंको हरता है और रुचीको करता है ॥

पिप्पलीपिप्पलीमूलंचित्रकोहस्तिपिप्पली ॥ २ ॥ श्वदंष्ट्रा नागरंधान्यंपाठाबिल्वंयवानिका ॥ द्रव्यैश्चपलिकैरेतैश्चतुःषष्टिपलंघृतम् ॥ ३ ॥ घृताच्चतुर्गुणंदद्याच्चांगेरीस्वरसंबुधः ॥

तथाचतुर्गुणंदत्वादधिसर्पिर्विपाचयेत् ॥ ४ ॥ शनैःशनैर्वि-
पक्वंचचांगेरीघृतमुत्तमम् ॥ तद्धृतंकफवातघ्नंग्रहण्यर्शोविका-
रनुत् ॥ ५ ॥ हंत्यानाहंगुदभ्रंशंमूत्रकृच्छ्रंप्रवाहिकाम् ॥

अर्थ–पीपल पीपलामूल चित्रक गजपीपल ॥ २ ॥ गोखरू सोंठ धनियां पाठा वेलगिरी अजमायन ये सब चारचार तोले और घृत ६४ तोले ॥३॥ और घृतसे चौगुना चूंकाका रस और चौगुनी दही देकै घृतको पकावै ॥ ४ ॥ हौलेंहौलें पकनेसे यह चांगेरीघृत उत्तम होता है यह कफ वात ग्रहणी ववासीर ॥ ५ ॥ अफारा कांचका निकलना मूत्रकृच्छ्र प्रवाहिका इन रोगोंको नाश करता है ॥

मसूराणांपलशतंनीरद्रोणेविपाचयेत् ॥ ६ ॥ पादशेषंशृतं
नीत्वादत्वाबिल्वपलाष्टकम् ॥ घृतप्रस्थंपचेत्तेनसर्वातीसार-
नाशनम् ॥ ७ ॥ ग्रहणींभिन्नविट्कांचनाशयेच्चप्रवाहिकाम् ॥

अर्थ–मसूर ४०० तोलेभर लेकै १०२४ तोले पानीमें पकावै ॥ ६ ॥ जब चौथाई भाग शेष रहै तब वेलगिरी ३२ तोले घृत ६४ तोलेभर मिलाकै पकावै यह घृत सब प्रकारके अतीसार ॥ ७ ॥ ग्रहणी मलका भिन्नपना प्रवाहिका इन्होको नाश करता है ॥

अश्वगंधातुलैकास्यात्तदर्धोगोक्षुरःस्मृतः ॥ ८ ॥ बलामृता
शालिपर्णीविदारीचशतावरी ॥ पुनर्नवाश्वत्थशुंठीकाश्म-
र्यास्तुफलान्यपि ॥ ९ ॥ पद्मबीजंमाषबीजंदद्याद्दशपलंपृथ-
क् ॥ चतुर्द्रोणांभसापक्त्वापादशेषंशृतंनयेत् ॥ ६१० ॥ जी-
वनीयगणःकुष्टंपद्मकंरक्तचंदनम् ॥ पत्रकंपिप्पलीद्राक्षाकपि-
कच्छुफलंतथा ॥ ११ ॥ नीलोत्पलंनागपुष्पंसारिवेद्वेबले
तथा ॥ पृथक्कर्षसमाभागाःशर्करायाःपलद्वयम् ॥१२॥ रस-
श्चपौंड्रकेक्षूणामाढकैकंसमाहरेत् ॥ घृतस्यचाढकंदत्वापा-
चयेन्मृदुनाग्निना ॥ १३ ॥ घृतमेतन्निहंत्याशुरक्तपित्तमुरः-
क्षतम् ॥ हलीमकंपांडुरोगंवर्णभेदंस्वरक्षयम् ॥ १४ ॥ वा-
तरक्तंमूत्रकृच्छ्रंपार्श्वशूलंचकामलाम् ॥ शुक्रक्षयमुरोदाहंका-

र्यमोजःक्षयंतथा ॥ १५ ॥ स्त्रीणांचैवाप्रजातानांगर्भदंशुक्रदंनृणाम् ॥ कामदेवघृतंनामहृद्यंबल्यंरसायनम् ॥ १६ ॥

अर्थ–आसगंध ४०० तोले गोखरू २०० तोले ॥८॥ खरैंहटी गिलोय शालपर्णी विदारीकंद शतावरी सांठी पीपलामूल सूंठ शिवणीके फल ॥९॥ कमलबीज उडदबीज ये सब चालीसचालीस तोले लेवै पीछे सबको चार द्रोणभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब काढाको ग्रहण करै ॥ ६१० ॥ पीछे जीवनीयगणके औषध कूट पद्माक लालचंदन तेजपात पीपल दाख कौंचके बीज ॥११॥ नीलकमल नागकेसर दोनोंसारिवा अनंतमूल खरैंहटी नागवला ये सब एक एक तोले और खांड ८ तोले ॥ १२ ॥ पौंडाका रस २५६ तोले घृत २५६ तोले इनको मिलाकै मंद अग्निसे पकावै ॥ १३ ॥ यह घृत रक्तपित्त उरःक्षत हलीमक पांडुरोग वर्णभेद स्वरक्षय ॥ १४ ॥ वातरक्त मूत्रकृच्छ्र पार्श्वशूल कामला शुक्रक्षय उरोदाह कार्श्य बलक्षय इन सबको नाश कर्ता है ॥ १५ ॥ और वंध्या स्त्रियोंकै गर्भको देता है और पुरुषोंको वीर्य देता है यह कामदेवघृत मनोहर है बलको करता है और बुढापाको नाश कर्ता है ॥ १६ ॥

त्रिफलाद्वेनिशेकौंतीसारिवेद्वेप्रियंगुका ॥ शालिपर्णीपृष्टपर्णीदेवदार्व्यैलवालुकम् ॥ १७ ॥ नतंविशालादंतीचदाडिमं नागकेशरम् ॥ निलोत्पलैलामंजिष्ठाविडंगंकुष्टपद्मकम् ॥ १८ ॥ जातीपुष्पंचंदनंचतालीसंबृहतीतथा ॥ एतैःकर्षसमैःकल्कैर्जलंदत्वाचतुर्गुणम् ॥ १९ ॥ घृतप्रस्थंपचेद्धीमानपस्मारेज्वरेक्षये ॥ उन्मादेवातरक्तेचकासेमंदानलेतथा॥६२०॥ प्रतिश्यायेकटीशूलेतृतीयकचतुर्थके ॥ मूत्रकृच्छ्रेविसर्पेचकंड्वांपांड्वामयेतथा ॥ २१ ॥ विषद्वयेप्रमेहेषुसर्वथैवोपयुज्यते ॥ वंध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मृतम् ॥ २२ ॥

अर्थ–त्रिफला हलदी दारुहलदी रेणुकवीज दोनोंसारिवा अनंतमूल मानकांगनी शालपर्णी पृष्टपर्णी देवदारु एलवा ॥ १७ ॥ तगर इंद्रायण जमालगोटाकी जड अनार नागकेसर नीलकमल इलायची मजीठ वायविडंग कूठ पद्माक ॥ १८ ॥ मालतीके फूल चंदन तालीसपत्र वडीकटेली ये सब एकएक तोलाभर लेकै चौगुना पानी मिला ॥ १९ ॥ ६४ तोलेभर घृतको पकावै यह घृत मृगीरोग ज्वर

क्षय उन्माद वातरक्त खासी मंदाग्नि ॥ ६२० ॥ प्रतिश्याय कटीशूल तृतीयकज्वर चतुर्थकज्वर मूत्रकृच्छ्र विसर्प खाज पांडु ॥ २१ ॥ स्थावरविष जंगमविष सब प्रकारके प्रमेह इन्होंमें युक्त करना उचित है वंध्याओंको पुत्र देता है और भूत यक्ष राक्षस इन सबको हरनेवाला कहा है ॥ २२ ॥

अमृताक्काथकल्काभ्यांसक्षीरंविपचेद्धृतम् ॥
वातरक्तंजयत्याशुकुष्ठंजयतिदुस्तरम् ॥ २३ ॥

अर्थ-गिलोयका काढा और कल्कमें दूध मिलाकर तिसमें घृतको पकावै यह घृत वातरक्त और उग्रकुष्ठको शीघ्र जीतता है ॥ २३ ॥

सप्तच्छदःप्रतिविषाशम्याकःकटुरोहिणी ॥ पाठामुस्तंमुशीरं चत्रिफलापर्पटस्तथा ॥ २४ ॥ पटोलनिंबमंजिष्ठाःपिप्पली पद्मकंशठी ॥ चंदनंधन्वयासश्चविशालाद्वेनिशेतथा ॥ २५ ॥ गुडूचीसारिवेद्वेचमूर्वावासाशतावरी ॥ त्रायंतींद्रयवायष्टी भूनिंबश्चाक्षभागिकाः ॥ २६ ॥ घृतंचतुर्गुणंदद्याद्धृतादामलकीरसः ॥ द्विगुणःसर्पिषश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ॥ २७ ॥ तत्सिद्धंपाययेत्सर्पिर्वातरक्तेषुसर्वथा ॥ कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्तार्शांसिचपांडुताम् ॥ २८ ॥ हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरान्गंडमालिकाम् ॥ क्षुद्ररोगाञ्ज्वरांश्चैवमहातिक्तमिदंजयेत् ॥ २९ ॥

अर्थ-सातविण् अतीस अमलतास कुटकी पाठा नागरमोथा नेत्रवाला हरडै वहेडा आंवला पित्तपापडा ॥ २४ ॥ परवल नींव मंजीठ पीपल पद्माक कचूर चंदन धमासा इंद्रायण हलदी दारुहलदी ॥ २५ ॥ गिलोय दोनोंसारिवा अनंतमूल मरोरफली वांसा शतावरी त्रायमाण इंद्रजव मुलहटी चिरायता ये सब एक-एक तोला ॥२६॥ इन सबोंका कल्क वनाकर तिस्से चौगुना घृत लेकै और घृतसे दुगुना आंवलाका रस और आठगुना पानी ॥ २७ ॥ ऐसे घृतको सिद्ध करै यह घृत वातरक्तमें सब प्रकारसे पीवै कुष्ठ रक्तपित्त रक्तकी ववासीर पांडुरोग २८ हृद्रोग गुल्म वीसर्प प्रदर गंडमाला क्षुद्ररोग सब प्रकारके ज्वर इन्होंको यह महातिक्त घृत जीतता है ॥ २९ ॥

काशीसंद्वेनिशेमुस्तंहरतालंमनःशिलाम् ॥ कंपिल्लकंगंधकंच विडंगंगुग्गुलुंतथा ॥ ६३० ॥ सिक्थकंमरिचंकुष्ठंतुत्थकंगौर-

सर्षपान् ॥ रसांजनंचसिंदूरंश्रीवासंरक्तचंदनम् ॥ ३१ ॥ इरिमेदंनिंबपत्रंकरजंसारिवांवचाम् ॥ मंजिष्ठांमधुकंमांसींशिरीषंलोध्रपद्मकम् ॥ ३२ ॥ हरीतकींप्रपुन्नाटंचूर्णयेत्कार्षिकान्पृथक् ॥ ततश्चचूर्णमालोड्यत्रिंशत्पलमितेघृते ॥ ३३ ॥ स्थापयेत्ताम्रपात्रेचघर्मेसप्तदिनानिच ॥ अस्याभ्यंगेनकुष्ठानि दद्रूपामाविचर्चिकाः ॥ ३४ ॥ शूकदोषाविसर्पाश्चविस्फोटा वात्तरक्तजाः ॥ शिरःस्फोटोपदंशाश्चनाडीदुष्टव्रणानिच॥३५॥ शोथोभगंदरश्चैवलूताःशाम्यंतिदेहिनाम् ॥ शोधनंरोपणंचैवसुवर्णकरणंघृतम् ॥ ३६ ॥

अर्थ–हीराकसीस हलदी दारुहलदी नागरमोथा हरताल मनशिल कपिला गंधक वायविडंग गूगल ॥ ६३० ॥ मौंग मिरच कूट नीलाथोथा सुपेद सरसों रसोत सिंदूर गंधाविरोज लाल चंदन ॥ ३१ ॥ खैरकी छाल नींबके पत्ते करंजुवा सारिवा वच मंजीठ मुलहटी वालछड शिरस लोध पद्माक ॥ ३२ ॥ हरडै पुवाडके बीज इन सबको एकएक तोला लेकै चूरण करै पीछे १२० तोलेभर घृतमें चूरणको आलोडित कर ॥ ३३ ॥ तांवाके पात्रमें घामविषैं सात दिनपर्यंत स्थापित करै इसकी मालिस करनेंसे कुष्ठ दाद पाम विचर्चिका ॥ ३४ ॥ शूकदोष विसर्प विस्फोट वातरक्त शिरका स्फोट उपदंश नाडीव्रण दुष्टव्रण॥३५॥ शोजा भगंदर लूता इन सबका नाश होता है यह घृत शोधन है घावको भरता है और शरीरको सोनाके समान करता है ॥ ३६ ॥

जातिनिंबपटोलाश्चद्वेनिशेकटुकीतथा ॥ मंजिष्ठामधुकंसिक्थंकरजोशीरसारिवाः ॥ ३७ ॥ तुत्थंचविपचेत्सम्यक्कल्कैरेभिर्घृतंबुधः ॥ अस्यलेपात्प्ररोहंतिसूक्ष्मनाडीव्रणाअपि ३८ मर्माश्रिताःक्लेदिनश्चगंभीराःसरुजोव्रणाः ॥

अर्थ–चमेलीके पत्ते नींबके पत्ते परवलके पत्ते हलदी दारुहलदी कुटकी मंजीठ मुलहटी माम करंजुआ खस सारिवा अनंतमूल ॥३७॥ नीलाथोथा इन्हेंके कल्कमें घृतको पकावै इसके लेपसे सूक्ष्म नाडीव्रण ॥ ३८ ॥ मर्ममें आश्रित हुये क्लेदवाले और शूलवाले ऐसे घावभी शांत होते है ॥

चित्रकःशंखिनीपथ्याकंपिल्लस्त्रिवृतायुगम् ॥ ३९ ॥ वृद्धदारश्चशम्याकोदंतीदंतीफलंतथा ॥ कोशातकीदेवदालीनीलिनीगिरिकर्णिका ॥ ६४० ॥ सातलापिप्पलीमूलंविडंगंकटुकीतथा ॥ हेमक्षीरीचविपचेत्कल्कैरेतैःपिचून्मितैः ॥ ४१ ॥ घृतप्रस्थंस्नुहीक्षीरेषट्पलेतुपलद्वये ॥ अर्कक्षीरस्यमतिमांस्तत्सिद्धंगुल्मकुष्ठनुत् ॥४२॥ हंतिशूलमुदावर्तंशोथाध्मानंभगंदरम् ॥ शमयत्युदराण्यष्टौनिपीतंबिंदुसंख्यया ॥ ४३ ॥ गोदुग्धेनोष्ट्रदुग्धेनकौलत्थेनशृतेनवा ॥ उष्णोदकेनवापीत्वा बिंदुवेगैर्विरिच्यते ॥४४॥ एतद्बिंदुघृतंनामनाभिलेपाद्विरेचयेत् ॥

अर्थ–चित्रक शंखपुष्पी हरडै कपिला दोनों निशोत॥ ३९ ॥ भिदारा अमलतास जमालगोटाकी जड जमालगोटा कडवी तोरी ताडका फल नील विष्णुक्रांता ॥ ६४० ॥ सातविण पीपलामूल वायविडंग कुटकी चोक ये सब एकएक तोलाभर ॥ ४१ ॥ और २४ तोलेभर थोहरका दूध और आकका दूध ८ तोलेभर इन्होंमें ६४ तोलेभर घृतको सिद्ध करै यह गुल्म कुष्ठ ॥४२॥ उदावर्त सोजा आफरा भगंदर आठ प्रकारके उदररोग इन्होंको बूंदकी गिनतीसे पीया हुआ यह घृत नाश करता है ॥४३॥ गौका दूधके संग वा ऊंटनीका दूधके संग वा कुलथीका काढाके संग अथवा गरमपानीके संग पीनेसे बूंदोंके वेगकरकै जुलाव लगता है ॥४४॥ यह बिंदुघृत है इसको नाभीपर लेपन करनेंसे जुलाव लगता है ॥

त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थंवासारसोद्भवम् ॥ ४५ ॥ भृंगराजरसप्रस्थंप्रस्थमाजंपयःस्मृतम् ॥ दत्वातत्रघृतप्रस्थंकल्कैःकर्षमितैःपृथक् ॥ ४६ ॥ त्रिफलापिप्पलीद्राक्षाचंदनंसैंधवंबला ॥ काकोलीक्षीरकाकोलीमेदामरिचनागरम् ॥ ४७ ॥ शर्करापुंडरीकंचकमलंचपुनर्नवा ॥ निशायुग्मंचमधुकंसर्वैरेभिर्विपाचयेत् ॥४८॥ नक्तांध्यंनकुलांध्यंचकंडूंपिल्लंतथैवच ॥ नेत्रस्त्रावंचपटलंतिमिरंचाजकंजयेत् ॥४९॥ अन्येऽपिप्रशमं यांतिनेत्ररोगाःसुदारुणाः ॥ त्रैफलंघृतमेतद्धिपानेनस्यादिषूचितम् ॥ ६५० ॥

अर्थ–त्रिफलाका रस ६४ तोले वांसाका रस ६४ तोले ॥ ४५ ॥ भंगराका रस ६४ तोले वकरीका दूध ६४ तोले घृत ६४ तोले एक एक तोलाभर इन सब ओषधोंके कल्क ॥ ४६ ॥ त्रिफला पीपल दाख चंदन सेंधानमक खरैंहटी काकोली क्षीरकाकोली मेदा मिरच सोंठ ॥ ४७ ॥ खांड सुपेद कमल साठी हलदी दारुहलदी मुलहटी इन सबोंमें घृतको सिद्ध करै ॥ ४८ ॥ यह रातौंधा नकुलांध्य खाज पिछ्छ नेत्रस्राव पटल अंधेरी अजकरोग इन्होंको जीतता है ॥ ४९ ॥ इससे अन्यभी दारुण रोग शांत होते हैं यह त्रैफल घृत पीनेमें और नस्य आदिमें उचित है ॥ ६५० ॥

द्वेहरिद्रेस्थिरेमूर्वासारिवाचंदनद्वयैः ॥ मधुपर्णीचमधुकंपद्म-केसरपद्मकैः ॥ ५१ ॥ उत्पलोशीरमेदाभिस्त्रिफलापंचवल्क-लैः ॥ कल्कैःकर्षमितैरेतैर्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ॥ ५२ ॥ विस-र्पलूताविस्फोटविषकीटव्रणापहम् ॥ गौर्याद्यमितिविख्यतं सर्पिर्विषहरंपरम् ॥ ५३ ॥

अर्थ–हलदी दारुहलदी सरिवन मरोरफली सारिवा अनंतमूल दोनों चंदन रानउडती मुलहटी कमलकेसर पद्माक ॥ ५१ ॥ कमल नेत्रवाला मेदा हरडै वहेडा आंवला वडकी छाल पीपलकी छाल गूलरकी छाल आंवकी छाल पिलवनकी छाल ये सब एकएक तोलाभर ले कल्क बनाकर तिसमें ॥ ५२ ॥ ६४ तोलेभर घृतको सिद्ध करै यह घृत विसर्प लूता विस्फोटक विष कीटदोष घाव इन्होंको नाश करता है यह गौर्याद्य घृत विषको अच्छी तरह हरता है ॥ ५३ ॥

बलामधुकरास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः ॥ पृथग्द्विपलिकैरेभि-र्द्रोणनीरेणपाचयेत् ॥ ५४ ॥ मयूरंपक्षपित्तांत्रयकृत्पादास्य-वर्जितम् ॥ पादशेषंशृतंनीत्वाक्षीरंदत्वाचतत्समम् ॥ ५५ ॥ घृतप्रस्थंपचेत्सम्यग्जीवनीयैःपिचून्मितैः ॥ तत्सिद्धंशिरसः पीडांमन्याग्रीवाग्रहंतथा ॥ ५६ ॥ अर्दितंकर्णनासाक्षिजि-ह्वागलरुजोजयेत् ॥ पानेनस्येतथाभ्यंगेकर्णपूरेषुयुज्यते५७॥ हेमंतकालशिशिरवसंतेषुचशस्यते ॥

अर्थ–खरैंहटी मुलहटी रायसन दशमूलकी दशों ओषध हरडै बेहडा आवला

ये सब आठ आठ तोलेभर लेकै ए १०२४ तोलेभर पानीमें पकावै ॥ ५४ ॥ और पांख पित्त आंत यकृत् पैर मुख इन्होंसे वर्जित मोरको मिलाकै क्काथ बनावै जब चौथाई भाग बाकी रहै तब बराबर भाग दूध मिलावै ॥ ५५ ॥ पीछे जीवनीय गणके सब ओषध एकएक तोलाभर लेकै ६४ तोलेभर घृतको सिद्ध करै यह घृत शिरकी पीडा मन्याग्रह ग्रीवाग्रह ॥ ५६ ॥ लकुवा कर्णरोग नासिकारोग नेत्ररोग जीभरोग गलरोग इन्होंको नाश करता है और पान नस्य मालिस कानमें पूरना इन्होंविषै युक्त किया जाता है ॥ ५७ ॥ हेमंत शिशिर और वसंत इन ऋतुओंमें श्रेष्ठ है ॥

त्रिफलामधुकंकुष्ठंद्वेनिशेकटुरोहिणी ॥ ५८ ॥ विडंगंपिप्प-लीमुस्ताविशालाकट्फलंवचा ॥ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौसारिवे द्वेप्रियंगुका ॥ ५९ ॥ शतपुष्पाहिंगुरास्नाचंदनंरक्तचंदनम् ॥ जातीपुष्पंतुगाक्षीरीकमलंशर्करातथा ॥ ६६० ॥ अजमोदा चदंतीचकल्कैरेतैश्चकार्षिकैः ॥ जीवद्वत्सैकवर्णायाघृतप्रस्थं चगोःक्षिपेत् ॥ ६१ ॥ चतुर्गुणेनपयसापचेदारण्यगोमयैः ॥ सुतिथौपुष्यनक्षत्रेमृद्भांडेताम्रजेतथा ॥ ६२ ॥ ततःपिबेच्छु-भदिनेनारीवापुरुषोथवा ॥ एतत्सर्पिर्नरःपीत्वास्त्रीषुनित्यं वृषायते ॥ ६३ ॥ पुत्रानुत्पादयेद्धीमान्वंध्यापिलभतेसुतम्॥ अनायुषंयाजनयेद्याचसूतापुनःस्थिता ॥ ६४ ॥ पुत्रंप्राप्नो-तिसानारीबुद्धिमंतंशतायुषम् ॥ एतत्फलघृतंनामभारद्वाजेन भाषितम् ॥ ६५ ॥ अनुक्तंलक्ष्मणामूलंक्षिपेत्तत्रचिकित्सकः॥

अर्थ–त्रिफला मुलहटी कूठ हलदी दारुहलदी कुटकी ॥ ५८ ॥ वायविडंग पी-पल नागरमोथा इंद्रायण कायफल वच मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली दोनों सारिवा अनंतमूल गहुला ॥ ५९ ॥ सौंफ हिंग रायसन चंदन लालचंदन चमेलीके फूल वंशलोचन कमल खांड ॥ ६६० ॥ अजमोद जमालगोटाकी जड ये सब एकएक तोलाभर लेकै कल्क बनाकर जिसका वच्छा जीवता हो और एक-वर्णवाली हो ऐसी गौका ६४ तोलेभर घृतको मिलावै ॥ ६१ ॥ पीछे चौगुना गौका दूध मिलाकर बनके आरनोंसे पकावै पीछे शुभ तिथिमें पुष्यनक्षत्रमें माटीके पात्रविषै वा तांबाके पात्रविषै धरै ॥ ६२ ॥ पीछे शुभ दिनमें नारी अथवा पुरुष

पीवै इस घृतको मनुष्य पीकै स्त्रियोंमें नित्य प्रति अत्यंत भोग करता है ॥ ६३ ॥ बुद्धिमान् पुरुष पुत्रोंको उत्पन्न करता है वंध्या स्त्री पुत्रको प्राप्त होती है और जो नारी आयुसे रहित पुत्रको जनती हो और जिसके वारंवार पुत्र मरते हों ॥ ६४ ॥ वह स्त्री बुद्धिमान और १०० वर्षोंकी आयुवाला ऐसा पुत्रको प्राप्त होती है यह फलघृत भारद्वाजमुनिनें कहा हैं ॥ ६५॥ इस घृतमें नहीं कहा हुआभी लक्ष्मण बूंटीका मूलका वैद्यजन मिलावै ॥

वृषनिंबामृताव्याघ्रीपटोलानांशृतेनच ॥ ६६ ॥ कल्केनपक्कंसर्पिस्तुनिहन्याद्विषमज्वरान् ॥ पांडुंकुष्ठंविसर्पंचकृमीनर्शांसिनाशयेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ–वांसा नींव गिलोय कटेली परवल इन पांच औषधोंका क्काथ ॥ ६६ ॥ और कल्क करकै पकाया हुआ घृत विषमज्वर पांडुरोग कुष्ठ विसर्प कृमिरोग ववाशीर इन सबको नाश करता है ॥ ६७ ॥

सहाचरेद्वेत्रिफलांगुडूचींसपुनर्नवाम् ॥ शुकनासांहरिद्रेद्वेरास्नांमेदांशतावरीम् ॥ ६८ ॥ कल्कीकृत्यघृतप्रस्थंपचेत्क्षीरेचतुर्गुणे ॥ तत्सिद्धंपाययेन्नारींयोनिशूलनिपीडिताम् ॥ ६९ ॥ पीडिताचलितायाचनिःसृताविवृताचया ॥ पित्तयोनिश्चविभ्रांताषंढयोनिश्चयास्मृता ॥ ६७० ॥ प्रपद्यंतेहिताःस्थानंगर्भंगृह्णंतिचासकृत् ॥ एतत्फलघृतंनामयोनिदोषहरंपरम् ॥७१॥

अर्थ–पीलाकुरंटा कालाकुरंटा त्रिफला गिलोय साठी टेंटू हलदी दारुहलदी रायसन मेदा शतावरी ॥ ६८ ॥ इन्होंका कल्क वनाकर और तिसमें चौगुना दूध मिला ६४ तोलेभर घृतको सिद्ध करै तो योनिशूलसे पीडित हुई नारीनें यह घृत पीना ॥६९॥ मैथुन आदिसे जिसकी योनि पीडित हुई हो जिसकी योनि चलायमान होके फूलका स्थान भ्रष्ट हुआ हो और निकसी हुई योनि विवृत्त हुई योनि पित्तयोनि विभ्रांतयोनि षंढयोनि ॥ ६७० ॥ ये सब स्थानको प्राप्त होती हैं और वारंवार गर्भको ग्रहण करती है यह फलघृत योनिदोषको निश्चय हरता है ॥ ७१ ॥

लाक्षाढकंक्काथयित्वाजलस्यचतुराढकैः ॥ चतुर्थांशंशृतंनीत्वातैलप्रस्थंविनिक्षिपेत् ॥ ७२ ॥ मस्त्वाढकंचगोदध्नस्तत्रै-

वविनियोजयेत् ॥ शतपुष्पामश्वगंधांहरिद्रांदेवदारुच ॥७३॥ कटुकींरेणुकांमूर्वांकुष्टंचमधुयष्टिकाम् ॥ चंदनंमुस्तकंरास्नांपृथक्कर्षप्रमाणतः ॥ ७४ ॥ चूर्णयेत्तत्रनिक्षिप्यसाधयेन्मृदुवह्निना ॥ अस्याभ्यंगात्प्रशाम्यंतिसर्वेऽपिविषमज्वराः ॥ ७५ ॥ कासश्वासप्रतिश्यायत्रिकपृष्ठग्रहास्तथा ॥ वातंपित्तमपस्मारमुन्मादंयक्षराक्षसान् ॥ ७६ ॥ कंडूंशूलंचदौर्गंध्यंगात्राणांस्फुरणंजयेत् ॥ पुष्टगर्भाभवेदस्यगर्भिण्यभ्यंगतोभृशम् ॥ ७७ ॥

अर्थ–लाख २५६ तोलेभर लेकै १०२४ तोले पानीमें काढा करै जब चौथाई भाग बाकी रहै तब ६४ तोलेभर तेलको मिलावै ॥ ७२ ॥ गौका दहीका पानी २५६ तोलेभर मिलाकै पीछे सौफ आसगंध हलदी देवदार ॥ ७३ ॥ कुटकी रेणुकबीज मरोरफली कूठ मुलहटी चंदन नागरमोथा रायसन ये सब एकएक तोला लेकै ॥७४॥ चूरण कर पूर्वोक्तमें मिला कोमल अग्निसे सिद्ध करै इसकी मालिससे सब प्रकारके विषमज्वर ॥ ७५ ॥ खासी श्वास प्रतिश्याय त्रिकग्रह पृष्ठग्रह वात पित्त मृगीरोग उन्माद यक्ष राक्षस ॥ ७६ ॥ खाज शूल दुर्गंधता अंगोंका फुरना इन्होंका नाश होता है और इसकी मालिस करनेंसे गर्भिणी पुष्टगर्भवाली स्त्री हो जाती है ॥ ७७ ॥

मूर्वालाक्षाहरिद्रेद्वेमंजिष्ठासेंद्रवारुणी ॥ बृहतीसैंधवंकुष्ठंरास्नामांसीशतावरी ॥ ७८ ॥ आरनालाढकेतत्रतैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥ तैलमंगारकंनामसर्वज्वरविमोक्षणम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–मरोरफली लाख हलदी दारुहलदी मजीठ इंद्रायण वडीकटेली सेंधानमक कूठ रायसन बालछड शतावरी ॥७८॥ इन ओषधोंका चूरण बनाकर २५६ तोलेभर कांजीमें ६४ तोलेभर तेलको पकावै यह अंगारकतेल सब ज्वरोंको दूर करता है ॥ ७९ ॥

अश्वगंधाबलाबिल्वंपाटलाबृहतीद्वयम् ॥ श्वदंष्ट्रातिबलेनिंबंस्योनाकंचपुनर्नवाम् ॥ ६८० ॥ प्रसारिणीमग्निमंथंकुर्याद्दशपलंपृथक् ॥ चतुर्द्रोणेजलेपक्त्वापादशेषंशृतंनयेत्॥८१॥ तैलाढकेनसंयोज्यशतावर्यारसाढकम् ॥ क्षिपेत्तत्रचगोक्षीरंते-

लात्तस्माच्चतुर्गुणम् ॥ ८२ ॥ शनैर्विपाचयेदेभिःकल्कैर्द्विपलिकैःपृथक् ॥ कुष्ठैलाचंदनंमूर्वावचामांसीससैंधवैः ॥ ८३॥ अश्वगंधाबलारास्नाशतपुष्पेंद्रदारुभिः ॥ पर्णीचतुष्टयेनैवतगरेणैवसाधयेत् ॥ ८४ ॥ तत्तैलंनावनेऽभ्यंगेपानेबस्तौचयोजयेत् ॥ पक्षाघातंहनुस्तंभंमन्यास्तंभंकटिग्रहम् ॥ ८५ ॥ खञ्जत्वंबधिरत्वंचगतिभंगंगलग्रहम् ॥ गात्रशोषेंद्रियध्वंसावसृक्शुक्रज्वरक्षयान् ॥ ८६ ॥ अंडवृद्धिंकुरंडंचदंतरोगंशिरोग्रहम् ॥ पार्श्वशूलंचपांगुल्यंबुद्धिहानिंचगृध्रसीम् ॥ ८७ ॥ अन्यांश्चविषमान्वाताञ्जयेत्सर्वांगसंश्रयान् ॥ अस्यप्रभावाद्वंध्यापिनारीपुत्रंप्रसूयते ॥ ८८ ॥ मर्त्योगजोवातुरगस्तैलाभ्यंगात्सुखीभवेत् ॥ यथानारायणोदेवोदुष्टदैत्यविनाशनः ॥ ८९ ॥ तथैववातरोगाणांनाशनंतैलमुत्तमम् ॥

अर्थ–आसगंध खरैंहटी वेलगिरी शिरस दोनों कटेली गोखरू गंगेरन नींब सोनापाठा साठी ॥ ६८० ॥ खीप अरनी ये सब चालीसचालीस तोलेभर लेकै चार द्रोणभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब ग्रहण करै ॥८१॥ पीछे तेल २५६ तोले शतावरीका रस २५६ तोले गौका दूध १०२४ तोले ॥ ८२ ॥ इन ओषधोंके आठआठ तोलेभर कल्क लेकै हौलेंहौलें पकावै कुठ इलायची चंदन मरोरफली वच बालछड सेंधानमक ॥ ८३ ॥ आसगंध खरैंहटी रायसन सौंफ देवदार शालपर्णी पृष्टपर्णी मूंगपर्णी माषपर्णी तगर ॥ ८४ ॥ यह तेल नस्यमें वा मालिसमें वा पानमें वा वस्तिमें युक्त करना यह तेल पक्षाघात हनुस्तंभ मन्यास्तंभ कटिग्रह ॥८५॥ खञ्जीवात बधिरवात गतिभंग गलग्रह अंगशोष इंद्रियध्वंस करनेवाला वायु रक्तविकार धातुक्षयरोग ॥८६॥ अंत्रवृद्धि कुरंडरोग दंतरोग पसलीशूल पांगला करनेवाला वायु बुद्धिभ्रंश गृध्रसी ॥ ८७ ॥ अन्यभी विषमवायु सर्वांगसंश्रयवायु इन सबको जीतता है इसके प्रभावसे वंध्या स्त्रीभी पुत्रको जनती है ॥ ८८ ॥ मनुष्य हस्ती वा घोडा ये इस तेलकी मालिससे सुखको प्राप्त होते हैं जैसे नारायण देव दुष्ट दैत्योंको नाश करता है ॥ ८९ ॥ तैसे वातरोगोंको नाश करनेवाला यह उत्तम तेल है ॥

वारुण्याऔत्तरंमूलंकुट्टितंतुपलत्रयम् ॥ ६९० ॥ पलद्वादशकं

तैलंक्षणंवह्नौविपाचितम् ॥ निष्कत्रयंभक्तयुतंसेवेतास्माद्विनश्यति ॥ ९१ ॥ हस्तकंपःशिरःकंपःकंपोमन्याशिराभवः ॥

अर्थ–इंद्रायणके उत्तरदिशाका मूल १२ तोले लेकै कूट ॥ ९० ॥ पीछे तिसको ४८ तोलेभर तेलमें मिलाकर अग्निपर क्षणभर पकावै पीछे १ तोलाभर भातके संग सेवनेसे ॥ ९१ ॥ हस्तकंप शिरका कंप कंधाका कंप नाडीकंप ये सब दूर होते हैं ॥

बलामूलकषायेणदशमूलशृतेनच ॥ ९२ ॥ कुलत्थयवकोलानांक्काथेनपयसातथा ॥ अष्टाष्टभागयुक्तेनभागमेकंचतैलकम् ॥९३॥ गणेनजीवनीयेनशतावर्यैंद्रवारुणा ॥ मंजिष्ठाकुष्ठशैलेयतगरागरुसैंधवैः ॥ ९४ ॥ वचापुनर्नवामांसीसारिवाद्वयपत्रकैः ॥ शतपुष्पाश्वगंधाभ्यामेलयाचविपाचयेत् ॥ ९५ ॥ गर्भार्थिनीनांनारीणांपुंसांचक्षीणरेतसाम् ॥ व्यायामक्षीणगात्राणांसूतिकानांचयुज्यते ॥ ९६ ॥ राजयोग्यमिदंतैलंसुखिनांचविशेषतः ॥ बलातैलमितिख्यातंसर्ववातामयापहम् ॥ ९७ ॥

अर्थ–खरैंहटीकी जडका काढा आठ प्रस्थ दशमूलका काढा आठ प्रस्थ ॥ ९२ ॥ कुलथीका काढा आठ प्रस्थ जवोंका काढा आठ प्रस्थ वेरोंका काढा आठ प्रस्थ दूध आठ प्रस्थ और तेल १ प्रस्थ अर्थात् ६४ तोले ॥ ९३ ॥ जीवनीय गणके सब ओषध शतावरी देवदार मजीठ कूठ लोवान तगर अगर सेंधानमक ॥ ९४ ॥ वच साठी वालछड दोनों सारिवा अनंतमूल तेजपात सौंफ आसगंध इलायची इन्होंके चूरणको घाल पकावै ॥ ९५ ॥ गर्भकी इच्छा करनेंवाली स्त्रियोंको और क्षीणवीर्यवाले पुरुषोंको कसरतसे क्षीण हुये अंगोंवाले ऐसे पुरुषोंको और सूतिकास्त्रियोंको देना ॥ ९६ ॥ राजालोगोंके योग्य यह तेल है और सुखीलोगोंको विशेषकरकै योग्य है यह बलातेल विख्यात है सब वातरोगोंको हरता है ॥ ९७ ॥

प्रसारिणीपलशतंजलद्रोणेनपाचयेत् ॥ पादशिष्टःशृतोग्राह्यस्तैलंदधिचतत्समम् ॥ ९८ ॥ कांजिकंचसमंतैलात्क्षीरंतै-

लाच्चतुर्गणम् ॥ तैलात्तथाष्टमांशेनसर्वकल्कांश्चयोजयेत् ॥९९॥ मधुकंपिप्पलीमूलंचित्रकःसैंधवंवचा ॥ प्रसारिणीदेवदारुरास्नाचगजपिप्पली ॥ ७०० ॥ भल्लातःशतपुष्पाचमांसीचैभिर्विपाचयेत् ॥ एतत्तैलंवरंपक्कंवातश्लेष्मामयाञ्जयेत् ॥ १ ॥ कौब्जखंजत्वपंगुत्वेगृध्रसीमर्दिततंतथा ॥ हनुपृष्ठशिरोग्रीवाकटिस्तंभंचनाशयेत् ॥ २ ॥ अन्यांश्चविषमान्वातान्सर्वानाशुव्यपोहति ॥

अर्थ–खींप ४०० तोलेभर लेकै १०२४ तोले पानीमें पकावै जब चौथाई भाग पानी वाकी रहै तब तेल दही ॥ ९८ ॥ और कांजी ये बराबर भाग देने और तेलसे चौगुना दूध देना और तेलसे आठमां भाग करकै सब कल्क देने ॥ ९९ ॥ मुलहटी पीपलामूल चित्रक सैंधानमक वच खींप देवदार रायसन गजपीपल ॥ ७०० ॥ भिलावा सौंफ बालछड इन्होंके संग पकावै यह पका हुआ तेल श्रेष्ठ है वात और कफके रोगोंको जीतता है ॥ १ ॥ कूवडापना खंजपना पंगापना गृध्रसीवात लकुवा हनुस्तंभ पृष्ठस्तंभ शिरःस्तंभ ग्रीवास्तंभ कटिस्तंभ इन्होंको नाश कर्ता है ॥ २ ॥ अन्यभी विषमवातोंको और सब वातोंको शीघ्र दूर करता है ॥

माषायवातसीक्षुद्रामर्कटीचकुरंटकः ॥ ३ ॥ गोकंटःटुंटुकश्चैषांकुर्यात्सप्तपलंपृथक् ॥ चतुर्गुणांबुनापक्त्वापादशेषंशृतंनयेत् ॥ ४ ॥ कार्पासास्थीनिबदरंशणबीजंकुलत्थकम् ॥ पृथक्चतुर्दशपलंचतुर्द्रोणजलेपचेत् ॥ चतुर्थांशावशिष्टंचगृह्णीयात्क्काथमुत्तमम् ॥ ५ ॥ प्रस्थैकंछागमांसस्यचतुःषष्टिपलेजले ॥ निक्षिप्यपाचयेद्धीमान्पादशेषंरसंनयेत् ॥ ६ ॥ तैलप्रस्थेततःक्काथान्सर्वानेतान्विनिक्षिपेत् ॥ कल्कैरेभिश्चविपचेदमृताकुष्ठनागरैः ॥ ७ ॥ रास्नापुनर्नवैरंडैःपिप्पल्याशतपुष्पया ॥ बलाप्रसारणीभ्यांचमांस्याकटुकयातथा ॥ ८ ॥ पृथगर्धपलैरेतैःसाधयेन्मृदुवह्निना ॥ हन्यात्तैलमिदं

शीघ्रंग्रीवास्तंभापबाहुकौ ॥ ९ ॥ अर्धांगशोषमाक्षेपमूरुस्तं-भापतानकौ ॥ शाखाकंपंशिरःकंपंविश्वाचीमर्दितंतथा॥७१०॥ माषादिकमिदंतैलंसर्ववातविकारनुत् ॥

अर्थ–उडद जव अलसीके वीज कटेली कौंचके बीज कुरंटा ॥ ३ ॥ गोखरू टेंटू ये सब अठाईस अठाईस तोले लेकै चौगुना पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब ग्रहण कर ॥ ४ ॥ पीछे कपासकी गिरी वेर शणके बीज कुलथी ये सब छप्पनछप्पन तोलेभर ले चौगुना जलमें पकावै जब चौथाई भाग पानी बाकी रहै तब काढाको ग्रहण करै ॥ ५ ॥ पीछे बकराका मांस ६४ तोलेभर लेकै २५६ तोलेभर पानीमें मिलाकर पकावै जब चौथाई भाग रस बाकी रहै तब ग्रहण करै ॥ ६ ॥ पीछे सब क्राथोंमें ६४ तोलेभर तेलको मिला इन ओषधोंका कल्कोंके संग पकावै गिलोय कूठ सोंठ ॥ ७ ॥ रासन साठी अरंड पीपल सोंफ खरैंहटी खीप कुटकी ॥ ८ ॥ ये सब दोदो तोले लेके पीछे मंद अग्निसे तेलका सिद्ध करै ग्रीवास्तंभ अपवाहुक ॥ ९ ॥ अर्धांगवायु आक्षेपबायु ऊरुस्तंभ अपतानक शाखाकंप शिरकाकंप विश्वाची लकुवा ॥ ७१० ॥ इन सबको और सब वातरोगोंको यह माषादि तेल नाश करता है ॥

शतावरीबलायुग्मंपर्ण्यौगंधर्वहस्तकः ॥ ११ ॥ अश्वगंधा श्वदंष्ट्राचबिल्वःकाशःकुरंटकः ॥ एषांसार्धपलान्भागान्कल्प-येच्चविपाचयेत् ॥ १२ ॥ चतुर्गुणेननीरेणपादशेषंशृतंनयेत्॥ नियोज्यतैलप्रस्थेचक्षीरप्रस्थंविनिक्षिपेत् ॥ १३ ॥ शताव-रीरसप्रस्थंजलप्रस्थंचयोजयेत् ॥ शतावरीदेवदारुमांसीतगर-चंदनम् ॥ १४ ॥ शतपुष्पाबलाकुष्टमेलाशैलेयमुत्पलम् ॥ ऋद्धिर्मेदाचमधुकंकाकोलीजीवकस्तथा ॥ १५ ॥ एषांकर्ष-समैःकल्कैस्तैलंगोमयवह्निना ॥ पचेत्तेनैवतैलेनस्त्रीषुनित्यं वृषायते ॥ १६ ॥ नारीचलभतेपुत्रंयोनिशूलंचनश्यति ॥ अंगशूलंशिरःशूलंकामलांपांडुतांगरम् ॥ १७ ॥ गृध्रसींप्ली-हशोषांश्चमेहान्दंडापतानकम् ॥ सदाहंवातरक्तंचवात्तपित्तग-दार्दितम् ॥ १८ ॥ असृग्दरंतथाध्मानंरक्तपित्तंचनश्यति ॥

शतावरीतैलमिदंकृष्णात्रेयेणभाषितम् ॥ १९ ॥ नारायणायस्वाहा ॥ उत्तराभिमुखोभूत्वाखनेत्खदिरशंकुना ॥ सर्वव्याधिसाधनीयेस्वाहा ॥ इतिउत्पाटनमंत्रः ॥ कुमारजीवनीयेस्वाहा ॥ इतिपाचनमंत्रः ॥

अर्थ–शतावरी खरैंहटी वडी खरैंहटी शालपर्णी पृष्टपर्णी अरंडकी जड ॥११॥ आसगंध गोखरू वेलगिरी काश कुरंटा ये सब छहछह तोलेभर लेकै ॥ १२ ॥ चौगुना पानीमें पकावै जब चौथाई भाग वाकी रहै तब काथको ग्रहण कर तेल६४ तोले और दूध ६४ तोले मिलावै ॥ १३ ॥ शतावरीका रस ६४ तोले पानी ६४ तोले शतावरी देवदारु वालछड तगर चंदन ॥ १४ ॥ सौंफ खरैंहटी कूठ इलायची लोवान कमल ऋद्धि मेदा मुलहटी काकोली जीवक ॥ १५ ॥ ये ओषध एकएक तोला लेकै कल्क वनाकर गोवरकी अग्निसे तेलको पकावै तिस तेलके प्रभावसे मनुष्य स्त्रियोंविषै नित्यप्रति अत्यंत भोग करता रहता है ॥ १६ ॥ और नारी पुत्रको प्राप्त होती है योनिशूल नष्ट होता है और अंगशूल शिरका शूल कामला पांडु कृत्रिमविष ॥ १७ ॥ गृध्रसी तिल्लीरोग शोष प्रमेह दंडापतानक दाह वातरक्त वातपित्तरोग लकुवा ॥ १८ ॥ प्रदर अफारा रक्तपित्त इन्होंका नाश होता है यह शतावरीतेल कृष्णात्रेयजीनें कहा है ॥ १९ ॥ शतावरी लानेकी विधि कहते है 'नारायणाय स्वाहा' ऐसे कहकै नमस्कार कर उत्तरके तर्फ मुखवाला होकै खैरके शंकुसे खोदै 'सर्वव्याधिसाधनीये स्वाहा' यह उखाडनका मंत्र है 'कुमारजीवनीये स्वाहा' यह पाचनका मंत्र है ॥

कासीसंलांगलीकुष्ठंशुंठीकृष्णाचसैंधवम् ॥ ७२० ॥ मनःशिलाश्वमारश्चविडंगंचित्रकोवृषः ॥ दंतीकोशातकीबीजंहेमाह्वाहरितालकः ॥ २१ ॥ कल्कैःकर्षमितैरेतैस्तैलप्रस्थंविपाचयेत् ॥ सुधार्कपयसीदद्यात्पृथग्द्विपलसंमिते ॥ २२ ॥ चतुर्गुणंगवांमूत्रंदत्वासम्यक्प्रसाधयेत् ॥ कथितंखरनादेनतैलमर्शोविनाशनम् ॥ २३ ॥ क्षारवत्पातयत्येतदर्शांस्यभ्यंगतोभृशम् ॥ वलीर्नदूषयत्येतत्क्षारकर्मकरंस्मृतम् ॥ २४ ॥

अर्थ–हीराकसीस कलहारी कूठ सूंठ पीपल ॥७२०॥ मनशिल कनेर वायविडंग चित्रक वांसा जमालगोटाकी जड कडवी तोरीके बीज चोक हरताल ॥२१॥

ये सब एकएक तोलाभर लेकै ६४ तोलेभर तेलको पकावै और थोहरका दूध आठ तोले आकका दूध आठ तोले ॥ २२ ॥ गोवोंका मूत्र चौगुना देकै अच्छी तरह साधै यह तेल खरनादनें कहा है यह ववासीरको नाश कर्ता है ॥ २३ ॥ मालिलसे खारकी तरह यह तेल ववासीरोंको गिराता है और वलियोंको दूषित नहीं करता है और क्षारकर्मको करनेंवाला कहा है ॥ २४ ॥

मंजिष्ठासारिवासर्जयष्टीसिक्थैःपलोन्मितैः पिंडाख्यंसाधये-त्तैलमैरंडंवातरक्तनुत् ॥ २५ ॥ अर्कपत्ररसेपक्वंहरिद्राकल्क-संयुतम् ॥ नाशयेत्सार्षपंतैलंपामांकच्छूंविचर्चिकाम् ॥ २६ ॥

अर्थ–मजीठ सारिवा अनंतमूल राल मुलहटी मौंग ये सब चारचार तोले लेकै कल्क बनाकर तिसमें अरंडीके तेलको पकावै यह पिंडाख्य तेल वातरक्तको नाश कर्ता है ॥ २५ ॥ आकके पत्तोंका रस हलदीका कल्क इन्होंमें सरसोंके तेलको पकावै यह तेल पाम कच्छू विचर्चिका इन सबको हरता है ॥ २६ ॥

मरिचंहरितालंचत्रिवृतंरक्तचंदनम् ॥ २७ ॥ मुस्तंमनःशि-लामांसीद्वेनिशेदेवदारुच ॥ विशालाकरवीरंचकुष्ठमर्कपय-स्तथा ॥ २८ ॥ तथैवगोमयरसंकुर्यात्कर्षमितान्पृथक् ॥ विषंचार्धपलंदेयंप्रस्थंचकटुतैलकम् ॥ २९ ॥ गोमूत्रंद्विगुणं दद्याज्जलंचद्विगुणंभवेत् ॥ मरिचाद्यमिदंतैलंसिध्मकुष्ठहरंप-रम् ॥७३०॥ जयेत्सर्वाणिकुष्ठानिपुंडरीकंविचर्चिकाम् ॥ पा-मांसिध्मानिरक्तंचकंडूंकच्छूंप्रणाशयेत् ॥ ३१ ॥

अर्थ–मिरच हरताल निशोत लालचंदन ॥ २७ ॥ नागरमोथा मनशिल वालछड हलदी दारुहलदी देवदार इंद्रायण कनेर कूट आकका दूध ॥ २८ ॥ गोवरका रस ये सब एकएक तोला और मीठातेलिया २ तोले कडुआ तेल ६४ तोले ॥ २९ ॥ गोमूत्र १२८ तोले पानी १२८ तोले इन सबको मिलाकर तेलको सिद्ध करै यह मरिचादि तेल सिध्म कुष्ठ ॥ ७३० ॥ सब प्रकारके कुष्ठ पुंडरीक विचर्चिका पाम रक्तकुष्ठ खाज कच्छू इन सबोंको नाश करता है ॥ ३१ ॥

त्रिफलारिष्टभूनिंबंद्वेनिशेरक्तचंदनम् ॥
एतैःसिद्धमरूषीणांतैलमभ्यंजनेहितम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-त्रिफला नींब चिरायता हलदी दारुहलदी लालचंदन इन्होंमें सिद्ध किया तेल मालिसकरनेविषै हित है ॥ ३२ ॥

भावयेन्निंबबीजानिभृंगराजरसेनहि ॥ तथासनस्यतोयेनतत्तैलंहन्तिनस्यतः ॥ ३३ ॥ अकालपलितंसद्यःपुंसांदुग्धान्नभोजिनाम् ॥

अर्थ-निंबोलियोंको भंगराके रसमें तथा आसनाके रसमें भावना देकै पीछे तेल काढै यह तेल नस्य लेनेसे ॥ ३३ ॥ विना समय उपजे सपेद वालोंको शीघ्र नाश करता है इसपर दूध और चावलका भोजन देना ॥

यष्टीमधुकक्षीराभ्यांनवधात्रीफलैःशृतम् ॥ ३४ ॥
तैलंनस्यकृतंकुर्यात्केशाञ्श्मश्रूणिसर्वशः ॥

अर्थ-मुलहटी और आंवलाका कल्कमें दूध मिला ॥ ३४ ॥ तिसमें तेलको सिद्ध करै वह तेल वालोंको वा मूंछडाढीको अच्छीतरह करता है ॥

करंजश्चित्रकोजातीकरवीरश्चपाचितम् ॥ ३५ ॥
तैलमेभिर्हुतंहन्यादभ्यंगादिंद्रलुप्तकम् ॥

अर्थ-करंजुवा चित्रक चमेलीके पत्ते कनेरके पत्ते इन्होंमें पकाया ॥ ३५ ॥ तेल मालिससे इंद्रलुप्तको शीघ्र हरता है ॥

नीलिकाकेतकीकंदंभृंगराजःकुरंटकः ॥ ३६ ॥ तथार्जुनस्य पुष्पाणिबीजकात्कुसुमान्यपि ॥ कृष्णास्तिलाश्चतगरंसमूलं कमलंतथा ॥ ३७ ॥ अयोरजःप्रियंगुश्चदाडिमत्वग्गुडूचिका ॥ त्रिफलापद्मपंकश्चकल्कैरेभिःपृथक्पृथक् ॥ ३८ ॥ कर्षमात्रं पचेत्तैलंत्रिफलाक्काथसंयुतम् ॥ भृंगराजरसेनैवसिद्धंकेशस्थिरीकृतम् ॥ ३९ ॥ अकालपलितंहंतिदारुणंचोपजिह्विकम् ॥

अर्थ-नीलके पत्ते केतकीका कंद भंगरा कुरंटा ॥ ३६ ॥ कौहके फूल आसनाके फूल काले तिल तगर जडसहित कमल ॥ ३७ ॥ लोहाका चूरण मालकांगनी अनारकी छाल गिलोय त्रिफला कमली पंक ये सब एक तोला ले कल्क बनावै ॥ ३८ ॥ पीछे त्रिफलाके क्काथसे संयुत कर भंगराके रसमें तेलको सिद्ध करै यह तेल मालिस करनेंसे वालोंको स्थिर करता है ॥ ३९ ॥ अकालमें उपजे

सुपेदवालोंको काले करता है दारुणरोगको और ऊपजिह्विक रोगकों नाश करता है ॥

भृंगराजरसेनैवलोहकिट्टंफलत्रिकम् ॥ ४० ॥ सारिवांचपचेत्कल्कैस्तैलंदारुणनाशनम् ॥ अकालपलितंकंडूमिंद्रलुप्तंच नाशयेत् ॥ ४१ ॥

अर्थ–भंगराके रसमें लोहाका मैल त्रिफला ॥ ७४० ॥ सारिवा अनंतमूल इन्होंका कल्क मिलाकर तेलको पकावै यह तेल दारुणरोग अकालपलित इंद्रलुप्त इन सबको नाश करता है ॥ ४१ ॥

इरिमेदत्वचंक्षुण्णांपचेच्छतपलोन्मिताम् ॥ जलद्रोणेततः क्वाथंगृह्णीयात्पादशेषितम् ॥ ४२ ॥ तैलस्यार्धाढकंदत्वाकल्कैःकर्षमितैःपचेत् ॥ इरिमेदलवंगाभ्यांगैरिकागरुपद्मकैः॥४३॥ मंजिष्ठालोध्रमरुकैर्लाक्षान्यग्रोधमुस्तकैः ॥ त्वग्जातिफलकर्पूरकंकोलकदरैस्तथा ॥ ४४ ॥ पतंगधातकीपुष्पसूक्ष्मैलानागकेशरैः ॥ कट्फलेनचसंसिद्धंतैलंमुखरुजंजयेत् ॥ ४५ ॥ प्रदुष्टमांसंपलितंशीर्णदंतंचसौषिरम् ॥ शीतादंदंतहर्षंचविद्रधिंकृमिदंतकम्॥४६॥दंतस्फुटनदौर्गंध्येजिह्वाताल्वोष्ठजांरुजम् ॥

अर्थ–आला खैरकी छालको कूट४००तोलेभर ले पीछे १०२४तोलेभर पानीमें काढा करै जब चौथाई भाग शेष रहै ॥ ४२ ॥ तब तेल १२८ तोले मिलाके इन ओषधोंके कल्क मिलावै खैर लौंग गेरू अगर पद्माक ॥ ४३ ॥ मजीठ लोध मुलहटी लाख वड नागरमोथा दालचिनी जायफल कपूर कंलोल सुपेदखैरकी छाल ॥ ४४ ॥ पतंग धोकेफूल छोटी इलायची नागकेसर कायफल इन्होंमें सिद्ध किया तेल मुखकी पीडाको ॥ ४५ ॥ दुष्टमांस वालोंका सुपेदपना शीर्णदंत सौषिर शीताद दंतहर्ष विद्रधि कृमिदंतक ॥ ४६ ॥ दंतस्फुटन दौर्गंध्य जिह्वारोग तालुरोग ओष्ठरोग इन सबको जीतता है ॥

जातिनिंबपटोलानांनक्तमालस्यपल्लवाः ॥ ४७ ॥ सिक्थंसमधुकंकुष्ठंद्वेनिशेकटुरोहिणी ॥ मंजिष्ठापद्मकंलोध्रमभयानीलमुत्पलम् ॥ ४८ ॥ तुत्थकंसारिवाबीजंनक्तमालस्यदापये-

त् ॥ एतानिसमभागानिपिष्ठ्वातैलंविपाचयेत् ॥ ४९ ॥ नाडीव्रणेसमुत्पन्नेस्फोटकेकच्छुरोगिषु ॥ सद्यःशस्त्रप्रहारेषुदग्धविद्धेषुचैवहि ॥ ७५० ॥ नखदंतक्षतेदेहेव्रणेदुष्टेप्रशस्यते ॥

अर्थ–मालती नींब कडु परवल करंजुवा इन्होंके पत्ते ॥ ४७ ॥ मौंम मुलहटी कूठ हलदी दारुहलदी मजीठ पद्माक लोध हरडै नीलाकमल ॥ ४८ ॥ नीला थोथा सारिवा अनंतमूल करंजुवाके बीज ये सब बराबर भाग लेकै पीस तिसमें तेलको पकावै ॥ ४९ ॥ नाडीव्रण स्फोटक कच्छूरोग तत्काल लगा शस्त्रका प्रहार असिसे जला तीर आदिसे वींधा ॥ ७५० ॥ नख और दुष्ट दंतसे कटा और घाव इन्होंमें श्रेष्ठ है ॥

हिंगुतुंबरुशुंठीभिःकटुतैलंविपाचयेत् ॥ ५१ ॥
तस्यपूरणमात्रेणकर्णशूलंप्रणश्यति ॥

अर्थ–हींग धनियां सोंठ इन्होंमें कडुआ तेलको पकावै ॥ ५१ ॥ तिसको कानमें पूरनेसे कानका शूल नष्ट होता है ॥

बालबिल्वानिगोमूत्रेपिष्ट्वातैलंविपाचयेत् ॥ ५२ ॥
साजक्षीरंचनीरंचबाधिर्यंहंतिपूरणात् ॥

अर्थ–कच्ची वेलगिरीको गोमूत्रमें पीस तिसविषै तेलको पकावै ॥ ५२ ॥ और पकनेंके समय बकरीका दूध और पानी मिलाकै सिद्ध करै यह कानमें पूरनेसे बहरापनको नाश करता है ॥

बालमूलकशुंठीनांक्षारःक्षारयुतंतथा ॥ ५३ ॥ लवणानिच पंचैवहिंगुशिग्रुमहौषधम् ॥ देवदारुवचाकुष्ठंशतपुष्पारसांजनम् ॥ ५४ ॥ ग्रंथिकंभद्रमुस्तंचकल्कैःकर्षमितैःपृथक् ॥ तैलप्रस्थंचविपचेत्कदलीबीजपूरयोः ॥ ५५ ॥ रसाभ्यांमधुसूक्तेनचातुर्गुण्यमितेनच ॥ पूयस्रावंकर्णनादंशूलंबधिरतांकृमीन् ॥ ५६ ॥ अन्यांश्चकर्णजान्रोगान्मुखरोगांश्चनाशयेत् ॥

अर्थ–कच्चीमूलीका खार सोंठका खार साजीखार जवाखार ॥ ५३ ॥ सेंधानमक कालानमक सांभरनमक मनयारीनमक रेहनमक हींग सहोंजना सोंठ देवदार वच कूठ सौंफ रसोत ॥ ५४ ॥ पीपलामूल नागरमोथा ये सब एकएक तो-

लेभर लेकै ६४ तोलेभर तेलको पकावै और पकनेंके समय केला और विजोराके रसको मिलावै ॥५५॥ पीछे चौगुना मधु सूक्त¹ मिलाकै तेलको सिद्ध करै यह तेल पूयस्राव कर्णनाद शूल बहरापना कृमिरोग ॥ ५६ ॥ अन्य सब कानके रोग और मुखके रोगोंको नाश करता है ॥

पाठाद्वेचनिशेमूर्वापिप्पलीजातिपल्लवैः ॥ ५७ ॥
दंत्याचतैलंसंसिद्धंनस्यंस्याद्दुष्टपीनसे ॥

अर्थ–पाठा हलदी दारुहलदी मरोरफली पीपल चमेलीके पत्ते ॥ ५७ ॥ जमालगोटाकी जड इन्होंमें सिद्ध किया तेलकी नस्य दुष्ट पीनसमें हित है ॥

व्याघ्रीदंतीवचाशिग्रुतुलसीव्योषसैंधवैः ॥ ५८ ॥
कल्कैश्चपाचितंतैलंपूतिनासागदापहम् ॥

अर्थ–कटेली जमालगोटाकी जड वच सहोंजना तुलशी सोंठ मिरच पीपल सेंधानमक ॥ ५८ ॥ इन्होंके कल्कोंमें पकाया तेल पूतिनासरोगको नाश करता है ॥

कुष्ठंबिल्वकणाशुंठीद्राक्षाकल्ककषायवत् ॥ ५९ ॥ साधितं तैलमाज्यंवानस्यात्क्षवथुनाशनम् ॥ गृहधूमकणादन्तक्षारनक्ताह्वसैंधवैः॥७६०॥सिद्धंशिखरिबीजैश्चतैलंनासार्शसांहितम् ॥

अर्थ–कूट बेलगिरी पीपल सोंठ दाख इन्होंका काढा और कल्कमें ॥ ५९ ॥ सिद्ध किया तेल अथवा घृत नस्य लेनेसे छींकरोगको नाश करता है घरका धूमा पीपल देवदार जवाखार करंजुवाकी छाल सेंधानमक ॥ ७६० ॥ अंगाके बीज इन्होंमें सिद्ध क्रिया तेल नासिकाके अर्श अर्थात् मस्सोंको नाश करता है ॥

वज्रीक्षीरंरविक्षीरंद्रवंधत्तूरचित्रकम् ॥ ६१ ॥ महिषीविड्भवंद्रावंसर्वांशंतिलतैलकम् ॥ पचेत्तैलावशेषंचगोमूत्रेऽथचतुर्गुणे ॥ ६२ ॥ तैलावशेषंपक्त्वाचतत्तैलंप्रस्थमात्रकम् ॥ गंधकाग्निशिलातालंविडंगातिविषाविषम् ॥ ६३ ॥ तिक्तकोशातकीकुष्टंवचामांसीकटुत्रयम् ॥ पीतदारुचयष्ट्याह्वंसर्जिकाक्षारजीरकम् ॥ ६४ ॥ देवदारुचकर्षांशंचूर्णंतैलेविनि-

---

१ मधुसूक्तप्रकार कहतेहै कागदीनिंबूका एक प्रस्थ रसमैं सहत एक कुडव घाल पीपलको चूर्ण एक पल घाल एक मास वरणीमैं घाल धान्यमैं गडपोरवै उसकों मधुसूक्त कहतेहै.

क्षिपेत् ॥ वज्रतैलमितिख्यातमभ्यंगात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ ६५ ॥

अर्थ—थोहरका दूध आकका दूध धत्तूराका रस चित्रकका रस ॥ ६१ ॥ भैंसके गोवरका रस इन सबके बराबर तिलोंका तेल पीछे चौगुना गोमूत्रमें पकावै जब तेल मात्र शेष रहै तब ग्रहण करै परंतु तेल ६४ तोलेभर होवै ॥ ६२ ॥ पीछे गंधक चित्रक मनशिल हरताल वायविडंग अतीस मीठातेलिया ॥ ६३ ॥ कडुईतोरी कूठ वच वालछड सोंठ मिरच पीपल दारुहलदी मुलहटी साजीखार जीरा ॥ ६४ ॥ देवदार इन सबको एक एक तोलाभर ले चूरण कर तेलमें मिलावै यह वज्रतेल विख्यात है मालिस करनेंसे सब कुष्ठोंको नाश करता है ॥ ६५ ॥

करवीरंशिफांदंतींत्रिवृत्कोशातकीफलम् ॥
रंभाक्षारोदकेतैलंप्रशस्तंलोमशातनम् ॥ ६६ ॥

अर्थ—कनेरकी जड जमालगोटाकी जड निशोत कडवी तोरी इन्होंके कल्कमें और केलाके खारका काढामें तेलको पकावै यह तेल रोमोंके उडानेमें श्रेष्ठ है ६६

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे घृततैलकल्पना नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ दशमोऽध्यायः ।

द्रवेषुचिरकालस्थंद्रव्यंयत्संधितंभवत् ॥ आसवारिष्टभेदैस्तत्प्रोच्यतेभेषजोचितम् ॥ ६७ ॥ यदपक्वौषधांबुभ्यांसिद्धंमद्यःसआसवः ॥ अरिष्टःक्वाथसिद्धःस्यात्तयोर्मानंपलोन्मितम् ॥ ६८ ॥ अनुक्तमानारिष्टेषुद्रवद्रोणेतुलागुडम् ॥ क्षौद्रंक्षिपेद्गुडादर्धंप्रक्षेपंदशमांशकम् ॥ ६९ ॥ ज्ञेयःशीतरसःसीधुरपक्वमधुरद्रवैः ॥ सिद्धंपक्वरसःसीधुःसंपक्वमधुरद्रवैः ॥ ७७० ॥ परिपक्वान्नसंधानसमुत्पन्नांसुरांजगुः ॥ सुरामंडःप्रसन्नास्यात्ततःकादंबरीघना ॥ ७१ ॥ तदधोजगलोज्ञेयोमेदकोजगलाद्घनः ॥ पुक्कसोहृतसारःस्यात्सुराबीजंचकिण्वकम् ॥ ७२ ॥ यत्तालखर्जूररसैःसंधितासाहिवारुणी ॥ कंदमूलफलादीनि

सस्नेहलवणानिच ॥ ७३ ॥ यत्रद्रवेऽभिषूयंतेतत्सूक्तमभि-
धीयते ॥ विनष्टमम्लतांयातंमद्यवामधुरद्रवः ॥ ७४ ॥ वि-
नष्टःसंधितोयस्तुतच्चुक्रमभिधीयते ॥ गुडांबुनासतैलेनकंदमू-
लफलैस्तथा ॥७५॥ संधितंचाम्लतांयातंगुडसूक्तंतदुच्यते ॥
एवमेवेक्षुसूक्तंस्यान्मृद्वीकासंभवंतथा ॥ ७६ ॥ तुषांबुसंधि-
तंज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः ॥ यवैस्तुनिस्तुषैःपक्वैःसौवीरंसंधि-
तंभवेत् ॥ ७७ ॥ कुल्माषधान्यमंडादिसंधितंकांजिकंविदुः ॥
शंडाकीसंधिताज्ञेयामूलकैःसर्षपादिभिः ॥ ७८ ॥

अर्थ–पानी आदि द्रव वस्तुमें ओषधी देकै पात्रमें भर मुखको मूंद १ महीनाभर रखनेंसे ओषध उत्तम होती है उसको आसव और अरिष्ट कहते है आसव अरिष्टमें दो भेद है ॥ ६७ ॥ पानी आदि पदार्थमें जो ओषधी पूर्वोक्त रीतिसे सिद्ध करी जावै तिसको आसव कहते है जो कोई द्रव्यके क्काथमें तिसी पूर्वोक्त रीतिसे सिद्ध करी जावै तिसको अरिष्ट कहते है इन दोनोंकी मात्रा ४ तोलेभर है ॥ ६८ ॥ जहां अरिष्टमें द्रव्यका तोल नहीं हो तहां पानी आदि पदार्थ द्रोणभर अर्थात् १०२४ तोले देना और गुड ४०० तोले शहत २०० तोले देना और द्रव्यका चूरण गुडसे दशमां हिस्सा देना ॥ ६९ ॥ नहीं पकाये हुये रसके रस आदि मधुर पदार्थमें सिद्ध किया जावै वह शीत रस सीधु कहाता है और पकाये हुये ईखके रस आदि मधुर पदार्थमें सिद्ध किया जावै वह पक्व रस सीधु कहाता है ॥ ७७० ॥ चावल आदि अन्नका खमीर बना अग्निके बलसे यंत्रके द्वारा निकासी जावै वह सुरा कहाती है और सुराका मंड प्रसन्ना कहाती है और सागोंसे रहित जो नीचे रहै वह कादंबरी वा घन कहाती है ॥ ७१ ॥ सुराके नीचे रहै वह जगल कहाता है और जगलसे जो घन अर्थात् करडी हो वह मेदक कहाता है मेदकको पकानेंसे जो सार निकसै वह पुक्कस कहाता है और जो सुराका बीज हो वह किण्व कहाता है ॥ ७२ ॥ जो ताड वा खिजूरके रसोंसे संधित करी जावै वह वारुणी होती है कंद मूल फल घृत तेल नमक इन आदि ॥ ७३ ॥ जिस द्रवपदार्थमें मिला अग्निके बलसे यंत्रके द्वारा मदिरा निकसै वह सूक्त कहाता है नष्ट होकै अम्लताको प्राप्त हुआ जो मदिरा अथवा मधुर द्रव पदार्थ ॥ ७४ ॥ तिसको पात्रमें घाल पात्रके मुखको बंध कर महीना वा पंदरह दिन धरै वह चुक्र कहाता है गुडका सरबत तेल कंद मूल फल इन

सबको पात्रमें घाल ॥ ७५ ॥ पात्रके मुखको बंध कर महीना वा पंदरह दिन धरै जब अम्लताको प्राप्त होवै तब वह गुड सूक्त कहाता है इसीप्रकार ईखका सूक्त और मुनक्कादाखोंका सूक्त बनता है ॥ ७६ ॥ कच्चे जवोंको दलकै तिन्होंको पानीसे संयुक्त कर पात्रमें घाल तिसके मुखको बंधकर एक दिन धरै वह तुषांबु कहाता है जवोंके तुषोंको निकासि और सिजाय पात्रमें घाल तिसके मुखको बंध करै वह सौवीर कहाता है ॥ ७७ ॥ कुलथी अथवा चावलको पानीमें सिजाकै तिसका मांड निकासि तिसविषै सोंठ राई जीरा हींग सेंधानमक हलदी इन आदि घाल पात्रके मुखको बंधकर तीन वा चार दिन धरै वह कांजी कहाती है मूलीके छिलकोंमें सिरसम हलदी हींग राई सेंधानमक जीरा सोंठ इन आदिको घाल पात्रके मुखको बंधकर तीन चार दिनपर्यंत धरै वह शंडाकी कहाती है॥७८॥

उशीरंवालकंपद्मंकाश्मरींनीलमुत्पलम् ॥ प्रियंगुंपद्मकंलोध्रंमंजिष्ठाधन्वयासकम् ॥ ७९ ॥ पाठांकिराततिक्तंचन्यग्रोधोदुंबरंशठीम् ॥ पर्पटंपुंडरीकंचपटोलंकांचनारकम् ॥७८० ॥ जंबूशाल्मलिनिर्यासंप्रत्येकंपलसंमितान् ॥ भागान्सुचूर्णितान्कृत्वाद्राक्षायाःपलविंशतिम् ॥ ८१ ॥ धातकींषोडशपलांजलद्रोणद्वयेक्षिपेत् ॥ शर्करायास्तुलांदत्वाक्षौद्रस्यैकतुलांतथा ॥ ८२ ॥ मासंचस्थापयेद्भांडेमांसीमरिचधूपिते ॥ उशीरासव इत्येषरक्तपित्तनिवारणः ॥ ८३ ॥ पांडुकुष्ठप्रमेहार्शःकृमिशोथहरस्तथा ॥

अर्थ–खस नेत्रवाला लाल कमल कंभारी नीला कमल प्रियंगु पद्माक लोध मजीठ धमासा ॥७९॥ पाठा चिरायता कुटकी वड गूलर कचूर पित्तपापडा सुपेद कमल परवल कचनारकी छाल ॥ ७८० ॥ जामनका और संभलका गूंद ये सब चारचार तोले और दाख ८० तोले ॥ ८१ ॥ धायके फूल ६४ तोले इन सबका चूरण कर २०४८ तोलेभर पानीमें मिला ४०० तोले खांड और २०० तोले शहत देकै ॥ ८२ ॥ वालछड और मिरचसे धूपित किये पात्रमें घाल १ महीना धरै यह उशीरासव रक्तपित्तको दूर करती है ॥ ८३ ॥ और पांडु कुष्ठ प्रमेह ववासीर कृमिरोग शोजा इन सबको नाश करता है ॥

सुपक्करससंशुद्धंकुमार्याःपत्रमाहरेत् ॥ ८४ ॥ यत्नेनरससमा-

दायपात्रेपाषाणमृण्मये ॥ द्रोणेगुडतुलांदत्वाघृतभांडेनिधापयेत् ॥८५॥ माक्षिकंपक्कलोहंचतस्मिन्नर्धतुलांक्षिपेत् ॥ कटुत्रिकंलवंगंचचातुर्जातकमेवच ॥ ८६ ॥ चित्रकंपिप्पलीमूलंविडंगंगजपिप्पली ॥ चविकंहपुषाधान्यंक्रमुकंकटुरोहिणी ॥ ८७ ॥ मुस्ताफलत्रिकंरास्नादेवदारुनिशाद्वयम् ॥ मूर्वा मधुरसादंतीमूलंपुष्करसंभवम् ॥ ८८ ॥ बलाचातिबलाचैवकपिकच्छुस्त्रिकंटकम् ॥ शतपुष्पाहिंगुपत्रीआकल्लकमुर्टिंगणम् ॥ ८९ ॥ पुनर्नवाद्वयंलोध्रंधातुमाक्षिकमेवच ॥ एषां चार्धपलंदत्वाधातक्यास्तुपलाष्टकम् ॥ ७९० ॥ पलंचार्धपलंचैवपलद्वयमुदाहृतम् ॥ वपुर्वयःप्रमाणेनबलवर्णाग्निदीपनम् ॥ ९१ ॥ बृंहणंरोचनंवृष्यंपंक्तिशूलनिवारणम् ॥ अष्टावुदरजान्रोगान्क्षयमुग्रंचनाशयेत् ॥ ९२ ॥ विंशतिंमेहजान्रोगानुदावर्तमपस्मृतिम् ॥ मूत्रकृच्छ्रमपस्मारंशुक्रदोषंतथाश्मरीम् ॥ ९३ ॥ कृमिजंरक्तपित्तंचनाशयेत्तुनसंशयः ॥

अर्थ—अच्छी तरह पका हुआ और रसवाला ऐसा कुवारपाठाके पत्तोंका ॥८४॥ रस १०२४ तोलेभर ले पत्थरके वा मट्टीके पात्रमें घाल ४०० तोले गुड मिलाकर घृतके पात्रमें घालकर धरै ॥ ८५ ॥ पीछे शहत २०० तोले लोहाका भस्म २०० तोले और सोंठ मिरच पीपल लौंग दालचिनी इलायची तेजपात नागकेशर ॥८६॥ चित्रक पीपलामूल वायविडंग गजपीपल चवक हाऊबेर धनियां सुपारी कुटकी ॥ ८७ ॥ नागरमोथा त्रिफला रायसन देवदार हलदी दारुहलदी मरोरफली चांदवेल जमालगोटाकी जड पोहकरमूल ॥ ८८ ॥ खरैंहटी गंगेरन कौंचके बीज गोखरू सोंफ वाफली अकरकरा उटिंगणबीज ॥ ८९ ॥ दोनों साठी लोध सोनामाखी ये सब दोदो तोलेभर और धायके फूल ३२ तोले इन सबको मिला आसव करै ॥ ७९० ॥ पीछे ४ तोले वा २ तोले वा ८ तोलेभर आसवको शरीर और बलके प्रमाणसे देवै यह बल वर्ण और अग्नि इन्हेंको जगाता है ॥९१॥ धातुओंको पुष्ट करता है रोचन है वीर्यको बढाता है पंक्तिशूलको दूर करता है और आठ प्रकारके उदररोग-दारुण क्षयरोगको नाश करता है ॥ ९२ ॥ वीस

प्रकारके प्रमेहरोग उदावर्त मृगीरोग मूत्रकृच्छ्र अपस्मृति वीर्यदोष पथरीरोग ॥९३॥ कृमिरोग और रक्तपित्त इन सबको नाश करता है इसमें संशय नहीं है ॥

पिप्पलीमरिचंचव्यंहरिद्राचित्रकोघनः ॥ ९४ ॥ विडंगंक्रमुकोलोध्रःपाठाधात्र्येलवालुकम् ॥ उशीरंचंदनंकुष्टंलवंगंतगरंतथा ॥ ९५ ॥ मांसीत्वगेलापत्रंचप्रियंगुर्नागकेशरम् ॥ एषामर्धपलान्भागान्सूक्ष्मचूर्णीकृतान्शुभान् ॥ ९६ ॥ जलद्रोणद्वयेक्षिप्त्वादद्याद्गुडतुलात्रयम् ॥ पलानिदशधातक्या द्राक्षाषष्टिपलाभवेत् ॥ ९७ ॥ एतान्येकत्रसंयोज्यमृद्भांडेच विनिक्षिपेत् ॥ ज्ञात्वागतरसंसर्वंपाययेदग्न्यपेक्षया ॥ ९८ ॥ क्षयंगुल्मोदरेकार्श्यंग्रहणींपांडुतांतथा ॥ अर्शांसिनाशयेच्छीघ्रंपिप्पल्याद्यासवस्त्वयम् ॥ ९९ ॥

अर्थ—पीपल मिरच चवक हलदी चित्रक नागरमोथा ॥ ९४ ॥ वायविडंग सुपारी लोध पाठा आंवला एलवा खस चंदन कूठ लौंग तगर ॥ ९५ ॥ वालछड दालचिनी इलायची तेजपात प्रियंगु नागकेसर ये सब दोदों तोलेभर लेकै महीन चूरण करना ॥ ९६ ॥ पीछे २०४८ तोलेभर पानीमें मिलाकै गुड १२०० तोले धायके फूल ४० तोले दाख २४० तोले ॥ ९७ ॥ इन सबको मिलाकै माटीके पात्रमें घाल धरै जब गतरस हो चुकै तब जानकै अग्निकी अपेक्षासे पान करवावै ॥ ९८ ॥ क्षय गुल्म उदररोग कार्श्यरोग ग्रहणीरोग पांडु ववासीर इन्होंको यह पिप्पल्यादिआसव नाश करता है ॥ ९९ ॥

लोहचूर्णंत्रिकटुकंत्रिफलांचयवानिकाम् ॥ विडंगंमुस्तकंचित्रंचतुःसंख्यापलंपृथक् ॥ ८०० ॥ धातकीकुसुमानांतुप्रक्षिपेत्पलविंशतिम् ॥ चूर्णीकृत्यततःक्षौद्रंचतुःषष्टिपलंक्षिपेत् ॥ १ ॥ दद्याद्गुडतुलांतत्रजलद्रोणद्वयंतथा ॥ घृतभांडेविनिक्षिप्यनिदध्यान्मासमात्रकम् ॥ २ ॥ लोहासवममुंमर्त्यः पिबेदग्निकरंपरम् ॥ पांडुश्वयथुगुल्मानिजठराण्यर्शसांरुजम्

॥ ३ ॥ कुष्ठंप्लीहामयंकंडूंकासंश्वासंभगंदरम् ॥ अरोचकंचग्रहणींहृद्रोगंचविनाशयेत् ॥ ४ ॥

अर्थ–लोहाका चूरण सोंठ मिरच पीपल हरडै वहेडा आंवला अजमायन वायविडंग नागरमोथा चित्रक ये सब सोलहसोलह तोले ॥ ८०० ॥ धायके फूल ८० तोले इन सवका चूरण कर ६४ पलभर शहत मिलाना ॥ १ ॥ पीछे ४०० तोलेभर गुड देकै २०४८ तोलेभर पानीमें सबको मिलाकर घृतके पात्रमें घाल १ महीनाभर धरै ॥ २ ॥ इस लोहासवको मनुष्य पीवै यह अग्निको करता है और पांडु शोजा गुल्म उदररोग ववासीर ॥ ३ ॥ कुष्ठ तिल्लीरोग कंडु खासी. श्वास भगंदर अरोचक ग्रहणी हृद्रोग इन सबको नाश करता है ॥ ४ ॥

मृद्वीकायाःपलशतंचतुर्द्रोणेऽभसःपचेत् ॥ द्रोणशेषेसुशीतेच पूतेतस्मिन्प्रदापयेत् ॥ ५ ॥ तुलेद्वेक्षौद्रखंडाभ्यांधातक्याःप्रस्थमेवच ॥ कंकोलकंलवंगंचफलंजात्यास्तथैवच ॥ ६ ॥ पलांशकंचमरिचंत्वगेलापत्रकेसराः ॥ पिप्पलीचित्रकंचव्यं पिप्पलीमूलरेणुके ॥ ७ ॥ घृतभांडेविनिक्षिप्यचंदनागरुधूपिते ॥ कर्पूरवासितोह्येषग्रहण्यांदीपनःपरः ॥ ८ ॥ अर्शसांनाशनेश्रेष्ठउदावर्तस्यगुल्मनुत् ॥ जठरकृमिकुष्ठानिव्रणानिविविधानिच ॥ ९ ॥ अक्षिरोगशिरोरोगगलरोगांश्चनाशयेत्॥

अर्थ–२०४८ तोलेभर पानीमें ४०० तोलेभर मुनक्कादाखोंको पकावै जब आधा भाग पानी बाकी रहै तब अग्निसे उतार शीतल कर वस्त्रमांहकै छान तिसमें ॥ ५ ॥ शहत ४०० तोले खांड ४०० तोले धायके फूल ६४ तोले और कंकोल लौंग जायफल ॥ ६ ॥ मिरच दालचिनी तेजपात नागकेसर पीपल चित्रक चवक पीपलामूल रेणुकबीज ॥ ७ ॥ इन सबको चंदन और अगरसे धूपित किये घृतके पात्रमें घाल और कपूरकी वासना देवै यह ग्रहणीमें उत्तम दीपन है ॥ ८ ॥ ववासीरके नाशनेमें श्रेष्ठ है उदावर्त और गुल्मको दूर करता है और उदररोग कृमि कुष्ठ अनेक प्रकारके घाव ॥ ९ ॥ नेत्ररोग शिरके रोग और गलके रोग इन सबको नाश करता है ॥

लोध्रंशठीपुष्करमूलमेलामूर्वाविडंगंत्रिफलायवानी ॥८१० ॥ चव्यंप्रियंगुंक्रमुकंविशालांकिराततिक्तंकटुरोहिणींच ॥ भा-

क्षौंनतंचित्रकपिप्पलीनांमूलंसकुष्टातिविषांचपाठाम् ॥११॥ कलिंगकंकेसरमिंद्रसाह्वानंतासिपत्रंमरिचप्लवंच ॥ द्रोणेंऽभसःकर्षसमांश्वपक्त्वापूतेचतुर्भागजलावशेषे ॥ १२ ॥ रसार्धभागंमधुनःप्रदायपक्षंनिधेयोघृतभाजनस्थः ॥ लोध्रासवोऽयंकफपित्तमेहान्क्षिप्रंनिहन्याद्द्विपलप्रयोगात् ॥१३॥ पांड्वामयार्शांस्यरुचिंग्रहण्यादोषंबलासंविविधंचकुष्ठम् ॥

अर्थ—लोध कचूर पोहकरमूल इलायची मरोरफली वायविडंग त्रिफला अजमायन ॥ ८।१० ॥ चवक मालकांगनी सुपारी इंद्रायण चिरायता कुटकी भारंगी तगर चित्रककी जड पीपलामूल कूठ अतीस पाठा ॥ ११ ॥ इंद्रजव नागकेसर अर्जुनवृक्ष धमासा ईख मिरच क्षुद्र नागरमोथा इन सब ओषधोंको एक एक तोलाभर लेकै १०२४ तोलेभर पानीमें मिला पानीको पकावै जब चौथाई भाग बाकी रहै तब ॥ १२ ॥ रससे आधा भाग शहत मिलाकर घृतके पात्रमें घाल १५ दिनपर्यंत धरै यह लोध्रासव कफपितके प्रमेहोंको दो पलके प्रयोगसे शीघ्र नाश करता है ॥ १३ ॥ और पांडु ववासीर अरुचि ग्रहणी कफका दोष अनेक प्रकारके कुष्ठ इन सबोंको नाश करता है ॥

तुलांकुटजमूलस्यमृद्वीकार्धतुलांतथा ॥ १४ ॥ मधुकंपुष्पकाश्मर्यौभागान्दशपलोन्मितान् ॥ चतुर्द्रोणेंऽभसःपक्त्वा क्राथेद्रोणावशेषिते ॥ १५ ॥ धातक्याविंशतिपलंगुडस्यचतुलांक्षिपेत् ॥ मासमात्रंस्थितोभांडेकुटजारिष्टसंज्ञितः ॥१६॥ ज्वरान्प्रशमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णंधनंजयम् ॥

अर्थ—कूडाकी जड ४०० तोले मनुका दाख २०० तोले ॥ १४ ॥ महुवाके फूल कंभारी ये चालीसचालीस तोले इन सबको ४०९६ तोलेभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग पानी बाकी रहै तब ॥ १५ ॥ धायके फूल ८० तोले गुड २०० तोले मिलाकै पात्रमें घाल एक महीनाभर धरै यह कुटजारिष्ट है ॥ १६ ॥ यह सब ज्वरोंको नाश करता है और पेटकी अग्निको तीक्ष्ण करता है ॥

विडंगंग्रंथिकंरास्नाकुटजत्वक्फलानिच ॥ १७ ॥ पाठैलवालुकंधात्रीभागान्पंचपलान्पृथक् ॥ अष्टद्रोणेंऽभसःपक्त्वा

कुर्याद्द्रोणावशेषितम् ॥ १८ ॥ पूतेशीतेक्षिपेत्तत्रक्षौद्रंपल-
शतत्रयम् ॥ धातकींविंशतिपलांत्रिजातंद्विपलंतथा ॥ १९ ॥
प्रियंगुकांचनाराणांसलोध्राणांपलंपलम् ॥ व्योषस्यचपला-
न्यष्टौचूर्णीकृत्यप्रदापयेत् ॥ ८२० ॥ घृतभांडेविनिक्षिप्यमा-
समेकंविधारयेत् ॥ ततःपिबेद्यथार्हंतुजयेद्विद्रधिमूर्च्छितम् २१
ऊरुस्तंभाश्मरीमेहान्प्रत्यष्ठीलाभगंदरान् ॥ गंडमालांहनु-
स्तंभंविडंगारिष्टसंज्ञितः ॥ २२ ॥

अर्थ–वायविडंग पिपलामूल रायसन कूडाकी छाल इंद्रजव ॥१७॥ पाठा एलवा आंवला ये सब वीस वीस तोले लेकै आठ द्रोणभर पानीमें पकावै जब आठमां हिस्सा बाकी रहै ॥ १८ ॥ तब छान और शीतल कर तिसमें ३०० तोले शहत धायके फूल ८० तोले दालचिनी इलायची तेजपात इन्होंका चूरण ८ तोले॥१९॥ प्रियंगु कचनार लोध ये चारचार तोले और सोंठ मिरच पीपल इन्होंका चूरण ३२ तोले इन सबको मिलावै ॥ ८२० ॥ पीछे घृतके पात्रमें घाल एक महीनाभर धरै पीछे यथायोग्य पीवै तो बढ़ा हुआ विद्रधिरोग ॥ २१ ॥ ऊरुस्तंभ पथरी प्रमेह प्रत्यष्ठीला भगंदर गंडमाला हनुस्तंभ इन सबको यह विडंगारिष्ट नाश करता है२२

तुलार्धंदेवदारुस्याद्वासाचपलविंशतिः ॥ मंजिष्ठेंद्रयवादंती
तगरंरजनीद्वयम् ॥ २३ ॥ रास्नाकृमिघ्नंमुस्तंचशिरीषंखदि-
रार्जुनौ ॥ भागान्दशपलान्दद्याद्यवान्यावत्सकस्यच ॥२४॥
चंदनस्यगुडूच्याश्चरोहिण्याश्चित्रकस्यच ॥ भागानष्टपलाने-
तानष्टद्रोणेऽभसःपचेत् ॥ २५ ॥ द्रोणशेषेकषायेचपूतेशीते
प्रदापयेत् ॥ धातक्याःषोडशपलंमाक्षिकस्यतुलात्रयम्॥२६॥
व्योषस्यद्विपलंदद्यात्त्रिजातस्यचतुःपलम् ॥ चतुःपलंप्रियंगुश्च
द्विपलंनागकेशरम् ॥ २७ ॥ सर्वाण्येतानिसंचूर्ण्यघृतभांडे
निधापयेत् ॥ मासादूर्ध्वंपिबेदेनंप्रमेहंहंतिदुर्जयम् ॥ २८ ॥
वातरोगान्ग्रहण्यर्शोमूत्रकृच्छ्राणिनाशयेत् ॥ देवदार्वादिको-
रिष्टोदद्रुकुष्ठविनाशनः ॥ २९ ॥

अर्थ–देवदार २०० तोले वांसा ८० तोले और मजीठ इंद्रजव जमालगोटाकी जड तगर हलदी दारुहलदी ॥ २३ ॥ रायसन वायविडंग नागरमोथा शिरस खैर कौहवृक्ष ये सब चालीसचालीस तोले और अजमायन कूडाकी छाल ॥ २४ ॥ सुपेद चंदन गिलोय कुटकी चित्रक ये सब वत्तीसवत्तीस तोले इन सर्वोको आठ द्रोणभर पानीमें पकावै ॥ २५ ॥ जब आठमां हिस्सा बाकी रहै तब छान और शीतल कर तिसमें धायके फूल ६४ तोले शहत १२०० तोले ॥ २६ ॥ सोंठ मिरच पीपल इनका चूरण ८ तोले दालचिनी तेजपात इलायची इनका चूरण १६ तोले प्रियंगु १६ तोले नागकेशर ८ तोले ॥ २७ ॥ इन सर्वोका चूरण कर घृतके पात्रमें घाल धरै एक महीनासे उपरंत पीवै यह देवदार्वादि अरिष्ट दारुण प्रमेह ॥२८॥ वातरोग ग्रहणी ववासीर मूत्रकृच्छ्र दाद कुष्ठ इन सबको नाश करता है२९

खदिरस्यतुलार्धंतुदेवदारुचतत्समम् ॥ बाकुचीद्वादशपलादार्वीस्यात्पलविंशतिः ॥ ८३० ॥ त्रिफलाविंशतिपलाह्यष्टद्रोणेऽभसःपचेत् ॥ कषायेद्रोणशेषेचपूतशीतेविनिक्षिपेत् ॥३१॥ तुलाद्वयंमाक्षिकस्यपलैकाशर्करामता॥धातक्याविंशतिपलंकंकोलंनागकेशरम् ॥ ३२ ॥ जातीफलंलवंगैलात्वक्पत्राणि पृथक्पृथक् ॥ पलोन्मितानिकृष्णायादद्यात्पलचतुष्टयम्॥३३॥ घृतभांडेविनिक्षिप्यमासादूर्ध्वंपिबेत्ततः ॥ महाकुष्ठानिहृद्रोगंपांडुरोगार्बुदेतथा ॥ ३४ ॥ गुल्मंग्रंथिंकृमीञ्श्वासंकासंप्लीहोदरंतथा ॥ एषवैखदिरारिष्टःसर्वकुष्ठनिवारणः ॥ ३५ ॥

अर्थ–खैरकी छाल२००तोले देवदार२००तोले बावची४८तोले दारुहलदी ८८ तोले ॥८३०॥ त्रिफला ८० तोले इन सबको आठ द्रोणभर पानीमें पकावै जब आठमां हिस्सा बाकी रहै तब छान और शीतल कर तिसमें ॥३१॥ शहत ८०० तोले खांड ४०० तोले धायके फूल ८० तोले और कंकोल नागकेशर ॥३२॥ जायफल लौंग इलायची दालचिनी तेजपात ये सब चारचार तोले पीपल १६ तोले॥३३॥ इन सबको मिला और घृतके पात्रमें घाल एक महीनासे उपरंत पीवै यह महाकुष्ठ हृद्रोग पांडुरोग अर्बुदरोग ॥ ३४ ॥ गुल्म ग्रंथि कृमिरोग श्वास खासी तिल्लीरोग उदररोग इन सबको नाश करता है यह खदिरारिष्ट सब कुष्ठोंको दूर करता है३५

तुलाद्वयंचवव्बूल्याश्चतुर्द्रोणेजलेपचेत् ॥ द्रोणशेषेरसेशीते

गुडस्यत्रितुलांक्षिपेत् ॥ ३६ ॥ धातकींषोडशपलांकृष्णांच द्विपलांतथा ॥ जातीफलानिकंकोलमेलात्वक्पत्रकेसरम् ॥ ३७ ॥ लवंगंमरिचंचैवपलिकान्युपकल्पयेत् ॥ मासंभांडे स्थितस्त्वेषवव्बूलारिष्टकोजयेत् ॥ ३८ ॥ क्षयकुष्ठमतीसा-रप्रमेहश्वासकासनुत् ॥

अर्थ–वव्बूलकी छाल ८०० तोलेभर लेकै चार द्रोणभर पानीमें पकावै जब चौथाई भाग वाकी रहै तव रसको शीतल कर तिसमें १२०० तोले गुड मिलावै ॥ ३६ ॥ धायके फूल ६४ तोले पीपल ८ तोले और जायफल कंकोल इलायची दालचिनी तेजपात नागकेसर ॥ ३७ ॥ लौंग मिरच ये सव चारचार तोले इन सबको पात्रमें घाल एक महीनापर्यंत धरै यह वव्बूलारिष्ट ॥३८॥ क्षय कुष्ठ अतीसार प्रमेह श्वास खासी इन सबको नाश करता है ॥

द्राक्षातुलार्धंद्विद्रोणेजलस्यविपचेत्सुधीः ॥ ३९ ॥ पादशे-षेकषायेचपूतेशीतेविनिक्षिपेत् ॥ गुडस्यद्वितुलांतत्रत्वगेला-पत्रकेसरम् ॥ ८४० ॥ प्रियंगुंमरिचंकृष्णांविडंगंचेतिचूर्णये-त् ॥ पृथक्पलोन्मितैर्भागैस्ततोभांडेनिधापयेत् ॥ ४१ ॥ स्थापयित्वाततोमासंततोजातरसंपिबेत् ॥ उरःक्षतंक्षयं हंतिकासश्वासगलामयान् ॥ ४२ ॥ द्राक्षारिष्टाह्वयःप्रोक्तो बलकृन्मलशोधनः ॥

अर्थ–२००तोलेभर दाखोंको २०४८ तोलेभर पानीमें वैद्य पकावै ॥ ३९ ॥ जव चौथाई भाग बाकी रहै तब छान और शीतल कर तिसमें गुड ८०० तोले और दालचिनी इलायची तेजपात नागकेसर ॥ ८४० ॥ प्रियंगु मिरच पीपल वायविडंग ये सब चारचार तोलेभर लेकै चूरण कर पात्रमें घालै ॥ ४१ ॥ पीछे एक महीनापर्यंत धरकै जब जातरस होवै तब पीवै यह उरःक्षत क्षय खासी श्वास गलके रोग इन्होंको दूर करता है ॥ ४२ ॥ यह द्राक्षारिष्ट कहा है बलको करता है और मलको शोधता है ॥

रोहीतकतुलामेकांचतुर्द्रोणेजलेपचेत् ॥ ४३ ॥ पादशेषेरसे शीतेपूतेपलशतद्वयम् ॥ दद्याद्गुडस्यधातक्याःपलषोडशिका

मता ॥ ४४ ॥ पंचकोलंत्रिजातंचत्रिफलांचविनिक्षिपेत् ॥ चूर्णयित्वापलांशेनततोभांडेनिधापयेत् ॥ ४५ ॥ मासादूर्ध्वंचपिबतांगुदजायांतिसंक्षयम् ॥ ग्रहणीपांडुहृद्रोगप्लीहगुल्मोदराणिच ॥ कुष्ठशोफारुचिहरोरोहितारिष्टसंज्ञकः ॥ ४६ ॥

अर्थ–रक्तरोहिडा ४०० तोलेभर लेकै चार द्रोणभर पानीमें पकावै ॥ ४३ ॥ जब चौथाई भाग बाकी रहै तब छान और शीतल कर गुड ८०० तोले धायके फूल ६४ तोले ॥ ४४ ॥ पंचकोल अर्थात् पीपल पीपलामूल चवक चित्रक सोंठ त्रिजात अर्थात् इलायची दालचिनी तेजपात हरडै बहेडा आंवला ये सब चार-चार तोलेभर ले चूरण कर मिला पीछे पात्रमें घालै ॥ ४५ ॥ एक महीनासे उपरंत पीनेवाले मनुष्योंकै गुदाके रोग ग्रहणी पांडुरोग हृद्रोग तिल्लीरोग गुल्म उदररोग कुष्ठ शोजा अरुचि इन सर्वोको यह रोहितारिष्ट नाश करता है ॥ ४६ ॥

पर्ण्यौबृहत्यौगोकंटोबिल्वोग्निमंथकोरलुः ॥ पाटलाकाश्मरीचेतिदशमूलमिहोच्यते ॥ ४७ ॥ दशमूलानिकुर्वीतभागैः पंचपलैःपृथक् ॥ पंचविंशत्पलंकुर्याच्चित्रकंपौष्करंतथा ॥४८॥ कुर्याद्विंशत्पलंलोध्रंगुडूचीतत्समाभवेत् ॥ पलैःषोडशभिर्धात्रीरविसंख्यैर्दुरालभा ॥ ४९ ॥ खदिरोबीजसारश्चपथ्याचेतिपृथक्पलैः ॥ अष्टभिर्गणितंकुष्टंमंजिष्ठादेवदारुच ॥८५०॥ विडंगंमधुकंभार्ङ्गिकपित्थोऽक्षःपुनर्नवा ॥ चव्यंमांसीप्रियंगुश्चसारिवाकृष्णजीरकः ॥ ५१ ॥ त्रिवृतारेणुकारास्नापिप्पलीक्रमुकःशठी ॥ हरिद्राशतपुष्पाचपद्मकंनागकेशरम् ॥५२॥ मुस्तमिंद्रयवाःशृंगीजीवकर्षभकौतथा ॥ मेदाचान्यामहामेदाकाकोल्यौऋद्धिवृद्धिके ॥ ५३ ॥ कुर्यात्पृथग्द्विपलिकान्पचेदष्टगुणेजले ॥ चतुर्थांशंशृतंनीत्वामृद्भांडेसन्निधापयेत् ॥ ५४ ॥ चतुःषष्टिपलांद्राक्षांपचेन्नीरेचतुर्गुणे ॥ त्रिपादशेषं शीतंचपूर्वक्वाथेशृतंक्षिपेत् ॥ ५५ ॥ द्वात्रिंशत्पलिकंक्षौद्रंदद्याद्गुडचतुःशतम् ॥ त्रिंशत्पलानिधातक्याःकंकोलंजलचं-

दनम् ॥ ५६ ॥ जातीफलंलवंगंचत्वगेलापत्रकेसरम् ॥ पिप्पलीचेतिसंचूर्ण्यभागैर्द्विपलिकैःपृथक् ॥ ५७ ॥ शाणमात्रांचकस्तूरींसर्वमेकत्रनिक्षिपेत् ॥ भूमौनिखातयेद्भांडंततो जातरसंपिबेत् ॥ ५८ ॥ कतकस्यफलंक्षिप्त्वारसंनिर्मलतांनयेत् ॥ ग्रहणीमरुचिंश्वासंकासंगुल्मंभगंदरम् ॥ ५९ ॥ वातव्याधिंक्षयंछर्दिपाण्डुरोगंचकामलाम् ॥ कुष्ठान्यर्शांसिमेहांश्चमंदाग्निमुदराणिच ॥८६०॥ शर्करामश्मरीमत्रकृच्छ्रंधातुक्षयंजयेत् ॥ कृशानांपुष्टिजननोवंध्यानांगर्भदःपरः ॥६१॥ अरिष्टोदशमूलाख्यस्तेजःशुक्रबलप्रदः ॥

अर्थ—सालपर्णी पृष्टपर्णी दोनों कटेली गोखरू वेलगिरी अरनी सोनापाठा शिरस कंभारी यह दशमूल कहाता है ॥ ४७ ॥ दशमूलके दशों ओषध दोदो तोलें चित्रक १०० तोले पोहकरमूल १०० तोले ॥ ४८ ॥ लोध ८० तोले गिलोय ८० तोले आंवला ६४ तोले धमासा ४८ तोले ॥ ४९ ॥ खैर विजोरा हरडै ये बत्तीसबत्तीस तोले और कूठ मजीठ देवदार ॥ ८५० ॥ वायविडंग मुलहटी भारंगी कैथ वहेडा साठी चव्य वालछड प्रियंगु सारिवा अनंतमूल स्याहजीरा ॥ ५१ ॥ निशोत रेणुकवीज रायसन पीपल सुपारी कचूर हलदी सौंफ पद्माक नागकेसर ॥ ५२ ॥ नागरमोथा इंद्रजव काकडाशींगी जीवक ऋषभक मेदा महामेदा काकोली क्षीरकाकोली ऋद्धि वृद्धि ॥ ५३ ॥ ये सब आठआठ तोले आठगुना पानीमें पकावै जव चौथाई हिस्सा काढा रहै तव लेकै माटीके पात्रमें घाल धरै ॥ ५४ ॥ चौंसठ पलभर दाखोंको चौगुने पानीमें पकावै जव तीसरा हिस्सा बाकी रहै तब शीतल कर पहले क्राथमें मिलावै ॥ ५५ ॥ शहत १२८ तोले गुड ४०० तोले धायके फूल १२० तोले और कंकोल नेत्रवाला चंदन ॥ ५६ ॥ जायफल लौंग दालचिनी इलायची तेजपात नागकेसर पीपल ये सब आठआठ तोले लेकै चूरण कर ॥ ५७ ॥ और ४ मासे कस्तूरी इन सबको एक जगह मिलावै पीछे पात्रमें घाल पृथिवीमें पात्रकों गाडै पीछे जब रस उपजै तब पीवै ॥ ५८ ॥ निर्मलीके बीजको मिला रसको निर्मल कर पीवै यह ग्रहणी अरुचि श्वास खासी गुल्म भगंदर ॥ ५९ वातव्याधि क्षय छर्दि पांडुरोग कामला सब कुष्ठ सब ववासीर प्रमेह मंदाग्नि उदररोग ॥ ८६० ॥ शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र धातुक्षय इन

सबको जीतता है कृशमनुष्योंको पुष्ट करता है वंध्या स्त्रियोंको गर्भ देता है ॥६१॥ दशमूलनामवाला अरिष्ट है यह तेज वीर्य बल इनको देता है ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे आसवारिष्टकल्पना नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ एकादशोऽध्यायः ।

स्वर्णंतारंताम्रमारंनागवंगौचतीक्ष्णकम् ॥ धातवःसप्तविज्ञेयास्ततस्तान्शोधयेद्बुधः ॥६२॥ स्वर्णताराऽरताम्राणांपत्राण्यग्नौप्रतापयेत् ॥ निषिंचेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचकांजिके ॥६३॥ गोमूत्रेचकुलत्थानांकषायेचत्रिधात्रिधा ॥ एवंस्वर्णादिलोहानांविशुद्धिःसंप्रजायते ॥ ६४ ॥ नागवंगौप्रतप्तौचगलितौतौनिषेचयेत्॥त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्याद्रविदुग्धेनचत्रिधा ॥६५

अर्थ–सोना चांदी तांबा पीतल जस्त नाम सीसा रांग लोहा ये सात धातु है तिन्होंको वैद्य शोधै ॥६२॥ सोना चांदी पीतल तांबा इन्होंके पत्रोंको अग्निपर तपावै पीछे गरम गरम करकै तेल मठा कांजी इन्होंमें ॥६३॥ और गोमूत्रमें वा कुलथीके काढेमें तीनतीनवार बुझावै ऐसे सोना आदिकी शुद्धि होती है ॥ ६४ ॥ सीसा और रांगको गरमकर गालकै तीनतीनवार बुझावै और आकके दूधसे तीनतीनवार बुझावै ॥ ६५ ॥

स्वर्णाच्चद्विगुणंसूतमम्लेनसहमर्दयेत् ॥ तद्गोलकसमंगंधंनिदध्यादधरोत्तरम् ॥ ६६ ॥ गोलकंचततोरुंध्याच्छरावदृढसंपुटे ॥ त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवंचतुर्दश ॥ ६७ ॥ निरुत्थंजायतेभस्मगंधोदेयःपुनःपुनः ॥

अर्थ–सोनासे दुगुना पारा लेकै नींबूका रसके संग खरल करै तिसके गोलेमें बराबर भाग गंधक ऊपर और नीचै देकै ॥ ६६ ॥ सकोराके दृढसंपुटमें गोलाको धर वनके तीस गोसोंसे पुट देवै ऐसे चौदह पुट देवै ॥ ६७ ॥ वारंवार गंधक देनेसे सुंदर भस्म बनता है ॥

कांचनेगालितेनागंषोडशांशेननिक्षिपेत् ॥ ६८ ॥ चूर्णयित्वातथाम्लेनघृष्ट्वाकृत्वाचगोलकम् ॥ गोलकेनसमंगंधंदत्वा चैवाधरोत्तरम् ॥ ६९ ॥ शरावसंपुटेधृत्वापुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः॥ एवंसप्तपुटैर्हेमनिरुत्थंभस्मजायते ॥ ८७० ॥

अर्थ–सोनाको गाल तिसमे सोलहमां हिस्सा सीसा घाल ॥ ६८ ॥ तिसका चूरण कर नींबूके रसमें पीस गोला बनाय और गोलाके समान गंधक नीचै और उपर देकै ॥ ६९ ॥ सकोराके संपुटमें धर वनके तीस गोसोंसे पुट देवै ऐसे सात पुटोंसे सोनाका उत्तम भस्म वनता है ॥ ८७० ॥

कांचनाररसैर्घृष्ट्वासमसूतकगंधयोः ॥ कज्जलीहेमपत्राणि लेपयेत्सममात्रया ॥ ७१ ॥ कांचनारत्वचःकल्कंमूषायुग्मं प्रकल्पयेत् ॥ धृत्वातत्संपुटेगोलंमृन्मूषासंपुटेचतत् ॥ ७२ ॥ निधायसंधिरोधंचकृत्वासंशोष्यगोमयैः ॥ वह्निंखरतरंकुर्यादेवंदद्यात्पुटत्रयम् ॥ ७३ ॥ निरुत्थंजायतेभस्मसर्वकार्येषु योजयेत् ॥ कांचनारप्रकारेणलांगलीहंतिकांचनम् ॥ ७४ ॥ ज्वालामुखीतथाहन्यात्तथाहंतिमनःशिला ॥

अर्थ–पारा और गंधक बराबर भाग लेकै कचनारके रसमें पीस कज्जली बनावै तिस कज्जलीके बराबर भाग सोनाके पत्रे लेकै तिन पत्रोंपर कज्जलीका लेप करै ॥ ७१ ॥ कचनारकी छालका कल्क कर दो मूंषे अर्थात् घडिये बनावै तिन्होंके संपुटमें गोला धर तिस संपुटको माटीके घडियोंके संपुटमें धरै ॥ ७२ ॥ संधियोंके रोककर और गोवरसे अच्छी तरह सुखाय तेज अग्निको देवै ऐसे तीन पुट देवै ॥७३॥ तब सुंदर भस्म बनता है यह सब कार्योंमें युक्त करना कचनारके प्रकार करकै कलहारी सोनाको मारती है ॥ ७४ ॥ अरनीभी सोनाको मारती है और मनशिलभी सोनाको मारता है ॥

शिलासिंदूरयोश्चूर्णंसमयोरर्कदुग्धकैः ॥ ७५ ॥ सप्तैवभावना दद्याच्छोषयेच्चपुनःपुनः ॥ ततस्तुगालितेहेम्निकल्कोयंदीयते समः ॥ ७६ ॥ पुनर्धमेदतितरांयथाकल्कोविलीयते ॥ एवं वेलात्रयंदद्यात्कल्कंहेममृतिर्भवेत् ॥ ७७ ॥

अर्थ–मनशिल सिंदूर ये दोनों बराबर भाग ले बारीक चूरण कर आकके दूधमें ॥ ७५ ॥ सात भावना देकै वारंवार सुखाता जावै पीछे गाला हुआ सोनामें बराबर भाग यह कल्क देना ॥ ७६ ॥ फिर अत्यंत धमै जैसे कल्क लीन हो जावै ऐसे तीनवार कल्क देनेंसे सोना मरजाता है ॥ ७७ ॥

पारावतमलैर्लिंपेदथवाकुक्कुटोद्भवैः ॥ हेमपत्राणितेषांचप्रदद्यादधरोत्तरम् ॥ ७८ ॥ गंधचूर्णसमंदत्वाशरावयुगसंपुटे ॥ प्रदद्यात्कुक्कुटपुटंपंचभिर्गोमयोपलैः ॥ ७९ ॥ एवंनवपुटान्दद्याद्दशमंचमहापुटम् ॥ त्रिंशद्वनोपलैर्देयंजायतेहेमभस्मकम् ॥ ८८० ॥ सुवर्णंचभवेत्स्वादुतिक्तंस्निग्धंहिमंगुरु ॥ बुद्धिविद्यास्मृतिकरंविषहारिरसायनम् ॥ ८१ ॥

अर्थ–सोनाके पत्रे बनाय तिन्होंपर परेवाके अथवा मुर्गाके वींटसे लेपकर तिन पत्रोंकै बराबर भाग गंधक लेकै चूरण कर नीचैऊपर धरै ॥ ७८ ॥ सकोंराके संपुटमें घाल गोवरके पांच उपलोंसे कुक्कुटपुट देवै ॥ ७९ ॥ ऐसे नव पुट देकै दशमां महापुट तीस वनके उपलोंसे देवै ऐसे सोनाका भस्म हो जाता है ॥ ८८० ॥ सोन्ता स्वादु है कडुआ है चिकना है शीतल है भारी है बुद्धि विद्या स्मृति इन्होंको देता है विषको हरता है और बुढापाको दूर करता है ॥ ८१ ॥

भागैकंतालकंमर्द्ययाममम्लेनकेनचित् ॥ तेनभागत्रयंतारपत्राणिपरिलेपयेत् ॥ ८२ ॥ धृत्वामूषापुटेरुद्ध्वापुटेत्त्रिंशद्वनोपलैः ॥ समुद्धृत्यपुनस्तालंदत्वारुध्वापुटेपचेत् ॥ ८३ ॥ एवं चतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्रजायते ॥

अर्थ–एक भाग हरताल लेकै नींबूके रसमें एक पहर खरल करै तिसकरकै तीन भाग चांदीके पत्रोंपर लेप करै ॥ ८२ ॥ पीछे मूषापुटमें धरकै रोककै बनके तीस उपलोंसे पुट देवै निकास फिर हरताल देकै रोकके पुटमें पकावै ॥ ८३ ॥ ऐसे चौदह पुट देनेसे चांदीका भस्म बनता है ॥

स्नुहीक्षीरेणसंपिष्टंमाक्षिकंतेनलेपयेत् ॥ ८४ ॥ तालकस्य प्रकारेणतारपत्राणिबुद्धिमान् ॥ पुटेच्चतुर्दशपुटैस्तारंभस्मप्रजायते ॥ ८५ ॥

अर्थ–एक भाग सोनामाखी लेकै चूरण कर थोहरके दूधमें एक पहर खरल कर तिसका लेप ॥ ८४ ॥ हरतालकीतरह चांदीके पत्रोंपर करै ऐसे चौदह पुट देनेसे चांदीका भस्म वनता है ॥ ८५ ॥

सूक्ष्माणिताम्रपत्राणिकृत्वासंस्वेदयेद्बुधः ॥ वासरत्रयमम्ले-नततःखल्वेविनिक्षिपेत् ॥ ८६ ॥ पादांशंसूतकंदत्वायाममम्लेनमर्दयेत् ॥ ततउद्धृत्यपत्राणिलेपयेद्द्विगुणेनच ॥ ८७ ॥ गंधकेनाम्लघृष्टेनतस्यकुर्याच्चगोलकम् ॥ ततःपिष्ट्वाचमीनाक्षींचांगेरींवापुनर्नवाम् ॥ ८८ ॥ तत्कल्केनबहिर्गोलंलेपयेदंगुलोन्मितम् ॥ धृत्वातद्गोलकंभांडेशरावेणचरोधयेत् ॥ ८९ ॥ वालुकाभिःप्रपूर्याथविभूतिलवणांबुभिः ॥ दत्वाभांडमुखेमुद्रांततश्चुल्ल्यांविपाचयेत् ॥ ९० ॥ क्रमवृद्ध्याग्निनासम्यग्यावद्यामचतुष्टयम् ॥ स्वांगशीतलमुद्धृत्यमर्दयेत्सूरणद्रवैः ॥ ९१ ॥ दिनैकंगोलकंकुर्यादर्धगंधेनलेपयेत् ॥ सघृतेनततो मूषापुटेगजपुटेपचेत् ॥ ९२ ॥ स्वांगशीतंसमुद्धृत्यमृतंताम्रं शुभंभवेत् ॥ वांतिंभ्रांतिंक्लमंमूर्च्छांनकरोतिकदाचन ॥ ९३ ॥

अर्थ–तांवाके मिहीन पत्रे कर वैद्य नींबूके रसमें घाल तीन दिन हलका हलका अग्नि देकै पकावै पीछे खरलमें घाल ॥ ८६ ॥ चौथाई भाग पारा मिला नींबूके रसमें एक पहर खरल करै पीछे पत्रोंके गोलेकों निकास दुगुना भाग ॥ ८७ ॥ और नींबूके रसमें घिसा हुआ ऐसे गंधक करकै लेप करै पीछे मकोह अथवा चूका अथवा साठी इनको पीस ॥ ८८ ॥ कल्क बनाकर तिसकरकै गोलापर दो अंगुल लेप करै तिस गोलाको पात्रमें घाल सकोरासे पात्रके मुखको बंध करै ॥ ८९ ॥ पीछे वालूरेतसे पूरित कर राख नमक पानी इन्होंसे पात्रके मुखको मुद्रित कर पीछे चुल्हीपर चढावै ॥ ८९० ॥ क्रमवृद्धिसें अग्निकरकै अच्छी तरह चार पहरपर्यंत पकावै जब अच्छी तरह शीतल होजावै तव जमीकंदके रससे मर्दित करै ॥ ९१ ॥ एक दिनतक पीछे गोला कर आधा भाग गंधक और घृत करकै गोलापर लेप करै पीछे मूषासंपुटमें धर गजपुटमें पकावै ॥ ९२ ॥ अच्छी तरह शीतल हुआको निकासै तब तांबाका सुंदर भस्म वनता है यह छर्दि भ्रांति ग्लानि मूर्च्छा इन्होंको कभीभी नहीं करता है ॥ ९३ ॥

अर्कक्षीरेणसंपिष्टोगंधकस्तेनलेपयेत् ॥ समेनारस्यपत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः ॥ ९४ ॥ ततोमूषापुटेधृत्वापुटेद्गजपुटेनच ॥ एवंपुटद्वयेनैवभस्मारंभवतिध्रुवम् ॥ ९५ ॥ आरवत्कांस्यमप्येवंभस्मतांयातिनिश्चितम् ॥ अर्कक्षीरंवटक्षीरंनिर्गुंडीक्षीरिकातथा ॥९६॥ ताम्ररीतिध्वनिवधेसमगंधकयोगतः ॥

अर्थ–पीतलके पत्रे बना तिनको गरम कर नींबूके रसमें सात वार अथवा तीन वार बुझाय शुद्ध कर तिन पत्रोंपर बराबर भाग गंधकको आकके दूधमें पीस लेप करै ॥ ९४ ॥ पीछे मूषापुटमें धर गजपुट करकै पकावै ऐसे दो पुटोंकरकै पीतलका भस्म निश्चय हो जाता है ॥ ९५ ॥ पीतलकी तरह कांसीका भस्मभी निश्चय बनता है तांवा पीतल कांसी इन्होंके मारनेविषैं दूसरी विधि कहते है तिन्होंके बरावर भाग गंधक लेकै आकके दूधमें अथवा वडके दूधमें वा गायके दूधमें वा संभालूके रसमें ॥ ९६ ॥ पीस लेप कर अग्निपुट देनेसे भस्म वनता है ॥

तांबूलीरससंपिष्टशिलालेपात्पुनःपुनः ॥ ९७ ॥
द्वात्रिंशद्भिःपुटैर्नागोनिरुत्थोयातिभस्मताम् ॥

अर्थ–मनशिलको नागरपानके रसमें पीस वारंवार लेप करनेसे ॥ ९७ ॥ बत्तीस पुटोंकरकै सीसाका उत्तम भस्म वनता है ॥

अश्वत्थचिंचात्वक्चूर्णंचतुर्थांशेननिक्षिपेत् ॥ ९८ ॥ मृत्पात्रेद्राविතेनागेलोहदर्व्याप्रचालयेत् ॥ यामैकेनभवेद्भस्मतत्तुल्यांचमनःशिलाम् ॥ ९९ ॥ कांजिकेनद्वयंपिष्ट्वापचेद्दृढपुटेनच ॥ स्वांगशीतंपुनःपिष्ट्वाशिलयाकांजिकेनच ॥ ९०० ॥ पुनःपुटेच्छरावाभ्यामेवंषष्टिपुटैर्मृतिः ॥

अर्थ–पीपलकी छाल अमलीकी छालके चूरणको सीसासे चौथाई भाग लेकै ॥ ९८ ॥ माटीके पात्रमें गाले हुये सीसेमें मिला लोहाकी कडछीसे चलावै इसप्रकार एक पहर करकै शीसाका भस्म वनता है भस्मके बरावर भाग मनशिल लेकै ॥ ९९ ॥ दोनोंको कांजीसे पीस दृढ पुटकरकै पकावै जब अच्छी तरह शीतल होवै तब फिर मनशिल मिला कांजीसे पीसै ॥ ९०० ॥ फिर दो शकोरोंमें धर पुट देवै ऐसे साठ पुटोंकरकै शीसा मरता है ॥

मृत्पात्रेद्राविते वंगे चिंचाश्वत्थत्वचोरजः ॥ १ ॥ क्षिप्त्वातेन चतुर्थांशमयोदर्व्याप्रचालयेत् ॥ ततोद्वियाममात्रेणवंगभस्मप्रजायते ॥ २ ॥ अथभस्मसमंतालंक्षिप्त्वाम्लेनप्रमर्दयेत् ॥ ततोगजपुटेपक्त्वापुनरम्लेनमर्दयेत् ॥ ३ ॥ तालेनदशमांशेनयाममेकंततःपुटेत् ॥ एवंदशपुटैःपक्वोवंगस्तुम्रियतेध्रुवम् ॥ ४ ॥

अर्थ-माटीके पात्रको चुल्हीपर धर तिसमें रांगको गाल तिसमें अमलीकी छाल और पीपलकी छालका चूरण ॥ १ ॥ रांगसे चौथाई भाग मिला पीछे लोहाकी कडछीसे चलावै पीछे २ पहरमें रांगका भस्म बनता है ॥ २ ॥ पीछे भस्मके बराबर हरताल मिला नींबूके रसमें खरल करै पीछे गजपुटमें पकावै फिर नींबूके रसमें एक पहर खरल करै ॥ ३ ॥ पीछे दशमां हिस्सा हरताल मिलाकै पुट देवै ऐसे दश पुटोंसे पका हुआ रांग निश्चय मरता है ॥ ४ ॥

शुद्धंलोहभवंचूर्णपातालगरुडीरसैः ॥ मर्दयित्वापुटेद्वह्नौदद्यादेवंपुटत्रयम् ॥ ५ ॥ पुटत्रयंकुमार्याश्चकुठारच्छिन्नकारसैः ॥ पुटषट्कंततोदद्यादेवंतीक्ष्णमृतिर्भवेत् ॥ ६ ॥

अर्थ-पोहलाद आदि लोहाके चूरणको कडवी तोरीके रसमें खरल कर अग्निमें पुट देवै ऐसे तीन पुट देवै ॥ ५ ॥ पीछे कुवारपाठाके रसमें और वनतुलसीके रसमें अग्निपुट देवै ऐसे छह पुट देनेसे लोहा मरता है ॥ ६ ॥

क्षिपेद्द्वादशमांशेनपारदंतीक्ष्णलोहतः ॥ मर्दयेत्कन्यकाद्रावैर्यामयुग्मंततःपुटेत् ॥ ७ ॥ एवंसप्तपुटैर्मृत्युंलोहचूर्णमवाप्नुयात् ॥ रसैःकुठारच्छिन्नायाःपातालगरुडीरसैः ॥ ८ ॥ स्तन्येनचार्कदुग्धेनतीक्ष्णस्यैवंमृतिर्भवेत् ॥

अर्थ-तीक्ष्ण लोहासे बारमां हिस्सा सिंगरफ मिला कुवारपाठाके रसमें दो पहर खरलकर पीछे पुट देवै ॥ ७ ॥ ऐसे सात पुटोंकरकै लोहाका चूरण मरता है दूसरी विधि कहते है कडवीतोरीके रसमें वा बनतुलसीके रसमें ॥ ८ ॥ गायके दूधमें वा आकके दूधमें लोहाके चूरणको खरलकर सात पुट देनेसे लोहा मरता है ॥

सूतकद्विगुणंगंधंदत्वाकुर्याच्चकज्जलीम् ॥ ९ ॥ द्वयोःसमं लोहचूर्णमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ यामयुग्मंततःपिंडंकृत्वाताम्रस्यपात्रके ॥ ९१० ॥ घर्मेधृत्वाऽऽरुबूकस्यपत्रैराच्छादयेद्बुधः ॥ यामार्धेनोष्णताभूयाद्धान्यराशौन्यसेत्ततः ॥ ११ ॥ दत्वोपरिशरावंतुत्रिदिनांतेसमुद्धरेत् ॥ पिष्ट्वाचगालयेद्वस्त्रादेवं वारितरंभवेत् ॥ १२ ॥ एवंसर्वाणिलोहानिस्वर्णादीन्यपि गालयेत् ॥ शिलागंधार्कदुग्धाक्ताःस्वर्णवासर्वधातवः ॥१३॥ म्रियंतेद्वादशपुटैःसत्यंगुरुवचोयथा ॥

अर्थ—पारा एक भाग गंधक दो भाग ऐसे लेकै कजली करै ॥ ९ ॥ दोनोंके बराबर लोहाका चूरण मिला कुवारपाठाके रसमें २ प्रहर मर्दित करै पीछे गोला बनाय तांवाके पात्रमें घाल ॥ ९१० ॥ घाममें धर अरंडके पत्तोंसे ढकै आधा प्रहर करकै जब गरमाई उपजै तब अन्नके समूहमें स्थापित करै ॥ ११ ॥ और सकोरासे ढकै तीन दिनके अंतमें निकास और पीस वस्त्रमांहकै छानै ऐसे पानीमें तरनेवाला होता है ॥ १२ ॥ ऐसे सब लोहोंको और सोना आदि धातुओंकोभी भस्म वनानी मनशिल वा गंधक इन दोनोंको आकके दूधमै पीस सोना आदि सब धातुओंपर लेप करै ॥ १३ ॥ पीछे वारह पुट देनेसे सब धातु मरते हैं यह सत्य है जैसे गुरुका वचन है तैसे ॥

माक्षिकंतुत्थकाभ्रौचनीलांजनशिलालकाः ॥ १४ ॥
रसकश्चेतिविज्ञेयाएतेसप्तोपधातवः ॥

अर्थ—सोनामाखी नीलाथोथा भोडल सुरमा मनशिल हरताल ॥ १४ ॥ खपरिया ये सात उपधातु हैं ॥

माक्षिकस्यत्रयोभागाभागैकंसैंधवस्यच ॥ १५ ॥ मातुलुंगद्रवैर्वाथजंबीरोत्थद्रवैःपचेत् ॥ चालयेल्लोहजेपात्रेयावत्पात्रंसुलोहितम् ॥ १६ ॥ भवेत्ततस्तुसंशुद्धिंस्वर्णमाक्षिकमृच्छति॥ कुलत्थस्यकषायेणघृष्टातैलेनवापुटेत् ॥ १७ ॥ तक्रेणवाजमूत्रेणम्रियतेस्वर्णमाक्षिकम् ॥

अर्थ—सोनामाखी तीन भाग सेंधानमक एक भाग ॥ १५ ॥ इनको बिजोराके

रसमें अथवा जंभीरी नींबूके रसमें पकावै और लोहाके पात्रमें चलाता रहै जब लोहपात्र अच्छी तरह लाल होवै ॥ १६ ॥ तब सोनामाखी शुद्ध होती है कुलथीके काढे करकै अथवा तेलकरकै घिस पुट देवै ॥ १७ ॥ मट्ठाकरकै अथवा बकराके मूत्रकरकै खरलकर सकोराके संपुटमें धर अग्निपुट देनेसे सोनामाखीका भस्म बनता है ॥

कर्कोटीमेषशृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंबीरजैर्दिनम् ॥ १८ ॥
भावयेदातपेतीव्रेविमलाशुद्ध्यतिध्रुवम् ॥

अर्थ–रूपामाखीका चूरण कर बांझककोडी मेढासिंगी विजोरा इन्होंके रसोंमें ॥ १८ ॥ एक दिन खरलकर तेजघाममें भावना देवै तो निश्चय शुद्धि होती है ॥

विष्ठयामर्दयेत्तुत्थंमार्जारककपोतयोः ॥ १९ ॥ दशांशंटंकणं दत्वापचेन्मृदुपुटेततः ॥ पुटंदध्नःपुटंक्षौद्रैर्देयंतुत्थविशुद्धये ९२०

अर्थ–नीलाथोथाकूं विलाव और कपोतकी वीटके संग मर्दित करै ॥ १९ ॥ पीछे दशमां हिस्सा सुहागा देकै मृदुपुटमें पकावै नीलाथोथाकी शुद्धिके अर्थ दहीकी और शहतकी पुट देनी योग्य है ॥ ९२० ॥

कृष्णाभ्रकंधमेद्वह्नौततःक्षीरेविनिक्षिपेत् ॥ भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वातंदुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥ २१ ॥ भावयेदष्टयामंतदेवंशुध्यतिचाभ्रकम् ॥ कृत्वाधान्याभ्रकंतत्तुशोषयित्वाथमर्दयेत् २२ अर्कक्षीरैर्दिनंखल्वेचक्राकारंचकारयेत् ॥ वेष्टयेदर्कपत्रैश्चसम्यग्गजपुटेपचेत् ॥ २३ ॥ पुनर्मर्द्यंपुनःपाच्यंसप्तवारंप्रयत्नतः ॥ ततोवटजटाक्काथैस्तद्वद्देयंपुटत्रयम् ॥ २४ ॥ म्रियतेनात्रसंदेहःसर्वरोगेषुयोजयेत् ॥ मृतंत्वभ्रंहरेन्मृत्युंजरापलितनाशनम् ॥ २५ ॥ अनुपानैश्चसंयुक्तंतत्तद्रोगहरंपरम् ॥

अर्थ–काला भोडल लेकै कलशामें घाल फूंकनीसे फूंक देकै तपाय दूधमें बुझावै पीछे अलगअलग पत्ते कर चौलाई और नींबूके रसमें ॥ २१ ॥ आठ पहरपर्यंत भावना देवै ऐसे शुद्धि होती है तिसको रससे निकास धान्याभ्रक बनाय और सुखाय ॥ २२ ॥ आकके दूधमें एकदिन खरल कर चक्रके आकार करै पीछे आकके पत्तोंसे वेष्टित कर अच्छी तरह गजपुटमें पकावै ॥ २३ ॥ फिर म-

दिंत करै फिर पकावै ऐसे सातवार जतनसे करै पीछे वडकी जडके क्काथमें तैसेही तींन पुट देवै ॥ २४ ॥ ऐसे भोडर मरता है इसमें संशय नहीं यह सब रोगोंमें युक्त करना मरा हुआ भोडर मृत्यु बुढापा वालोंका सुपेदपना इन्होंका नाश करता है ॥ २५ ॥ अनुपानोंसे संयुक्त किया तिसतिसरोगको हरता है ॥

शुद्धंधान्याभ्रकंमुस्तंशुंठीषड्भागयोजितम् ॥ २६ ॥ मर्दयेत्कांजिकेनैवदिनंचित्रकजैरसैः ॥ ततोगजपुटंदद्यात्तस्मादुद्धृत्यमर्दयेत् ॥ २७ ॥ त्रिफलावारिणातद्वत्पुटेदेवंपुटैस्त्रिभिः ॥ बलागोमूत्रमुसलीतुलसीसूरणद्रवैः ॥ २८ ॥ मर्दितंपुटितंवह्नौत्रिस्त्रिवेलंव्रजेन्मृतिम् ॥

अर्थ–शुद्धकिया धान्याभ्रक ले तिस्से छठाहिस्सा नागरमोथा वा सौंठका चूरण मिलाय ॥ २६ ॥ कांजीमें एक दिन खरल करै पीछे चित्रकके रसमें एक दिन खरल करै पीछे गजपुट देवै तिस्मेसे निकास मर्दित करै ॥ २७ ॥ पीछे त्रिफलाके पानीमें भावना देकै पुट देवै ऐसे तीनपुट देकै खरैंहटी गोमूत्र मुसली तुलसी जमीकंद इन्होंके रसोंमें ॥ २८ ॥ मर्दित कर तीन तीन वार पुट देनेसे अभ्रकका भस्म वनता है ॥

नीलांजनंचूर्णयित्वाजंबीरद्रवभावितम् ॥ २९ ॥ दिनैकमातपेशुद्धंभवेत्कार्येषुयोजयेत् ॥ एवंगैरिककाशीसटंकणानिवराटिका ॥९३० ॥ तुवरीशंखकंकुष्टंशुद्धिमायातिनिश्चितम् ॥

अर्थ–सुरमाका चूरण कर जंवीरी नींबूके रसमें भावना ॥ २९ ॥ एक दिन घाममें देवै ऐसे शुद्ध होता है तिसको सव जगह युक्त करना ऐसे गेरू हीराकसीस सुहागा कौडी ॥ ९३० ॥ फटकडी शंख मुरदाशिंगी ये निश्चय शुद्धिको प्राप्त होते है ॥

पचेत्त्र्यहमजामूत्रैर्दोलायंत्रेमनःशिलाम् ॥ ३१ ॥
भावयेत्सप्तधापित्तैरजायाःशुद्धिमृच्छति ॥

अर्थ–मनशिलको दोलायंत्रमें वकरीके मूत्रकरकै तीनदिन पकावै ॥ ३१ ॥ पीछे वकरीका पित्तोमें सातवार भावना देनेसे शुद्धि होती है ॥

तालकंकणशःकृत्वातच्चूर्णकांजिकेक्षिपेत् ॥ ३२ ॥ दोलायंत्रे-

णयामैकंततःकूष्मांडजैर्द्रवैः ॥ तिलतैलेपचेद्यामंयामंचत्रि-
फलाजलैः ॥ ३३ ॥ एवंयंत्रेचतुर्यामंपाच्यंशुद्ध्यतितालकम् ॥

अर्थ—हरतालके बारीक टुकडे बनाकै कपडामें बांध दोलायंत्रविषै कांजीमें ॥ ३२ ॥ एक पहर और कोहलाके रसमें एक पहर तिलोंका तेल और त्रिफलाके रसमें एकएक पहर पकावै ॥ ३३ ॥ ऐसे यंत्रविषै चार पहर पकानेसे हरताल शुद्ध होता है ॥

नृमूत्रेवाथगोमूत्रेसप्ताहंरसकंक्षिपेत् ॥ ३४ ॥
दोलायंत्रेणशुद्धःस्यात्ततःकार्येषुयोजयेत् ॥

अर्थ—खपरियाको दोलायंत्रमें घाल मनुष्यके मूत्रमें अथवा गोमूत्रमें ऐसे ॥ ३४ ॥ सातदिन पकावै तब शुद्धि होती है पीछे सब कार्योंमें युक्त करै ॥

लाक्षामीनपयश्छागंटंकणंमृगशृंगकम् ॥ ३५ ॥ पिण्याकंसर्षपाःशिग्रुर्गुंजोर्णागुडसैंधवाः ॥ यवास्तिक्ताघृतंक्षौद्रंयथालाभं विचूर्णयेत् ॥ ३६ ॥ एभिर्विमिश्रिताःसर्वेधातवोगाढवह्निना ॥ मूषाध्माताःप्रजायंतेमुक्तसत्वानसंशयः ॥ ३७ ॥

अर्थ—लाख मछली वा बकरीका दूध सुहागा मृगका सिंग ॥ ३५ ॥ तिलोंकी खल सिरसम सहोंजना चिरमठी ऊन गुड सैंधानमक जव कुटकी घृत शहत इन्होंमांहसे जितनें मिलै तिन्होंको लेकै चूरण करै ॥ ३६ ॥ इन्होंसे मिले हुये सब धातु तेज अग्नि करकै मूषासंपुटमें धमे हुये सत्वको छोडते हैं संशय नहीं ॥ ३७ ॥

कुलित्थकोद्रवक्काथैर्दोलायंत्रेविपाचयेत् ॥ व्याघ्रीकंदगतंवज्रंत्रिदिनंशुद्धिमृच्छति ॥ ३८ ॥ तप्तंतप्तंतुतद्वज्रंखरमूत्रेनिषेचयेत् ॥ पुनस्तप्यंपुनःसेच्यमेवंकुर्यात्त्रिसप्तधा ॥ ३९ ॥ मत्कुणैस्तालकंपिष्ट्वायावद्भवतिगोलकम् ॥ तद्गोलेनिहितंवज्रं तद्गोलंवन्हिनाधमेत् ॥ १४० ॥ सेचयेदश्वमूत्रेणतद्गोलेच क्षिपेत्पुनः ॥ रुध्वाध्मातंपुनःसेच्यमेवंकुर्याञ्चसप्तधा ॥४१॥ एवंचम्रियतेवज्रंचूर्णंसर्वत्रयोजयेत् ॥

अर्थ—कटेलीकी जडका कल्क बनाकर तिसमें हीराको घाल कुलथी और कोदूके काथमें दोलायंत्रविषै तीन दिन पकावै तब शुद्धि होती है ॥३८॥ हीराको

तपायकर तपायकर गधाके मूत्रमें बुझावै फिर तपावै फिर बुझावै ऐसे इक्कीसवार करै ॥ ३९ ॥ मत्कुण अर्थात् खटमलोके संग हरतालको पीस जब गोला बन जावै तिस गोलामें हीराको घाल गोलाको अग्निमें धमै ॥ ९४० ॥ पीछे घोडाके मूत्रसे सींचै ऐसे सात वार अग्निमें धम २ और घोडाके मूत्रसे सींचै ॥ ४१ ॥ इस प्रकार हीरा खाक बनता है इसको सब युक्त करनां ॥

हिंगुसैंधवसंयुक्तेक्काथेकौलत्थजेक्षिपेत् ॥ ४२ ॥
तप्तंतप्तंपुनर्वज्रंभूयाच्चूर्णंत्रिसप्तधा ॥

अर्थ-हींग सेंधानमक इन्होंसे युक्त किये कुलथीके क्काथमें ॥ ४२ ॥ अग्निविषै तप्त किया हीराको वारंवार बुझावै ऐसे इक्कीसवार करनेसे भस्म बन जाता है ॥

मण्डूकंकांस्यजेपात्रेनिगृह्यस्थापयेत्सुधीः ॥४३॥ सभीतोमूत्र-
येत्तत्रतन्मूत्रेवज्रमावपेत् ।तप्तंतप्तंचबहुधावज्रस्यैवंमृतिर्भवेत् ४४

अर्थ-मेंडकको पकड कांसीके पात्रमें स्थापित करै ॥ ४३ ॥ वह डरता हुआ तहां मूतै तिस मूतमें वारंवार तपाया हुआ हीराको बुझावै ऐसे हीराका भस्म बनता है ॥ ४४ ॥

वैक्रांतंवज्रवच्छोध्यंनीलंवालोहितंतथा ॥ हयमूत्रेतुतत्सेच्यं
तप्तंतप्तंद्विसप्तधा ॥ ४५ ॥ ततस्तुमेषदध्युक्तपंचांगेगोलके
क्षिपेत् ॥ पुटेन्मूषापुटेरुध्वाकुर्यादेवंचसप्तधा ॥ ४६ ॥ वै-
क्रांतंभस्मतांयातिवज्रस्थानेनियोजयेत् ॥

अर्थ-वैक्रांतमणि अर्थात् कच्चा हीरा नीला हो अथवा लाल हो तिसको हीराकी तरह शोधै अग्निमें तपायतपायकै घोडाके मूत्रमें बुझावै ऐसे इक्कीसवार करै ॥ ४५ ॥ पीछे मेढासिंगीके पंचांगको कूट गोला बनाय तिसमें वैक्रांतको घाल सकोराके संपुटमें धर गजपुट देकै अग्नि लगावै ऐसे सात वार करनेसे ॥ ४६ ॥ वैक्रांतका भस्म बनता है तिसको हीराकी जगह युक्त करना ॥

स्वेदयेद्दोलिकायंत्रेजयंत्याःस्वरसेनच ॥ ४७ ॥ मणिमुक्ता-
प्रवालानांयामैकंशोधनंभवेत् ॥ कुमार्यातंडुलीयेनस्तन्येनच
निषेचयेत् ॥ ४८ ॥ प्रत्येकंसप्तवेलंचतप्ततप्तानिकृत्स्नशः ॥
मौक्तिकानिप्रवालानितथारत्नान्यशेषतः ॥ ४९ ॥ क्षणाद्वि-

विधवर्णानिम्रियंतेनात्रसंशयः ॥ उक्तमाक्षिकवन्मुक्ताःप्रवा-
लानिचमारयेत् ॥ १५० ॥ वज्रवत्सर्वरत्नानिशोधयेन्मार-
येत्तथा ॥

अर्थ–दोलायंत्रमें अरनीके स्वरस करकै एक पहर पसीना देनेसे ॥ ४७ ॥ सूर्यकांतमणि मोती पन्ना इन्होंकी शुद्धि होती है कुवारपाठाका रस चौलाईका रस स्त्रीका दूध इन्होंमे ॥ ४८ ॥ अलगअलग तपायतपाय सात वार करै क्षणभरमें सबोंका भस्म बनता है ॥ ४९ ॥ इसमें संशय नहीं सोनामाखीकी तरह मोती और मूंगोंकोभी मारै ॥ १५० ॥ हीराकी तरह सब रत्नोंको शोधै और मारै ॥

शिलाजतुसमानीयग्रीष्मतप्तशिलाच्युतम् ॥ ५१ ॥ गोदुग्धै-
स्त्रिफलाक्वाथैर्भृंगद्रावैश्चमर्दयेत् ॥ आतपेदिनमेकैकंतच्छु-
ष्कंशुद्धतांव्रजेत् ॥ ५२ ॥

अर्थ–गरमीके घामसे तपी हुई शिलासे छुटी हुई शिलाजित लेकै ॥ ५१ ॥ गौका दूध त्रिफलाका काढा वा भंगराका रस इन्होंमें घोट एकएक दिन खरल करै वह सूख जावै तब शुद्ध होता है ॥ ५२ ॥

मुख्यांशिलाजतुशिलांसूक्ष्मखंडप्रकल्पिताम् ॥ निक्षिप्या-
त्युष्णपानीयेयामैकंस्थापयेत्सुधीः ॥ ५३ ॥ मर्दयित्वाततो
नीरंगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ स्थापयित्वाचमृत्पात्रेधारयेदा-
तपेबुधः ॥ ५४ ॥ उपरिस्थंघनंचस्यात्तत्क्षिपेदन्यपात्रके ॥
धारयेदातपेधीमानुपरिस्थंघनंनयेत् ॥ ५५ ॥ एवंपुनःपुन-
र्नीत्वाद्विमासाभ्यांशिलाजतु ॥ भूयात्कार्यक्षमंवह्नौक्षिप्तं
लिंगोपमंभवेत् ॥ ५६ ॥ निर्धूमंचततःशुद्धंसर्वकर्मसुयोज-
येत् ॥ अधःस्थितंचयच्छेषंतस्मिन्नीरंविनिक्षिपेत् ॥ ५७ ॥
विमर्द्यधारयेद्धर्मेपूर्ववच्चैवतन्नयेत् ॥

अर्थ–उत्तम शिलाजीतको लेकै मिहीन टुकडे वनाय अत्यंत गरमपानीमें गेर एक पहर पर्यंत स्थापित करै ॥ ५३ ॥ पीछे पानीको मर्दित कर वस्त्रमांहकै छान माटीके पात्रमें स्थापित कर घाममें धरै ॥ ५४ ॥ ऊपर जो घनरूप स्थित होवै तिसको दूसरा पात्रमें घालै घाममें धरै ऊपर जो घनरूप स्थित हो तिसको

लेवै ॥ ५५ ॥ ऐसे वारंवार ग्रहण करकै दो महीनोंमें शिलाजीत काममें आता है अग्निमें गेरनेसे जो शिलाजीत लिंगके समान ॥ ५६ ॥ और धूमासे वर्जित हो जावै वह शुद्ध जानना तिसको सवकर्मोंमें युक्त करना नीचै शेष रहा जो द्रव्य हो तिसमें पानीको मिलावै ॥ ५७ ॥ मर्दित कर घाममें धरै और पहलेकी तरह तिसको ग्रहण करै ॥

अक्षांगारैर्धमेत्किट्टंलोहजंतद्गवांजलैः ॥ ५८ ॥ सेचयेत्तप्ततप्तंतत्सप्तवारंपुनःपुनः ॥ चूर्णयित्वाततःक्काथैर्द्विगुणैस्त्रिफलाभवैः ॥ ५९ ॥ आलोड्यभर्जयेद्वह्नौमंडूरंजायतेवरम् ॥

अर्थ–वहेडाकी लकडियोंके कोले वनाकर तिन्होंमें पुराणा लोहाके मैलको घाल अग्नि देकै फूंकनीसे तपावै ॥ ५८ ॥ ऐसे सात वार तपातपाकर गोमूत्रमें बुझाता जावै पीछे चूरण बनाकर त्रिफलाके दुगुनें क्काथमें ॥ ५९ ॥ आलोडित कर अग्निमें भूनै ऐसे उत्तम मंडूर बनता है ॥

क्षारवृक्षस्यकाष्ठानिशुष्काण्यग्नौप्रदीपयेत् ॥ ९६० ॥ नीत्वा तद्भस्ममृत्पात्रेक्षिप्त्वानीरेचतुर्गुणे ॥ विमर्द्यधारयेद्रात्रौप्रातरच्छजलंनयेत् ॥ ६१ ॥ तन्नीरंक्काथयेद्वह्नौयावत्सर्वंविशुष्यति ॥ ततःपात्रात्समुल्लिख्यक्षारोग्राह्यःसितप्रभः ॥६२॥ चूर्णाभःप्रतिसार्यःस्यात्पेयःस्यात्क्काथवत्स्थितः ॥ इतिक्षारद्वयंधीमान्युक्तकार्येषुयोजयेत् ॥ ६३ ॥

अर्थ–जिस वृक्षका खार बनाना हो तिसकी सूखी लकडी लेकै अग्निमें जलावै ॥ ९६० ॥ तिसकी भस्मको माटीके पात्रमें घाल चौगुना पानी डाल अच्छी तरह मर्दित कर रात्रिमें धरै प्रभातमें स्वच्छ पानी रहै तिसको ग्रहण करै ॥ ६१ ॥ तिस पानीको अग्निपर पकावै जब सब पानी सूख जावै तब पात्रसे खुरचकै सुपेदवर्णवाला खार ग्रहण करना ॥ ६२ ॥ चूरणके समान हो वह प्रतिसार्य कहाता है तिसको श्वासआदिमें युक्त करना जो काढासरीखा पतला हो तिसको पेय कहते है वह गुल्म आदिमें युक्त करना ऐसे दोदो प्रकारका खार योग्य कार्य्योंविषै युक्त करना ॥ ९६३ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां मध्यमखंडे धातुशोधनमारणो नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ द्वादशोऽध्यायः ।

पारदःसर्वरोगाणांजेतापुष्टिकरःस्मृतः ॥ सुज्ञेनसाधितःकुर्या-त्संसिद्धिंदेहलोहयोः ॥ ६४ ॥ रसेंद्रःपारदःसूतोहरजःसूत-कोरसः ॥ मुकुंदश्चेतिनामानिज्ञेयानिरसकर्मसु ॥ ६५ ॥ ताम्रातारारनागाश्वहेमवंगौचतीक्ष्णकम् ॥ कांस्यकंकांतलो-हंचधातवोनवयेस्मृताः ॥ ६६ ॥ सूर्यादीनांग्रहाणांतेकथि-तानामभिःक्रमात् ॥

अर्थ—पारा सब रोगोंको जीतता है और पुष्टि करनेवाला कहा है उत्तम वैद्य करकै साधित किया देहकी और लोहाकी सिद्धिको करता है ॥ ६४ ॥ रसेंद्र पा-रद सूत हरज सूतक रस मुकुंद ये नाम रसकर्ममें पाराके जानने ॥ ६५ ॥ तांबा चांदी पित्तल शीसा सोना रांग पोलाद लोहा कांसी कांतलोहा ये ९ धातु कहे हैं ॥ ६६ ॥ सूर्य आदि ग्रहोंके नामकरकै क्रमसे कहे हैं ॥

राजीरसोनमूषायांरसंक्षिप्त्वाविबंधयेत् ॥ ६७ ॥ वस्त्रेणदो-लिकायंत्रेस्वेदयेत्कांजिकैस्त्र्यहम् ॥ दिनैकंमर्दयेत्सूतंकुमारी-संभवैर्द्रवैः ॥ ६८ ॥ तथाचित्रकजैःक्वाथैर्मर्दयेदेकवासरम् ॥ काकमाचीरसैस्तद्वद्दिनमेकंचमर्दयेत् ॥ ६९ ॥ त्रिफलाया-स्ततःक्वाथैरसोमर्द्यःप्रयत्नतः ॥ ततस्तेभ्यःपृथक्कुर्यात्सूतंप्रक्षा-ल्यकांजिकैः ॥ ९७० ॥ ततःक्षिप्त्वारसंखल्वेरसादर्धंचसैंध-वम् ॥ मर्दयेन्निंबुकरसैर्दिनमेकमनारतम् ॥ ७१ ॥ ततोरा-जीरसोनश्चमुख्यश्चनवसादरः ॥ एतैरससमैस्तद्वत्सूतोमर्द्य-स्तुषांबुना ॥ ७२ ॥ ततःसंशोष्यचक्राभंकृत्वाक्षिप्त्वाचहिं-गुना ॥ द्विस्थालीसंपुटेधृत्वापूरयेल्लवणेनच ॥ ७३ ॥ अथ स्थाल्यांततोमुद्रांदद्याद्दृढतरांबुधः ॥ विशोष्याग्निविधा-याधोनिषिंचेदंबुचोपरि ॥ ७४ ॥ ततस्तुकुर्यात्तीव्राग्निंतदधः

प्रहरत्रयम् ॥ एवंनिपातयेदूर्ध्वंरसोदोषविवर्जितः ॥ ७५ ॥
अथार्धपिठरीमध्येलग्नोग्राह्योरसोत्तमः ॥

अर्थ—राई और लहसनको मिलाकै पीस तिसका घडिया बना कर तिसमें पारा घाल वस्त्रकी पोटलीमें बांधै ॥ ६७ ॥ पीछे दोलायंत्रविषै कांजीकरकै तीन दिन स्वेदित करै पीछे पाराको एक दिन कुवारपाठाके रससें मर्दित करै ॥ ६८ ॥ पीछे चित्रकके क्वाथमें एक दिन मर्दित करै फिर तैसेही मकोहके रसमें एक दिन मर्दित करै ॥ ६९ ॥ पीछे त्रिफलाके क्वाथमें जतनसे पारा मर्दित करना योग्य है पीछे पाराको अलग कर कांजीसे धोवै ॥ ९७० ॥ पीछे पाराको खरलमें घाल और पारासे आधा भाग सेंधानमक मिला नींबूके रसमें एक दिन निरंतर मर्दित करै ॥ ७१ ॥ पीछे राई लहसन औ नोसाद्दर ये सव पाराके वरावर मिला जवोंके तुषकी कांजीमें मर्दित करै ॥७२॥ पीछे अच्छी तरह सुखाय चक्रके आकार वनाय हींगका लेप कर दो पात्रोंके संपुटमें घाल नमकसे पूरित करै ॥ ७३ ॥ पीछे पात्रको अत्यंत कठिन मुद्रित कर और अच्छी तरह सुखाय पात्रके नीचै अग्निको जलावै और पात्रके उपर पानी देता रहै॥७४॥ पीछे तिस पात्रके नीचै तीन पहरपर्यंत तेज अग्नि देना ऐसे दोषोंकरकै वर्जित हुआ पाराको उपरके प्राप्त करै॥७५॥ पीछे उपरला पात्रके पेटमें उडके लगा हुआ पारा ग्रहण करना उचित है ॥

लोहपात्रेविनिक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् ॥ ७६ ॥ तप्तेघृतेतत्समानंक्षिपेद्गंधकजंरजः ॥ विद्रुतंगंधकंज्ञात्वादुग्धमध्येविनिक्षिपेत् ॥ ७७ ॥ एवंगंधकशुद्धिःस्यात्सर्वकार्येषुयोजयेत् ॥

अर्थ—लोहाके पात्रमें घृतको घाल अग्निपर तपावै ॥ ७६ ॥ तपा हुआ घृतमें बराबर भाग गंधकके चूरणको मिलाकर गेरै जब गंधक गल जावै तब दूधमें छोडै ॥ ७७ ॥ ऐसे गंधककी शुद्धि होती है तिसको सब कार्योंमें युक्त करना ॥

निंबूरसैर्निंबपत्ररसैर्वायाममात्रकम् ॥ ७८ ॥ पिष्ट्वादरदमूर्ध्वंचपातयेत्सूतयुक्तिवत् ॥ ततःशुद्धरसंतस्मान्नीत्वाकार्येषु योजयेत् ॥ ७९ ॥

अर्थ—नींबूके रसमें अथवा नींबके पत्तोंके रसमें एक पहरपर्यंत ॥ ७८ ॥ पीसकर शिंगरफको डमरुयंत्रमें घाल पाराकी युक्तिके समान उपरको पातित कर पीछे तिस शिंगरफसे जो उडकै पारा पात्रमें लगै तिसको लेकै सब कर्मोंमें युक्त करै ॥ ७९ ॥

मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम् ॥ सप्तवारंप्रयत्नेनशु-द्धिमायातिनिश्चितम् ॥ ९८० ॥

अर्थ–शिंगरफको खरलमें घाल भेडके दूधकरकै अथवा नींबूआदिके रसमें जतनसे सातसात पुट देवै ऐसे चौदह पुट देनेसे शिंगरफ शुद्ध होजता है॥९८०॥

कालकूटोवत्सनाभःशृंगकश्चप्रदीपकः ॥ हालाहलोब्रह्मपु-त्रोहारिद्रःसक्तुकस्तथा ॥ ८१ ॥ सौराष्ट्रिकइतिप्रोक्ताविष-भेदाअमीनव ॥ अर्कसेहुंडधत्तूरलांगलीकरवीरकम् ॥८२॥ गुंजाहिफेनावित्येताःसप्तोपविषजातयः ॥ एतैर्विमर्दितःसू-तश्छिन्नपक्षःप्रजायते ॥ ८३ ॥ मुखंचजायतेतस्यधातूंश्चग्र-सतेक्षणात् ॥

अर्थ–कालकूट १ वत्सनाभ २ शृंगक ३ प्रदीपक ४ हालाहल ५ ब्रह्मपुत्र ६ हारिद्र ७ सक्तुक ८ ॥ ८१ ॥ सौराष्ट्रिक ९ ये नव महाविष हैं आक १ थोहर २ धत्तूरा ३ कलहारी ४ कनेर ५ ॥ ८२ ॥ चिरमठी ६ अफीम ७ ये सात उ-पविष हैं इन सबोंकरकै मर्दित किया पारा छिन्नपक्ष अर्थात् पक्षोंसे रहित हो-जाता है ॥ ८३ ॥ और पाराके मुख होजाता है वह क्षणभरमें सोना आदि धा-तुओंको ग्रसता है ॥

अथवात्रिकटुक्षारौराजीलवणपंचकम् ॥ ८४ ॥ रसोनोन-वसारश्चशिग्रुश्चैकत्रचूर्णितैः ॥ समांशैःपारदादेतैर्जंबीरेणद्र-वेणवा ॥८५॥ निंबुतोयैःकांजिकैर्वासोष्णखल्वेविमर्दयेत् ॥ अहोरात्रत्रयेणस्याद्रसेधातुचरंमुखम् ॥ ८६ ॥ अथवाबिं-दुलीकीटैरसोमर्द्यस्त्रिवासरम् ॥ लवणाम्लैर्मुखंतस्यजायते धातुघस्मरम् ॥ ८७ ॥

अर्थ–अथवा सोंठ मिरच पीपल जवाखार साजीखार राई सेंधानमक काला नमक मनयारीनमक रेहनमक खारीनमक ॥८४॥ लहसन नोसादर सहोंजना इन सबोंके चूरण पारासे बराबर भाग लेकै विजोराके रसमें ॥ ८५ ॥ अथवा नींबूके रसमें अथवा कांजीमें गरम खरलविषै मर्दित करै तीन दिनरात्रिकरकै पारामें धातुओंको चरनेवाला मुख उपजता है. ॥ ८६ ॥ अथवा वीरवहोटी लाल कीडोंके

संग पाराको तीन दिन मर्दित करै पीछे नींबूके रसमें सेंधानमक घाल तिसविषै मर्दित करनेसे पाराके धातुओंको चरनेवाला मुख उपजता है ॥ ८७ ॥

मृत्कुंडेनिक्षिपेन्नीरंतन्मध्येचशरावकम् ॥ महत्कुंडपिधानाभंमध्येमेखलयायुतम् ॥ ८८ ॥ लिप्त्वाचमेखलामध्यंचूर्णेनात्ररसंक्षिपेत् ॥ रसस्योपरिगंधस्यरजोदद्यात्समांशकम् ॥ ८९ ॥ दत्वोपरिशरावंचभस्ममुद्रांप्रदापयेत् ॥ ततोपरिपुटंदद्याच्चतुर्भिर्गोमयोपलैः ॥ ९९० ॥ एवंपुनःपुनर्गंधं षड्गुणंजारयेद्बुधः ॥ गंधेजीर्णेभवेत्सूतस्तीक्ष्णाग्निःसर्वकर्मकृत् ॥ ९१ ॥

अर्थ–एक माटीका कूंडा ले तिसमें चार अंगुल पानी भरै एक सहन कर उस सहनकके तले पानी एक अंगुल ॥ ८८ ॥ तिसमें पारा और गंधक समान भाग घाल ऊपर दुसरी सहनकसे ढकि चूनासे दोनों सहनोंके मुखको निःसंधि मूंद करि ॥ ८९ ॥ फिर उसके मुखपर माटी लगाय बंध करै जिससें उपलोंकी करस नहीं गिरै पीछे गौका गोबरके चार उपलोंसे अग्नि देवै ॥ ९९० ॥ इसी प्रकार छःवार पारा और गंधक समान भाग देकर उपलोंसे अग्नि देता रहै तब गंधक जीर्ण होके पारा तीक्ष्णाग्नि हो जाता है तिसको सब कर्मोंमें युक्त करना ॥ ९१ ॥

धूमसारंरसंतोरींगंधकंनवसादरम् ॥ यामैकंमर्दयेदम्लैर्भागंकृत्वासमंसमम् ॥ ९२ ॥ काचकुप्यांविनिक्षिप्यतांचमृद्वस्त्रमुद्रया ॥ विलिप्यपरितोवक्त्रंमुद्रांदत्वाचशोषयेत् ॥ ९३ ॥ अधःसच्छिद्रपिठरीमध्येकूपींनिवेशयेत् ॥ पिठरीवालुकापूरैर्भृत्वाचाकुपिकागलम् ॥ ९४ ॥ निवेश्यचुल्ल्यांतदधःकुर्याद्वह्निंशनैःशनैः ॥ तस्मादप्यधिकंकिंचित्पावकंज्वालयेत्क्रमात् ॥ ९५ ॥ एवंद्वादशभिर्यामैर्म्रियतेसूतकोत्तमः ॥ स्फोटयेत्स्वांगशीतंचऊर्ध्वगंगंधकंत्यजेत् ॥ ९६ ॥ अधस्थंमृतसूतंचसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥

अर्थ–घरका आवलेकर पारा फटकडी गंधक नोसादर ये सब समान भाग ले नींबूके रसमें एक पहर मर्दित करै ॥ ९२ ॥ पीछे काचकी शीशीमें घाल तिसके

मुखको माटीकी गारा और वस्त्रसे मुद्रित कर सुखावै ॥ ९३ ॥ पीछे एक नांद ले तिसके बीचमे पेंदीको छेदि उस छिद्रपर भोडर धर उसपर शीसी धर ऊपर वालू भर ॥ ९४ ॥ चुल्हेपर धर नीचै अग्नि मंदमंद देवै पीछे क्रमसे अग्निको तेज करै ॥ ९५ ॥ ऐसे वारह पहर अग्नि देनेसे पारा मर जाता है पीछे अच्छी तरह शीतल होनेपर शीशीके खामको फोड और शीशीके ऊपर भागमें प्राप्त हुआ गंधकको त्यागै ॥ ९६ ॥ और नीचले भागमें स्थित हुआ पाराके भस्मको सब कर्मोंमें युक्त करै ॥

अपामार्गस्यबीजानांमूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥ ९७ ॥ तत्संपुटेन्यसेत्सूतंमलयुदुग्धमिश्रितम् ॥ द्रोणपुष्पीप्रसूनानिविडंगमिरिमेदकः ॥ ९८ ॥ एतच्चूर्णमधोर्ध्वंचदत्वामुद्राप्रदीयताम् ॥ तंगोलंसंधयेत्सम्यङ्मृन्मूषासंपुटेसुधीः ॥ ९९ ॥ मुद्रांदत्वाशोषयित्वाततोगजपुटेपचेत् ॥ एवमेकपुटेनैवजायतेभस्मसूतकम् ॥ १००० ॥

अर्थ–ऊंगाके अर्थात् आधा झडाके बीजोंको पीस दो घडिये बनावै ॥ ९७ ॥ तिन दोनोंके संपुटमें गूलरके दूधसे मिला हुआ पाराको धर पीछे गोमाके फूल वायविडंग खैर ॥ ९८ ॥ इन्होंके चूरणको नीचै और ऊपर देकै मुद्रित करै पीछे वैद्य तिस गोलाको माटीके दो घडियोंके संपुटमें घाल अच्छीतरह संधित कर ॥ ९९ ॥ मुद्रा देकै सुखाय पीछे गजपुटमें पकावै इस प्रकार एक पुटकरकै पाराका भस्म बन जाता है ॥ १००० ॥

काकोदुंबरिकादुग्धैरसंकिंचिद्विमर्दयेत् ॥ तद्दुग्धघृष्टहिंगोश्च मूषायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥ १ ॥ क्षिप्त्वातत्संपुटेसूतंतत्रमुद्रांप्रदापयेत् ॥ धृत्वातंगोलकंप्राज्ञोमृन्मूषासंपुटेऽधिके ॥ २ ॥ पचेन्मृदुपुटेनैवसूतकोयातिभस्मताम् ॥

अर्थ–काला गूलरके दूधमें पाराको कछुक घोटै पीछे तिस गूलरके दूधमें हींगको पीस तिसके दो घडिये बनावै ॥ १ ॥ तिन दोनोंके संपुटमें पाराको घाल तहां मुद्रा देवै पीछे माटीके दोंघडियोंके संपुटमें तिस गोलाको धर अच्छीतरह मुद्रित कर और सुखावै ॥२॥ पीछे मृदुपुट अर्थात् मंदमंद अग्निसे पकावै इस प्रकार पाराका भस्म बन जाता है ॥

नागवल्लीरसैर्घृष्टःकर्कोटीकंदगर्भितः ॥ मृन्मूषासंपुटेपक्त्वा सूतोयात्येवभस्मताम् ॥ ३ ॥

अर्थ—पाराको नागरपानके रसमें पीस और वांझ ककोडीके कंदमें घाल पीछे माटीके दो घडियोंके संपुटमें धर मुखको बंध कर अग्नि देकै पकावै इस प्रकार पाराका भस्म बन जाता है ॥ ३ ॥

खंडितंमृगशृंगंचज्वालामुख्यारसैःसमम् ॥ रुध्वाभांडेपचेच्चुल्ल्यांयामयुग्मंततोनयेत् ॥ अष्टांशंत्रिकटुंदद्यान्निष्कमात्रं चभक्षयेत् ॥ ४ ॥ नागवल्ल्यारसैःसार्धंवातपित्तज्वरापहम् ॥ अयंज्वरांकुशोनामरसःसर्वज्वरापहः ॥ ५ ॥

अर्थ—हिरणके शींगका चूरण कर बराबर भाग ज्वालामुखीके रसमें मिलाकर पात्रमें घाल तिसके मुखको बंध कर चूल्हापर दो पहरपर्यंत पकावै पीछे सोंठ मिरच पीपल इन्होंका चूरण आठमां हिस्सा देकै चार मासेभर खावै ॥ ४ ॥ नागरपानका रसके संग यह वातपित्तज्वरको हरता है यह ज्वरांकुश सब प्रकारके ज्वरोंको हरता है ॥ ५ ॥

पारदंरसकंतालंतुत्थंटंकणगंधके ॥ सर्वमेतत्समंशुद्धंकारवेल्ल्यारसैर्दिनम् ॥ ६ ॥ मर्दयेल्लेपयेत्तेनताम्रपात्रोदरंभिषक् ॥ अंगुल्यर्धप्रमाणेनततोरुध्वाचतन्मुखम् ॥ पचेत्तंवालुकायंत्रेक्षिप्त्वाधान्यानितन्मुखे ॥ ७ ॥ यदास्फुटंतिधान्यानितदासिद्धंविनिर्दिशेत् ॥ ततोनयेत्स्वांगशीतंताम्रपात्रोदराद्भिषक् ॥ रसंज्वरारिनामानंविचूर्ण्यमरिचैःसमम् ॥ ८ ॥ माषैकंपर्णखंडेनभक्षयेन्नाशयेज्ज्वरम् ॥ त्रिदिनैर्विषमंतीव्रमेकद्वित्रिचतुर्थकम् ॥ ९ ॥

अर्थ—पारा खपरिया हरताल नीलाथोथा सुहागा गंधक इन सबको बराबर भाग ले और शुद्ध कर करेलाके रसमें एक दिन ॥ ६ ॥ खरलकर तिस कल्कसे वैद्य तांबाका पात्रके पेट पर आधा अंगुल प्रमाण लेप करै पीछे तिस पात्रके मुखको रोक तिसपर चावलोंका चून गेर वालुकायंत्रमें धर पकावै ॥ ७ ॥ जब तिस पात्रपर चावलसरीखे फूटनें लगै तब सिद्ध हुआ जानै पीछे वैद्य अच्छीत-

रह शीतल हुआको तांवाका पात्रके पेटसे खुरचै यह ज्वरारिनामवाला रस है इसका मिरचोंके समान चूरण कर ॥ ८ ॥ एक मासाभर रसको पानका टुकडाके संग खावै यह ज्वरको नाश करता है और तीन दिन लेनेसे दारुणरूपी एकाहिक द्व्याहिक तृतीयक चातुर्थिक ऐसे विषमज्वरोंको नाश करता है ॥ ९ ॥

तालकंतुत्थकंताम्रंरसंगंधंमनःशिलाम् ॥ कर्षंकर्षंप्रयोक्तव्यं मर्दयेत्रिफलांबुभिः ॥ १० ॥ गोलंन्यसेत्संपुटकेपुटंदद्यात्प्रयत्नतः ॥ ततोनीत्वार्कदुग्धेनवज्रीदुग्धेनसप्तधा ॥ ११ ॥ क्वाथेनदंत्याःश्यामायाभावयेत्सप्तधापुनः ॥ माषमात्रंरसं दिव्यंपंचाशन्मरिचैर्युतम् ॥ १२ ॥ गुडगद्याणकंचैवतुलसीदलयुग्मकम् ॥ भक्षयेत्रिदिनंशक्त्याशीतारिर्दुर्लभःपरः ॥ १३ ॥ पथ्यंदुग्धोदनंदेयंविषमंशीतपूर्वकम् ॥ दाहपूर्वंहरत्याशुतृतीयकचतुर्थकौ ॥ १४ ॥ द्व्याहिकंसततंचैववैवर्ण्यंच नियच्छति ॥

अर्थ–हरताल नीलाथोथा तांवा पारा गंधक मनशिल इन्होंको एकएक तोलाभर ले त्रिफलाके रसमें खरल करै ॥ १० ॥ पीछे गोला बनाय संपुटमें धर जतनसे पुट देवै पीछे आकका दूध थोहरका दूध ॥ ११ ॥ जमालगोटाकी जडका काढा निशोतका काढा इन्होंमें सातसात वार भावना देवै पीछे एकएक मासाभरकी गोली बनाके पंचास मरचोंका चूरणसे युत कर ॥ १२ ॥ गुड ६ मासे और तुलसीके दो दल इनकेसाथ शक्तिके अनुसार तीन दिन खावै यह शीतारि रस दुर्लभ है और उत्तम है ॥ १३ ॥ इसपर दूध चावलका पथ्य देना यह शीतपूर्वक विषमज्वर दाहपूर्वकज्वर तृतीयकज्वर चातुर्थिकज्वर ॥ १४ ॥ द्व्याहिकज्वर संततज्वर वा विलक्षणज्वर इन सवको दूर करता है ॥

भागैकःस्याद्रसाच्छुद्धादेलायाःपिप्पलीशिवा ॥ १५ ॥ आकारकरभोगंधःकटुतैलेनशोधितः ॥ फलानिचेंद्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताअमी ॥ १६ ॥ एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिंद्रवारुणिकारसैः ॥ माषोन्मितांगुटींकृत्वादद्यात्सर्वज्वरेबुधः ॥ १७ ॥ छिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीगुटिकामता ॥

अर्थ–शुद्ध किया पारा एक भाग एलची वा पीपल वडी हरडै ॥ १५ ॥ आकरकरा कडुआतेलमें शोधा हुआ गंधक इंद्रायणके फल ये छः ओषध चारचार भाग लेकै ॥ १६ ॥ चूरण कर इंद्रायणके रसमें एकएक मासाभरकी गोली बांधकर सब प्रकारके ज्वरमें देवै ॥ १७ ॥ गिलोयका रसके अनुपान करकै ये गोली ज्वरको नाश करनेवाली कही है ॥

शुद्धोबुभुक्षितःसूतोभागद्वयमितोभवेत् ॥ १८ ॥ तथागंधस्य भागौद्वौकुर्यात्कज्जलिकांतयोः ॥ सूताच्चतुर्गुणेष्वेवकपर्देषु विनिक्षिपेत् ॥ १९॥ भागैकंटंकणंदत्वागोक्षीरेणविमर्दयेत् ॥ तथाशंखस्यखंडानांभागानष्टौप्रकल्पयेत् ॥ २० ॥ क्षिपेत्सर्वंपुटस्यांतश्चूर्णलिप्तशरावयोः॥गर्तेहस्तोन्मितेधृत्वापचेद्गजपुटेनच ॥ २१ ॥ स्वांगशीतंसमुद्धृत्यपिष्टातत्सर्वमेकतः॥षड्गुंजासंमितंचूर्णमेकोनत्रिंशदूषणैः ॥ २२ ॥ घृतेनवातजेदद्यान्नवनीतेनपित्तजे ॥ क्षौद्रेणश्लेष्मजेदद्यादतीसारेक्षये तथा ॥ २३ ॥ अरुचौग्रहणीरोगेकार्श्येमंदानलेतथा ॥ कासेश्वासेषुगुल्मेषुलोकनाथोरसोहितः ॥ २४ ॥ तस्योपरिघृतान्नंचभुंजीतकवलत्रयम् ॥ मंचेक्षणैकमुत्तानःशयीतानुपधानके ॥ १०२५ ॥

अर्थ–शुद्ध और बुभुक्षित ऐसा पारा २ भाग ॥ १८ ॥ शुद्ध किया गंधक २ भाग इन दोनोंको मिलाय कज्जलि करै पीछे पारासे चौगुनी कौडियोंमें घालै ॥ १९ ॥ पीछे सुहागा एक भाग लेकै गायके दूधमें खरल करकै तिस्से तिन कोडियोंके मुखोंको वंध करै पीछे शंखके टुकडे ८ भाग लेवै ॥ २० ॥ पीछे माटीके दो सकोरे लाकै तिन्होंको भीतरसे चूना करकै लीपै तिन्होंके संपुटमें शंखके टुकडे धर पीछे कौडी धर ऊपर शंखके टुकडे धर संपुटके मुखको वंध कर एक हाथका खडामें धरकै गजपुटसे पकावै ॥ २१ ॥ जब अच्छीतरह शीतल होजावै तब निकास और सबको मिलाकै पीस छ रती चूरणको २९ मिरचोंका चूरणमें मिला ॥ २२ ॥ घृतके साथ वातके रोगमें और नौनीतघृतके साथ पित्तके रोगमें शहतके साथ कफके रोगमें देवै और अतीसार क्षयरोग ॥ २३ ॥ अरुची ग्रहणीरोग कार्श्यरोग मंदाग्नि खासी श्वास गुल्मरोग इन्होंमें लोकनाथरस हित है

॥ २४ ॥ इस रसके ऊपर घृतसहित चावलोंके तीन ग्रास लेनेपीछे खाटपर विना तकिया और विछौने सिद्धा सोवै ॥ १०२५ ॥

अनम्लमन्नंसघृतंभुंजीतमधुरंदधि ॥ प्रायेणजांगलंमांसंप्रदेयंघृतपाचितम् ॥ २६ ॥ सुदुग्धभक्तंदद्याच्चजातेऽग्नौसांध्यभोजने ॥ सघृतान्मुद्गवटकान्व्यंजनेष्ववचारयेत् ॥२७॥ तिलामलककल्केनस्नापयेत्सर्पिषाथवा ॥ अभ्यंजयेत्सर्पिषाचस्नानं कोष्णोदकेनच ॥ २८ ॥ क्वचित्तैलंनगृह्णीयान्नबिल्वंकारवेल्लकम् ॥ वार्ताकंशफरींचिंचांत्यजेद्व्यायाममैथुनम् ॥ २९ ॥ मद्यंसंधानकंहिंगुशुंठींमाषान्मसूरिकान् ॥ कूष्मांडंराजिकां कोपंकांजिकंचैववर्जयेत् ॥ ३० ॥

अर्थ–खटाईको वर्जित कर मीठी दही और घृतसहित अन्नको खावै विशेषकरकै घृतमें पकाया हुआ जांगलदेशके जीवका मांस देवै ॥ २६ ॥ और सांझके भोजनमें जठराग्नि प्रदीप्त होवै तो सुंदर दूध और चावल देवै और घृतमें बने मूंगके लड्डू अथवा वडे व्यंजनकी जगह खावै ॥ २७ ॥ तिल और आंवलोंकी पीठी बनाय तिसकरकै अथवा घृतकरकै स्नान करै और घृतसे मालिस करकै अल्प गर्म किये पानी करकै स्नान करावै ॥ २८ ॥ तेल वेलफल करेला वैंगन अथवा कटेलीका फल मछली अमली इन्होंको ग्रहण नहीं करै और कसरत स्त्रीसंग ॥ २९ ॥ मदिरा संधौना हींग सोंठ उडद मसूर कोहला राई कोप कांजी इन्होंको वर्जित करै ॥ ३० ॥

त्यजेदयुक्तनिद्रांचकांस्यपात्रेचभोजनम् ॥ ककारादियुतंसर्वंत्यजेच्छाकफलादिकम् ॥ ३१ ॥ पथ्योयंलोकनाथस्तुशुभनक्षत्रवासरे ॥ पूर्वातिथौशुक्लपक्षेजातेचंद्रबलेतथा॥३२॥ पूजयित्वालोकनाथंकुमारींभोजयेत्ततः ॥ दानंदद्याद्द्विघटिकामध्येग्राह्योरसोत्तमः ॥ ३३ ॥ रसात्संजायतेतापस्तदा शर्करयायुतम् ॥ सत्वंगुडूच्यागृह्णीयाद्वंशरोचनयायुतम् ३४ खर्जूरंदाडिमंद्राक्षामिक्षुखंडानिचारयेत् ॥ अरुचौनिस्तुषंधान्यंघृतभृष्टंसशर्करम् ॥ ३५ ॥

अर्थ–अयोग्यनिंद्य कासीके पात्रमें भोजन ककारआदि नामसे फल और शाकआदि इन सबको त्यागै ॥ ३१ ॥ यह लोकनाथरस पथ्य है शुभनक्षत्रमें और शुभवारमें और पंचमी दशमी पौर्णमासी इन तिथियोंमें और शुक्ल पक्षमें और चंद्रमाके वलमें ॥ ३२ ॥ लोकनाथकी पूजा कर कुमारीकन्याको भोजन करावै और दो घडीके मध्यमें दान देकै यह उत्तम रस ग्रहण करना ॥ ३३ ॥ जो रससे ताप उपजै तो खांड गिलोयका सत्व वंशलोचन इन्होंको मिलाकै देवै॥३४॥ वा खजूरिये अनार दाख ईषका गंडा इन्होंको देवै अरुचि हो तो धनियांके तुषोंको दूर कर पीछे घृतमें भून खांड मिलाकै देवै ॥ ३५ ॥

दद्यात्तथाज्वरेधान्यंगुडूचीक्काथमाहरेत् ॥ उशीरवासकक्काथं दद्यात्समधुशर्करम् ॥ ३६ ॥ रक्तपित्तेकफेश्वासेकासेचस्वरसंक्षये ॥ अग्निभृष्टजयाचूर्णमधुनानिशिदीयते ॥ ३७ ॥ निद्रानाशेऽतिसारेचग्रहण्यांमंदपावके ॥ सौवर्चलाभयाकृष्णाचूर्णमुष्णजलैःपिबेत् ॥ ३८ ॥ शूलेऽजीर्णेतथाकृष्णामधुयुक्ताज्वरेहिता ॥ प्लीहोदरेवातरक्तेछर्द्यांचैवगुदांकुरे ॥ ३९ ॥ नासिकादिषुरक्तेषुरसंदाडिमपुष्पजम् ॥ दूर्वायाःस्वरसंनस्ये प्रदद्याच्छर्करायुतम् ॥ ४० ॥

अर्थ–ज्वर उपजै तो धनियाकों गिलोयके क्काथमें देवै वा खस और वासाके क्काथमें शहत और खांड मिलाकै देवै ॥ ३६ ॥ रक्तपित्त कफ श्वास खासी स्वर संक्षय इन्होंके उपजनेमें भांगको अग्निपर भून तिसकों शहतके संग रात्रिमें देवै ॥ ३७ ॥ नींदका नाश अतिसार संग्रहणी मंदाग्नि ये रोग उपजै तो कालानमक हरडै पीपल इन्होंके चूरणको गरमपानीके संग पीवै ॥ ३८ ॥ शूल और अजीर्णमेभी इसी चूर्णको गरम पानीके संग पीवै पीपलके चूरणमें शहत मिला लेनेंसे ज्वरमें हित होता है और तिल्लीरोग वातरक्त छर्दि ववासीर ॥ ३९ ॥ नासिका आदिमें रक्तका गिरना इन्होंमें अनारके फूलोंका रस देवै और नस्यविषै दूवके रसमें खांड मिलाकै देवै ॥ ४० ॥

कोलमज्जाकणाबर्हिपक्षभस्मसशर्करम् ॥ मधुनालेहयेच्छर्दिहिक्काकोपस्यशांतये ॥ ४१ ॥ विधिरेषप्रयोज्यस्तुसर्व-

स्मिन्पोटलीरसे ॥ मृगांकेहेमगर्भेचमौक्तिकाख्येरसेषुच ४२
इत्ययंलोकनाथाख्योरसःसर्वरुजोजयेत् ॥

अर्थ-चोरकी मज्जा पीपल मोरकी पांखका भस्म खांड इन्होंको शहतमें मिलाकर चाटै तो छर्दि और हिचकीका कोप दूर होवै ये सब अनुपान लोकनाथ रसके संग देने उचित है ॥ ४१ ॥ यही विधि सब प्रकारके पोटलीरसमें वा मृगांकमें वा हेमगर्भमें वा मौक्तिकाख्य रसोंमे करनी ॥ ४२ ॥ यह लोकनाथ रस सब रोगोंको जीतता है ॥

वराटभस्ममंडूरंचूर्णयित्वाघृतेपचेत् ॥ ४३ ॥ तत्सममंमारिचंचूर्णनागवल्ल्याविभावितम् ॥ तच्चूर्णमधुनालेह्यमथवानवनीतकैः ॥ ४४ ॥ माषमात्रंक्षयंहंतियामेयामेचभक्षितम् ॥
लोकनाथरसोह्येषमंडलाद्राजयक्ष्मनुत् ॥ ४५ ॥

अर्थ-कौडीका भस्म एक भाग मंडूर एक भाग इन दोनोंका चूरण कर घृतमें पकावै ॥ ४३ ॥ इस चूरणके बराबर मिरचोंका चूरण लेकै नागरपानके रसमें भावना देवै पीछे इस चूरणको शहतमें अथवा नौंनीतघृतमें मिलाकै चाटै ॥ ४४ ॥ एकएक पहरमें एकएक मासा भक्षण किया यह लोकनाथ रस एक मंडलभरमें अर्थात् चालीस दिनमें राजयक्ष्मरोगको नाश करता है ॥ ४५ ॥

भूर्जवत्तनुपत्राणिहेम्नःसूक्ष्माणिकारयेत् ॥ तुल्यानितानिसूतेनखल्वेक्षिप्त्वाविमर्दयेत् ॥ ४६ ॥ कांचनाररसेनैवज्वालामुख्यारसेनवा ॥ लांगल्यावारसैस्तावद्यावद्भवतिपिष्टिका ॥ ४७ ॥ ततोहेम्नश्चतुर्थांशंटंकणंतत्रनिक्षिपेत् ॥ पिष्टमौक्तिकचूर्णंचहेमाद्द्विगुणमावपेत् ॥ ४८ ॥ तेषुसर्वसमंगंधंक्षिप्त्वाचैकत्रमर्दयेत् ॥ तेषांकृत्वाततोगोलंवासोभिःपरिवेष्टयेत् ॥ ४९ ॥ पश्चान्मृदावेष्टयित्वाशोषयित्वाचधारयेत् ॥
शरावसंपुटस्यांतेतत्रमुद्रांप्रदापयेत् ॥ १०५० ॥

अर्थ-सोनाके भोजपत्रकी तरह मिहीन पत्रे बनाय तिन्होंके बराबर पारा मिलाय खरलमें घाल मर्दित करै ॥ ४६ ॥ काचनारके रस करकै अथवा ज्वालामुखीके रसकरकै अथवा कलहारीके रसकरकै मर्दित करता रहै पीठी बननेप-

र्यंत ॥ ४७ ॥ पीछे सोनासे चौथाई भाग सुहागा मिलाकै पिसे हुये मोतियोंका चूरण सोनासे दुगुना लेवै ॥४८॥ पीछे सबोंके बराबर गंधक मिलाकर एक जगह मर्दित करै पीछे तिन्होंका गोला बनाय वस्त्रसे लपेटै ॥ ४९ ॥ पीछे माटीका गारासे लपेट और सुखाकै सकोराका संपुटके भीतर धरकै मुद्रित करै ॥१०५०॥

लवणापूरितेभांडेधारयेत्तंचसंपुटम् ॥ मुद्रांदत्वाशोषयित्वा बहुभिर्गोमयैःपुटेत् ॥ ५१ ॥ ततःशीतेसमाहृत्यगंधंसूतसमंक्षिपेत् ॥ घृष्ट्वाचपूर्ववत्खल्वेपुटेद्गजपुटेनच ॥ ५१ ॥ स्वांगशीतंततोनीत्वागुंजायुग्मंप्रकल्पयेत् ॥ अष्टभिर्मरिचैर्युक्तः कृष्णात्रययुतोऽथवा ॥ ५३ ॥ विलोक्यदेयोदोषादिनैकैकारसरक्तिका ॥ सर्पिषामधुनावापिदद्याद्दोषाद्यपेक्षया ॥ ५४ ॥ लोकनाथसमंपथ्यंकुर्यात्स्वस्थमनाःशुचिः ॥ श्लेष्माणंग्रहणींकासंश्वासंक्षयमरोचकम् ॥ ५५ ॥ मृगांकोऽयंरसोहन्यात्कृशत्वंबलहीनताम् ॥

अर्थ—पीछे नमकसे पूरित किये पात्रमें तिस संपुटको धरै और मुखको खामकै और सुखाय बहुतसे गोबरके उपलोंसे पुट देवै ॥ ५१ ॥ पीछे शीतल होनेपर निकास पाराके बराबर गंधक मिला पहलेकी तरह खरलमें पीस गजपुटसे पकावै ॥ ५२ ॥ पीछे अंगोंसहित शीतल होजावै तब २ रत्तीभर रसको लेकै आठ मरिचोंके चूरणसे युक्त अथवा तीन पीपलोंके चूरणसे युक्त कर ॥ ५३ ॥ दोषआदिको देखकर एक रत्तीभर रसको घृतके संग अथवा शहतके संग दोषआदिकी अपेक्षासे देवै ॥ ५४ ॥ स्वस्थ मनवाला और पवित्र मनुष्य लोकनाथरसके समान पथ्यको करै कफ संग्रहणी खासी श्वास क्षयरोग अरोचक ॥ ५४ ॥ कृशपना बलकी हानि इन सबको यह मृगांकरस नाश करता है ॥

सूतात्पादप्रमाणेनहेम्नःपिष्टंप्रकल्पयेत् ॥ ५६ ॥ तयोःस्याद्द्विगुणोगंधोमर्दयेत्कांचनारिणा ॥ कृत्वागोलंक्षिपेन्मूषासंपुटेमुद्रयेत्ततः ॥ ५७ ॥ पचेद्भूधरयंत्रेणवासरत्रितयंबुधः ॥ ततउद्धृत्यतत्सर्वंदद्याद्गंधंचतत्समम् ॥ ५८ ॥ मर्दयेच्चार्द्रकरसैश्चित्रकस्वरसेनच ॥ स्थूलपीतवराटांश्चपूरयेत्तेनयुक्तितः

॥ ५९ ॥ एतस्मादौषधात्कुर्यादष्टमांशेनटंकणम् ॥ टंकणा-र्धंविषंदत्वापिष्ट्वासेहुंडदुग्धकैः ॥ ६० ॥

अर्थ–शुद्ध पारा एक भाग तिसके चौथाई हिस्सा खरल किया सोनाका चूरण ॥ ५६ ॥ वा दोनोंसे दुगुना गंधक इन सबको कचनारके रसमें खरल कर गोला बना दो घडियोंके संपुटमें घाल मुद्रित करै पीछे ॥ ५७ ॥ भूधरयंत्रकरकै तीन दिन वैद्य पकावै पीछे तिस द्रव्यको निकास तिसके समान गंधक देवै॥५८॥ पीछे अदरकके रसमें और चित्रक रसमें मर्दित कर स्थूल और पीली कौडियोंको तिस करकै युक्तिसे पूरित करै ॥ ५९ ॥ इस ओषधसे आंठमां हिस्सा सुहागा और सुहागासे आधा भाग विष देकै थोहरके दूधमें पीस ॥ ६० ॥

मुद्रयेत्तेनकल्केनवराटानांमुखानिच ॥ भांडेचूर्णप्रलिप्तेऽथ धृत्वामुद्रांप्रदापयेत् ॥ ६१ ॥ गर्तेहस्तोन्मितेधृत्वापुटेद्गजपुटेनच ॥ स्वांगशीतंरसंज्ञात्वाप्रदद्याल्लोकनाथवत् ॥ ६२ ॥ पथ्यंमृगांकवज्ज्ञेयंत्रिदिनंलवणंत्यजेत् ॥ यदाच्छर्दिर्भवेत्त-स्यदद्याच्छिन्नाशृतंतदा ॥ ६३ ॥ मधुयुक्तंतथाश्लेष्मकोपे दद्याद्गुडार्द्रकम् ॥ विरेकेभर्जिताभंगाप्रदेयादधिसंयुता ६४ जयेत्कासंक्षयंश्वासंग्रहणीमरुचिंतथा ॥ अग्निंचकुरुतेदीप्तंक-फवातंनियच्छति ॥ ६५ ॥ हेमगर्भःपरोज्ञेयोरसःपोटलि-काभिधः ॥

अर्थ–तिस कल्क करकै कौडियोंके मुखोंको बंध करै पीछे चूना करिकै लिपे हुये पात्रमें धरकै पात्रके मुखको बंध करै ॥ ६१ ॥ पीछे एक हाथ खडेमें धरकै गजपुटसे पकावै अंगोंसहित शीतल हुआ रसको जान लोकनाथरसकी तरह देवै ॥ ६२ ॥ इसपर पथ्य मृगांकरसकी तरह जानना तीन दिनपर्य्यंत नमकको त्यागै जो छर्दि उपजै तो तिसको गिलोयका काढामें शहत मिलाकै देवै ॥ ६३ ॥ कफका कोप होवै तो गुडसहित अदरक देवै जुलाब लगै तो भूनी हुई भांगको दहीमें मिलाकै देवै ॥ ६४ ॥ खासी श्वास संग्रहणी अरुचि इन्होंको जीतता है और अग्निको जगाता है कफवातको दूर करता है ॥ ६५ ॥ यह हेमगर्भ पोट-लीका रस है इसी नामवाला दूसरा रसभी है ॥

रसस्यभागाश्चत्वारस्तावंतःकनकस्यच ॥ ६६ ॥ तयोश्चपि-

ष्टिकांकृत्वागंधोद्वादशभागिकः ॥ कुर्यात्कज्जलिकांतेषांमुक्ताभागाश्चषोडश ॥ ६७ ॥ चतुर्विंशच्चशंखस्यभागैकंटंकणस्यच ॥ एकत्रमर्दयेत्सर्वंपक्वनिंबूकजैरसैः ॥ ६८ ॥ कृत्वा तेषांततोगोलंमूषासंपुटकेन्यसेत् ॥ मुद्रांदत्वाततोहस्तमात्रेगर्तेचगोमयैः ॥ ६९ ॥ पुटेद्गजपुटेनैवस्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥ पिष्ट्वागुंजाचतुर्मानंदद्याद्गव्याज्यसंयुतम् ॥ ७० ॥ एकोनत्रिंशद्धुन्मानमरिचैःसहदीयताम् ॥ राजतेमृन्मयेपात्रे काचजेवावलेहयेत् ॥ ७१ ॥ लोकनाथसमंपथ्यंकुर्याच्चस्वस्थमानसः ॥ कासेश्वासेक्षयेवातेकफेग्रहणिकागदे ॥ ७२॥ अतिसारेप्रयोक्तव्यापोटलीहेमगर्भिका ॥

अर्थ–पारा चार भाग सोनाका चूरण चार भाग ॥ ६६ ॥ तिन दोनोंकी पीठी बनाय गंधक बारह भाग मिलाके कज्जलि करै मोती सोलह भाग ॥ ६७ ॥ शंख चौवीस भाग सुहागा एक भाग इन सबको पके हुए नींबुओंके रसमें खरल करै ॥६८॥ पीछे तिन्होंका गोला बनाकर मूषा संपुटमें धर मुद्रा देकै एक हाथभर खडेमें गोवरके उपलोंसे ॥ ६९ ॥ गजपुटकरकै पकावै अच्छीतरह शीतल होनेपर निकासकै पीस चार रतीभर रसको गायके घृतमें मिला ॥ ७० ॥ उन तीस मिरचोंका चूरणके संग देवै चांदीके अथवा माटीके अथवा काचके पात्रमें घाल मिलावै ॥ ७१ ॥ इसपर स्वस्थ मनवाला मनुष्य लोकनाथरसके समान पथ्यको सेवै खासी श्वास क्षयी वात कफ संग्रहणीरोग ॥ ७२ ॥ अतिसार इन्होंमें यह हेमगर्भ पोटलीरस प्रयुक्त करना योग्य है ॥

शुद्धसूतोविषंगंधःप्रत्येकंशाणसंमितः ॥ ७३ ॥ धूर्तबीजं त्रिशाणंस्यात्सर्वेभ्योद्विगुणाभवेत् ॥ हेमाह्वाकारयेदेषांसूक्ष्मचूर्णंप्रयत्नतः ॥ ७४ ॥ देयंजंबीरमज्जाभिश्चूर्णंगुंजाद्वयोन्मितम् ॥ आर्द्रकस्वरसैर्वापिज्वरंहंतित्रिदोषजम् ॥१०७५॥ एकाहिकंद्व्याहिकंवात्र्याहिकंवाचतुर्थकम् ॥ विषमंचज्वरंहन्याद्विख्यातोयंज्वरांकुशः ॥ ७६ ॥

अर्थ—शुद्ध पारा मीठा तेलिया गंधक ये तीनों चारचार मासे ॥ ७३ ॥ धत्तूराके बीज वारह मासे सवोंसे दुगुनी चोक इन सबका चूरण जतनसे करै ॥७४॥ दो रत्तीभर चूरणको जंवीरी नींबूके रसमें अथवा अदरकके रसमें मिलाकै देवै यह त्रिदोषजज्वरको हरता है ॥ १०७५ ॥ एकाहिकज्वर द्याहिकज्वर त्र्याहिकज्वर चातुर्थिकज्वर विषमज्वर इन सबको नाश करता है यह ज्वरांकुश विख्यात है ॥ ७६ ॥

दरदंवत्सनाभंचमरिचंटंकणंकणा ॥ चूर्णयेत्समभागेनरसोह्यानंदभैरवः ॥ ७७ ॥ गुंजैकंवाद्विगुंजंवाबलंज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥ मधुनालेहयेच्चानुकुटजस्यफलंत्वचम् ॥ ७८ ॥ चूर्णितंकर्षमात्रंतुत्रिदोषोत्थातिसारनुत् ॥ दध्यन्नंदापयेत्पथ्यंगोघृतंतक्रमेवच ॥ ७९ ॥ पिपासायांजलंशीतंविजयाचहितानिशि ॥

अर्थ—सिंगरफ मीठतेलिया वछनाभ मिरच सुहागा पीपल इन सबको वरावर भाग लेकै चूरण करनेसे आनंदभैरव रस होता है ॥ ७७ ॥ बल जानकै एक रत्ती अथवा दो रत्तीभर रसको शहतमें मिलाकै चाटै इंद्रजव कूडाकी छाल ॥ ७८ ॥ इन्होंका चूरण वनाय एक तोलाभरका अनुपान करै यह त्रिदोषके अतिसारको नाश करता है दही चावल गौका घृत तक्र अर्थात् छाछ इन्होंका पथ्य देवै ॥७९॥ असंत तृषा लगै तो शीतल पानी देना और रात्रिमें भांग देनी ॥

विषंपलमितंसूतःशाणिकश्चूर्णयेद्द्वयम् ॥ ८० ॥ तच्चूर्णंसंपुटेक्षिप्त्वाकाचलिप्तशरावयोः ॥ मुद्रांदत्वाचसंशोष्यततश्चुल्ह्यांनिवेशयेत् ॥ ८१ ॥ वह्निंशनैःशनैःकुर्यात्प्रहरद्वयसंख्यया ॥ ततउद्घाटयेन्मुद्रामुपरिस्थांशरावकात् ॥ ८२ ॥ संलग्नोयोभवेत्सूतस्तंगृह्णीयाच्छनैःशनैः ॥ वायुस्पर्शोयथानस्यात्तथाकुप्यांनिवेशयेत् ॥ ८३ ॥ यावत्सूच्यामुखेलग्नःकुप्यानिर्यातिभेषजम् ॥ तावन्मात्रोरसोदेयोमूर्च्छितेसंनिपातिनि ॥ ८४ ॥ क्षीरेणप्रस्थितेमूर्ध्नितत्रांगुल्याचघर्षयेत् ॥ रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्च्छितोपिहिजीवति ॥ ८५ ॥ तथैवसर्प-

दष्टस्तुमृतावस्थोपिजीवति ॥ यदातापोभवेत्तस्यमधुरंतत्र दीयते ॥ ८६ ॥

अर्थ—मीठातेलिया एक पल और पारा चार मासे इन्होंका चूरण करै ॥ ८० ॥ तिस चूरणको काचसे लिपे हुये सकोरोंके संपुटमें घाल मुद्रा देकै और सुखाय पीछे चुल्हीपर धरै ॥ ८१ ॥ दो पहरपर्य्यंत हौलेंहौलें अग्निको देवै पीछे उपरकी मुद्राको दूर करै ॥ ८२ ॥ तहां लगा हुआ जो पारा हो तिसको हौलेंहौलें ग्रहण करै जैसे वायुका स्पर्श नहीं होसके तैसे काचकी शीशीमें घालै ॥ ८३ ॥ जितना सूईके मुखकै लगै तितना शीसीसे निकास रसको मूर्च्छावालेको संनिपातवालेको देवै ॥ ८४ ॥ दूधकरकै माथापर अंगुलीसे घसै और पाछना आदिसे माथाके रक्तको निकसावै इस संपर्कसे मूर्च्छित हुआभी जीवता है ॥८५॥ तैसेही सर्प करकै डशा हुआ और मरणकी अवस्थाको प्राप्त हुआभी जीवता है जो शरीरमें दाह उपजै तो गुलकंद दाख अनार इन आदि मधुर पदार्थ देने ॥ ८६ ॥

सूतभस्मसमंगंधंगंधात्पादंमनःशिला ॥ माक्षिकंपिप्पली व्योषंप्रत्येकंशिलयासमम् ॥८७॥ चूर्णयेद्भावयेत्पित्तैर्मत्स्य-मायूरसंभवैः ॥ सप्तधाभावयेच्छुष्कंदेयंगुंजाद्वयंहितम् ८८ तालपर्णीरसश्चानुपंचकोलशृतोऽथवा ॥ जलचूडोरसोनाम-सन्निपातंनियच्छति ॥ ८९ ॥ जलयोगश्चकर्तव्यस्तेनवीर्य-भवेद्रसे ॥

अर्थ—पाराका भस्म एक भाग गंधक एक भाग गंधकसे चौथा हिस्सा मन-शिल और मनशिलके बराबर भाग सोनामाखीका भस्म मिरच पीपल ॥ ८७ ॥ इन सबका चूरण कर मछली और मोरके पित्तोंके रसमें भावना देवै ऐसे सुखाकै सात वार भावना देवै पीछे दो रत्तीभर देना हित है ॥ ८८ ॥ मुसीलीके रसका अथवा पीपल पीपलामूल चव्य चित्रक सोंठ इन्होंके रसका अनुपान करै यह जलचूड रस सन्निपातको दूर करता है ॥ ८९ ॥ जलका योग करना तिसकरकै रसमें वीर्य होता है ॥

शुद्धसूतंविषंगंधंमरिचंटंकणंकणा ॥ ९० ॥ मर्दयेद्धूर्तजद्रा-वैर्दिनमेकंतुशोषयेत् ॥ पंचवक्त्रोरसोनामद्विगुंजःसन्निपा-तहा ॥ ९१ ॥ अर्कमूलकषायंतुसत्र्यूषमनुपाययेत् ॥ युक्तं

दध्योदनंपथ्यंजलयोगंचकारयेत् ॥ ९२ ॥ रसेनानेनशाम्यं-
तिसक्षौद्रेणकफादयः ॥ मध्वार्द्रकरसंचानुपिबेदग्निविवृद्धये
॥ ९३ ॥ यथेष्टंघृतमांसाशीशक्तोभवतिपावकः ॥

अर्थ-शुद्ध किया पारा शुद्ध किया मीठा तेलिया गंधक मिरच सुहागा पीपल ॥ ९० ॥ इनको धत्तूराके रसमें एक दिन मर्दित कर सुखावै यह पंचवक्त्र रस दोदो रत्तीभर देनेंसे सन्निपातको नाश करता है ॥ ९१ ॥ इसपर आककी जडका काढामें सोंठ मिरच पीपलका चूरण घाल अनुपान करै दही चावलका पथ्य देवै और जलका योग करावै ॥ ९२ ॥ शहतसे संयुक्त किये इस रसकरकै कफआदि शांत होते हैं और अग्निकी वृद्धिके अर्थ शहतसहित अदरकका रस पीना ॥ ९३ ॥ जो अग्नि समर्थ हो तो मनोवांछित घृत और मांस आदिको खावै ॥

रसगंधौसमानांशौधत्तूरफलजैरसैः ॥ ९४ ॥ मर्दयेद्दिनमे-
कंचतत्तुल्यंत्रिकटुक्षिपेत् ॥ उन्मत्ताख्योरसोनामनस्येस्या-
त्सन्निपातजित् ॥ ९५ ॥

अर्थ-पारा और गंधक बराबर भाग ले धत्तूराके फलोंके रसमें ॥ ९४ ॥ एक दिन मर्दित करै पीछे बराबर भाग सोंठ मिरच पीपलका रस मिलावै उन्मत्त नामवाला रस नस्यमें सन्निपातको जीतता है ॥ ९५ ॥

निस्त्वक्जेपालबीजंचदशनिष्कंविचूर्णयेत् ॥ मरिचंपिप्पलीं-
सूतंप्रतिनिष्कंविमिश्रयेत् ॥ ९६ ॥ भाव्योजंबीरजैर्द्रावैः
सप्ताहंसंप्रयत्नतः ॥ रसोयमंजनेदत्तःसन्निपातंविनाशयेत् ९७

अर्थ-छालसे वर्जित जमालगोटाके बीज चालीसमासे और मिरच पीपल पारा ये सब चारचार मासे लेकै चूरण करै ॥ ९६ ॥ इसको जंवीरी नींबुओंके रसमें सात दिन जतनसे भावना देवै यह रस अंजनकेद्वारा देनेंसे सन्निपातको नाश करता है ॥ ९७ ॥

सूतटंकणकेतुल्येमरिचंसूततुल्यकम् ॥ गंधकंपिप्पलींशुंठीं
द्वौद्वौभागौविचूर्णयेत् ॥ ९८ ॥ सर्वतुल्यंक्षिपेद्दंतीबीजंनिस्तु
षितंभिषक् ॥ द्विगुंजंरेचनंसिद्धंनाराचोऽयंमहारसः ॥ ९९ ॥
आध्मानंशुलविष्टंभानुदावर्तंचनाशयेत् ॥

अर्थ–पारा और सुहागा और मिरच वराबरभाग गंधक पीपल सोंठ ये दोदो भाग ले चूरण करै ॥ ९८ ॥ सबोंके बराबर छालसे रहित जमालगोटाके बीज लेकै खरल करै दो रत्ती देनेसे जुलाव लगता है यह नाराचनामवाला महारस है ॥ ९९ ॥ यह अफरा शूल विष्टंभ उदावर्त इन सबको नाश करता है ॥

दरदंटंकणंशुंठीपिप्पलीचेतिकार्षिकाः ॥ ११०० ॥ हेमाह्वापलमात्रास्याद्दंतीबीजंचतत्समम् ॥ विशोष्यैकत्रसर्वाणिगोदुग्धेनैवपाययेत् ॥ १ ॥ त्रिगुंजंरेचनंदद्याद्विष्टंभाध्मानरोगिषु ॥

अर्थ–शिंगरफ सुहागा सोंठ पीपल ये सब एकएक तोला ॥ ११०० ॥ चोक चार तोले जमालगोटाके बीज चार तोले इन सबको एक जगह खरल कर सुखाय गौका दूधकेसाथ पान करावै ॥ १ ॥ विष्टंभ और अफराआदि रोगवालोंको तीन रत्तीभर यह रस देना ॥

द्वौभागौहेमभूतेश्चगगनंचापितत्समम् ॥ २ ॥ लोहभस्मत्रयोभागाश्चत्वारोरसभस्मतः ॥ वंगभस्मत्रिभागंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥ ३ ॥ प्रवालंमौक्तिकंचैवरससात्म्येनदापयेत् ॥ भावनागव्यदुग्धेनरसैर्घृष्टाटरूषकैः ॥ ४ ॥ हरिद्रावारिणाचैवमोचकंदरसेनच ॥ शतपत्ररसेनापिमालत्याःस्वरसेनच ॥ ५ ॥ पश्चान्मृगमदश्चंद्रस्तुलसीरसभावितः ॥ कुसुमाकरइत्येषवसंतपदपूर्वकः ॥ ६ ॥ गुंजाद्वयंददीतास्यमधुनासर्वमेहनुत् ॥ सिताचंदनसंयुक्तश्चाम्लपित्तादिरोगजित् ७

अर्थ–सोनाका भस्म २ भाग अभ्रकभस्म २ भाग ॥ २ ॥ लोहाका भस्म ३ भाग पाराका भस्म ४ भाग रांगका भस्म ३ भाग ॥ ३ ॥ मूंगा और मोतीका भस्म ४ भाग इन्होंकै गौका दूधकी वा वांसाका रसकी ॥ ४ ॥ वा हलदीका वा केलाका रसकी वा कमलका रसकी वा मालतीका रसकी ॥ ५ ॥ वा कस्तूरीका जलकी वा भीमसेनीकपूरकी वा तुलसीका रसकी भावना देकै खरलकर गोली बांधै यह वसंतकुसुमाकर रस है ॥ ६ ॥ इस रसको दो रत्तीभर ले शहतमें मिलाकै देवै सब प्रकारके प्रमेहोंको नाश करता है मिश्री और चंदनसे संयुक्त किया यह रस आम्लपित्त आदि रोगोंको जीतता है ॥ ७ ॥

२६

सूतभस्मत्रिभागंस्याद्भागैकंहेमभस्मकम् ॥ मृताभ्रस्यच भागैकंशिलागंधकतालकम् ॥ ८ ॥ प्रतिभागद्वयंशुद्धमेकीकृत्यविचूर्णयेत् ॥ वराटान्पूरयेत्तेनछागीक्षीरेणटंकणम् ॥ ९ ॥ पिष्ट्वातेनमुखंरुध्वामृद्भांडेतन्निरोधयेत् ॥ शुष्कंगजपुटेपक्त्वाचूर्णयेत्स्वांगशीतलम् ॥ १० ॥ रसोराजमृगांकोऽयंचतुर्गुंजःक्षयापहः॥ दशपिप्पलिकाक्षौद्रैरेकोनत्रिंशदूषणैः ११

अर्थ—पाराका भस्म तीन भाग सोनाका वा अभ्रकका भस्म एकएक भाग मनशिल गंधक हरताल ॥ ८ ॥ ये तीन शुद्ध किये ओषध दोदो भाग इन सबको मिला चूरण कर कौडियोंको पूरित करै पीछे बकरीके दूधमें सुहागाको ॥ ९ ॥ पीस तिसकरकै कौडियोंके मुखोंको बंध कर माटीके पात्रमें घाल रोकै सुखाकै गजपुटमें पकाय अच्छीतरह शीतल होनेपर निकास चूरण करै ॥१०॥ यह राजमृगांक रस है चार रत्ती देनेसे क्षयीरोगको नाश करता है दश पीपल उन तीस मिरच शहत इन्होंके संग यह रस देना ॥ ११ ॥

शुद्धंसूतंद्विधागंधंकुर्यात्खल्वेनकज्जलीम् ॥ तयोःसमंतीक्ष्णचूर्णंमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ॥ १२ ॥ द्वियामांतेकृतंगोलंताम्रपात्रेविनिक्षिपेत् ॥ आच्छाद्यैरंडपत्रेणयामार्धेऽत्युष्णताभवेत् ॥ १३ ॥ धान्यराशौन्यसेत्पश्चादहोरात्रात्समुद्धरेत्॥ संचूर्ण्यगालयेद्वस्त्रेसत्यंवारितरंभवेत् ॥ १४ ॥ भावयेत्कन्यकाद्रावैःसप्तधाभृंगजैस्तथा ॥ काकमाचीकुरंटोत्थद्रवैर्मुंड्यापुनर्नवैः ॥ १५ ॥ सहदेव्यमृतानीलीनिर्गुंडीचित्रजैस्तथा॥ सप्तधातुपृथग्द्रावैर्भाव्यंशोष्यंतथातपे ॥ १६ ॥ सिद्धयोगो ह्ययंख्यातःसिद्धानांचमुखागतः ॥ अनुभूतोमयासत्यंसर्वरोगगणापहः ॥ १७ ॥

अर्थ—शुद्ध पारा १ भाग शुद्ध गंधक २ भाग इन दोनोंकी कज्जली बनाकर और दोनोंके बराबर पोहलादका चूरण मिला कुवारपाठाके रसमें खरल करै॥१२॥ दो पहरके अंतमें गोला बनाय तांबाके पात्रमें घाल अरंडके पत्तोंसे लपेट आधा पहरमें अत्यंत गरम होवै ॥ १३ ॥ पीछे अन्नके समूहमें धर एक दिन रात्रिमें

निकासै चूरण कर वस्त्रमांहकर छानै जब पानीमें तिरने लगै तब सिद्ध जानै ॥ १४ ॥ पीछे कुवारपाठाके रस भंगराका रस मकोहका रस कोरंटाका रस झुंडीका रस साठीका रस ॥ १५ ॥ सहदेवेका रस गिलोयका रस नीलीका रस संभालूका रस चित्रकका रस इन्होंमें अलग अलग सात सात वार भावना देकै घाममें सुखावै ॥ १६ ॥ सिद्धोंके मुखसें आया हुआ यह सिद्धयोग विख्यात है और मैंनें इसका अनुभव किया है सब रोगोंके समूहको नाश करता है ॥ १७ ॥

स्वर्णादीन्मारयेदेवंचूर्णीकृत्यतुलोहवत् ॥ त्रिफलामधुसंयुक्तः सर्वरोगेषुयोजयेत् ॥ १८ ॥ त्रिकटुत्रिफलैलाभिर्जातीफललवंगकैः ॥ नवभागोन्मितैरेतैःसमःपूर्वरसोभवेत् ॥ १९ ॥ संचूर्ण्यालोडयेत्क्षौद्रैर्भक्ष्यंनिष्कद्वयंद्वयं ॥ स्वयमग्निरसोनाम्नाक्षयकासनिकृंतनः ॥ २० ॥

अर्थ—ऐसेही लोहाकी तरह चूरण कर सोनाआदिकोंभी मारै त्रिफला और शहतसे संयुक्त कर सब रोगोंमें युक्त करै ॥ १८ ॥ सोंठ मिरच पीपल त्रिफला इलायची जायफल लौंग इनके नवभागोंके समान इस पूर्वोक्त रसको लेकै ॥१९॥ अच्छी तरह चूरण कर शहतकेसंग आठआठमासेभर खावै यह स्वयमग्निरस क्षयरोगको और खासीको दूर करता है ॥ २० ॥

सूतार्धोगंधकोमर्द्योयामैकंकन्यकाद्रवैः ॥ द्वयोस्तुल्यंताम्रपत्रंपूर्वकल्केनलेपयेत् ॥ २१ ॥ दिनैकंस्थालिकायंत्रेपक्त्वा चादायचूर्णयेत् ॥ सूर्यावर्तोरसोह्येषद्विगुंजःश्वासजिद्भवेत् २२

अर्थ—शुद्ध पारा एक भाग गंधक पारासे आधा भाग दोनोंके बराबर तांबाके पत्र लेकै पारा गंधकको कुवारपाठके रसमें खरलकर कल्क बना तिस्से लेप करै ॥ २१ ॥ पीछे एक दिन स्थालिकायंत्रमें पकाकै ग्रहण कर चूरण करै यह सूर्यावर्तरस है दो रत्तीभर देनेसे श्वासको जीतता है ॥ २२ ॥

शुद्धसूतंमृतंलोहंताप्यंगंधकतालकम् ॥ पथ्याग्निमंथनिर्गुंडीत्र्यूषणंटंकणंविषम् ॥ २३ ॥ तुल्यांशंमर्दयेत्खल्वेदिनंनिर्गुंडिकाद्रवैः ॥ मुंडीद्रावैर्दिनैकंतुद्विगुंजंवटकीकृतम् ॥ २४ ॥ भक्षयेद्वातरोगार्तोनाम्नास्वच्छंदभैरवः ॥ रास्नामृतादेवदा-

रुशुंठीवातारिजंश्टतम् ॥ ११२५ ॥ सगुग्गुलुंपिबेत्कोष्णम-
नुपानसुखावहम् ॥

अर्थ—शुद्ध पारा लोहका भस्म सोनामाखीका भस्म गंधक हरताल हरडै .अ-रनी संभालु सोंठ मिरच पीपल सुहागा मिठातेलिया ॥२३॥ ये सब बराबर भाग ले संभालुके रसमें एक दिन खरल करै पीछे मुंडीके रसमें एक दिन खरल कर दो रत्तीकी गोली बनाय ॥ २४ ॥ वातरोगी भक्षण करै यह स्वच्छंदभैरवरस है इसपर रायसन गिलोय देवदार सोंठ अरंडकी छाल इन्होंका काढा बनाय ॥ ११२५ ॥ तिसमें गूगल मिलाय कछुक गरमगरम पीवै यह अनुपान सुखको देता है ॥

दग्धान्कपर्दिकान्पिष्ट्वात्र्यूषणंटंकणंविषम् ॥ २६ ॥ गंधकं
शुद्धसुतंचतुल्यंजबीरजैर्द्रवैः ॥ मर्दयेद्भक्षयेन्माषंमरिचाज्यं
लिहेदनु ॥ २७ ॥ निहंतिग्रहणीरोगंपथ्यंतक्रौदनंहितम् ॥

अर्थ—कौडियोंका भस्म सोंठ मिरच पीपल सुहागा मीठातेलिया ॥ २६ ॥ गंधक शुद्धपारा इन्होंको बराबर भाग ले जंबीरी नींबुओंके रसमें खरल करै पीछे एक मासाभर रसको खाकै मिरचोंका चूरणसहित घृतका अनुपान करै ॥२७ ॥ यह संग्रहणीका रोगको नाश करता है इसपर गौकी छाछ और चावलोंका खाणा पथ्य है ॥

मृतंताम्रमजाक्षीरेपाच्यंतुल्येगतद्रवम् ॥ २८ ॥ तत्ताम्रंशु-
द्धसूतंचगंधकंचसमंसमम् ॥ निर्गुंडीस्वरसैर्मर्द्यंदिनंतद्गोल-
कंकृतम् ॥ २९ ॥ यामैकंवालुकायंत्रेपाच्यंयोज्यंद्विगुंजकम् ॥
बीजपूरस्यमूलंतुसजलंचानुपाययेत् ॥ ३० ॥ रसस्त्रिविक्र-
मोनाम्नामासैकेनाश्मरीप्रणुत् ॥

अर्थ—तांवाका भस्मके बरावर भाग बकरीका दूध ले तिसमें तांबाका भस्म घाल पकावै ॥ २८ ॥ पीछे वह तांबाका भस्म शुद्ध किया पारा गंधक ये बराबर भाग लेकै संभालुके रसमें एक दिन खरल करै पीछे तिसका गोला बनाय॥२९॥ एक प्रहरपर्य्यंत वालुकायंत्रमें पकावै और दो रतीभर देवै इसपर बिजोराकी जडके रसका अनुपान करै ॥ ३० ॥ यह त्रिविक्रमरस एक महीना सेवनेसे पथरीको नाश करता है ॥

तालंताप्यंशिलासूतंशुद्धंसैंधवटंकणे ॥ ३१ ॥ समांशंचूर्ण-
येत्खल्वेसूताद्विगुणगंधकम् ॥ गंधतुल्यंमृतंताम्रंजंबीरैर्दिन-
पंचकम् ॥ ३२ ॥ मर्द्यंषड्भिःपुटैःपाच्यंभूधरेसंपुटोदरे ॥
पुटेपुटेद्रवैर्मर्द्यंसर्वमेतच्चषट्पलम् ॥ ३३ ॥ द्विपलंमारितं
ताम्रंलोहभस्मचतुःपलम् ॥ जंबीराम्लेनतत्सर्वंदिनंमर्द्यपुटे-
ल्लघु ॥ ३४ ॥ त्रिंशदंशंविषंचास्यक्षिप्त्वासर्वंविचूर्णयेत् ॥
माहिषाज्येनसंमिश्रंनिष्कार्धंभक्षयेत्सदा ॥ ३५ ॥ मध्वा-
ज्यैर्बाकुचीचूर्णंकर्षमात्रंलिहेदनु ॥ सर्वकुष्ठानिहंत्याशुमहा-
तालेश्वरोरसः ॥ ३६ ॥

अर्थ—हरताल सोनामाखीका भस्म मनशिल शुद्ध किया पारा सेंधानमक सु-
हागा ॥ ३१ ॥ ये सब बराबर भाग और पारासे दुगुना गंधक और गंधकके
बराबर तांबाका भस्म इन्होंको जंबीरीनींबूके रसमें पांच दिन ॥ ३२ ॥ खरलकर
छः पुठोंकरकै संपुटमें धरके भूधरयंत्रविषै पकावै पुटपुटमें जंबीरीनींबूके रसमें
खरल करता रहै ॥ ३३ ॥ पीछे तांबाका भस्म दो पल लोहाका भस्म चार पल
ऐसे छः पलभर ओषध ले जंबीरीनींबूके रसमें एक दिन खरलकर लघुपुट देवै
॥ ३४ ॥ पीछे तीसवां हिस्सा मीठा तेलिया मिला कर सबका चूरण करै पीछे
भैंसके घृतमें मिला दो मासेभर सब कालमें खावै ॥ ३५ ॥ इसपर शहत और घृ-
तसे संयुक्त किया एक तोलाभर बावचीका चूरण अनुपान करना यह महताले-
श्वररस सब प्रकारके कुष्ठोंको हरता है ॥ ३६ ॥

सूतभस्मसमोगंधोमृतायस्ताम्रगुग्गुलू ॥ त्रिफलाचमहानिं-
बश्चित्रकश्चशिलाजतु ॥ ३७ ॥ इत्येतच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंशा-
णषोडश ॥ चतुःषष्टिकरंजस्यबीजचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥ ३८ ॥
चतुःषष्टिमृतंचाभ्रमध्वाज्याभ्यांविलोडयेत् ॥ स्निग्धभांडेधृ-
तंखादेद्द्विनिष्कंसर्वकुष्ठनुत् ॥ ३९ ॥ रसःकुष्ठकुठारोयंगलत्कु-
ष्ठनिवारणः ॥

अर्थ—पाराका भस्मतुल्य गंधक लोहाका भस्म तांबाका भस्म गूगल हरडै बहेडा
आंवला बकायण चित्रक शिलाजीत ॥ ३७ ॥ ये ओषध चौसठचौसठ मासे और

करंजुआके बीज २५६ मासे इन्होंका चूरण बनावै ॥ ३८ ॥ और अभ्रकका भस्म २५६ मासे मिलाकै शहत और घृतसे संयुक्त कर चिकनापात्रमें घाल धरै आठ मासेभर खानेंसे सब प्रकारके कुष्ठोंका नाश होता है ॥ ३९ ॥ यह कुष्ठकुठार रस है गलत्कुष्ठको दूर करता है ॥

शुद्धंसूतंद्विधागंधंमर्द्यकन्याद्रवैर्दिनम् ॥ ४० ॥ तद्गोलंपिठरीमध्येताम्रपात्रेणरोधयेत् ॥ सूतकाद्विगुणेनैवशुद्धेनाधोमुखेनच॥४१॥ पार्श्वेभस्मनिधायाथपात्रोर्ध्वंगोमयंजलम् ॥ किंचित्प्रदातव्यमग्निंचुल्ल्यांयामद्वयंपचेत् ॥ ४२ ॥ चंडाग्निनातदुद्धृत्यस्वांगशीतंविचूर्णयेत् ॥ काष्ठोदुंबरिकावह्नित्रिफलाराजवृक्षकम् ॥ ४३ ॥ विडंगबाकुचीबीजंक्वाथयेत्तेन भावयेत् ॥ दिनैकमुदयादित्योरसोदेयोद्विगुंजकः ॥ ४४ ॥ विचर्चिकांदद्रुकुष्ठंवातरक्तंचनाशयेत् ॥

अर्थ—शुद्ध किया पारा एक भाग गंधक दो भाग इनको कुवारपाठके रसमें एक दिन खरल करै ॥ ४० ॥ तिसका गोला बनाय मटकामें घाल, पारासे तिगुना शुद्ध किया तांबाके पात्रका नीचो मुखकर रोकै ॥ ४१ ॥ पीछे पार्श्वमें राखको स्थापित करै पात्रकेउपर गोवरको पानी कछुक देकै अग्निसे चुल्हापर दो पहरपर्यंत पकावै ॥ ४२ ॥ तेज अग्निसे पकानेसे पीछे जब अंगोंसहित शीतल हो जावै तब चूरण करै पीछे गूलर चित्रक त्रिफला अमलतास ॥ ४३ ॥ वायविडंग बावचीके बीज इन्होंका काढा बनाय तिसमें एक दिन भावना देवै यह उदयादित्यरस दो रती देना ॥ ४४ ॥ विचर्चिका दद्रुकुष्ठ वातरक्त इनको नाश करता है ॥

अनुपानंचकर्तव्यंबाकुचीफलचूर्णकम् ॥ ४५ ॥ खदिरस्य कषायेणसमेनपरिपाचितम् ॥ त्रिशाणंतद्रवांक्षीरैःक्वाथैर्वा त्रिफलैःपिबेत् ॥ ४६ ॥ त्रिदिनांतेभवेत्स्फोटःसप्ताहाद्वा किलासके ॥ नीलीगुंजाश्वकासीसंधत्तूरंहंसपादिकम्॥४७॥ सूर्यभक्ताचचांगेरीपिष्ट्वामूलानिलेपयेत् ॥ स्फोटस्थानप्रशांत्यर्थंसप्तरात्रंपुनःपुनः ॥ ४८ ॥ श्वेतकुष्ठान्निहंत्याशुसाध्या-

साध्यंनसंशयः ॥अपरःश्वित्रलेपोऽपिकथ्यतेत्रभिषग्वरैः ४९
गुंजाफलाग्निचूर्णंचप्रलेपःश्वेतकुष्ठनुत्॥ शिलापामार्गभस्मा-
.पिलिप्तंश्वित्रंविनाशयेत् ॥ ११५० ॥

अर्थ–इसपर बावचीके फलोंको चूरणका अनुपान करना ॥४५॥ खैरके काढेमें बावचीका चूरण एक तोलाभर मिला कर देवै अथवा गायके दूधमें अथवा त्रिफलाका काढामें रसको देवै ॥४६॥ तीन दिनमें अथवा सात दिनमें श्वेतकुष्ठवालाकै स्फोट अर्थात् फोडा होवे तब नीली चिरमठी कासीस धचूरा हंसपादी ॥४७॥ सूर्य्यफूल चूका इनकी जड लेकै पीस सात दिनपर्य्यंत वारंवार लेप करै तब फोडे शांत होते है ॥४८॥ श्वेतकुष्ठोंको साध्य और असाध्य कुष्ठको शीघ्र नाश करता है इसमें संशय नहीं यहां वैद्योंनें लेपका दूसरा प्रकारभी कहा है ॥ ४९ ॥ चिरमठीका चित्रकका वारीक चूरण कर पानीमें मिला लेप करनेसे श्वेतकुष्ठका नाश होता है मनशिल ऊंगाका भस्म इन्होंका लेपभी श्वित्रकुष्ठको नाश करता है ॥ ११५० ॥

शुद्धंसूतंचतुर्गंधंपलंयामंविचूर्णयेत् ॥ मृतताम्राभ्रलोहानां
दरदस्यपलंपलम्॥ ५१ ॥ सुवर्णरजतंचैवप्रत्येकंदशनिष्क-
कम् ॥ माषैकंमृतवज्रंचतालंशुद्धंपलद्वयम् ॥ ५२ ॥ जंबी-
रोन्मत्तवासाभिःस्नुह्यर्कविषमुष्टिभिः ॥ मर्द्यंहयारिजैर्द्रावै-
प्रत्येकेनदिनंदिनम् ॥ ५३ ॥ एवंसप्तदिनंमर्द्यंतद्गोलंवस्त्रवे-
ष्टितम् ॥ वालुकायंत्रगंस्वेद्यंत्रिदिनंलघुवह्निना ॥ ५४ ॥
आदायचूर्णयेच्छ्लक्ष्णंपलैकंयोजयेद्विषम् ॥ द्विपलंपिप्पली-
चूर्णमिश्रंसर्वेश्वरोरसः ॥ ५५ ॥ द्विगुंजोलिह्यतेक्षौद्रैःसुप्ति-
मंडलकुष्ठनुत् ॥ बाकुचीदेवकाष्ठंचकर्षमात्रंसुचूर्णयेत् ॥५६॥
लिहेदेरंडतैलाक्तमनुपानंसुखावहम् ॥

अर्थ–शुद्ध किया पारा चार पल गंधक एक पल इनका एक पहर चूरण करै तांबाका भस्म अभ्रकभस्म लोहभस्म शिंगरफ ये सब पलपल प्रमाण ले ॥५१॥ सोनाका भस्म वा चांदीका भस्म चालीसचालीस मासे ले हीराका भस्म एक मासा हरतालका सत दो पल ॥ ५२ ॥ जवेरी धचूरा वासा थोहर आक कुचला क-

नेर इन्होंके रसोंमें अलग अलग एक एक दिन खरल करै ॥५३॥ ऐसे सात दिन मर्दित कर गोला बनाय वस्त्रसे लपेट तीन दिन वालुकायंत्रमें मंद अग्निसे स्वेदित करै ॥ ५४ ॥ पीछे चूरण कर मीठा तेलिया एक पल पीपल दो पल मिलानेसे सर्वेश्वररस बनता है ॥ ५५ ॥ दो रतीभर रसको शहतमें मिला चाटै शुनवहरी मंडलकुष्ठ इनको नाश करता है इसपर वावची और देवदारका चूरण एक तोला लेकै ॥ ५६ ॥ अरंडके तेलमें मिला चाटै यह अनुपान सुख देता है ॥

हेमाह्वांपंचपलिकांक्षिप्त्वातक्रघटेपचेत् ॥ ५७ ॥ तक्रेजीर्णे समाहृत्यपुनःक्षीरघटेपचेत् ॥ क्षीरेजीर्णेसमुद्धृत्वाक्षालयित्वाविशेषतः ॥५८॥ तच्चूर्णपंचपलिकंमरिचानांपलद्वयम् ॥ पलैकंमूर्च्छितंसूतमेकीकृत्यतुभक्षयेत् ॥ ५९ ॥ निष्कैकंसुप्तिकुष्ठार्तःस्वर्णक्षीरीरसोह्ययम् ॥

अर्थ–चोककी लकडी पांच पल लेकै तक्रके घडेमें गेर कर पकावै ॥५७॥ जब तक्र जीर्ण हो जावै तब निकास फिर दूधके घडेमें गेर पकावै जब दूध जल जावै तब निकास और विशेषसे धोवै ॥ ५८ ॥ वीस तोलेभर यह चूरण मिरचोंका चूरण आठ तोले मूर्छित किया पारा एक तोला इन सबको एक कर ॥ ५९ ॥ चार मासेभर भक्षण करै यह शुनवहरी और कुष्ठको हरता है यह स्वर्णक्षीरी रस है ॥

भस्मसूतेमृतंकांतंमुंडभस्मशिलाजतु ॥ ६० ॥ शुद्धंताप्यंशिलाव्योषंत्रिफलांकोलबीजकम् ॥ कपित्थंरजनीचूर्णंभृंगराजेनभावयेत् ॥ ६१ ॥ विंशद्वारंविशोष्याथमधुयुक्तंलिहेत्सदा ॥ निष्कमात्रंहरेन्मेहान्मेहबद्धरसोमहान् ॥ ६२ ॥ महानिंबस्यबीजानिपिष्ट्वाषट्संमितानिच ॥ पलंतंदुलतोयेनघृतनिष्कद्वयेनच ॥ ६३ ॥ एकीकृत्यपिबेच्चानुहंतिमेहंचिरंतनम् ॥

अर्थ–पाराका भस्म कांतलोहाका भस्म लोहका भस्म शुद्ध किया शिलाजीत ॥६०॥ सोनामाखीका भस्म मनशिल सूंठ मिरच पीपल हरडै बहेडा आंवला अंकोलबीज कैथ हलदीका चूरण इन्होंको भंगराके रसमें भावना देवै ॥६१॥ ऐसे वीशवार भावना देकै अच्छी तरह सुखाय चार मासे रसको शहतमें मिला सबकालमें चाटै

यह मेहवद्धरस सब प्रमेहोंको नाश करता है ॥ ६२ ॥ महानिंबका बीज २४ तोलेभर लेकै चार तोलेभर चावलोंके पानीमें पीस और आठ मासेभर घृत मिलाकर ॥ ६३ ॥ अनुपान करै यह पुरातन प्रमेहको नाश करता है ॥

चतुःसूतस्यगंधाष्टौरजनीत्रिफलाशिवा ॥ ६४ ॥ प्रत्येकंच द्विभागंस्यात्रिवृज्जैपालचित्रकाः ॥ प्रत्येकंचत्रिभागंस्यात्र्यूषणंदंतिजीरकम् ॥ ६५ ॥ प्रत्येकमष्टभागंस्यादेकीकृत्यविचूर्णयेत् ॥ जयंतीस्नुक्पयोभृंगवह्निवातारितैलकैः ॥ ६६ ॥ प्रत्येकेनैक्रमाद्भाव्यंसप्तवारंपृथक्पृथक् ॥ महावह्निरसोनाम निष्कमुष्णजलैःपिबेत् ॥ ६७ ॥ विरेचनंभवेत्तेनतक्रभक्तंसुसैंधवम् ॥ दिनांतेदापयेत्पथ्यंवर्जयेच्छीतलंजलम् ॥ ६८ ॥ सर्वोदरहरःप्रोक्तोमूढवातहरःपरः ॥

अर्थ–पारा चार भाग गंधक आठ भाग और हलदी हरडै बहेडा आंवला छोटी हरडै ॥ ६४ ॥ ये सब दोदो भाग निशोत जमालगोटा चित्रक ये तीनों तीनतीन भाग और सोंठ मिरच पीपल जमालगोटाकी जड जीरा ॥ ६५ ॥ ये सब आठआठ भाग इन सबको मिलाकै चूरण करै पीछे अरनीका रस थोहरका दूध भंगराका रस चित्रकका रस अरंडका तेल इन्होंमें ॥ ६६ ॥ अलगअलग सातवार भावना देवै इस महावन्हिरसको चार मासेभर लेकै गरम पानीकेसाथ पीवै ॥ ६७ ॥ तिस करकै जुलाब लगता है चावल तक्र सैंधानमक इन्होंका पथ्य दिनके अंतमें देवै और शीतल पानीको वर्जित करै ॥ ६८ ॥ सब प्रकारके उदररोगोंको हरता है और मूढ वातको हरनेवाला कहा है ॥

गंधकंतालकंताप्यंमृतताम्रंमनःशिलाम् ॥ ६९ ॥ शुद्धंसूतंचतुल्यांशंमर्दयेद्भावयेद्दिनम् ॥ पिप्पल्यास्तुकषायेणवज्रीक्षीरेणभावयेत् ॥ ७० ॥ निष्कार्धंभक्षयेत्क्षौद्रैर्गुल्मप्लीहादिकंजयेत् ॥ रसोविद्याधरोनामगोमूत्रंचपिबेदनु ॥ ७१ ॥

अर्थ–गंधक हरताल सोनामाखीका भस्म तांबाका भस्म मनशिल ॥ ६९ ॥ शुद्ध किया पारा ये सब बराबर भाग ले एकदिन मर्दित करै पीछे पीपल काढामै और थोहरके दूधमै एक दिन भावना देवै ॥ ७० ॥ पीछे २ मासेभर रसको शहतमें

मिलाकै खावै यह गुल्म और तिल्लीरोग आदिको जीतता है यह विद्याधर रस है इसपर गोमूत्रका अनुपान है ॥ ७१ ॥

टंकणंहारिणंशृंगंस्वर्णंशुल्बंमृतंरसम् ॥ दिनैकमार्द्रकद्रावैर्मर्द्यंरुध्वापुटेपचेत् ॥ ७२ ॥ त्रिनेत्राख्यरसस्यैकंमाषंमध्वाज्यकैर्लिहेत् ॥ सैंधवंजीरकंहिंगुमध्वाज्याभ्यांलिहेदनु॥७३॥ पंक्तिशूलहरःख्यातोमासमात्रान्नसंशयः ॥

अर्थ—सुहागा हिरणका शींग सोनाका भस्म तांबाका भस्म पाराका भस्म इन्होंको अदरकके रसमें एक दिन खरलकर सकोराके संपुटमें घालै और बंधकर पुटमें पकावै ॥ ७२ ॥ इस त्रिनेत्रनामवाला रसको एक मासाभर लेकै शहत और घृतमें मिलाकै घोटै इसपर सेंधानमक जीरा हींग इन्होंका घृत और शहतमें मिलाकै चाटै ॥ ७३ ॥ एक महीना इस रसको सेवनेसे पंक्तिशूल दूर होता है ॥

शुद्धसूतंद्विधागंधंयामैकंमर्दयेद्दृढम् ॥ ७४ ॥ द्वयोस्तुल्यंशुद्धताम्रंसंपुटेतंनिरोधयेत् ॥ ऊर्ध्वाधोलवणंदत्वामृद्भांडेधारयेद्भिषक् ॥ ११७५ ॥ ततोगजपुटेपक्त्वास्वांगशीतंसमुद्धरेत् ॥ संपुटंचूर्णयेत्सूक्ष्मंपर्णखंडेद्विगुंजकम् ॥ ७६ ॥ भक्षयेत्सर्वशूलार्तोहिंगुशुंठीसजीरकाम् ॥ वचामरिचजंचूर्णंकर्षमुष्णजलैःपिबेत् ॥ ७७ ॥ असाध्यंनाशयेच्छूलंरसोयंगजकेसरी ॥

अर्थ—शुद्ध किया पारा एक भाग गंधक दो भाग इनको एक पहर अच्छीतरह खरल करै ॥ ७४ ॥ दोनोंके बराबर शुद्ध किया तांबाके संपुटमें रोकै ऊपर और नीचै नमक देकै माटीके पात्रमें धरै ॥११७५॥ पीछे गजपुटमें पकाय अच्छीतरह शीतल होनेंपर निकासै संपुटका चूरण कर दो रत्तीभर रसको नागरपानके टुकडेमें लगाकर ॥ ७६ ॥ सब प्रकारके शूलोंसे पीडित हुआ मनुष्य खावै इसपर हींग सूंठ जीरा वच मिरच इन्होंका एक तोलाभर चूरणको गरम पानीके साथ पीवै ॥ ७७ यह गजकेसरी रस असाध्य शूलकोभी नाश करता है ॥

शुद्धसूतंविषंगंधमजमोदांफलत्रयम् ॥ ७८ ॥ सर्जक्षारंयवक्षारंवह्निसैंधवजीरकौ ॥ सौवर्चलंविडंगानिसामुद्रंत्र्यूष-

णंसमम् ॥ ७९ ॥ विषमुष्टिंसर्वतुल्यांजंबीराम्लेनमर्दयेत् ॥
मरिचाभांवटींखादेत्सर्वाजीर्णप्रशांतये ॥ ८० ॥

अर्थ–शुद्ध किया पारा शुद्ध किया मीठा तेलिया गंधक अजमोद हरडै वहेडा आंवला ॥ ७८ ॥ साजीखार जवखार चित्रक सेंधानमक जीरा कालानमक वायविडंग खारीनमक सोंठ मिरच पीपल ये सब बरावर भाग लेने ॥ ७९ ॥ और सबोंके बराबर वकायणके बीज मिलाकै जंवीरीनींबूके रसमें खरल करै पीछे मिरचके प्रमाण गोली बनाकै खावै तो सब प्रकारके अजीर्ण दूर होते हैं ॥८०॥

शुद्धसूतंविषंगंधंसमंसर्वंविचूर्णयेत् ॥ मरिचंसर्वतुल्यांशंकं-
टकार्याःफलद्रवैः ॥ ८१ ॥ मर्दयेद्भावयेत्सर्वमेकविंशतिवा-
रकम् ॥ वटींगुंजात्रयंखादेत्सर्वाजीर्णप्रशांतये ॥ ८२ ॥
अजीर्णकंटकश्चायंरसोहंतिविषूचिकाम् ॥

अर्थ–शुद्ध किया पारा शुद्ध किया मीठा तेलिया गंधक ये बराबर भाग लेने और इन तीनोंके बराबर मिरच लेकै कटेलीके फलका रसमें ॥ ८१ ॥ मर्दित कर इकीसवार भावना देवै पीछे तीन रत्तीकी गोली बना खावै तो सब प्रकारका अजीर्ण शांत होता है ॥ ८२ ॥ यह अजीर्णकंटकरस विषूचिका अर्थात् हैजाको नाश करता है ॥

मृतंसूतंमृतंताम्रंहिंगुपुष्करमूलकम् ॥ ८३ ॥ सैंधवंगंधकं
तालंकटुकींचूर्णयेत्समम् ॥ पुनर्नवादेवदालीनिर्गुंडीतंदुली-
यकैः ॥ ८४ ॥ तिक्तकोशातकीद्रावैर्दिनैकंमर्दयेद्दृढम् ॥ मा-
षमात्रंलिहेत्क्षौद्रैरसंमंथानुभैरवम् ॥ ८५ ॥ कफरोगप्रशां-
त्यर्थंनिंबक्काथंपिबेदनु ॥

अर्थ–पाराका भस्म तांवाका भस्म हींग पोहकरमूल ॥ ८३ ॥ सेंधानमक गंधक हरताल कुटकी ये सब बरावर लेकै चूरण करै पीछे साठी देवताड संभालू चौलाई ॥ ८४ ॥ कडवी तोरी इन्होंके रसोंमें एक दिन दृढ मर्दित करै पीछे एक मासाभर रसको शहतमें मिलाकै चाटै यह मंथानुभैरवरस ॥ ८५ ॥ कफरोगको शांत करता है इसपर नींवके क्काथका रस अनुपान है ॥

सूतहाटकवज्राणिताम्रंलोहंचमाक्षिकम् ॥ ८६ ॥ तालंनी-

लांजनंतुल्यमहिफेनंसमांशकम् ॥ पंचानांलवणानांचभाग-मेकंविमर्दयेत् ॥ ८७ ॥ वज्रीक्षीरैर्दिनैकंतुरुध्वाधोभूधरेपचे-त् ॥ माषैकमार्द्रकद्रावैर्लेहयेद्वातनाशनम् ॥ ८८ ॥ पिप्प-लीमूलजक्काथंसकृष्णमनुपाययेत् ॥ सर्वान्वातविकारांस्तुनि-हंत्याक्षेपकादिकान् ॥ ८९ ॥

अर्थ–पाराका भस्म सोनाका भस्म हीराका भस्म तांबाका भस्म लोहाका भस्म सोनामाखीका भस्म ॥ ८६ ॥ हरताल शुद्ध किया सुरमा नीलाथोथा अफीम ये सब बराबर लेने सेंधानमक कालानमक मनयारीनमक रेहनमक खारीनमक इन्होंका एक भाग इन्होंको ॥ ८७ ॥ थोहरके दूधमें एक दिन मर्दित कर सकोराके संपु-टमें धर भूधरयंत्रमें स्थापितकर पकावै पीछे एक मासा रसको अदरकके रसमें मिला चाटनेसे वातरोगका नाश होता है ॥ ८८ ॥ पीपलामूलका काढामें पीपल मिला अनुपान करै यह आक्षेपआदि वातरोगोंको नाश करता है ॥ ८९ ॥

कनकस्याष्टशाणाःस्युःसूतोद्वादशभिर्मतः ॥ गंधोपिद्वादश-प्रोक्तस्ताम्रंशाणद्वयोन्मितम् ॥ ९० ॥ अभ्रकस्यचतुःशाणं माक्षिकंचद्विशाणिकम् ॥ वंगोद्विशाणःसौवीरंत्रिशाणंलोह-मष्टकम् ॥ ९१ ॥ विषंत्रिशाणिकंकुर्याल्लांगलीपलसंमि-ता ॥ मर्दयेद्दिनमेकंचरसैरम्लफलोद्भवैः ॥ ९२ ॥ दद्यान्मृ-दुपुटंवह्नौततःसूक्ष्मंविचूर्णयेत् ॥ माषमात्रोरसोदेयःसन्नि-पातेसुदारुणे ॥ ९३ ॥ आर्द्रकस्वरसेनैवरसोनस्यरसेनवा ॥ किलासंसर्वकुष्ठानिविसर्पंचभगंदरम् ॥ ९४ ॥ ज्वरंगरम-जीर्णंचजयेद्रोगहरोरसः ॥

अर्थ–धत्तूराके बीज ३२ मासे पारा ४८ मासे गंधक ४८ मासे तांबा ८ मासे ॥ ९० ॥ अभ्रक १६ मासे सोनामाखी ८ मासे वंग ८ मासे सुरमा १२ मासे लोह ३२ मासे ॥ ९१ ॥ मीठा तेलिया १२ मासे कलहारी एक पल इन्होंको नींबूके रसमें एक दिन खरल करै ॥ ९२ ॥ पीछे अग्निमें कोमल पुट देकै पीछे मिहीन चूरण करै एक मासाभर रस दारुण सन्निपातमें देना ॥ ९३ ॥ अदर-

कका रसके संग अथवा ल्हसणका रसके संग यह रस किलासकुष्ठ सब प्रकारके और कुष्ठ विसर्प भगंदर ॥९४॥ ज्वर कृत्रिमविष अजीर्ण इन्होंको नाश करता है ॥

रसोगंधस्त्रित्रिकर्षौकुर्यात्कज्जलिकांद्वयोः ॥ ९५ ॥ ताराभ्रताम्रवंगाहिसाराश्चैकैककार्षिकाः ॥ शिग्रुज्वालामुखीशुंठीबिल्वेभ्यस्तंडुलीयकात् ॥ ९६ ॥ प्रत्येकंस्वरसैःकुर्याद्यामैकैकंविमर्दयेत् ॥ कृत्वागोलंवृतंवस्त्रेलवणापूरितेन्यसेत्॥९७॥ काचभांडेततःस्थाल्यांकाचकूपींनिवेशयेत् ॥ वालुकाभिःप्रपूर्याथवह्निर्यामद्वयंभवेत् ॥ ९८ ॥ ततउद्धृत्यतंगोलंचूर्णयित्वाविमिश्रयेत् ॥ प्रवालचूर्णकर्षेणशाणमात्रविषेणच ॥९९॥ कृष्णसर्पस्यगरलैर्दिवसंभावयेत्तथा ॥ तगरंमुसलीमांसीहेमाह्वावेतसःकणा ॥ १२०० ॥ नीलिनीपत्रकंचैलाचित्रकश्चकुठेरकः ॥ शतपुष्पादेवदालीधत्तूरागस्त्यमुंडिकाः॥१॥ मधूकजातिमदनारसैरेषांविमर्दयेत् ॥ प्रत्येकमेकवेलंचततः संशोष्यधारयेत् ॥ २ ॥ बीजपूरार्द्रकद्रावैर्मरिचैःषोडशोन्मितैः ॥ रसोद्विगुंजाप्रमितःसन्निपातस्यदीयते ॥ ३ ॥ प्रसिद्धोऽयंरसोनाम्नासन्निपातस्यभैरवः ॥

अर्थ–शुद्ध पारा तीन तोले गंधक तीन तोले इन दोनोंकी कज्जली वनावै ॥ ९५ ॥ चांदीका भस्म अभ्रकभस्म तांवाका भस्म वंगका भस्म सीसाका भस्म लोहाका भस्म ये सव एकएक तोले पीछे सहोंजना ज्वालामुखी सोंठ वेलगिरी चौलाई ॥ ९६ ॥ इन्होंके रसोंमें अलगअलग एकएक पहर मर्दित करै पीछे गोला बनाय वस्त्रसे लपेट पीछे नमकसे पूरित किये ॥ ९७ ॥ काचके पात्रमें धरै पीछे काचके पात्रको टोकटीमें धर वालूरेतसे पूरित कर दो पहरपर्यंत अग्नि देवै ॥९८॥ पीछे तिस गोलाको निकास चूरण वनाय मूंगाका चूरण एक तोला मीठा तेलिया चार मासे इनको मिलाय ॥ ९९ ॥ कालासर्पके गरलमें एक दिन भावना देवै पीछे तगर मुसली बालछड चोक वेतस पीपल ॥ १२०० ॥ नीली तेजपात इलायची चित्रक रानतुलसी सौंफ देवताड धत्त्तूरा अगस्ता मुंडी ॥१॥ महुआ चमेली मैनफल इन्होंके रसोंमें अलगअलग एकएकवार मर्दित करै पीछे अच्छी त-

रह सुखाकै ग्रहण करै ॥२॥ पीछे विजोरा और अदरकके रसमें और सोलह मिरचोंके संग दो रत्तीभर रसको सन्निपातमें देवै ॥ ३ ॥ यह सन्निपातभैरवरस विख्यात है ॥

तारमौक्तिकहेमानिसारश्चैकैकभागिकाः ॥ ४ ॥ द्विभागो गंधकःसूतस्त्रिभागोमर्दयेदिमान् ॥ कपित्थस्वरसैर्गाढंमृगशृंगेततःक्षिपेत् ॥ ५ ॥ पुटेन्मध्यपुटेनैवततउद्धृत्यमर्दयेत् ॥ बलारसैःसप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा ॥ ६ ॥ लोध्रंप्रतिविषामुस्तंधातकींद्रयवाःस्मृताः ॥ प्रत्येकमेषांस्वरसैर्भावना स्यात्त्रिधात्रिधा ॥ ७ ॥ माषमात्रोरसोदेयोमधुनामरिचैस्तथा ॥ हन्यात्सर्वानतीसारान्ग्रहणींसर्वजामपि ॥ ८ ॥ कपाटोग्रहणीरोगेरसोयंवह्निदीपनः ॥

अर्थ—चांदीका भस्म मोती सोनाका भस्म लोहाका भस्म ये एकएक भाग ॥४॥ गंधक दो भाग पारा तीन भाग इन्होंको कैथके रसमें अच्छी तरह मर्दित करै पीछे हिरणका सींगमें घालै ॥५॥ पीछे मध्यपुटसे पुट देकै पीछे निकास मर्दित करै पीछे खरैंहटीके रसमें सात वार और ऊंगाके रसमें तीन वार ॥ ६ ॥ लोध अतीस नागरमोथा धायके फूल इंद्रजव इन्होंके रसोंमें अलग अलग तीनतीन भावना देवै ॥ ७ ॥ पीछे शहत और मिरचोंका चूरणके संग एक मासाभर रसको देवै यह सब प्रकारके अतिसारोंको और सब दोषोंकी संग्रहणीको नाश करता है ॥ ८ ॥ यह ग्रहणीकपाटरस अग्निको जगाता है ॥

मृतसूताभ्रकेगंधंयवक्षारंसटंकणम् ॥ ९ ॥ अग्निमंथंवचां कुर्यात्सूततुल्यानिमान्सुधीः ॥ ततोजयंतीजंबीरभृंगद्रावैर्विमर्दयेत् ॥ १० ॥ त्रिवासरंततोगोलंकृत्वासंशोष्यधारयेत् ॥ लोहपात्रेशरावंचदत्वोपरिविमुद्रयेत् ॥ ११ ॥ अधो वह्निंशनैःकुर्याद्यामार्धंततउद्धरेत् ॥ रसतुल्यांप्रतिविषांदद्यान्मोचरसंतथा ॥ १२ ॥ कपित्थविजयाद्रावैर्भावयेत्सप्तधा भिषक् ॥ धातकींद्रयवामुस्तालोध्रंबिल्वंगुडूचिका ॥ १३ ॥ एतद्रसैर्भावयित्वावेलैकैकंचशोषयेत् ॥ रसंवज्रकपाटाख्यं

शाणैकंमधुनालिहेत् ॥ १४ ॥ वह्निशुंठीबिडंबिल्वंलवणंचूर्णयेत्समम् ॥ पिबेदुष्णांबुनाचानुसर्वजांग्रहणींजयेत्॥१५॥

अर्थ–पाराका भस्म अभ्रकभस्म गंधक जवखार सुहागा ॥ ९ ॥ अरनीकी जड वच ये सब बराबर भाग लेने पीछे अरनी जंबीरीनींबू भंगरा इन्होंके रसोंमें तीन दिन मर्दित करै ॥ १० ॥ पीछे गोला बनाकै सुखाय लोहाके पात्रमें घाल उपर सकोरा ढक मुद्रित करै ॥ ११ ॥ नीचै हौलेंहौलें अग्नि आधा पहरपर्यंत देवै पीछे निकास रसके बराबर अतीस वा मोचरस मिलाकै ॥ १२ ॥ कैथ और भांगके रसमें अलगअलग सात भावना देवै पीछे कपित्थके फल इंद्रजव नागरमोथा लोध बेलगिरी गिलोय ॥ १३ ॥ इन्होंके रसोंमें एकएकवार भावना देकै सुखावै इस वज्रकपाटरसको चार मासेभर ले शहतके संग चाटै ॥ १४ ॥ चित्रक सोंठ वायविडंग बेलगिरी मनयारीनमक ये बराबर भाग ले चूरण कर गरम पानीके संग अनुपान करै सब प्रकारकी संग्रहणी दूर होती है ॥ १५ ॥

तारंवज्रंसुवर्णंचताम्रंसूतकगंधकं ॥ लोहंक्रमविवृद्धानिकुर्यादेतानिमात्रया ॥ १६ ॥ विमर्द्यकन्यकाद्रावैर्न्यसेत्काचमयेघटे ॥ विमुच्यपिठरीमध्येधारयेत्सैंधवावृते ॥ १७ ॥ पिठरींमुद्रयेत्सम्यक्ततश्चुल्ल्यांनिवेशयेत् ॥ वह्निंशनैःशनैःकुर्याद्दिनैकंततउद्धरेत् ॥ १८ ॥ स्वांगशीतंचसंचूर्ण्यभावयेदर्कदुग्धकैः ॥ अश्वगंधाचकाकोलीवानरीमुसलीक्षुरा ॥ १९ ॥ त्रित्रिवेलंरसैरेषांशतावर्याश्चभावयेत् ॥ पद्मकंदकसेरूणांरसैःकाशस्यभावयेत् ॥ २० ॥ कस्तूरीव्योषकर्पूरकंकोलैलालवंगकम् ॥ पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्चूर्णंविमिश्रयेत् ॥ २१ ॥ सर्वैःसमांशर्करांचदत्वाशाणोन्मितंपिबेत् ॥ गोदुग्धद्विपलेनैवमधुराहारसेवकः ॥ २२ ॥ अस्यप्रभावात्सौंदर्यंसलभेन्नात्रसंशयः ॥ तरुणीरमयेद्बह्वीःशुक्रहानिर्नजायते ॥ २३ ॥

अर्थ–चांदीका भस्म एक भाग हीराका भस्म दो भाग सोनाका भस्म तीन भाग तांबाका भस्म चार भाग शुद्ध पाराका भस्म पांच भाग गंधक छः भाग लोहभस्म सात भाग ऐसे सब ओषधी लेकै ॥ १६ ॥ कुवारपाठाके रसमें मर्दित

कर काचकी शीसीमें घाल तिसपर कपड माटी देकै शीसीके मुखपर माटीकी गारा देकै शीसीको मटकामें धर गलपर्यंत सेंधानमकसे पूरित करै ॥ १७ ॥ पीछे मटकाके मुखको मुद्रित कर चुल्हीपर धर एक दिन हौलेंहौलें अग्नि जलावै पीछे निकासै ॥ १८ ॥ अच्छी तरह शीतल हो चुकै तब चूरण कर आकके दूधमें भावना देवै पीछे आसगंध काकोली कौंच मुसली तालमखाना ॥ १९ ॥ शतावरी कमलकंद कसेरु कांस इन्होंके रसोंमें अलगअलग तीनवार भावना देवै ॥ २० ॥ पीछे कस्तूरी सोंठ मिरच पीपल कपूर कंकोल इलायची लौंग इन्होंका चूरण पूर्वोक्त चूरणसे आठमां हिस्सा मिलावै ॥ २१ ॥ सर्वोंके बराबर खांड मिलाकै चार मासेभर लेकै आठ तोलेभर गौका दूधकेसंग पीवै और मधुर भोजनको सेवै ॥ २२ ॥ इसके प्रभावसे सुंदरपनाको मनुष्य प्राप्त होता है संशय नहीं है और बहुतसी जवान स्त्रियोंसे भोग करता है और वीर्यकी हानि नहीं होती है ॥ २३ ॥

सूतोवज्रमहिर्मुक्तातारंहेमसिताभ्रकम् ॥ रसैःकर्षांशकानेतान्मर्दयेदिरिमेदजैः ॥ २४ ॥ प्रवालचूर्णगंधश्चद्विद्विकर्षं विमिश्रयेत् ॥ ततोऽश्वगंधास्वरसैर्विमर्द्यमृगश्रृंगके १२२५ क्षिप्त्वामृदुपुटेपक्त्वाभावयेद्धातकीरसैः ॥ काकोलिमधुकंमांसीबलात्रयविशेंगुदम् ॥ २६ ॥ द्राक्षापिप्पलीवंदाकंवरीपर्णीचतुष्टयम् ॥ परूषकंकसेरुश्चमधूकंवानरीतथा ॥ २७ ॥ भावयित्वारसैरेषांशोषयित्वाविचूर्णयेत् ॥ एलात्वक्पत्रकंवंशीलवंगागरुकेशरम् ॥ २८ ॥ मुस्तंमृगमदःकृष्णाजलंचंद्रश्चमिश्रयेत् ॥ एतच्चूर्णैःशाणमितैरसंकंदर्पसुंदरम् ॥ २९ ॥ खादेच्छाणमितंरात्रौसिताधात्रीविदारिका ॥ एतेषांकर्षचूर्णेनसर्पिःकर्षेसुसंयुतम् ॥ ३० ॥ तस्यानुद्विपलंक्षीरंपिबेत्सुस्थितमानसः ॥ रमणीरमयेद्बह्वीःशुक्रहानिर्नजायते ॥ ३१ ॥

अर्थ–पाराका भस्म हीराका भस्म सीसाका भस्म मोती चांदीका भस्म अभ्रक ये सब एकएक तोला ले खैरके रसमें मर्दित करै ॥ २४ ॥ पीछे मूंगाका चूरण और गंधक दोदो तोले मिलाकै पीछे आसगंधके रसमें मर्दित कर हिरणके शींगमें ॥ १२२५ ॥ घाल मृदुपुटमें पकाकै धायके रसमें भावना देकै का-

कोली मुलहटी वालछड तीनों खरैंटी कमलकी डंडी हींगणवेट ॥ २६ ॥ दाख पीपल वंदाक शतावरी शालपर्णी पृष्टपर्णी मूंगपर्णी माषपर्णी फालसा कसेरु महुवा कौंच ॥ २७ ॥ इन्होंके रसोंमें भावना देकै सुखाय चूरण करै पीछे इलायची दालचिनी तेजपात वंशलोचन अगर केसर ॥ २८ ॥ नागरमोथा कस्तूरी पीपल नेत्रवाला कपूर इन ओषधोंका चूरणको चारमासेभर लेकै कंदर्पसुंदर रसको ॥ २९ ॥ चारमासेभर रस लेकै एक तोलाभर घृतमें आंवला विदारीकंद इन्होंका चूरण खांड एकएक तोलाभर मिलाकै ॥ ३० ॥ आठ तोलेभर दूधका स्वस्थचित्तवाला मनुष्य अनुपान करै इसके प्रभावसे बहुतसी स्त्रियोंसे पुरुष भोग करसक्ता है और वीर्यकी हानि नहीं होती है ॥ ३१ ॥

शुद्धंरसेंद्रंभागैकंद्विभागंशुद्धगंधकम् ॥ क्षिपेत्कज्जलिकांकुर्यात्तत्रतीक्ष्णभवंरजः ॥ ३२ ॥ क्षिप्त्वाकज्जलिकातुल्यंप्रहरैकंविमर्दयेत् ॥ तत्रकन्याद्रवैःखल्वेत्रिदिनंपरिमर्दयेत् ॥ ३३ ॥ ततःसंजायतेतस्यसोष्णोधूमोद्गमोमहान् ॥ अत्यंतंपिंडितं कृत्वाताम्रपात्रेनिधायच ॥ ३४ ॥ मध्येधान्यैकशूकस्यत्रिदिनंधारयेद्बुधः ॥ उद्धृत्यतस्मात्खल्वेचक्षिप्त्वाघर्मेनिधायच ॥ ३५ ॥ रसैःकुठारच्छिन्नायास्त्रिवेलंपरिभावयेत् ॥ संशोष्यघर्मेक्काथैश्चभावयेत्त्रिकटोस्त्रिधा ॥ ३६ ॥ वासामृताचित्रकाणांरसैर्भाव्यंक्रमात्त्रिधा ॥ लोहपात्रेततःक्षिप्त्वाभावयेत्त्रिफलाजलैः ॥ ३७ ॥ निर्गुंडीदाडिमत्वग्भिर्बिसभृंगकुरंटकैः ॥ पलाशकदलीद्रावैर्बीजकस्यश्टतेनवा ॥ ३८ ॥ नीलिकालंबुषाद्रावैर्बब्बूलफलिकारसैः ॥ त्रित्रिवेलंयथालाभं भावयेदेभिरौषधैः ॥ ३९ ॥ ततःप्रातर्लिहेत्क्षौद्रघृताभ्यां कोलमात्रकम् ॥ पलमात्रंवराक्काथंपिबेदस्यानुपानकम् ४० मासत्रयंशीलितंस्याद्वलीपलितनाशनम् ॥ मंदाग्निंश्वासकासौचपांडुतांकफमारुतौ ॥ ४१ ॥ पिप्पलीमधुसंयुक्तंहन्यादेतन्नसंशयः ॥ वातास्रंमूत्रदोषांश्चग्रहणींतोयजांरुजम् ॥ ४२ ॥

अंडवृद्धिंजयेदेतच्छिन्नासत्वमधुप्लुतम् ॥ बलवर्णकरंवृष्य-मायुष्यंपरमंस्मृतम् ॥ ४३ ॥ कूष्मांडंतिलतैलंचमाषान्नंरा-जिकातथा ॥ मद्यमम्लरसंचैवत्यजेल्लोहस्यसेवकः ॥ ४४ ॥

अर्थ–शुद्ध पारा एक भाग शुद्ध गंधक दो भाग इन दोनोंकी कज्जली बनाय तिसमें पोहलादका चूरण ॥ ३२ ॥ कज्जलीके बरावर मिला एक पहर मर्दित करै पीछे कुवारपाठाके रसमें तीन दिन मर्दित करै ॥ ३३ ॥ पीछे तिसमें गर्भधूमां निकसता है अत्यंत गोला बनाकै तांबाके पात्रमें घालै ॥ ३४ ॥ पीछे चावलोंके तुसमें तीन दिन धरै तिस्से निकास खरलमें घाल घाममें स्थापित करै ॥ ३५ ॥ रानतुलसीके रसमें तीन वार भावना देकै घाममें सुखाय सोंठ मिरच पीपल इन्होंके क्वाथमें तीनतीनवार भावना देवै ॥ ३६ ॥ पीछे वांसा गिलोय चित्रक इन्होंके रसोंमें क्रमसे तीनतीनवार भावना देवै पीछै लोहाके पात्रमें घाल त्रिफलाके रसमें भावना देवै ॥ ३७ ॥ पीछे संभालू अनारकी छाल कमलकी डंडी भंगरा कुरंटा पलाश केला असाणा ॥ ३८ ॥ नील मुंडी वंबूलकी फलीका रसके इनमांहसे जितनी ओषधी मिलै तिन्होंके रसोंमें तीनतीनवार भावना देवै ॥३९॥ पीछे आठ मासेभर रसको शहत और घृतमें मिलाकै चाटै ऊपर त्रिफलाके क्वाथका अनुपान करै ॥ ४० ॥ तीन महीने सेवनेसे सुपेदवालोंको और शरीरकी वलियोंको नाश करता है और मंदाग्नि श्वास खासी पांडुरोग कफ वायु इन्होंको ॥ ४१ ॥ पीपल और शहतसे संयुक्त किया नाश करता है संशय नहीं है वातरक्त मूत्रदोष संग्र-हणी पानीसे उपजा रोग ॥ ४२ ॥ अंडवृद्धि इन सबको गिलोयका सत और श-हतसे युक्त किया यह रस नाश करता है बल और वर्णको करता है वीर्यको और आयुको बढाता है ॥४३॥ इस लोहरूपी रसको सेवनेवाला मनुष्य कोहला तिलोंका तेल उडद राई मदिरा खट्टारस इन्होंको त्यागै ॥ ४४ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थ-दीपिकायां मध्यमखंडे रसकल्पानाम नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

यहां मध्यमखंड समाप्त हुआ

अथ तृतीयखंडप्रारंभः ॥

अथ उत्तरखंडारंभः ।

स्नेहश्चतुर्विधःप्रोक्तोघृतंतैलंवसातथा ॥ मज्जाचतंपिबेन्मर्त्यःकिंचिदभ्युदितेरवौ ॥ १ ॥ स्थावरोजंगमश्चैवद्वियोनिः स्नेहउच्यते ॥ तिलतैलंस्थावरेषुजंगमेषुघृतंवरम् ॥ २ ॥

अर्थ–स्नेह चार प्रकारका कहा है घृत तेल वसा अर्थात् मांसमें मिली चरबी और हाडके भीतरकी मज्जा तहां इन चार स्नेहोंको कछुक सूर्यउदय होनेके समय रोगी मनुष्य पीवै ॥ १ ॥ स्थावर और जंगम ये दो योनि स्नेहकी हैं तहां तिलका तेलका स्नेह स्थावरोंमें होता है अर्थात् स्थिर वस्तुओमें श्रेष्ठ होता है और चलनेवालोंमें घृत श्रेष्ठ होता है ॥ २ ॥

द्वाभ्यांत्रिभिश्चतुर्भिस्तैर्यमकस्त्रिवृतोमहान् ॥ ३ ॥ पिबेत्त्र्यहंचतुरहंपंचाहंषडहंतथा ॥ सप्तरात्रात्परंस्नेहःसात्मीभवतिसेवितः ॥ ४ ॥ दोषकालाग्निवयसांबलंदृष्ट्वाप्रयोजयेत् ॥ हीनांचमध्यमांज्येष्ठांमात्रांस्नेहस्यबुद्धिमान् ॥ ५ ॥

अर्थ–अथ स्नेहभेद—घृत तेलके मिलानेंसे यमकस्नेह होता है घृत तेल वसा इनके मिलानेंसे त्रिवृत् होता है और घृत तेल वसा मज्जा इन चारोंके मिलानेंसे महान् स्नेह होता है ॥ ३ ॥ अथ स्नेहपानक्रम—घृतको रोगी तीन दिन पीवे तेलको चार दिन वसाको पांच दिन मज्जाको छह दिन पीवे और सात दिनसे पीछे अधिक स्नेहपान करना आहारके समान है औषधीके सदृशगुण नहीं करता ॥ ४ ॥ अथ स्नेहमात्राप्रकार—वातआदि दोष ऋतु जठराग्नि आयु और निर्बल बलवंत समबल इनको विचारिकै स्नेहकी अल्पमात्रा वा मध्यम तथा ज्येष्ठामात्राको बुद्धिमान् वैद्य रोगीको पिलावै ॥ ५ ॥

अमात्रयातथाकालेमिथ्याहारविहारतः ॥
स्नेहःकरोतिशोफार्शस्तंद्रानिद्राविसंज्ञताः ॥ ६ ॥

अर्थ–मात्रा जानेंविना और ऋतुकेविना तथा दोष समझेविना अकालमें वा

न्यून अधिक मात्रा देनेंसे और विपरीत भोजन करनेंसे घृतआदि स्नेह शोजा अर्श आलस्य निद्रा इन रोगोंको करता है ॥ ६ ॥

अकालेचातिमात्रांवाअसात्म्यंयच्चभोजनम् ॥
विषमाशनयद्भुक्तंमिथ्याहारःसकथ्यते ॥ ७ ॥

अर्थ–समयके विना असंत भोजन करना और रुचिके विना देशकालका विरोधी भोजन करना यह मिथ्याहार है और गरमीमें धूप आदिका सेवन जाडामें जलका सेवन यह मिथ्याविहार है ॥ ७ ॥

देयादीप्ताग्नयेमात्रास्नेहस्यपलसंमिता ॥ मध्यमाग्नेस्त्रिकर्षा स्याज्जघन्यायद्विकार्षिकी ॥ ८ ॥ अथवास्नेहमात्राःस्युस्तिस्रोन्याःसर्वसंमताः ॥अहोरात्रेणमहतीजीर्यत्यह्नितुमध्यमा॥९॥

अर्थ–जिसकी जठराग्नि दीप्त हो उस रोगीको एक पलभर स्नेहकी मात्रा दे मध्यम अग्निवालेको तीन कर्षप्रमाण मात्रा देवै मंदाग्निवालेको दोकर्षप्रमाण देवै ॥ ८ ॥ अथवा अन्य जो तीन स्नेहके मात्रा हैं वेभी सब ऋषियोंकी मानी हुई है जो मात्रा एक दिनरातमें पचै वह महती है और जो दिनभरमें पचै वह मध्यमा कहाती है ॥ ९ ॥

जीर्यत्यल्पादिनार्धेनसाविज्ञेयासुखावहा ॥ अल्पास्यादीपनीवृष्यावातदोषेसुपूजिता ॥ १० ॥ मध्यमास्नेहनीज्ञेयाबृंहणीभ्रमहारिणी ॥ ज्येष्ठाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशिनी ११

अर्थ–स्नेहकी अल्पामात्रा आधा दिनमें पचती है इन तीनोंमात्राओंमें पचनेका प्रमाण है तोलाका नहीं और इन तीनोंमात्राओंमें अल्पामात्रा विशेष सुखदायी है अथ अल्पाआदिमात्राओंके गुण–दो कर्ष प्रमाणकी अल्पामात्रा अग्निको दीप्त करै वीर्य बढावै वातदोषकी शांति करै ॥ १० ॥ मध्यमामात्रा ३ कर्षकी शरीरकी पुष्टि करै धातुओंको बढावै भ्रमको नाशै और पलभरकी ज्येष्ठामात्रा कुष्ठ विष उन्माद भूतप्रेतकी बाधा मृगीरोग इनका नाश करै ॥ ११ ॥

केवलंपैत्तिकेसर्पिर्वातिकेलवणान्वितम् ॥ पेयंबहुकफेवापि व्योषक्षारसमन्वितम् ॥ १२ ॥ रूक्षक्षतविषार्तानांवातपित्तविकारिणाम् ॥ हीनमेधास्मृतीनांचसर्पिःपानंप्रशस्यते

॥ १३ ॥ कृमिकोष्ठानिलाविष्टाःप्रवृद्धकफमेदसः ॥ पिबेयुस्तैलसात्म्यायेतैलंदीप्ताग्नयस्तुये ॥ १४ ॥

अर्थ–अथ दोषोंके योग्य अनुपान पित्तके कोपमें केवल घृत वायुकोपमें सेंधानमकयुक्त घृत और कफके कोपमें (व्योष) सूंठ मिरच पीपल यवखार इनसे युक्त घृतको पीवै ॥ १२ ॥ और शरीरकी रुषाई उरःक्षत विषकी पीडा इनसे युक्त पुरुषोंको और वातपित्तके विकारवालोंको तथा हीनबुद्धिवाले वा सुधि भूलनेवाले पुरुषोंको अवश्य घृतपान करावे ॥ १३ ॥ अथ तेल देनेके योग्य रोगी कृमिविकारवाले वा कोष्ठवद्धरोगवाले वायुवद्ध जिनकै कफमेद बढ रहे हौं इन रोगियोंको तेल पिलावे और जिनको स्वाभाविक तेल हित हो उनको तथा जठराग्निको दीप्त करनेवालोंको तेल पिलावे ॥ १४ ॥

व्यायामकर्षिताःशुष्करेतोरक्तामहारुजः ॥ महाग्निमारुतप्राणावसायोग्यानराःस्मृताः ॥ १५ ॥ क्रूराशयाःक्लेशसहा वातार्तादीप्तवह्नयः ॥ मज्जानंचपिबेयुस्तेसर्पिर्वासर्वतोहितम् १६

अर्थ–परिश्रम करिके दुर्बल और पीडित क्षीणधातुवाले शुष्करक्तवाले शरीरपीडा भस्मक आक्षेपक आदि वात इन रोगोंसे पीडित मनुष्य वसाके योग्य है ॥ १५ ॥ अथ मज्जाके योग्य दुष्टकोष्ठवाले क्लेशसे युक्त वातसे पीडित दीप्त अग्निवाले इनको मज्जा पीना योग्य है और घृत सव शरीराकों हित है ॥ १६ ॥

शीतकालेदिवास्नेहमुष्णकालेपिबेन्निशि ॥
वातपित्ताधिकेरात्रौवातश्लेष्माधिकेदिवा ॥ १७ ॥

अर्थ–अथ स्नेहपानसमय शीतकालमें दिनमें स्नेह पिलावे और गरमीकी समयमें रात्रीमें पिलावे वातपित्तके अधिक होनेमें रातको और वातकफ अधिक होनेमें दिनमें पिलावे ॥ १७ ॥

नस्याभ्यंजनगंडूषमूर्धकर्णाक्षितर्पणे ॥
तैलंघृतंवायुंजीतदृष्ट्वादोषबलाबलम् ॥ १८ ॥

अर्थ–तेलको अथवा घृतको दोषोंके बलाबल विचारि विशेषकरिके नासिकाकेवास्ते नसमें मर्दनमें कुरले धारण करानेमें मस्तकमें दावनेमें कानआखिमें पूरण करनेमें युक्त करै ॥ १८ ॥

घृतेकोष्णंजलंपेयंतैलेयूषःप्रशस्यते ॥ वसामज्ज्ञोःपिबेन्मंड-

मनुपानंसुखावहम् ॥ १९ ॥ स्नेहद्विषःशिशून्वृद्धान्सुकुमा-
रान्कृशानपि ॥ तृष्णातुरानुष्णकालेसहभक्तेनपाययेत् ॥२०॥

अर्थ-अथ स्नेहपानके अनुपान—घृतको गरम जलके संग पीवे तेल पीनेके पीछे यूषको पीवे वसा अर्थात् चरवी हाडकी मज्जा इनके पीनेके ऊपर मांड पीवै ये अनुपान सुखदाई कहा है ॥ १९ ॥ घृतआदि स्नेहद्वेषी अर्थात् जिसको स्नेह न भावैं तिनको बालकोंको वृद्धोंको सुकुमार दुर्बल तृषातुर इनको गरमीकी समयमें भातके संग पिलावे ॥ २० ॥

सर्पिष्मतीबहुतिलायवागूःस्वल्पतंडुला ॥ सुखोष्णासेव्यमा-
नातुसद्यःस्नेहनकारिणी ॥ २१ ॥ शर्कराचूर्णसंभृष्टेदोहन-
स्थेघृतेतुगाम् ॥ दुग्ध्वाक्षीरंपिबेदुष्णंसद्यःस्नेहनमुच्यते ॥ २२ ॥

अर्थ-घृतसे युक्त कर बहुतसे तिल मिला कूटि और चावलोंका चून थोडासा मिला फिर जल गेरकै यवागू करावना सुखसे सुहाई हुई गरमगरम तिस यवागूको पीवे तो तात्काल धातु उत्पन्न होवे और शरीर चिकना होवे ॥२१॥ अथ धारोष्णदुग्धकी विधि—दोहिनीके भीतर मिश्री पीस घृतमें मिलाके लीप देवै पीछे तिस दोहिनीमें गौका दूध निकाले गरमगरम पीनेंसे तात्काल धातु बढती है शरीर चिकना होता है ॥ २२ ॥

मिथ्याचाराद्बहुत्वाद्वायस्यस्नेहोनजीर्यति ॥
विष्टभ्यवापिजीर्येतवारिणोष्णेनवामयेत् ॥ २३ ॥

अर्थ-स्नेह पीनेपर मिथ्याहारविहारसे अर्थात् परिश्रम करनेसे वा कफकृत पदार्थ खानेंसे स्नेह न पचे अथवा मलबंध किया हो तो गरम जल पिलाके तिसको छर्दि करवावें ॥ २३ ॥

स्नेहस्याजीर्णशंकायांपिबेदुष्णोदकंनरः ॥
तेनोद्गारोभवेच्छुद्धोभक्तंप्रतिरुचिस्तथा ॥ २४ ॥

अर्थ-जो स्नेह पीनेपर अजीर्णकी शंका होवे तो गरम जल पीवे तब डकारकी शुद्धि होती है और भात खानेको रुचि होती है तब जानेकि अब अजीर्ण शांत हुआ है ॥ २४ ॥

स्नेहेनपैत्तिकस्याग्निर्यदातीक्ष्णतरीकृतः ॥ तदास्योदीरये-

तृष्णांविषमांतस्यपाययेत् ॥ शीतंजलंवामयेच्चपिपासाते-
नशाम्यति ॥ २५ ॥

अर्थ—स्नेहसे उपजे पित्तकोपका यत्न—स्नेहपान करनेंसे पित्तकोप होके जो अत्यंत प्यास लगे तो तिस रोगीको शीतल जल पिलावै तिस शीतल जल पीनेंसे वमन होके तृषा और गरमी शांत हो जाती है ॥ २५ ॥

अजीर्णीवर्जयेत्स्नेहमुदरीतरुणज्वरी ॥
दुर्बलोऽरोचकीस्थूलोमूर्च्छार्तोमदपीडितः ॥ २६ ॥

अर्थ—अथ स्नेहका निषेध—अजीर्णवाला उदररोगी तरुण ज्वरवाला दुर्बल अरोचकरोगवाला अति स्थूल, मूर्च्छावाला मदपीडित इन रोगियोंको स्नेह नहीं पिलावे ॥ २६ ॥

दत्तबस्तिर्विरिक्तश्चवांतितृष्णाश्रमान्वितः ॥ अकालप्रसवा-
नारीदुर्दिनेचविवर्जयेत् ॥ २७ ॥ स्वेद्यसंशोध्यमद्यस्त्रीव्या-
यामासक्तचिंतकाः ॥ वृद्धाबालाःकृशारूक्षाःक्षीणास्राःक्षी-
णरेतसः ॥ वातार्तितिमिरार्तायेतेषांस्नेहनमुत्तमम् ॥ २८ ॥

अर्थ—वस्तिकर्म भयेको जुलाब लेनेंवालेको वमन कराये हुएको तृषायुक्तको परिश्रमीको अकालमें गर्भ गिरी हुई नारीको और दुर्दिनमें स्नेह नहीं पिलावे ॥ २७ ॥ पसीना दिये हुएको रेचन किये हुएको और मदिरा पीनेवाला कसरतके श्रमवाले वृद्ध बालक कृश रूक्ष रुधिरक्षीणवाले धातुक्षीण वातसे पीडित तिमिररोगी इनको घृतादि स्नेह पिलाना उत्तम है ॥ २८ ॥

वातानुलोम्यंदीप्तोग्निर्वर्चःस्निग्धमसंहतम् ॥ मृदुस्निग्धांग-
ताग्लानिःस्नेहोऽवेगोऽथलाघवम् ॥ २९ ॥ विमलेंद्रियता
सम्यक्स्निग्धेरूक्षेविपर्ययः॥भक्तद्वेषोमुखस्रावोगुदेदाहःप्रवा-
हिका ॥ ३० ॥ तंद्रातिसारःपांडुत्वंभृशंस्निग्धस्यलक्षणम् ॥
रुक्षस्यस्नेहनंस्नेहैरतिस्निग्धस्यरूक्षणम् ॥ श्यामाकचणका-
द्यैश्चतक्रपिण्याकसक्तुभिः ॥ ३१ ॥ दीप्ताग्निःशुद्धकोष्ठश्चपुष्ट-
धातुदृढेंद्रियः ॥ निर्जरोबलवर्णाढ्यःस्नेहसेवीभवेन्नरः ॥३२॥

स्नेहेव्यायामसंशीतवेगाघातप्रजागरान् ॥ दिवास्वप्नमभि-ष्यंदिरूक्षान्नंचविवर्जयेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ–गुणदायी स्नेहके लक्षण—शरीरमें आरोग्य हो वायु शुद्ध विचरै जठराग्नि दीप्त रहै मल चिकना और सफा हो शरीरको मल चीकना हो ग्लानिरहित चंचलता और शरीर हलका ॥२९॥ और निर्मल इंद्रिय हो ये उत्तम स्नेहपानके गुण है रूक्षस्नेहमें इस्से विपरीत गुण खाया हुआमें अरुचि मुखमें पानी छुटै गुदामें दाह हो मल वहै ॥ ३० ॥ ज्यादै स्नेह पीनेमें आलस्य अतिसार पांडुरोग ये उपद्रव होते हैं अथ रूषे स्नेहका इलाज—रूषे स्नेहमें विना मक्खनन्निकाला मट्ठा तिलका कल्क जवका सत्तु खिलाके स्निग्ध करै और स्निग्धको सामक चना चावल आदि खुवाके रूषा करे ॥ ३१ ॥ अथ स्नेहसेवनके गुण—घृतआदि स्नेह सेवन करनेवाला पुरुषकी जठराग्नि दीप्त होती है कोठा शुद्ध हो धातु पुष्ट हो इंद्रिय दृढ हों जरा अवस्थासे छुट जावे बल वर्ण बढैं ये गुण होते हैं ॥ ३२ ॥ स्नेह सेवनेवालोको वर्ज्य पदार्थ स्नेहको सेवनेवाला पुरुष दिनमें सोवे नही श्रम नहीं करै शीतल पदार्थ त्यागै मलमूत्रको न रोकै वहुत जागै नहीं कफ करनेवाला और रूषा भोजन नहीं करे ॥ ३३ ॥

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे स्नेहपानंनाम प्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः ।

**स्वेदश्चतुर्विधःप्रोक्तस्तापोष्मौस्वेदसंज्ञितौ ॥
उपनाहोद्रवःस्वेदःसर्वेवातार्तिहारिणः ॥ ३४ ॥**

अर्थ–अथ पसीना देनेकी विधि स्वेद—अर्थात् पसीना चार प्रकारका है ताप कहैं सेकना उष्म कहैं वराफा उपनाहक हैं पोटरीके सेक द्रव कहें काढा आदिमें वठाके पसीना दिवाना ए सव वायूकी पीडा हरहै ॥ ३४ ॥

**स्वेदौतापोष्मजौप्रायःश्लेष्मघ्नौसमुदीरीतौ ॥
उपनाहस्तुवातघ्नःपित्तसंगेद्रवोहितः ॥ ३५ ॥**

अर्थ–सेक करके और बफारासे दिये हुए पसीनेविशेष करिकै कफनाशक

कहे हैं उपनाह पसीना वातको नाश करता है और पित्तवायुमें द्रव कहे काढा आदिमें बैठाके विशेष पसीना दिवावै ॥ ३५ ॥

महाबलेमहाव्याधौशीतेस्वेदोमहान्स्मृतः ॥ दुर्बलेदुर्बलः स्वेदोमध्येमध्यतमोमतः ॥ बलासेरूक्षणःस्वेदोरूक्षस्निग्धः कफानिले ॥ ३६ ॥ कफमेदोवृतेवातेकोष्णगेहंरवेःकरान् ॥ नियुद्धंमार्गगमनंगुरुप्रावरणंध्रुवम् ॥ चिंताव्यायामभारांश्च सेवेतामयमुक्तये ॥ ३७ ॥

अर्थ–महाबलवाले शरीरमें वायुका अधिक वेग हो तो महान् स्वेद करै हलके शरीरमें हलका स्वेद करना योग्य है मध्यम शरीरमें मध्यम पसीना दिवाना योग्य है कफके दोषमें रूषा पसीना रेणुका आदिसे देवै कफवातमें रूषा स्निग्ध मिला पदार्थसे पसीना करावे ॥ ३६ ॥ कफ मेद वायु इनसे युक्त रोगमें गरम मकानमें बैठायके अथवा घाममें बैठायके पसीना दिवावे अथवा मल्लयुद्ध करावे मार्गमें चलावे वा भारी वस्त्र पहिरावे अथवा चिंता उपजाइ परिश्रम कराइ बोझा उठवाइकै पसीना दिवाना कफ मेद वातयुक्त रोगमें हित है ॥ ३७ ॥

येषांनस्यंविधातव्यंबस्तिश्चापिहिदेहिनाम् ॥
शोधनीयाश्चयेकेचित्पूर्वस्वेद्याश्चतेमताः ॥ ३८ ॥

अर्थ–नस्य दिवानेके योग्य तथा बस्तिकर्म करनेके योग्य वा जुलाब दिवानेके योग्य पुरुषोंको पहले पसीना दिवाके पीछे नस्य आदि दिवानेका उपाय करै ॥ ३८ ॥

पश्चात्स्वेद्यागतेशल्येमूढगर्भगदेतथा ॥ स्वेद्याःपूर्वंत्रयोऽपीहभगंदर्यर्शसांविना ॥ ३९ ॥ अश्मर्याश्चातुरोजंतुःशमयेच्छस्त्रकर्मणा ॥

अर्थ–जिस स्त्रीकै भीतर गर्भका शल्य हो अथवा मूढगर्भ हो इनमें जब गर्भ बाहिर हो जावे तब पीछे पसीना दिवावे और भगंदर ववासीर पथरी इन रोगोंमें पसीना नहीं दिवावे इनको शस्त्रके उपायसे शांत करै ॥ ३९ ॥ पीछे पसीना दिवावै और इनसे अन्य जगह पहले पसीना दिवावै ॥

सर्वान्स्वेदान्निवातेचजीर्णाहारेचकारयेत् ॥ ४० ॥ स्वेदा-

द्धातुस्थितादोषाःस्नेहस्निग्धस्यदेहिनः ॥ द्रवत्वंप्राप्यकोष्ठां-
तर्गत्वायांतिविरेकताम् ॥ ४१ ॥

अर्थ–स्वेद करनेका स्थानसमय—भोजन किया हुआ पचजावे तव जहां वायु प्रवेश नहीं होती हो तिस मकानमें बैठाके पसीना दिवावे ॥ ४० ॥ स्वेद दिवानेके समय रोगीकों वडे पात्रमें तेल भरि बैठाके पसीना दिवानेसे रसआदि सप्त धातुविकार, मलको पतलाकर उस पसीनेके वादमें निकल जाता है ॥ ४१ ॥

स्विद्यमानशरीरस्यहृदयंशीतलैःस्पृशेत् ॥ ४२ ॥
स्नेहाभ्यक्तशरीरस्यशीतैराच्छाद्यचक्षुषी ॥

अर्थ–पसीना दिवायेहुए पुरुषके हृदयमे चंदन आदि शीतलवस्तु लगानेसे चित्तभ्रमवालेका चित्त स्वस्थ हो जाताहै ॥ ४२ ॥ और जिसका शरीर तेलमें भिगोया हो मल पतला गिरता हो उसकी आंखोंपर केवडाके जलमे वस्त्रको भिगोके धरना श्रेष्ठ है ॥

अजीर्णीदुर्बलोमेहीक्षतक्षीणःपिपासितः ॥ ४३ ॥
अतिसारीरक्तपित्तीपांडुरोगीतथोदरी ॥

अर्थ–स्वेदके अयोग्य रोगी—अजीर्णवाला दुर्बल प्रमेही क्षतक्षीण प्याससे युक्त ॥ ४३ ॥ अतिसारवाला रक्तपित्तवाला पांडुरोगी उदररोगी इनको पसीना नहीं दिवावै ॥

मदार्तागर्भिणीचैवनहिस्वेद्याविजानता ॥ ४४ ॥
एतानपिमृदुस्वेदैःस्वेदसाध्यानुपाचरेत् ॥

अर्थ–मदसे पीडित, गर्भिणी इनकोभी स्वेद न करावै ॥ ४४ ॥ और जो अवश्य पसीना दिवाना हो तो सूक्ष्मपसीना दिवावै ॥

मृदुस्वेदंप्रयुंजीततथाहृन्मुष्कदृष्टिषु ॥ ४५ ॥
अतिस्वेदात्संधिपिडादाहस्तृष्णाक्लमोभ्रमः ॥

अर्थ–अथ स्वेदविधि—हृदय अंडवृद्धि नेत्र इनमें सूक्ष्मपसीना दिवावे॥४५॥ ज्यादै स्वेददिवानेसे संधिमें पीडा होती है और दाह तृषा भ्रम ग्लानि ये उपद्रव होते हैं ॥

पित्तासृक्पिटिकाकोपस्तत्रशीतैरुपाचरेत् ॥ ४६ ॥
तेषुतापाभिधःस्वेदोवालुकावस्त्रपाणिभिः ॥

अर्थ-स्वेदका उपद्रव—रक्तपित्त होनेसे फुनसी हो जाती है तहां ठंडा इलाज करै ॥ ४६ ॥ वे पूर्वोक्त कहे हुए सूक्ष्मस्वेदकै जो योग्य है तिनकै वालुरेतकी पोटरी बांध तिस वस्त्रकी पोटरीसे हाथसे सेक करि पसीना दिवावै ॥

कपालकंदुकांगारैर्यथायोग्यंप्रयुज्यते ॥ ४७ ॥ ऊष्मस्वेदः प्रयोक्तव्योलोहपिंडेष्टिकादिभिः ॥ प्रतप्तैरम्लसिक्तैश्चकाये रल्लकवेष्टिते ॥ ४८ ॥ अथवावातनिर्नाशिद्रव्यक्काथरसादि-भिः ॥ उष्णैर्घटंपूरयित्वापार्श्वेछिद्रंनिधायच ॥ ४९ ॥ वि-मुद्यास्यंत्रिखंडांचधातुजांकाष्ठवंशजाम् ॥

अर्थ-अथ ऊष्मस्वेदविधि—पत्थर आदि तप्त करि सेकना यह ऊष्मस्वेद है ॥ ४७ ॥ लोहेका पिंड ईंट पत्थर इनको गरम करि फिर खट्टा पदार्थ तक्रआदि उनपे छिडक रोगीको कंवल आदि उढाके स्वेद दिवावै ॥ ४८ ॥ यह ऊष्मस्वेद है और भांडासे तपाना कपडेकी गेंद वनाके तपाना अंगारसे तपाना यह तापस्वेद है और वातनाशक औषधोंके क्काथ रस आदि गरमगरमसे घडाको भरि तिसके वगलमें छेक करि घडेके ऊपरका मुख मूंद देवै ॥ ४९ ॥ फिर धातुकी अथवा काष्ठकी नल बनाके तिसमें तीन खंड करै ॥

षडंगुलास्यांगोपुच्छांनलींयुंज्याद्धिहस्तिकाम् ॥ ५० ॥ सु-खोपविष्टंस्वभ्यक्तंगुरुप्रावरणावृतम् ॥ हस्तिशुंडिकयाना-ड्यास्वेदयेद्वातरोगिणम् ॥ ५१ ॥ पुरुषायामसात्रांवाभूमि-मुत्कीर्यखादिरैः ॥ काष्ठैर्दग्ध्वातथाभ्युक्ष्यक्षीरधान्याम्लवा-रिभिः ॥ ५२ ॥ वातघ्नपत्रैराच्छाद्यशयानंस्वेदयेन्नरम् ॥

अर्थ-वह नल दो हाथ लंबी बनावे और गौकी पूंछके समान आकारवाली करै ॥ ५० ॥ इसमें तीन खंड किये है सो एक खंड छह अंगुलका वांका और दो हाथ प्रमाणका समान करे ऐसे नलिका वना फिर रोगीको तेल आदि मर्दन कराइ ॥ ५१ ॥ भारा कंबल आदि वस्त्र उढाइ सब तर्फसे ढकिके पीछे उस गलशुंडिका नलिकाका मुख कंवलके भीतर खोलि वातरोगी पुरुषको पसीना दिवावै ॥ ५२ ॥ अन्यप्रकार जिस्में रोगी पुरुष शो जावे इतनें प्रमाणका खढा खोदि तिसमें खैरकी लकडी जलाय तिनको निकासि तहां गौका दूध कांजी अ-

थवा तक्र इनको छिडक अरंडके पत्तोंसे आच्छादित कर तहां रोगीको सुवाके पसीना दिवावे ॥

एवंमाषादिभिःस्विन्नैःशयानःस्वेदमाचरेत् ॥ ५३ ॥
ततोपनाहस्वेदंचकुर्याद्वातहरौषधैः ॥

अर्थ–ऐसेही पूर्वोक्तप्रकारसे खढाको तपाकर तहां सिजाये हुए उडदोंका पानी छिडक अरंडके पत्ते विछा तहां रोगीको शयन करा पसीना दिवावे ॥ ५३ ॥ इससे अनंतर घडेमें वातनाशक औषध भर जल घालि चार घडीतक आंच दे फिर रोगीको छीदी खाटपे सुवा तिसको नीचेसे वफारा देवै यह अन्यग्रंथमें उपनाहस्वेदका लक्षण कहा है ॥

प्रदिह्यदेहंवातार्तंक्षीरमांसरसान्वितैः ॥ ५४ ॥ अम्लपिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैःस्नेहसंयुतैः ॥ ततोग्राम्यानूपमांसैर्जीवनीयगणेनच ॥ ५५ ॥ दधिसौवीरकक्षारैर्वीरतर्वादिनातथा ॥ कुलित्थमाषगोधूमैरतसीतिलसर्षपैः ॥ ५६ ॥ शतपुष्पादेवदारुशेफालीस्थूलजीरकैः ॥ एरंडमूलबीजैश्चरास्नामूलकशिग्रुभिः ॥ ५७ ॥ मिशिकृष्णाकुठेरैश्चलवणैरम्लसंयुतैः॥

अर्थ–वातसे पीडितरोगीके शरीरको दूध मांसके रस कांजीके जल नमक घृत तेल ॥ ५४ ॥ इन सब गरमगरम रसोंकरके सेकै अथ उपनाहक्रिया दशमूल आदि वातहृत द्रव्य ग्राममें रहनेवाले जीवोंके मांस जलचरोंके मांस जीवनीयगण औषध ॥ ५५ ॥ दही कांजी जवखार साजी खारीनौंन वीरतरु आदि गण औषध कुलथी उडद गैंहू अलसी तिल सिरसम ॥ ५६ ॥ सोंफ देवदार संभालू कलौंजी जीरा पंचांगसहित अरंडी रास्ना मूलीके बीज सहौंजना दूसरी सौंफ ॥ ५७ ॥ पीपली आजवला पांचोनमक तक्र आदि खाटी वस्तु इन करके ॥

प्रसारिण्यश्वगंधाभ्यांबलाभिर्दशमूलकैः ॥ ५८ ॥
गुडूचीवानरीबीजैर्यथालाभंसमाहृतैः ॥

अर्थ–खींप आसगंध खरैंहटी दशमूल ॥ ५८ ॥ गिलोय कवंचकेबीज इन सब औषधोंमें जितनी औषध मिले उतनी लेके तिन्हैं जलमे पीस अग्निसे तपाइ लेवे ॥

क्षुण्णैःस्विन्नैश्चवस्त्रेणबद्धैःसंस्वेदयेन्नरम् ॥ ५९ ॥
महाशाल्वणसंज्ञोयंयोगःसर्वानिलार्तिजित् ॥

अर्थ—पीसी हुई और अग्निसे पकाई हुई इन औषधोंको वस्त्रमें बांधके पोटरी बांधके सेकै ॥ ५९ ॥ यह महाशाल्वणसंज्ञक स्वेदयोग सब प्रकारके वातरोगोंको नाश करता है ॥

द्रवस्वेदस्तुवातघ्नद्रव्यक्काथेनपूरिते ॥ ६० ॥ कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टोऽवगाहयेत् ॥ सौवर्णेराजतेवापिताम्रमायसदारुजम् ॥ ६१ ॥ कोष्ठकंतत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषड्त्रिंशदंगुलम् ॥

अर्थ—अथ द्रवस्वेदविधि—दशमूलआदि वातनाशकद्रव्योंका क्काथ बनाइ॥६०॥ तिससे कडाहेको भरि अथवा चौकूटाकोष्ठ बनाके तिसमें रोगीको सुखपूर्वक बैठावे और सोना चांदी तांवा अथवा लोहेका ॥ ६१ ॥ तथा काष्ठका छत्तीस अंगुल ऊंचा चौकूटा कोष्ठ वनावे तिसमें रोगीको वैठावे ॥

आयामेनत्वदेवस्याच्चतुष्कंटस्तृणंतथा ॥ नाभेःषडंगुलंयावन्मग्नःक्काथस्यधारया ॥ ६२ ॥ कोष्ठकेस्कंधयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ॥ एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेदयेन्नरम् ॥६३॥ एकांतरेद्व्यंतरेवास्नेहोयुक्तोऽवगाहने ॥ शरीरेबलमाधत्तेयुक्तःस्नेहावगाहने ॥ ६४ ॥ शिरामुखैरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ॥

अर्थ—फिर उस काढाकी पतली धार तिस रोगीके ऊपर गेरै जव ॥ ६२ ॥ सूंडीसे छह अंगुल ऊंचेंतक काढा आजावे तव हाथको हटावे इसी प्रकारसे कोष्ठमें रोगीको वैठाइ तिसको कंधोंतक दूधकरके अथवा तेलकरिके पूटितकरके पसीना दिवावे यह अवगाहन स्नेहविधि एक दिन बीचमें टार तीसरे दिन इसी भांति फिर करै घृत वा दुध अथवा तेल लगाके ॥६३॥ अव गाहनस्वेद करानेंसे सब नसोंका और रोमोंका मुख खुलि करि शरीरकी तृप्ति होती है और शरीरमें बल धारण होता है ॥ ६४ ॥ परंतु तिस समय शरीरकै वायु नहीं लगने देनी क्योंकि खुली हुई नसोंमाहके वायु प्रवेश हो जाता है ॥

जलसिक्तस्यवर्धंतेयथामूलेंऽकुरास्तरोः ॥ ६५ ॥ तथाधातु-

विवृद्धिर्हि स्नेहसिक्तस्यजायते ॥ नातःपरतरःकश्चिदुपायोवातनाशनः ॥ ६६ ॥ शीतशूलाद्युपरमेस्तंभगौरवनिग्रहे ॥ दीप्तेऽग्नौमार्दवेजातेस्वेदनाद्विरतिर्मता ॥ ६७ ॥ सम्यक्स्विन्नं विमृदितंस्नानमुष्णांबुभिःशनैः ॥ भोजयेच्चानभिष्यंदिव्यायामंचनकारयेत् ॥ ६८ ॥

अर्थ–जैसे जलकरके वृक्षकी जडके सींचनेसे वृक्षके संपूर्ण अंकुर बढते हैं ॥ ६५ ॥ तैसेही स्नेहविधिसे द्रवसंज्ञक पसीना दिवानेंसे शरीर पुष्ट होता है और धातु बढते है वातको नाश करनेकेवास्ते ॥ ६६ ॥ इससे उपरांत अन्य कछु उपाय नहीं है और वायु शूल देह जकडना भारीपन ये सब दूर होते हैं और जठराग्नि दीप्त हो देहको मल हलकी होजावे तब स्वेद न करै ॥ ६७ ॥ स्वेद करे— पीछे शरीरकै तेल लगाके गरमगरम जलसे शनैशनै स्नान करावे और कफकारक भोजन नहीं करै परिश्रम नहीं करै ॥ ६८ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे स्वेदविधिर्नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः ।

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम् ॥ वमनंरेचनंचैव कारयेत्कुशलोभिषक् ॥ ६९ ॥ बलवंतंकफव्याप्तंहृल्लासार्तिनिपीडितम् ॥ तथावमनसात्म्यंचधीरचित्तंचवामयेत् ॥ ७० ॥

अर्थ–शरदऋतुमें तथा वसंतऋतुमें और वर्षाकालमें इन चारों ऋतुओंमें चतुर वैद्य वमन करावे और जुलाब दिवावे ॥ ६९ ॥ और बलवाला कफसे व्याप्त मुखसे लाल गिरती है वमन लेनेकी प्रकृति हो और धीर चित्तवाला हो ऐसे पुरुषको वमन कराना योग्य है ॥ ७० ॥

विषदोषेस्तन्यरोगेमंदेऽग्नौश्लीपदेऽर्बुदे ॥ हृद्रोगकुष्ठवीसर्पमेहाजीर्णभ्रमेषुच ॥ ७१ ॥ विदारिकापचीकासश्वासपीनसवृद्धिषु ॥ अपस्मारज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारिषु ॥ ७२ ॥

नासाताल्वोष्ठपाकेषुकर्णस्रावेद्विजिह्वके ॥ गलशुंड्यामती-
सारेपित्तश्लेष्मगदेतथा ॥ ७३ ॥ मेदोगदेऽरुचौचैववमनं
कारयेद्भिषक् ॥

अर्थ–विषरोग स्तन्यरोग मंदाग्नि श्लीपद हृद्रोग कुष्ठ विसर्प प्रमेह अजीर्ण भ्रम ॥ ७१ ॥ विदारी अपची खासी श्वास पीनस वृद्धिरोग मृगीरोग ज्वर उन्माद रक्तातिसार ॥ ७२ ॥ नासापाक तालुपाक ओष्ठपाक कर्णस्राव द्विजिह्वक गलगंड अतिसार पित्तकफरोग ॥ ७३ ॥ मेदरोग अरुचि इन रोगोंमें वैद्य वमन करावे ॥

नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः ॥ ७४ ॥ नातिवृ-
द्धोगर्भिणीचनचस्थूलःक्षतातुरः ॥ मदार्तोबालकोरूक्षःक्षु-
धितश्चनिरूहितः ॥ ७५ ॥ उदावर्त्यूर्ध्वरक्तीचदुश्छर्दिःकेव-
लानिली ॥ पांडुरोगीकृमिव्याप्तःपठनात्स्वरघातकः ॥७६॥
एतेऽप्यजीर्णव्यथितावाम्यायेविषपीडिताः ॥ कफव्याप्ताश्च
तेवाम्यामधुक्काथप्रपानतः ॥ ७७ ॥ सुकुमारंकृशंबालंवृद्धं
भीरुंनवामयेत् ॥

अर्थ–तिमिररोगवाला गुल्मी उदररोगी कृश ॥ ७४ ॥ अतिवृद्ध गर्भिणीस्त्री स्थूलरोगी उरक्षती मदातुर बालक वृद्ध भूखा निरूहवस्ति किया ॥ ७५ ॥ उदावर्तवाला ऊर्ध्वरक्ती छर्दिरोगी केवल वातकी पीडावाला पांडुरोगी कृमियोंसे युक्त बहुत बोलनेंसे स्वरविघातवाला ऐसे रोगियोंको वमन कराना योग्य नहीं है ॥ ७६ ॥ और अजीर्णयुक्त विषपीडित कफसे व्याप्त इन रोगियोंको मुलहटी महुआकी छाल इनका रस पिलाके वमन करावे ॥ ७७ ॥ और सुकुमार कृश बालक वृद्ध डरपों इनको कभीभी वमन न करावे ॥

पीत्वायवागूमाकंठंक्षीरतक्रदधीनिच ॥ ७८ ॥ असात्म्यैः
श्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुत्क्लिश्यदेहिनः ॥ स्निग्धस्विन्नायवमनं
दत्तंसम्यक्प्रवर्तते ॥ ७९ ॥ वमनेषुचसर्वेषुसैंधवंमधुनाहि-
तम् ॥ बीभत्संवमनंदद्याद्विपरीतंविरेचनम् ॥ ८० ॥

अर्थ–जिसको वमन कराना हो उसे पहिले यवागू दूध दही तक्र ॥७८॥ और

अनभावन पदार्थ कफकृत् पदार्थ खुवाके दोषोंको ऊपरको ल्याके फिर स्नेहपान करा देवे ऐसे पुरुषको वमन अच्छे प्रकारसे होता है ॥ ७९ ॥ सब वमनोंमें सेंधानमक और शहत युक्त औषध श्रेष्ठ है और तूतिया वा तां वा घृतयुक्त दिया जाता है वह बीभत्स वमन होता है और जिससे बीभत्स वमन दियेपर जुलाव दिवाना हो तो घृतको न खाने दे और विरेचनमें बीभत्स औषध न देनी ॥८०॥

क्वाथ्यद्रव्यस्यकुडवंश्रपयित्वाजलाढके ॥ अर्धभागावशिष्टंच वमनेष्ववचारयेत् ॥ ८१ ॥ क्वाथपानेनवप्रस्थाज्येष्ठामात्रा प्रकीर्तिता ॥ मध्यमाषण्मिताप्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी ॥ ८२ ॥ कल्कचूर्णावलेहानांत्रिपलंश्रेष्ठमात्रया ॥

अर्थ–वमनके योग्य औषधोंको कुडव प्रमाण लेइ कूटके आढक २५६ तोले जलमें क्वाथ बनावे ॥ ८१ ॥ जब जलके आधा बाकी रहे तब उतारि वमन करनेंवाले मनुष्यको पिलावे तहां क्वाथके पिलानेमें जो नव प्रस्थ पिलावे वह ज्येष्ठामात्रा कही है और छह प्रस्थ पिलावे वह मध्यमा तीन प्रस्थ पिलावे वह छोटी मात्रा कही है ॥८२॥ यहा एक प्रस्थ ६४ तोलेका जानना और वमन करानेंमें औषधियोंका कल्क चूर्ण अवलेह इनकी ३ पलकी अर्थात् १२ तोले प्रमाणकी ज्येष्ठा मात्रा है ॥

मध्यमंद्विपलंविद्यात्कनीयस्तुपलंभवेत् ॥ ८३ ॥
वमनेचापिवेगाःस्युरष्टौपित्तांतमुत्तमाः ॥

अर्थ–दो पलकी मात्रा होती है एक पलकी छोटी मात्रा होती है ॥ ८३ ॥ अथ वमनके वेगका प्रमाण—जिस पुरुषकै सात वार सब दोष गिरै और आठवें वार पित्त गिरे वह उत्तम वेग कहाता है ॥

षड्वेगामध्यवेगाश्चचत्वारस्त्ववरामताः ॥ ८४ ॥ वमनेच विरेकेचतथाशोणितमोक्षणे ॥ सार्धत्रयोदशपलंप्रस्थमाहुर्मनीषिणः ॥ ८५ ॥ कफंकटुकतीक्ष्णेनपित्तंस्वादुहिमैर्जयेत् ॥ सस्वादुलवणाम्लोष्णैःसंसृष्टंवायुनाकफम् ॥ ८६ ॥

अर्थ–जिसकै पांचवार सब दोष गिरै छठीवार पित्त गिरै वह मध्यम वेग है ॥ ८४ ॥ और तीनवार सब दोष गिरै चौथीवार पित्त गिरै वह हलका वेग है और वमन जुलाब फस्त खुलाना इनमें प्रस्थका प्रमाण १३॥ पलका है ॥८५॥

और चर्चरा तीक्ष्ण गरम इत्यादि द्रव्योंकरके कफकी पीडावालेके कफका नाश होता है और पित्तको मधुर शीतल पदार्थ करि जीतै और मधुर क्षार खटाई उष्ण इनसे युक्त औषध करि वमन करानेंसे कफयुक्तवात नाश होता है ॥ ८६ ॥

कृष्णाराठफलैःसिंधुकफेकोष्णजलैःपिबेत् ॥ पटोलवासानिंबैश्चपित्तेशीतजलंपिबेत् ॥ ८७ ॥ सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबेत् ॥ अजीर्णेकोष्णपानीयंसिंधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥ ८८ ॥

अर्थ—कफमें वमनविधि कफदोष अधिक होनेमें पीपली मैनफल सेंधानमक इनसे युक्त गरम जल पिलाके वमन करावे और पित्तकी प्रकृतिवाले पुरुषको परवल वासा नींवके पत्ते इनको कूटि शीतल जलकेसंग पीवे ॥ ८७ ॥ और कफवातकी पीडामें दूधकेसंग मैनफलको पीवे और अजीर्णमें सेंधानमककेसंग कछुक गरमगरम जल पीके बुद्धिमान् पुरुष वमन करै ॥ ८८ ॥

वमनंपाययित्वाचजानुमात्रासनेस्थितम् ॥ कंठमेरंडनालेन स्पृशंतंवामयेद्भिषक् ॥ ८९ ॥ ललाटंवमतःपुंसःपार्श्वौद्वौच प्रबोधयेत् ॥ प्रसेकोहृद्ग्रहःकोष्ठःकंडूर्दुश्छर्दितात्भवेत् ॥ ९० ॥

अर्थ—वमन करनेकी रीति—वमन करानेवाली औषधी पीके दोनों गोडे मोडिकै आसनपे वैठे और अरंडपत्रकी डंडी गलेमें प्रवेश कर लेवे तव अच्छी तरह वमन होता है ॥ ८९ ॥ वमन करनेवाला पुरुषका मस्तक दोनों पसली इनको सहारतार है और वमन अच्छीतरह न होवे तो रोगीके मुखसे लार गिरै हृदयमें पीडा होय कोष्ठमें खुजली होती है ॥ ९० ॥

अतिवान्तेभवेत्तृष्णाहिक्कोद्गारौविसंज्ञता ॥ जिह्वानिःसर्पणं चाक्ष्णोर्व्यावृत्तिर्हनुसंहतिः ॥ ९१ ॥ रक्तच्छर्दिःष्ठीवनंचकंठेपीडाचजायते ॥ वमनस्यातियोगेतुमृदुकुर्याद्विरेचनम् ॥ ९२ ॥ वमनांतःप्रविष्टायांजिह्वायांकवलग्रहः ॥

अर्थ—असंत वमन होनेमें तृषा होय हिचकी आवे डकार आवे संज्ञा न रहे और जीभ विकलना नेत्रका चंचलपना संभ्रम ठोडी झकडना ये उपद्रव होते हैं ॥ ९१ ॥ और रुधिर गिरना वारंवार थूकना कंठमें पीडा होना ये उपद्रव होते हैं और जहां असंत वमन हो जावे तहां कोमल जुलाब देवै ॥ ९२ ॥ और ज्यादै वमन करानेसे जों जीभ भितर प्रवेश जावे तो तिनको कवलग्रह करावे ॥

स्निग्धाम्ललवणैर्हृद्यैर्घृतक्षीररसैर्हितः ॥ ९३ ॥ फलान्यम्ला-
निखादेयुस्तस्यचान्येऽग्रतोनराः॥ निःसृतांतुतिलद्राक्षाकल्कं
लिप्त्वाप्रवेशयेत् ॥ ९४ ॥ व्यावृत्ताक्षिणघृताभ्यक्तेपीडयेच्च
शनैःशनैः ॥

अर्थ–चिकना वा खट्टा अथवा सलौना सुंदर मनोहर पदार्थ अथवा घृत दूध दही इनसे युक्त पदार्थ काकवलग्रह करावे अर्थात् मुखमें ग्रास धारण कर रक्खे ॥ ९३ ॥ अथवा रोगीके सन्मुख बैठके अन्य मनुष्य खट्टे फलोंको खावें तो उनके देखनेंसे रोगीकी जीभमें पानी छुटै और कोमल हों जाती है अथ जीभ बाहिर निकलाई हो उसका यत्न— वमन करते हुए जो जीभ निकलआवे तो तिलदाख इनको पीस जीभपर लेप कर बैठायदे ॥ ९४ ॥ और जो आंखि बाहिरको निकलावे तो घृत लगावे, शनैःशनै ऊपरको सहार देवे ॥

हनुमोक्षेस्मृतःस्वेदोनस्यंचश्लेष्मवातहृत् ॥ ९५ ॥
रक्तपित्तविधानेनरक्तछर्दिमुपाचरेत् ॥

अर्थ–वमनके हनुस्तंभका उपचार—जो वमन करनेमें ठोडी जकडजाय तो सेकनेसे तथा कफवातनाशकका औषध लगानेसे खुलती है ॥ ९५ ॥ और जो वमनमें रक्तकी छर्दिआने लगे तो मध्यमखंडमें कहा रक्तपित्तका इलाज करै ॥

धात्रीरसांजनोशीरलाजाचंदनवारिभिः ॥ ९६ ॥ मंथंकृ-
त्वापाययेच्चसघृतक्षौद्रशर्करम् ॥ शाम्यंत्यनेनतृष्णाद्याःपी-
डाश्छर्दिसमुद्भवाः ॥ ९७ ॥ हृत्कंठशिरसांशुद्धिंदीप्ताग्नित्वं
चलाघवम् ॥ कफपित्तविनाशश्चसम्यग्वांतस्यचेष्टितम् ॥ ९८ ॥

अर्थ–आवलेका रस रसांजन, अर्थात् दारुहलदीका क्वाथ वकरीका दूध इनका क्वाथ वनाकर सुखाया हुआ, और लालचंदन ॥९६॥ खशधानकी खील ये पांचो १ पलभर ले ४ पल शीतल जलमें मथिकै घृत शहत मिश्री मिलाकर पीनेसे वमनसें उपजी तृषाआदि पीडाओंका नाश होता है ॥ ९७ ॥ श्रेष्ठ वमनका लक्षण—हृदय कंठ शिर इनकी शुद्धि अर्थात् कफादिक दोष न रहे जठराग्नि दीप्त हो शरीर हलका हो कफपित्तका नाश हो ये अच्छीतरह वमन हुएके लक्षण है ॥ ९८ ॥

ततोऽपराह्णेदीप्ताग्निंमुद्गषष्टिकशालिभिः ॥ हृद्यैश्चजांगलर-

सैःकृत्वायूषंचभोजयेत् ॥ ९९ ॥ तंद्रानिद्रास्यदौर्गंध्यंकंडूं चग्रहणींविषम् ॥ सुवांतस्यनपीडायैभवंत्येतेकदाचन ॥१००॥ अजीर्णंशीतपानीयंव्यायामंमैथुनंतथा ॥ स्नेहाभ्यंगंप्रकोपं चदिनैकंवर्जयेत्सुधीः ॥ १ ॥

अर्थ—वमनपर पथ्य—वमन कराये हुए रोगीको तीसरेपहरमें करडी भूख लगे तब मूंग साठी चावल इनका यूष देवै अथवा जांगलदेशके जीवोंके मांसका रस रुचिके अनुसार हो उसका यूष वनाके भोजन करावे ॥ ९९ ॥ और अच्छीतरह वमन होनेवाले रोगीके तंद्रा आलस्य दुर्गंध खाजि, ग्रहणी विष इन उपद्रवोंकी पीडा नहीं होती है ॥ १०० ॥ और चतुरवैद्य वमन करनेवाले रोगीको एक दिनतक गरिष्ठ भोजन ठंढा पानी कसरत मैथुन करना तेलआदिकी मालिस करना क्रोध करना ये सब वर्जा देवै ॥ १०१ ॥

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे वमनविधिर्नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः ।

स्निग्धस्विन्नस्यवांतस्यदद्यात्सम्यग्विरेचनम् ॥ अवांतस्यत्वधःस्त्रस्तोग्रहणींछादयेत्कफः ॥ २ ॥ मंदाग्निंगौरवंकुर्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकाम् ॥ अथवापाचनैरामंबलासंचविपाचयेत् ॥ ३ ॥ स्निग्धस्यस्नेहनैःकार्यस्वेदैःस्विन्नस्यरेचनम् ॥ शरदृतौवसंतेचदेहशुद्ध्यैविरेचयेत् ॥ ४ ॥ अन्यदात्ययिके कालेशोधनंशीलयेद्बुधः ॥

अर्थ—अथ वमनके अंतमें जुलाबकी विधि—प्रथम स्नेहपान आदि कर पसीना ले वमन कर पीछे जुलाव लेवे वह उत्तम जुलाब होता है वमन कराये विना पहले जुलाब लेवे तो कफ नीचेको जाके ग्रहणीको आच्छादित कर देता है ॥ २ ॥ अथवा मंदाग्नि भारीपन ये होते हैं तथा दारुण अतिसार होता है, और वमन करायेविना जो कफ नीचेको चला जावे तिसको सूखे अरंडीके जडआदि सेवन कराइ पचाई रेचन कर्म करै ॥ ३ ॥ जुलाबका दूसरा प्रकार—घृत तेल दूध आदि-

कर स्निग्ध किया मनुष्य वाईट मट्टीका गोला आदिसे पसीना दिवाया हुआ मनुष्यको शरदऋतुमें वा वसंतऋतुमें देहकी शुद्धिकेवास्ते जुलाव दिवावै ॥ ४ ॥ और चतुरवैद्य रोगीके रोगको विचारि इससमयसे अनुक्तसमयमेंभी रोगकी निवृत्तिकेवास्ते जुलाब दिवावे ॥

पित्तेविरेचनंदद्यादामोद्भूतेगदेतथा ॥ ५ ॥ उदरेचतथाध्मानेकोष्ठाशुद्धौविशेषतः ॥ शरीरजानांदोषाणांक्रमेणपरमौषधम् ॥ बस्तिर्विरेकोवमनंतथातैलंघृतंमधु ॥ ६ ॥ दोषाः कदाचित्कुप्यंतिजितालंघनपाचनैः ॥ येतुसंशोधनैःशुद्धान तेषांपुनरुद्भवः ॥ ७ ॥ बालवृद्धावतिस्निग्धःक्षतक्षीणोभयान्वितः ॥ श्रांतस्तृषार्त्तःस्थूलश्चगर्भिणीचनवज्वरी ॥ ८ ॥ नवप्रसूतानारीचमंदाग्निश्चमदात्ययी ॥ शल्यार्दितश्चरूक्षश्च नविरेच्याविजानता ॥ ९ ॥

अर्थ–विशेष विरेचनयोग्य—पित्तविकार आमवायु ॥ ५ ॥ उदररोग अफारा इन रोगोंमें क्रमकरके परम औषध जुलाब दिवावै बस्तिकर्म, जुलाब वमनकर्म तेल घृत शहत इनका कर्म यथायोग्य करे ॥ ६ ॥ लंघन पाचन किये हुए दोष जीते जाते हैं परंतु कदाचित् कुपित हो ऊपरको आ जाते हैं और जो जुलाब देनेंसे शोधे जाते है उन्होंके कोपकी उत्पत्ति फिर नहीं है ॥ ७ ॥ जुलाबके अयोग्य बालकवृद्ध अति स्नेहपानवाला क्षतक्षीण भयातुर हाराहुआ तृषासे पीडित स्थूलपुरुष गर्भिणी नवीन ज्वरवाला ॥ ८ ॥ नवीन प्रसूता नारी मंदाग्निवाला मदात्ययरोगवाला शल्यवेधित रूषा अर्थात् तेजरहित इन पुरुषोंको जाननेवाला चतुर वैद्य जुलाव नहीं दिवावै ॥ ९ ॥

जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगंदरी ॥ अर्शःपांडूदरग्रंथिहृद्रोगारुचिपीडिताः ॥ १० ॥ योनिरोगप्रमेहार्तागुल्मप्लीहव्रणार्दिताः ॥ विद्रधीछर्दिविस्फोटविषूचीकुष्ठसंयुताः ॥ ११ ॥ कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेंढ्रामयान्विताः ॥ यकृच्छोथाक्षिरोगार्ताःकृमिक्षारानिलार्दिताः ॥ शूलिनोमूत्रघातार्ताविरेकार्हानरामताः ॥ १२ ॥

अर्थ–जुलाव योग्यपुरुष—पुरानें ज्वरवाला विषदोषवाला वातरक्तरोगी भगंदरी ववासीरवाला पांडुरोगी उदररोगी ग्रंथिरोगी हृदयरोगी अरुचिसे पीडित ॥ ११० ॥ योनिरोगसे पीडित प्रमेहरोगवाला गुल्मोदरी प्लीहा व्रणसे पीडित विद्रधी छर्दि विस्फोटक विषूचिका हैजा कुष्ठ इनसे पीडित ॥ ११ ॥ कर्णरोग नासारोग शिरोरोग मुखरोग गुदारोग लिंगरोग गरमी यकृत् शोजा नेत्ररोग कृमिरोग सोमल आदिरोग इनसे पीडित शूलवाला मूत्राघात रोगवाला ये सब रोगी जुलाब देनेंको योग्य हैं ॥ १२ ॥

बहुपित्तोमृदुःप्रोक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः ॥
बहुवातःक्रूरकोष्ठोदुर्विरेच्यःसकथ्यते ॥ १३ ॥

अर्थ–जुलाव तीनप्रकारका है कोमल १ मध्यम २ करडा ३ जिस मनुष्यकी बहुतसी पित्तकी प्रकृति हो उसका कोमल कोठा है और जिसकै बहुत कफ हो उसका मध्यम कोठा है जिसकी बहुत वातकी प्रकृति हो उसका क्रूर करडा कोठा होता है तिसकै जल्दी जुलाब नहीं लगता ॥ १३ ॥

मृद्वीमात्रामृदौकोष्ठेमध्यकोष्ठेचमध्यमा ॥ क्रूरेतीक्ष्णामता तज्ज्ञैर्मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः ॥ १४ ॥ मृदुर्द्राक्षापयश्चंचुतैलैरपिविरिच्यते ॥ मध्यमस्त्रिवृतातिक्काराजवृक्षैर्विरिच्यते ॥१५॥ क्रूरःस्नुक्पयसाहेमक्षीरीदंतीफलादिभिः ॥

अर्थ–जिसका कोमल कोठा हो उसे हलका जुलाव देवै मध्यम कोष्ठवालेको मध्यम जुलाब देवै करडेकोष्ठवालेको तीक्ष्ण औषधि देके जुलाव दिवावै ॥ १४ ॥ कोमल कोष्ठवालेको मनुक्कादाख अरंडीका तेल दूध इनकरके जुलाब देवै मध्यम कोठेवालेको निशोत कुटकी अमलतास इनकरके देवै ॥ १५ ॥ और क्रूरकोठेवालेको थोहरका दूध चोख वा जमालगोटाकी जुलाब देवै ॥

मात्रोत्तमाविरेकस्यत्रिंशद्वेगैःकफांतिका ॥ १६ ॥
वेगैर्विंशतिभिर्मध्याहीनोक्तादशवेगिका ॥

अर्थ–मल गिरतेगिरते अंतमें कफ गिरै ऐसे तीस दस्त लगै वह उत्तम जुलाब है जिसमें वीस वेगतक अंतमें कफ गिरै वह मध्यम जुलाब है ॥ १६ ॥ जिसमें दशवेगतक अंतमें कफ गिरै अर्थात् ९ दस्त जाके दशवीवार आंवसी आवे वह हलकी जुलाब कही है ॥

द्विपलंश्रेष्ठमाख्यातंमध्यमंचपलंभवेत् ॥ १७ ॥ पलार्धंच कषायाणांकनीयस्तुविरेचनम् ॥ कल्कमोदकचूर्णानांकर्षंम- ध्वाज्यलेहतः ॥ १८ ॥ कर्षद्वयंपलंवापिवयोरोगाद्यपेक्षया ॥

अर्थ—रेचनके क्वाथआदिकोंका प्रमाण—जुलाबमें काढाकी २ पल मात्रा उ- त्तम है ॥ १७ ॥ और १ पल मध्यम है और आधी पलकी मात्रा छोटी है और कल्कमोदक चूर्ण इन्होंकी कर्षकर्ष अर्थात् चारचार मासे प्रमाणकी मात्रा देवै अथवा शहत घृत इनसे युक्त अवलेह बनाकर रोगीको दो कर्षकी मात्रा ॥ १८ ॥ तथा पलभरकी मात्रा, रोगीकी अवस्था बलरोगआदिको विचारिकै देवै ॥

पित्तोत्तरेत्रिवृच्चूर्णंद्राक्षाक्वाथादिभिःपिबेत् ॥ १९ ॥ त्रिफ- लाक्वाथगोमूत्रैःपिबेद्व्योषंकफार्दितः ॥ त्रिवृत्सैंधवशुंठीनांचू- र्णमम्लैःपिबेन्नरः ॥ १२० ॥ वातार्दितोविरेकायजांगला- नांरसेनवा ॥

अर्थ—अथ जुलावका औषधप्रकार—पित्त अधिक हो उसको निशोतका चूर्ण दाख इन्होंसे युक्त बडीसौंप गुलाके फूल इत्यादि औषधोंके क्वाथको पीवे ॥१९॥ और कफके कोपमें त्रिफला गोमूत्र सोंठ मिरच पीपरी इत्यादिकोंके क्वाथको पीवे और वातदोषमें निशोत सूंठ सेंधानमक इनके चूर्णको नींबूकेरसके तथा कांजीके संग पीवे ॥ १२० ॥ अथवा वातसे पीडित पुरुष जुलावकेवास्ते इन औषधोंको जांगलदेशके जीवोंके मांसरसके संग पीवे ॥

एरंडतैलंत्रिफलाक्वाथेनद्विगुणेनच ॥ २१ ॥ युक्तंपीत्वापयो- भिर्वानचिरेणविरिच्यते ॥ त्रिवृताकौटबीजंचपिप्पलीविश्व- भेषजम् ॥ २२ ॥ समृद्वीकारसक्षौद्रंवर्षाकालेविरेचनम् ॥

अर्थ—अरंडीके तेलसे दूना त्रिफलाका काढा ॥ २१ ॥ अथवा दूना दूध मिलाके पिलावे तो शीघ्रही जुलाब लगता है ऋतुओंमें रेचन योग्य औषध निशोथ इंद्र- जव पीपली सूंठ ॥ २२ ॥ मनुकादाखोंका रस शहत इन औषधोंको पिलाके वर्षा- कालमें जुलाब दिवावै ॥

त्रिवृद्दुरालभामुस्ताशर्करादिव्यचंदनम् ॥ २३ ॥ द्राक्षांबु- नासयष्टीकंशीतलंचघनात्यये ॥ त्रिवृताचित्रकंपाठाह्यजा- जीसरलावचा ॥ २४ ॥ हेमक्षीरीचहेमंतेचूर्णमुष्णांबुनापिबेत् ॥

अर्थ–शरदऋतुमें निशोत जवासा नागरमोथा मिश्री सफेदचंदन ॥२३॥ दाख मुलहटी इनके क्वाथका जुलाब लेना चाहिये और हेमन्तऋतुमें निशोत चित्रक पाठा जीरा देवदारु वच चोष ॥२४॥ इनका चूर्ण गरम जलके संग पीनेसे जुलाव होई ॥

पिप्पलीनागरंसिंधुश्यामात्रिवृतयासह ॥ २५ ॥ लिहेत्क्षौद्रेणशिशिरेवसंतेचविरेचनम् ॥ त्रिवृताशर्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम् ॥ २६ ॥ अभयामरिचंशुंठीविडंगामलकानिच ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंत्वक्पत्रंमुस्तमेवच ॥ २७ ॥ एतानिसमभागानिदंतीचद्विगुणाभवेत् ॥ त्रिवृदष्टगुणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा ॥ २८ ॥ मधुनामोदकंकृत्वाकर्षमात्रप्रमाणतः ॥ एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंचानुपिबेज्जलम् ॥२९॥ तावद्विरिच्यतेजंतुर्यावदुष्णंनसेवते ॥ पानाहारविहारेषुभवेन्निर्यंत्रणंसदा ॥ १३० ॥

अर्थ–शिशिर और वसंतऋतुमें पीपल सूंठि सेंधानमक भिधारा निशोत ॥ २५ ॥ इनका चूर्ण शहतयुक्त चाटे तो जुलाव लगै और ग्रीष्मऋतुमें निशोतका चूर्ण शक्कर समभाग करि फांके तो जुलाव लगै ॥ २६ ॥ अभयादिक मोदक हरडै मिरच सूंठ वायविडंग आंवला पीपली पीपलामूल तेजपात नागरमोथा इनको समान भाग ले जमालगोटाकी जड तिगुनी लेइ ॥ २७ ॥ और निशोत आठगुना लेवे यहां शक्कर छहगुनी लेइ ॥ २८ ॥ फिर शहत मिला कर्ष अर्थात् चारचार मासेकी गोली बांध लेवे फिर प्रभातकालमें एक गोली खायके ऊपर शीतल जल पीवे ॥ २९ ॥ तव जुलाब लगता है इसपे जबतक गरम जल न पीवे तबतक दस्त लगे रहते है और खानपान विहार इस जुलाव ये यतनसे करे ॥ १३० ॥

विषमज्वरमंदाग्निपांडुकासभगंदरान् ॥ दुर्नामकुष्ठगुल्माशोंगलगंडव्रणोदरान् ॥ ३१ ॥ विदाहप्लीहमेहांश्चयक्ष्माणंनयनामयान् ॥ वातरोगंतथाध्मानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीम् ॥ ३२ ॥ अभयामोदकाह्येतेरसायनवराःस्मृताः ॥ पृष्ठपार्श्वोरुजघनकट्युदररुजंजयेत् ॥ ३३ ॥ सततंशीलनादेषपलितानिविनाशयेत् ॥

अर्थ-यह अभयादिकमोदक विषमज्वर मंदाग्नि पांडुरोग खासी भगंदर ववासीर कुष्ठ अर्शरोग गलगंड भ्रम उदररोग ॥ ३१ ॥ इनका नाश करता है और दाह प्लीहा प्रमेह राजयक्ष्मा नेत्ररोग वातरोग अफारा मूत्रकृच्छ्र पथरी ॥३२॥ इन सब रोगोंका नाश होता है यह अभयादिक मोदक उत्तम रसायण है पीठरोग पसली जांघ पींडी कटि उदर इनके रोगोंका नाश करता है ॥ ३३ ॥ और इस अभयादिकमोदकका निरंतर अभ्यास करनेसे पलित अर्थात् बुढापाके सफेदवालोंका नाश होता है ॥

पीत्वाविरेचनंशीतजलैःसंसिच्यचक्षुषी ॥ ३४ ॥
सुगंधिकिंचिदाघ्रायतांबूलंशीलयेन्नरः ॥

अर्थ-रेचन अच्छे प्रकार होनेका यत्न—इस औषधीको पीके शीतल जलसे नेत्रोंको सींचके पीछे सुगंध आदि फूलोंको सूंघै और पान खाया करे ॥ ३४ ॥ इस योगके करनेसे चित्त स्वस्थ रहता है और मलका वेग अच्छीतरहसे आता है ॥

निर्वातस्थोनवेगांश्चधारयेन्नस्वपेत्तथा ॥ ३५ ॥
शीतांबुनस्पृशेत्क्कापिकोष्णनीरंपिबेन्मुहुः ॥

अर्थ-रेचनसमयकी साधना—वायुको न सेवै मलमूत्रके वेगोंको रोकै नहीं शयन नहीं करै ॥ ३५ ॥ ठंढा जल कभीभी नहीं छूहै वारंवार ज्यों ज्यों दस्त लगे त्यों त्यों गरम जल पीता रहै ॥

बलादौषधपित्तानिवायुर्वांतेयथाव्रजेत् ॥ ३६ ॥ रेचात्तथा मलंपित्तंभेषजंचकफोव्रजेत् ॥ दुर्विरक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धत्वं कुक्षिशूलता ॥ ३७ ॥ पुरीषवातसंगश्चकंडूमंडलगौरवाः ॥ विदाहोऽरुचिराध्मानंभ्रमश्छर्दिश्चजायते ॥ ३८ ॥

अर्थ-जैसे अच्छे प्रकार हुए वमनमें कफ और खाई हुई औषधी पित्त वायु सब दोषमुखसे गिरते हैं ॥ ३६ ॥ तैसेही अच्छी तरह जुलाब लगनेंसे मल पित्त खाई हुई औषध कफ ये सब मलमार्गसे गिरते हैं और अच्छी तरह विरेचन नहीं होवे तो मलका वेग न आवे नाभिके नीचे करडापन हो कुक्षिमें शूल हो ॥ ३७ ॥ मलमें वायु मिलजावे खाजि हो भारीपन हो दाह अरुचि अफारा भ्रम छर्दि ये उपद्रव होते हैं ॥ ३८ ॥

तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्त्वासंस्नेह्यरेचयेत् ॥ तेनास्योपद्रवायां-

तिदीप्ताऽग्नेर्लघुताभवेत् ॥ ३९ ॥ विरेकस्यातियोगेनमूर्च्छा भ्रंशोगुदस्यच ॥ शूलंकफातियोगःस्यान्मांसधावनसंनिभ-म् ॥ १४० ॥ मेदोनिभंजलाभासंरक्तंचापिविरिच्यते ॥ त-स्यशीतांबुभिःसिक्तंशरीरंतंदुलांबुभिः ॥ ४१ ॥ मधुमिश्रै-स्तथाशीतैःकारयेद्वमनंमृदु ॥

अर्थ—जिसकै अच्छी तरह जुलाव न लगा हो उसें रातको आरग्वध आदि पाचन औषध देके घृतआदिस्नेह पिला कोठा चिकना करि पीछे जुलाव देवे तिस्से इसके उपद्रव नाश हो जावेंगे और जठराग्नि दीप्त हो कर शरीर हलका हो जावेगा ॥ ३९ ॥ और ज्यादै जुलाब लगनेंसे मूर्च्छा गुदभ्रंश अर्थात् कांच निकलना पेटमें शूल कफ अधिक गिरना मांसके धोवनसरीखा मल गिरना चरवीसी वा पानी वा रुधिर गिरै ये उपद्रव होते हैं ॥ १४० ॥ अथ अतिविरेकोपद्रवयत्न— तहां शीतल जलसे शरीर पोंछि गुलाब केवरा छिरके वस्त्रसे शरीर पोंछि चावल धोवनोका जल शहतयुक्त करि पीवै ॥ ४१ ॥ अथवा शहतयुक्त औषधी देके हलका वमन करावे इस्से उपद्रव शांत होते हैं ॥

सहकारत्वचःकल्कोदध्नासौवीरकेणवा ॥ ४२ ॥ पिष्टोना-भिप्रलेपेनहंत्यतीसारमुल्बणम् ॥ अजाक्षीरंपिबेद्वापिवैष्कि-रंहारिणंतथा ॥ ४३ ॥ शालिभिःषष्टिकैःस्वल्पंमसूरैर्वापि भोजयेत् ॥ शीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैःकुर्यात्संग्रहणंभिषक् ४४ लाघवंमनसस्तुष्ट्यामनुलोमेगतेऽनिले ॥ सुविरिक्तंनरंज्ञा-त्वापाचनंपाययेन्निशि ॥ ४५ ॥ इंद्रियाणांबलंबुद्धेःप्रसादो वह्निदीप्तता ॥ धातुस्थैर्यंवयस्थैर्यंभवेद्रेचनसेवनात् ॥ ४६ ॥

अर्थ—आंवकी छाल गौका दही वा कांजीमे पीस कल्क बनाकर ॥ ४२ ॥ ना-भिपै लेप करनेंसे जुलाबका वेग बंद होता है यहां सौवीरसंज्ञक कांजी जानना इसकी विधि मध्यमखंडमें कही है ॥ ४३ ॥ अथवा बकरीके दूधको पीवे और चिरियाका मांस वा हिरनका मांस साठी चावलोंका भात वा मसूरी शीतलबंधके द्रव्य इनको स्वल्प भोजन करनेंसे जुलावका वेग बंद होता है ॥ ४४ ॥ अथवा वैद्यजन अनार आदि ठंढे संग्राही भोजन करावे तो वेग बंद होता है और अच्छे

जुलाब लगेमें शरीर हलका हो मन प्रसन्न हो चित्त प्रसन्न रहै वायुका स्वस्थ गमन हो ऐसे लक्षणोंवालेको श्रेष्ठ विरेचन हुएके जानके ॥ ४५ ॥ रातको पाचनकेवास्ते अरंडकी जड सोंठि धनियां इनका क्वाथ देवै रेचन अर्थात् जुलाव लेनेसे इंद्रियोंमें बल बढै बुद्धि प्रसन्न हो जठराग्नि दीप्त हो धातु पुष्ट अवस्था स्थिर होती है ॥ ४६ ॥

प्रवातसेवांशीतांबुस्नेहाभ्यंगमजीर्णताम् ॥ व्यायाममैथुनं चैवनसेवेतविरेचितः ॥ ४७ ॥ शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागूं भोजयेत्कृताम् ॥ जांगलैर्विष्किराणांवारसैःशाल्योदनंहितम् ४८

अर्थ—रेचनपर वर्जितवस्तु—वायुसेवन शीलाजल तेलआदिकी मालिस करना अजीर्ण श्रम मैथुन इनको न सेवै ॥ ४७ ॥ अथ पथ्य—साठी चावल मूंगका यवागू जांगलदेशके जीवोंके मांसका यूष वा लवावटेर तीतर इत्यादि विष्किरसंज्ञक पक्षियोंका मांसका यूष भातकेसंग खावे ॥ ४८ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे रेचनकथनंनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ पंचमोऽध्यायः ।

बस्तिर्द्विधानुवासाख्योनिरूहश्चततःपरम् ॥ बस्तिभिर्दीयते यस्मात्तस्माद्बस्तिरितिस्मृतः ॥ ४९ ॥ यःस्नेहैर्दीयतेसस्या- दनुवासननामकः ॥ कषायक्षीरतैलैर्योनिरूहःसनिगद्यते १५०

अर्थ—अथ बस्तिकर्म—गुदाके भीतर अंडकोशकी जडताई औषधि भरि पिचकारी चढावे उसे बस्तिकर्म कहते है सो बस्ति दो प्रकारकी है अनुवासनबस्ति १ ॥ ४९ ॥ निरूहबस्ति २ ये दो भेद है जिसमें घी तेल आदि चिकनी वस्तु भरिदीजे वह अनुवासनबस्ति कहाती है और काढा दूध तेल मिलाके पिचकारी चढावे वह निरूहबस्ति कहाती है ॥ १५० ॥

तत्रानुवासनाख्योहिबस्तिर्यःसोत्रकथ्यते ॥ पूर्वमेवततोब- स्तिर्निरूहाख्योभविष्यति ॥ ५१ ॥ निरूहादुत्तरंचैवबस्तिः स्यादुत्तराभिधः ॥ अनुवासनभेदैश्चमात्राबस्तिरुदीरितः ॥५२॥

अर्थ-तिनमें पहले अनुवासनवस्ति है उससे पीछे निरूहवस्ती है इसीवास्ते निरूहको उत्तरबस्तिभी कहते है ॥५१॥ अनुवासनके द्रव्यका प्रमाण दो पल अथवा एक पलका है ऐसे पिचकारीके भेद हैं ॥ ५२ ॥

पलद्वयंतस्यमात्रातस्मादर्धापिवाभवेत् ॥ अनुवास्यस्तुरूक्षः स्यात्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिली ॥ ५३ ॥ नानुवास्यस्तुकुष्ठी स्यान्मेहीस्थूलस्तथोदरी ॥ अस्थाप्यानानुवास्याःस्युरजीर्णोन्मादतृड्युताः ॥ ५४ ॥ शोकमूर्च्छारुचिभयश्वासकासक्षयातुराः ॥

अर्थ-पीछे कही अनुवासनवस्तिमें दो पल अर्थात् ८ तोले वा ४ तोले प्रमाण मात्रा देनी अनुवासन योग्य रूपीप्रकृतिवाला वा स्नेहपानरहितको वा अग्नि दीप्त करनेको वा केवल वातरोगीको अवश्य अनुवासनवस्ति करै ॥ ५३ ॥ और कुष्ठी प्रमेहरोगवाला स्थूल उदररोगी ये अनुवासनयोग्य नहीं है और अजीर्णवाला उन्माद तृषा ॥ ५४ ॥ शोक मूर्छा अरुचि भय श्वास खासी क्षयी इनसे पीडितोंको निरूहवस्तिकर्म योग्य नहीं है ॥

नेत्रंकार्यंसुवर्णादिधातुभिर्वृक्षवेणुभिः ॥ ५५ ॥ नलैर्दंतैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते ॥ एकवर्षात्तुषड्वर्षयावन्मानंषडंगुलम् ॥ ५६ ॥ ततोद्वादशकंयावन्मानंस्यादष्टसंयुतम् ॥ ततःपरंद्वादशभिरंगुलैर्नेत्रदीर्घता ॥ ५७ ॥ मुद्गछिद्रंकलापाभंछिद्रंकोलास्थिसन्निभम् ॥ यथासंख्यंभवेन्नेत्रंश्लक्ष्णंगोपुच्छसन्निभम् ॥ ५८ ॥

अर्थ-अथ बस्ति कहे पिचकारी निर्माणविधि—नेत्र कहें जो गुदामें प्रवेशकी जावे वह पिचकारीकी नल सुवर्ण आदि धातुकी ॥ ५५ ॥ वा वांस नड गजदंत मृगसींग वा पन्ना गिलौरी पत्थर आदिकी वनावे नली योग्य अवस्था एक वर्षसे छह वर्षके बालकके ताहीं बस्तिकी नली छह अंगुलकी बनावे और बारह वर्ष ताईंकी आठ अंगुलकी वनावे तिस्से पीछे बारह वर्षसे अधिक उमरवालेकी बारह अंगुलकी नली वनावे ॥ ५६ ॥ नलीके छिद्रका प्रमाण—छह अंगुलकी नलीका छिद्र मूंगके समान करै आठ अंगुलकी नलीका मटरचीणा सरीखा और बारह अंगुल प्रमाणवालीका झारीवेरकी गुठी समान राखै ॥ ५७ ॥ और पिचकारी बहुत

चिकनी वा गौकी पुच्छके सदृश आकारवाली होनी चाहिये और इन सब नलियोंमें नीचेका दूसरा छिद्र छोटी अंगुली समान मध्यांगुलीसमान २ का और ३ तीसरी बारह अंगुलवालीका अंगुष्ठके समान राखे ॥ ५८ ॥

आतुरांगुष्ठमानेनमूलेस्थूलंविधीयते ॥ कनिष्ठिकात्परीणाहमग्रेचगुटिकामुखम् ॥ ५९ ॥ तन्मूलेकर्णिकेद्वेचकार्येभागाच्चतुर्थकात् ॥ योजयेत्तत्रबस्तिंचबंधद्वयविधानतः ॥ १६० ॥ मृगाजसूकरगवांमहिषस्यापिवाभवेत् ॥ मूत्रकोशस्यबस्तिस्तुतदलाभेनचर्मजः ॥ ६१ ॥ कषायरक्तःसुमृदुर्बस्तिःस्निग्धोदृढोहितः ॥

अर्थ–एक ओरको पतली और दूसरे ओर मोटी होनी चाहिये और मोटी ओरकी तर्फके चौथाई भागमें दो छल्ले जडे हों तिसमें हिरन आदिकोंके मूतनेकी थेली चढाइ पूर्वोक्त छल्लोका मध्यभाग थैलीसहित बहुत पुष्टकसै ॥ ५९ ॥ जिसमें थेलीकी औषधी अन्यरास्तेसे न निकसे तब पिचकारी ठीक जानों ॥ १६० ॥ और मृग बकराशूर गौ भैंस इनके मूत्रकी थैलीको इस नलीकै लगावे जो ये न मिलें तो इनके चमडेको कमलपत्रके समान काटि ॥ ६१ ॥ दोनों ओर छील साफ करि थैली समान बनाके नलीकै चढा देवै ॥

व्रणबस्तेस्तुनेत्रंस्याच्छ्लक्ष्णमष्टांगुलोन्मितम् ॥ ६२ ॥
मुद्गच्छिद्रंगृध्रपक्षनलिकापरिणाहिच ॥

अर्थ–व्रणआदिकी पिचकारीका प्रमाण—घाव फोडा आदिकी पिचकारी आठ अंगुल लंबी और मूंगके समान छिद्रवाली करै ॥ ६२ ॥ और गिरद्धकी पक्षसदृश मोठी अतिचिकनी पतली छोटी नासूर व्रणयोग्य है ॥

शरीरोपचयंवर्णबलमारोग्यमायुषः ॥ ६३ ॥ कुरुतेपरिवृद्धिंचबस्तिःसम्यगुपासितः ॥ दिवसांतेवसंतेचस्नेहबस्तिःप्रदीयते ॥ ६४ ॥ ग्रीष्मवर्षाशरत्कालेरात्रौस्यादनुवासनम् ॥

अर्थ–बस्तिके गुण—अच्छे प्रकार बस्तिकर्म होनेंसे शरीरपुष्ट बलकांति बढै आरोग्य रहै आयु बढै ॥ ६३ ॥ अथ बस्तिसेवनकाल—वसंतऋतुमें संध्यासमयमें स्नेहबस्ति कहें अनुवासनबस्ति योग्य है ॥ ६४ ॥ और ग्रीष्मऋतु वर्षाऋतु शरदऋतु इनमें रात्रीसमय अनुवासनबस्ति करे ॥

नचातिस्निग्धमशनंभोजयित्वानुवासयेत् ॥ ६५ ॥
मदंमूर्च्छांचजनयेद्विधास्नेहःप्रयोजितः ॥

अर्थ–रोगीको गरम चिकना भोजन खिलाइ अनुवासनवस्ति करनेसे मद मूर्च्छा उत्पन्न होते हैं ॥ ६५ ॥

रूक्षंभुक्तवतोऽत्यन्नंबलंवर्णंचहीयते ॥
युक्तस्नेहमतोजंतुंभोजयित्वानुवासयेत् ॥ ६६ ॥

अर्थ–रूषेभोजनसे बलक्रांतिकी हानि होती है इसवास्ते इन दोनोंतरह वस्ति-कर्म न करे और रोगीको युक्त स्नेहका भोजन कराके अनुवासनवस्ति देनी चाहिये ॥ ६६ ॥

हीनमात्रावुभौबस्तीनातिकार्यकरौस्मृतौ ॥ अतिमात्रौतथा-नाहक्लमातीसारकारकौ ॥ ६७॥ उत्तमस्यपलैःषड्भिर्मध्य-मस्यपलैस्त्रिभिः ॥ पलाद्यर्धेनहीनस्ययुक्तामात्रानुवासने ६८ शताह्वासैंधवाभ्यांचदेयंस्नेहेचचूर्णकम् ॥ तन्मात्रोत्तममध्यां-त्याःषट्चतुर्द्वयमाषकैः ॥ ६९ ॥

अर्थ–वस्तिकर्ममें न्यूनाधिकमात्रादोष—अनुवासन वा निरूहनवस्तिमें हीन मात्रा देनेसे रोग नहीं जाता और ज्यादै मात्रा देनेसे अफारा ग्लानि अतिसार ये होते हैं ॥ ६७ ॥ बस्तिकी उत्तम मात्रा छह पलकी देवै और मध्यम मात्रा तीन पलकी और डेढ पलकी हीनमात्रा देना ॥ ६८ ॥ और शतावरी सेंधानमक इनका चूर्णको स्नेहमें गेरनेकी मात्रा ऐसे जाने छह मासेकी उत्तम मात्रा चार मा-सेकी मध्यम दो मासेकी हलकी जाननी ॥ ६९ ॥

विरेचनात्सप्तरात्रेगतेजातबलायच ॥
भुक्तान्नायानुवास्यायबस्तिर्देयोऽनुवासनः ॥ १७० ॥

अर्थ–विरेचनपै वस्तिप्रकार—विरेचन कियेको सात दिन व्यतीत हो लेवे तब बल आनेपर भोजन कराइ अनुवासनवस्ति देना योग्य है ॥ १७० ॥

अथानुवास्यंस्वभ्यक्तमुष्णांबुस्वेदितंशनैः ॥ भोजयित्वाय-थाशास्त्रंकृतचंक्रमणंततः ॥ ७१ ॥ उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंयो-जयेत्स्नेहबस्तिना ॥ सुप्तस्यवामपार्श्वेनवामजंघाप्रसारिणः

॥ ७२ ॥ कुंचितापरजंघस्यनेत्रंस्निग्धगुदेन्यसेत् ॥ बध्वाब-
स्तिमुखंसूत्रैर्वामहस्तेनधारयेत् ॥ ७३ ॥ पीडयेद्दक्षिणेनैव
मध्यवेगेनधीरधीः ॥ जृंभाकासक्षवादींश्चबस्तिकालेनकार-
येत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–पिचकारी चढामेंका प्रकार—अनुवासनकर्मसे पहिले तेल लगाइ गरम पानीसे नहवाइ शनै शनै स्वेद दिवाइ शास्त्रमें कहा हुआ भोजन करवाइ ॥ ७१ ॥ कुछ चहल कदमी करवाइ अधोवात मलमूत्र इनकी शंका मिटवाइ करवट पौढाइ दहिना गोडा सिंकोरवामें गोडेको पसारि गुदामें घी लगाके पिचकारीकी नलीको गुदामें लगावे ॥ ७२ ॥ पीछे वैद्यजन पिचकारीमें स्नेहमात्रा भरि तिसके मुखको सूतसे बांध फिर तिसको बायें हाथमें धारण करि धीरेधीरे मलमार्गमें दो अंगुल प्रवेश करै फिर दहिनें हाथसे द्रव्यभरि थैलीमें पिचकारी पीडित करै ॥ ७३ ॥ उसथैलीकै भीतर पिचकारी देनेंके समय खासी जंभाई छीक ये नहीं लेनी चाहिये ॥ ७४ ॥

त्रिंशन्मात्रामितःकालःप्रोक्तोबस्तेस्तुपीडने॥ततःप्राणिहितः
स्नेहउत्तानोवाक्शतंभवेत् ॥ ७५॥ जानुमंडलमावेष्ट्यकुर्या-
च्छोटिकयायुतम् ॥ एकामात्राभवेदेषासर्वत्रैषविनिश्चयः७६
प्रसारितैःसर्वगात्रैर्यथावीर्यंप्रसर्पति ॥ ताडयेत्तलयोरेनंत्री-
न्वारांश्चशनैःशनैः ॥ ७७ ॥ फिजश्चैवंततःश्रोणींशय्यांचै-
वोत्क्षिपेत्ततः ॥ जातेविधानेतुततःकुर्यान्निद्रांयथासुखम्७८
सानिलःसपुरीषश्चस्नेहःप्रत्येतियस्यतु ॥ उपद्रवंविनाशीघ्रं
ससम्यगनुवासितः ॥ ७९ ॥

अर्थ–वस्ति देनेके कालका प्रमाण—रोगीकै पिचकारी चढाइ तीस मात्रा प्रमाणतक रोकै इतनी देरमें स्नेहआदिक अंदर प्रवेश हो जाता है॥७५॥ पीछे सौ मात्रा हो इतनें प्रमाण सीधा सुलावै यहां एक मात्राका यह प्रमाण है कि कटिसें घुंटनेपर्यंत चुटकी बजाता हाथ चला आवे ॥ ७६ ॥ इतनीवारमें एक मात्रा होती है यह सब ग्रंथोंका निश्चय है और वस्तिपीडित करि पीछे रोगीके पैर हाथ आदि सब अंग लंबे फैलायदेवै इस्से सातौं धातु अपने अपने स्थानमें फैल जाती है ॥ ७७ ॥ पीछे हाथोंकी हथेरी पैरोंका तलवा जांघ कटि नितंब इनकै थवकी दे

सहार देवै ॥ ७८ ॥ इस प्रकार सब विधान करि पीछे रोगीको सुखपूर्वक शय्या पे पौढाय निद्रा दिवावै अथ बस्तिके गुण—मलाशयमें स्नेहआदिक पहुंचनेसे जिसकै अधोवात मल इनकरके सहित शीघ्रही स्नेह बाहर निकल आवे और कुछ उपद्रव न हो तो जानिये कि वस्तिनें संपूर्ण गुण किया ॥ ७९ ॥

जीर्णान्नमथसायाह्नेस्नेहेप्रत्यागतेपुनः ॥ लघ्वन्नंभोजयेत्कामंदीप्ताग्निस्तुनरोयदि ॥ १८० ॥ अनुवासितायदेयंस्यादितरेह्निसुखोदकम् ॥ धान्यशुंठीकषायोवास्नेहव्यापत्तिनाशनम् ॥ ८१ ॥ अनेनविधिनाषड्वासप्तचाष्टौनवापिवा ॥ विधेयाबस्तयस्तेषामंतेचैवनिरूहणम् ॥ ८२ ॥

अर्थ—अनुवासनवस्ति करे पीछे स्नेहऔषधी मलमार्गसे निकल जानेपर जो यदि रोगीकी जठराग्नि दीप्त होवे तो संध्यासमयमें अति गलाइ थोडासा हलका भोजन देवै ॥ १८० ॥ और दुसरेदिन सुखसे सुहाता हुआ गरम जल वा सूंठ धनिया इनका क्वाथ देवे तिस्से बस्तिमें जोजो स्नेहादिक प्रवेश हुए हो उनके विकारका नाश होता है ॥८१॥ इसी पूर्वप्रकारसे पिचकारी वनाइ सात वा आठ तथा नव दिन्तक देवै फिर अंतमें निरूहण पिचकारी देना योग्य है ॥ ८२ ॥

दत्तस्तुप्रथमोबस्तिःस्नेहयेद्बस्तिवंक्षणौः ॥
सम्यग्दत्तोद्वितीयस्तुमूर्धस्थमनिलंजयेत् ॥ ८३ ॥

अर्थ—वस्तिवेगका गुण—पहलेवार वस्तिवेग होनेसे आंतोंके द्वारा शरीरमें चिकनाई आती है अर्थात् धातु वढती है और दूसरेसे मस्तककी वातका नाश होता है ॥ ८३ ॥

बलंवर्णंचजनयेत्तृतीयस्तुप्रयोजितः ॥ चतुर्थपंचमौदत्तौस्नेहयेतांरसासृजी ॥ ८४ ॥ षष्ठोमांसंस्नेहयतिसप्तमोमेदएव च ॥ अष्टमोनवमश्चापिमज्जानंचयथाक्रमम् ॥ ८५ ॥ एवं शुक्रगतान्दोषान्द्विगुणःसाधुसाधयेत् ॥ अष्टादशाष्टादशकान्बस्तीनांयोनिषेवते ॥ ८६ ॥ सकुंजरबलोऽप्यश्वंजयेत्तुल्योऽमरप्रभः ॥ रूक्षायबहुवातायस्नेहबस्तिंदिनेदिने ॥ ८७ ॥ दद्याद्वैद्यस्तथान्येषामन्याबाधामपाहरेत् ॥ स्नेहोऽल्पमात्रो

रूक्षाणांदीर्घकालमनत्ययः ॥ ८८ ॥ तथानिरूहःस्निग्धाना-
मल्पमात्रःप्रशस्यते ॥

अर्थ–तीसरीसे शरीरमें बल वढता है वर्ण सुंदर होता है और चौथी पांचवीसे रस तथा रक्त वढता है ॥ ८४ ॥ छठी सातवीसे मांस और मेद वढता है और आठवी नवमी वस्ति देनेंसे मज्जा शुक्र ये चिकनें होते हैं ॥ ८५ ॥ इसप्रकारसे नव दुगुनी अठारह वेग देनेंसे शुक्रधातुके विकार दूर होते हैं और जो छत्तीस-वार बस्तिको सेवन करता है तिसकै हाथी घोडेके समान बल होता है ॥ ८६ ॥ और देवताके समान क्रांति होती है और रूषा पुरुषकेवास्ते तथा वातका वि-कारवालेके वास्ते दिन दिन प्रति चतुर वैद्य स्नेहद्रव्यकी मात्रावालीं वस्ति देवै ॥ ८७ ॥ और अन्य सब विकारोंमें यथायोग्य देखके वस्तिकर्म करै और रूषे मनुष्योंको तथा जो रोग बहुत दिनका हो उन मनुष्योंको दिनदिनप्रति ह-लकी हलकी निरूहणवस्ति देवै ॥ ८८ ॥ स्निग्ध मनुष्यको निरूहवस्ति थोडी देनी ॥.

अथवायस्यतत्कालंस्नेहोनिर्यातिकेवलः ॥ ८९ ॥
तस्यान्योऽन्यतरोदेयोनहिस्निग्धस्यतिष्ठति ॥

अर्थ–अथवा जिस मनुष्यकै गुदामें दिया स्नेह बाहिर निकस आवे ॥ ८९ ॥ तिस मनुष्यकै निरूहणवस्ति करै ऐसेही जितनें वेग दे सबके अंतमें निरूहण-वस्ति देता रहै ॥

अशुद्धस्यमलोन्मिश्रःस्नेहोनैतियदापुनः ॥ १९० ॥ तदा
शैथिल्यमाध्मानंशूलंश्वासश्चजायते ॥ पक्काशयेगुरुत्वंचतत्र
दद्यान्निरूहणम् ॥ ९१ ॥ तीक्ष्णंतीक्ष्णौषधियुताफलवर्ति-
र्हितातथा ॥ यथानुलोमनंवायुर्मलंस्नेहश्चजायते ॥ ९२ ॥
तथाविरेचनंदद्यात्तीक्ष्णंनस्यंचशस्यते ॥

अर्थ–जो विरेचन वमन कर शुद्ध नहीं किया और बस्तिकर्म्म किया हो तब स्नेहके रुकनेसे ॥ १९० ॥ अंगोंका शिथिलपना पेटका फुलना शूल श्वास वा प-क्काशयमें भारीपन ये उपजते हैं तहां तीक्ष्ण निरूहवस्ति देना ॥ ९१ ॥ तथा तीक्ष्ण औषधीसे युक्त फलवर्ति हित है जिस्से वायु अधोगामी होकै मलयुक्तस्नेहको गिरावै ॥ ९२ ॥ तथा तीक्ष्ण जुलाव वा तीक्ष्ण नस्य देना श्रेष्ठ है ॥

यस्यनोपद्रवंकुर्यात्स्नेहबस्तिरनिःसृतः ॥ ९३ ॥
सर्वोऽल्पोवावृतोरौक्ष्यादुपेक्ष्यःसविजानता ॥

अर्थ—जिसकै स्नेहवस्ति रुकनेसे उपद्रव नहीं होवै और स्नेहआदि भीतर रूषाकोठाके कारणसे अटक रहै ॥ ९३ ॥ और शूलआदि उपद्रव नहीं करै तो उसको बहुत कालतक नहीं रहने देना ॥

अनायातंत्वहोरात्रेस्नेहंसंशोधनैर्हरेत् ॥ ९४ ॥
स्नेहबस्तावनायातेनान्यःस्नेहोविधीयते ॥

अर्थ—जो पिचकारीसे दिया स्नेह न गिरै तो दुसरायकै फिर पिचकारी दे स्नेह गिरावै ॥ ९४ ॥ स्नेह रात्रिभर रहै तो सवेरे जुलाव दे गिराना ऐसे दोनों प्रकारसे स्नेह गिराना ॥

गुडूच्येरंडपूतीकभार्ङ्गीवृषकरोहिषम् ॥ ९५ ॥ शतावरीसह-चरंकाकनासापलोन्मितम् ॥ यवमाषातसीकोलकुलित्था-न्प्रसृतोन्मितान् ॥ ९६ ॥ चतुर्द्रोणांभसापक्त्वाद्रोणशेषेण तेनच ॥ पचेत्तैलाढकेपेष्यैर्जीवनीयैःपलोन्मितैः ॥ ९७ ॥
अनुवासनमेतद्धिसर्ववातविकारनुत् ॥

अर्थ—गिलोय अरंडकी जड करंजुआकी छाल भारंगीकी छाल वासा रोहिषतृण ॥ ९५ ॥ शतावरी कुरंटा कौआढोढी ये एकएक पलभर और जव उडद अलसी वेरकी गुठली कुलत्थी ये दोदो पल ॥ ९६ ॥ इन सबको चार द्रोणभर पानीमें पकावै जव एक द्रोणभर बाकी रहै तब तेल २५६ तोले जीवनीय गणके ओषधोंका कल्क एकएक पल ॥ ९७ ॥ यह अनुवासन सबप्रकारके वातविकारोंको नाश करता है ॥

षट्सप्ततिव्यापदस्तुजायंतेबस्तिकर्मणः ॥ ९८ ॥
दूषितात्समुदायेनताश्चिकित्स्यास्तुसुश्रुतात् ॥

अर्थ—बस्तिकर्म उलटा होनेसे छिहंतर रोग उपजते है ॥ ९८ ॥ तिन्होंकी चिकित्सा सुश्रुतसंहिताग्रंथ देखकर करनी ॥

पानाहारविहारश्चपरिहारश्चकृत्स्नशः ॥
स्नेहपानसमाःकार्यानात्रकार्याविचारणा ॥ १९९ ॥

अर्थ–पान आहार विहार परिहार ये सब स्नेहपानके समान करने इसमें विचार नहीं करना ॥ १९९ ॥

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे स्नेहबस्तिविधिर्नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः ।

निरूहबस्तिर्बहुधाभिद्यतेकारणांतरैः ॥
तैरेवतस्यनामानिकृतानिमुनिपुंगवैः ॥ २०० ॥

अर्थ–निरूहबस्ति कारणोंके भेदोंकरकै अनेक प्रकारका कहा है तिनकारणोंसे तिसके नाम मुनिजनोंनें करे है जैसे उत्क्लेशनबस्ति १ दोषहरवस्ति २ इत्यादि ॥ २०० ॥

निरूहस्यापरंनामप्रोक्तमास्थापनंबुधैः ॥
स्वस्थानस्थापनाद्दोषधातूनांस्थापनंमतम् ॥ १ ॥

अर्थ–निरूहबस्तिका दूसरा नाम आस्थापनवस्ति कहा है दोष वा रस आदि धातुओंको अपने स्थानमें स्थापन करनेसे स्थापन माना है ॥ १ ॥

निरूहस्यप्रमाणंतुप्रस्थःपादोत्तरंमतम् ॥
मध्यमंप्रस्थमुद्दिष्टंहीनस्यकुडवास्त्रयः ॥ २ ॥

अर्थ–निरूहवस्ति देनेमें काढा आदिका प्रमाण ८० तोलेभर उत्तम है ६४ तोलेभर मध्मम है ४८ तोलेभर हीन है ॥ २ ॥

अतिस्निग्धोत्क्लिष्टदोषौक्षतोरस्कःकृशस्तथा ॥ आध्मानच्छर्दिहिक्कार्शःकासश्वासप्रपीडितः॥३॥गुदशोफातिसारार्तोविषूचीकुष्ठसंयुतः ॥ गर्भिणीमधुमेहीचनास्थाप्यश्चजलोदरी॥४॥

अर्थ–असंत स्निग्ध जो मनुष्य जिसकै ऊर्ध्वगामी दोष हो छातीके फटनेसे पीडित कृश और अफारा छर्दि हिचकी ववासीर खासी श्वास इन्होंसे पीडित ॥ ३ ॥ गुदामें शोजा अतिसार इनसे पीडित है जो और कुष्ठसे संयुत गर्भिणी मधुममेही जलोदरी इनको निरूहवस्ति नहीं देना ॥ ४ ॥

वातव्याधावुदावर्तेवातासृग्विषमज्वरे ॥ मूर्च्छातृष्णोदराना-

हमूत्रकृच्छ्राश्मरीषुच ॥ ५ ॥ वृद्धासृग्दरमंदाग्निप्रमेहेषुनि-
रूहणम् ॥ शूलेऽम्लपित्तेहृद्रोगेयोजयेद्विधिवद्बुधः ॥ ६ ॥

अर्थ–वातरोग उदावर्त वातरक्त विषमज्वर मूर्च्छा तृषा उदररोग अफारा मू-
त्रकृच्छ्र पथरी ॥ ५ ॥ बहुतदिनोंका प्रदररोग मंदाग्नि प्रमेह शूल अम्लपित्त हृ-
द्रोग इन्होंमें विधिपूर्वक निरूहबस्तिको योजित करै ॥ ६ ॥

उत्सृष्टानिलविण्मूत्रंस्निग्धंस्विन्नमभोजितम् ॥ मध्याह्नेगृहम-
ध्येचयथायोग्यंनिरूहयेत् ॥७॥ स्नेहबस्तिविधानेनबुधःकुर्या-
न्निरूहणम् ॥ जातेनिरूहेचततोभवेदुत्कटकासनः ॥ ८ ॥
तिष्ठेन्मुहूर्तमात्रंचनिरूहगमनेच्छया ॥ अनायातंमुहूर्तेतुनि-
रूहंशोधनैर्हरेत् ॥ ९ ॥

अर्थ–जिसने मलमूत्रआदिका त्याग किया हो जो स्निग्ध हो जिसकै स्वेद-
कर्म्म होचुका हो जिसनें भोजन नहीं किया हो ऐसे मनुष्यको मध्यान्हविषै घरके
मध्यमें यथायोग्य निरूहवस्ति देवै ॥ ७ ॥ स्नेहबस्तिके विधानसे वैद्य निरूहणव-
स्तिको देवै जब निरूहकर्म्म होचुके तव पीछे उकड होकै बैठे ॥ ८ ॥ निरूह बा-
हिर आनेकी इच्छा करकै दोदो घडीपर्यंत स्थित रहै जो निरूह बाहिर नहीं आवै
तो निरूहको शोधनकर्म्मसे बाहिर निकासै ॥ ९ ॥

निरूहैरेवमतिमान्क्षारमूत्राम्लसैंधवैः ॥

अर्थ–निरूहगुदासे बाहिर नहीं आवै तो जवाखार गोमूत्र नींबूका रस सेंधा-
नमक इन्होंसे फिर निरूह देनेसे बाहिर आवै ॥

यस्यक्रमेणगच्छंतिविट्पित्तकफवायवः ॥ २१० ॥
लाघवंचोपजायेतसुनिरूहंतमादिशेत् ॥

अर्थ–जिसकै क्रमकरकै विष्ठा पित्त कफ वायु ये क्रमकरकै गुदासे बाहिर नि-
कसै ॥ २१० ॥ और शरीर हलका होजावै तब निरूह आच्छा हुआ जानना ॥

यस्यस्याद्बस्तिरल्पाल्पवेगोहीनमलानिलः ॥ ११ ॥
मूत्रार्तिजाड्यारुचिमान्दुर्निरूहंतमादिशेत् ॥

अर्थ–जिसकै निरूहवस्तिके बाहिर आनेका वेग अल्प हो अधोवायु और
मल बाहिर आवै नहीं ॥ ११ ॥ मूत्रमें पीडा शरीरका जडपना अरुचि ये होवै
तब निरूह अच्छा नहीं हुआ जानना ॥

विविक्ततामनस्तुष्टिःस्निग्धताव्याधिनिग्रहः ॥ १२ ॥ आ-
स्थापनस्नेहबस्त्योःसम्यग्दानेतुलक्षणम् ॥ अनेनविधिनायुं-
ज्यान्निरूहंबस्तिदानवित् ॥ १३ ॥

अर्थ–मनका एकत्र रहना और मनका संतोष अंगोंका स्निग्धपना रोगका नाश ॥ १२ ॥ ये लक्षण होवै तो निरूह वा स्नेहबस्ति अच्छी हुई जाननी वस्ति देनेको जाननेवाला वैद्य इस विधिसे निरूहको युक्त करै ॥ १३ ॥

द्वितीयंवातृतीयंवाचतुर्थंवायथोचितम् ॥ सस्नेहएकःपवने
पित्तेद्वौपयसासह ॥ १४ ॥ कषायकटुरूक्षाद्याःकफेकोष्णा-
स्त्रयोमताः॥पित्तश्लेष्मानिलाविष्टंक्षीरयूषरसैःक्रमात्॥१५॥
निरूहंयोजयित्वाचततस्तदनुवासयेत् ॥

अर्थ–निरूहबस्ति दोवार तीनवार अथवा चारवार जैसा दोष हो तिसके अनुसार देना वातरोगमें स्नेहयुक्त निरूहबस्ति एकवार देना पित्तरोगमें दूधसेयुक्त निरूहबस्ति दोवार देना॥१४॥ कफरोगमें कषाय कटु रूक्ष इन आदिकों एकत्र कर कछुक गरम कर निरूहबस्ति तीनवार देना पित्त कफ वायु इन्होंसे मनुष्य पीडित हो तो दूध यूष वा मांसका रस इन्होंकरकै क्रमसे गुदामें बस्ति देनी ॥ १५ ॥ ऐसे निरूह देकै पीछे अनुवासन देना ॥

सुकुमारस्यवृद्धस्यबालस्यचमृदुर्हितः ॥ १६ ॥
बस्तिस्तीक्ष्णप्रयुक्तस्तुतेषांहन्याद्बलायुषी ॥

अर्थ–सुकुमार वृद्ध बालक इन्होंकै कोमलबस्ति देवै ॥ १६ ॥ इन्होंकै दिया हुआ तीक्ष्णबस्ति बल आयुको हरता है ॥

दद्यादुत्क्लेशनंपूर्वंमध्येदोषहरंततः ॥ १७ ॥
पश्चात्संशमनीयंचदद्याद्बस्तिंविचक्षणः ॥

अर्थ–प्रथम उत्क्लेशनवस्तिको देवै मध्यमें दोषहर वस्तिको देवै ॥ १७ ॥ पीछे वैद्य संशमनीयबस्तिकों देवै ॥

एरंडबीजंमधुकंपिप्पलीसैंधवंवचा ॥ १८ ॥
हपुषाफलकल्कश्चबस्तिरुत्क्लेशनःस्मृतः ॥

अर्थ–अरंडके बीज महुआ पीपल सैंधानमक वच ॥ १८ ॥ हाऊवेर मैनफल इन्होंका कल्क देना यह उत्क्लेशनबस्ति कही है ॥

शताह्वामधुकंबिल्वंकौटजंफलमेवच ॥ १९ ॥
सकांजिकःसगोमूत्रोबस्तिर्दोषहरःस्मृतः ॥

अर्थ-सौंफ मुलहटी वेलगिरी इंद्रजव ये चार औषध बराबर भाग ले ॥ १९ ॥ कांजीमें पीस गोमूत्रसे मिलादिया बस्ति दोषहरनेवाला कहाता है ॥

शोधनद्रव्यनिक्काथस्तत्कल्कैःस्नेहसैंधवैः ॥ २२० ॥
युक्त्याखजेनमथिताबस्तयःशोधनाःस्मृताः ॥

अर्थ-निशोत आदि शोधन द्रव्योंका काढा वनाकर तिसमें ओषधोंका कल्क वा स्नेह सैंधानमक मिला ॥ २२० ॥ युक्तिसे रई करकै मथित कर दोषोंके शोधनविषै वस्ति देना ॥

प्रियंगुर्मधुकोमुस्तातथैवचरसांजनम् ॥ २१ ॥
सक्षीरःशस्यतेबस्तिर्दोषाणांशमनेस्मृतः ॥

अर्थ-मकरामूल महुआ नागरमोथा रसोत ॥ २१ ॥ ये ओषध वरावर भाग ले दूधमें वारीक पीस दोषशमन होनेविषै वस्ति देना ॥

त्रिफलाक्काथगोमूत्रक्षौद्रक्षारसमायुताः ॥ २२ ॥
ऊषकादिप्रतीवापैर्बस्तयोलेखनाःस्मृताः ॥

अर्थ-त्रिफलाका काढा कर तिसमें गोमूत्र शहत जवाखार इन्होंको मिला ॥ २२ ॥ और ऊषकादि गणके ओषधोंका चूरण मिला लेखन वस्ति देना ॥

बृंहणद्रव्यनिक्काथःकल्कैर्मधुरकैर्युतः ॥ २३ ॥
सर्पिर्मांसरसोपेताबस्तयोबृंहणामताः ॥

अर्थ-मुसली गोखरू आदि जो धातुको वढानेवाले द्रव्य हैं तिन्होंका काढा कर तिसमें महुआ दाख अनार इनआदि मधुर द्रव्योंका कल्क ॥ २३ ॥ घृतमांसका रस ये मिलाकै बृंहणवस्ति देना ॥

बदर्यैरावतीशेलुशाल्मलीधन्वनागराः ॥ २४ ॥ क्षीरसिद्धाः क्षौद्रयुक्तानाम्नापिच्छिलसंज्ञिताः ॥ अजोरभ्रैणरुधिरैर्युक्ता देयाविचक्षणैः ॥ २५ ॥ मात्रापिच्छिलबस्तीनांपलैर्द्वादशभिर्मता ॥

अर्थ-वेरकी छाल नारंगी भोंकरीके पत्ते संभर धमासा सोंठ ॥ २४ ॥ इन्होंको

दूधमें सिद्ध करै और शहतसे संयुक्त करै तिसमें बकरा मेंढा हिरण इन्होंके रक्तको मिलावै तिसको पिच्छिलबस्ति कहते है ॥ २५ ॥ पिच्छिल बस्तियोंकी मात्रा आठतालीस तोलेकी मानी है ॥

दत्वादौसैंधवस्याक्षंमधुनःप्रसृतिद्वयम् ॥ २६ ॥ विनिर्मथ्य ततोदद्यात्स्नेहस्यप्रसृतित्रयम् ॥ एकीभूतेततःस्नेहेकल्कस्य प्रसृतिंक्षिपेत् ॥ २७ ॥ संमूर्च्छितेकषायेतुचतुःप्रसृतिसंमि-तम् ॥ क्षिप्त्वाविमथ्यदद्याच्चनिरूहंकुशलोभिषक् ॥ २८ ॥ वातेचतुःपलंक्षौद्रंदद्यात्स्नेहस्यषट्पलम् ॥ पित्तेचतुःपलंक्षौ-द्रंस्नेहस्यचपलत्रयम् ॥ २९ ॥ कफेषट्पलिकंक्षौद्रंस्नेहस्यैव चतुःपलम् ॥

अर्थ–प्रथम सैंधानमक एक तोला शहत सोलह तोले ॥ २६ ॥ इन्होंको मथकर पीछे स्नेह चौवीस तोले मिलाकै पीछे तिसमें कल्कके जो ओषध है वे आठ तोले-भर मिलाकै ॥ २७ ॥ अथवा मूर्च्छित किये काढेमें बत्तीस तोलेभर मिलाकै मथ कुशल वैद्य निरूहको देवै ॥ २८ ॥ वातके रोगमें सोलह तोलेभर शहत और चौवीस तोलेभर स्नेह देना पित्तके रोगमें सोलह तोलेभर शहत और बारह तोले-भर स्नेह देना ॥ २९ ॥ कफके रोगमें चौवीस तोलेभर शहत और सोलह तोले-भर स्नेह देना ॥

एरंडक्काथतुल्यांशंमधुतैलंपलाष्टकम् ॥ २३० ॥ शतपुष्पाप-लार्धेनसैंधवार्धेनसंयुतम् ॥ मधुतैलकसंज्ञोयंबस्तिःखजवि-लोडितः ॥ ३१ ॥ मेदोगुल्मकृमिप्लीहमलोदावर्तनाशनः ॥ बलवर्णकरश्चैववृष्योबृंहणदीपनः ॥ ३२ ॥

अर्थ–अरंडकी जडका काढा बत्तीस तोले शहत और तेल चारचार पल॥२३०॥ सोंप और सैंधानमक दोदो तोले इनको मिला रईसे मथै यह मधुतैलकसंज्ञक बस्ति है ॥ ३१ ॥ मेद गुल्म कृमि तिल्ली मल उदावर्त इन्होंको नाश करता है बल और वर्णको करता है वीर्यको बढाता है धातुको पुष्ट करै है दीपन है ॥ ३२ ॥

क्षौद्राज्यक्षीरतैलानांप्रसृतिःप्रसृतिर्भवेत् ॥
हपुषासैंधवाक्षांशोबस्तिःस्याद्दीपनःपरः ॥ ३३ ॥

अर्थ–शहत घृत दूध ये आठआठ तोले हाऊवेर और सेंधानमक एकएक तोले इन्होंको मिला देवै यह दीपनवस्ति है ॥ ३३ ॥

एरंडमूलनिःक्काथोमधुतैलंससैंधवम् ॥
एषयुक्तरथोबस्तिःसवचापिप्पलीफलः ॥ ३४ ॥

अर्थ–अरंडकी जडका काढा कर तिसमें शहत तेल और सेंधानमक वच पीपल मैनफल इन सबको मिला देवै यह युक्तरथबस्ति है ॥ ३४ ॥

पंचमूलस्यनिःक्काथस्तैलंमागधिकामधु ॥
ससैंधवःसमधुकःसिद्धबस्तिरितिस्मृतः ॥ ३५ ॥

अर्थ–बृहत् पंचमूलका काढा कर तिसमें तेल पीपल शहत सेंधानमक मुलहटी इन्होंको मिला देवै यह सिद्धबस्ति कहा है ॥ ३५ ॥

स्नानमुष्णोदकैःकुर्याद्दिवास्वप्नमजीर्णताम् ॥
वर्जयेदपरंसर्वमाचरेत्स्नेहबस्तिवत् ॥ ३३६ ॥

अर्थ–गरमपानीसे स्नान करै दिनका सोना अजीर्ण इनको वर्जै और सब स्नेहबस्तिकी तरह आचरण करै ॥ ३३६ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे निरूहणबस्तिविधिर्नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः ।

अतःपरंप्रवक्ष्यामिबस्तिमुत्तरसंज्ञितम् ॥ द्वादशांगुलकंनेत्रं मध्येचकृतकर्णिकम् ॥ ३७ ॥ मालतीपुष्पवृंताभंछिद्रंसर्षपनिर्गमम् ॥

अर्थ–इसके अनंतर उत्तरबस्ति कहते है बारह अंगुल प्रमाण नलीहो तिस नलीका मध्यभाग कमलका पताकी कर्णिकासरीखा हो ॥ ३७ ॥ मालतीका फूलके समान गोल हो और सिरसमका दानाके समान छिद्रवाला हो ॥

पंचविंशतिवर्षाणामधोमात्राद्विकार्षिकी ॥ ३८ ॥
तदूर्ध्वंपलमानंचस्नेहस्योक्ताविचक्षणैः ॥

अर्थ-पच्चीसवर्षका मनुष्य हो तबपर्यंत स्नेहकी मात्रा दो तोलेकी है ॥ ३८ ॥ तिस्से उपरंत चार तोलेकी मात्रा वैद्योंनें कही है ॥

अथास्थापनशुद्धस्यतृप्तस्यस्नानभोजनैः ॥ ३९ ॥ स्थितस्य जानुमात्रेणपीठेत्विष्टशलाकया ॥ स्निग्धयामेढ्रमार्गेचततो-नेत्रंनियोजयत् ॥ २४० ॥ शनैःशनैर्घृताभ्यक्तंमेढ्ररंध्रेंऽगुला-निषट् ॥ ततोऽवपीडयेद्बस्तिंशनैर्नेत्रंचनिर्हरेत् ॥ ४१ ॥ त-तःप्रत्यागतेस्नेहेस्नेहबस्तिक्रमोहितः ॥

अर्थ-निरूहणवस्तिसे शुद्ध किया स्नान और भोजनसे तृप्त किया ॥ ३९ ॥ गोडाके आश्रय आसनपर स्थित हुआ ऐसे मनुष्यकै यथायोग्य चिकनी शलाई देवै पीछे नलीको लिंगमें युक्त करै ॥ २४० ॥ नलीके घृत चुपड लिंगके छिद्रमें छः अंगुल चढावै पीछे हौलैंहौलैं वस्तिको अब पीडित करै नलीको बाहिर नि-कासै ॥ ४१ ॥ पीछे स्नेह बाहिर आचुकै तब स्नेहवस्तिका क्रम हित है ॥

स्त्रीणांकनिष्ठिकास्थूलंनेत्रंकुर्याद्दशांगुलम् ॥ ४२ ॥ मुद्गप्र-वेशंयोज्यंचयोन्यंतश्चतुरंगुलम् ॥ द्व्यंगुलंमूत्रमार्गेचसूक्ष्मंने-त्रंनियोजयेत् ॥ ४३ ॥

अर्थ-स्त्रियोंकेवास्तै वस्ति अर्थात् पिचकारीकी नली हाथकी अंगुलीकै स-मान मोटी और दशअंगुल प्रमाणलंबी ॥ ४२ ॥ तिसमें छिद्र मूंगके दानेका प्र-वेश होसकै ऐसा नलीको योनिकेभीतर चार अंगुल प्रवेश करना स्त्रियोंके मूत्र-मार्गमें बारीक नली दो अंगुल प्रमाणयुक्त करनी ॥ ४३ ॥

मूत्रकृच्छ्रविकारेषुबालानांत्वेकमंगुलम् ॥
शनैर्निष्कंपमाधेयंसूक्ष्मनेत्रंविचक्षणैः ॥ ४४ ॥

अर्थ-बालकोंके मूत्रकृच्छ्रविकारोमें बारीक नली जैसे नहीं कंपित होवै तैसे हौलैहौलै देनी ॥ ४४ ॥

योनिमार्गेषुनारीणांस्नेहमात्राद्विपालिकी ॥ मूत्रमार्गेपलो-न्मानाबालानांचद्विकार्षिकी ॥ ४५ ॥ उत्तानायैस्त्रियेदद्या-दूर्ध्वजान्वेविचक्षणः ॥ अप्रत्यागच्छतिभिषग्बस्तावुत्तरसं-ज्ञके ॥ ४६ ॥

अर्थ–स्त्रियोंके योनिमार्गमें बस्ति देनेविषै स्नेहका प्रमाण आठ तोले और मूत्रमार्गमें चार तोले बालकोंकै दोदो तोलेभर ॥ ४५ ॥ ऊपरको गोडोंवाली और वैद्य सिधी हुई ऐसी स्त्रीके गुदामें बस्ति देवै इस उत्तरसंज्ञकबस्तिमें स्नेह बाहिर नहीं निकसै तो ॥ ४६ ॥

भूयोबस्तिंनिदध्याच्चसंयुक्तैःशोधनैर्गणैः ॥ फलवर्त्तिंनिदध्याद्वायोनिमार्गेदृढांभिषक् ॥ ४७ ॥ सूत्रैर्विनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुताम् ॥ दह्यमानेतथाबस्तौदद्याद्बस्तिंविचक्षणः ॥ ४८ ॥ क्षीरवृक्षकषायेणपयसाशीतलेनच ॥ बस्तिःशुक्ररुजःपुंसांस्त्रीणामार्तवजारुजः ॥ ४९ ॥ हन्यादुत्तरबस्तिस्तुनोचितोमेहिनांक्वचित् ॥

अर्थ–शोधनगणके ओषधोंसे संयुक्त कर फिर बस्ति देवै अथवा वैद्य योनिमार्गमें दृढरूप फलवर्तिको देवै ॥ ४७ ॥ अथवा सूतसे बनी हुई और चिकनी और शोधन द्रव्यसे संयुत ऐसे बत्तीको चढावै बस्तिस्थानमें दाह लगै तो वैद्य ॥ ४८ ॥ दूधवाला वृक्षके काढेसे अथवा शीतल दूधसे बस्ति देनी यह बस्ति पुरुषोंकै वीर्यकी पीडाको और स्त्रियोंकै आर्तवकी पीडाकों नाश करती है ॥४९॥ प्रमेह रोगियोंको कहींभी उत्तरबस्ति योग्य नहीं है ॥

सम्यग्दत्तस्यलिंगानिव्यापदःक्रमएवच ॥ २५० ॥
बस्तेरुत्तरसंज्ञस्यशमनंस्नेहबस्तिना ॥

अर्थ–उत्तरसंज्ञक बस्ति स्नेहबस्तिकर उत्तमप्रकारसे दिया जावै तिसके लक्षण और क्रम ॥ २५० ॥ वीर्य धातुसंबंधी जो प्रमेह आदि पीडा वह दूर होती है ॥

घृताभ्यक्तेगुदेक्षेप्याश्लक्ष्णास्वांगुष्ठसंनिभा ॥
मलप्रवर्तिनीवर्तिःफलवर्तिश्चसास्मृता ॥ ५१ ॥

अर्थ–गुदाकों घृतसे चुपड रोगीका अंगुठाप्रमाण और करडी तथा सरल बत्तीपर ऐसी अरंडके बीज आदिका लेप कर तिसको गुदामें चढावै वह मलकी प्रर्वतकरि फलवर्ति कहाती है ॥ ५१ ॥

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे उत्तरबस्तिर्नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथाष्टमोऽध्यायः ।

नस्यंतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधम् ॥
नावनंनस्यकर्मेतितस्यनामद्वयंमतम् ॥ ५२ ॥

अर्थ—जो औषध नाकसे ग्रहण करि जावै तिसको नस्य कहते है तिसके नावन वा नस्यकर्म ये दो नाम है ॥ ५२ ॥

नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तोरेचनंस्नेहनंतथा ॥
रेचनंकर्षणंप्रोक्तंस्नेहनंबृंहणंमतम् ॥ ५३ ॥

अर्थ—नस्यका भेद दो प्रकारका हैं एक रेचन और एक स्नेहन तिन्होंके मध्यमें जो नस्य रेचन है वह वातआदि दोषोंको दूर करता है जो स्नेहन है वह धातुको वढाता है ॥ ५३ ॥

कफपित्तानिलध्वंसेपूर्वमध्यापराह्णके ॥
दिनस्यगृह्यतेनस्यंरात्रावप्युत्कटेगदे ॥ ५४ ॥

अर्थ—कफका नाशमें ओषध प्रातःकाल देना पित्तके नाशमें दुपहरा देना वायुका नाशमें सायंकाल देना रोगका वहुत वल हो तो नाकमें ओषध रात्रिविषैं देना ॥ ५४ ॥

नस्यंत्यजेद्भोजनांतेदुर्दिनेचापतर्पणे ॥ तथानवप्रतिश्यायी गर्भिणीगरदूषितः ॥ ५५ ॥ अजीर्णीदत्तबस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः ॥ क्रुद्धःशोकाभिभूतश्चतृषार्तोवृद्धबालकौ ॥५६॥ वेगावरोधीस्नातश्चस्नातुकामश्चवर्जयेत् ॥

अर्थ—भोजन करनेके पीछे मेघ आदिसे युक्त हुये दुर्दिनमें लंघनमें नयाजुखामवाला गर्भिणी कृत्रिमविषसे दूषित ॥ ५५ ॥ अजीर्णवाला वस्तिकर्म किये हुये स्नेह पानी आसव इनको पीये हुये क्रोधी शोकी तृषासे पीडित वृद्ध वालक ॥ ५६ ॥ मूत्रआदि वेगको रोकनेवाला स्नान किये हुये स्नानकी कामनावाला ऐसे मनुष्य नस्यको नहीं लेवै ॥

अष्टवर्षस्यबालस्यनस्यकर्मसमाचरेत् ॥ ५७ ॥
अशीतिवर्षादूर्ध्वंचनावनंनैवदीयते ॥

अर्थ–आठवर्षके बालकको नस्यकर्म देवै ॥ ५७ ॥ अस्सीवर्षसे उपरंत नस्यकर्म नहीं देना ॥

अथवैरेचनंनस्यंग्राह्यंतैलैःसुतीक्ष्णकैः ॥ ५८ ॥
तीक्ष्णभेषजसिद्धैर्वास्नेहैःक्काथैरसैस्तथा ॥

अर्थ–वच सरसों राई आदिका तीक्ष्ण तेल काढ रेचन तथा नस्य लेना ॥५८॥ अथवा तीक्ष्ण ओषधोंमें सिद्ध किया तेल वा घृत तीक्ष्ण ओषधोंका काढा वा रसमें सिद्ध कर नाकमें घालै ॥

नासिकारंध्रयोरष्टौषट्चत्वारश्चबिंदवः ॥ ५९ ॥
प्रत्येकंरेचनेयोज्यामुख्यमध्यांत्यमात्रया ॥

अर्थ–नाकके दोनों छिद्रोंमें आठ छः चार ऐसी बूंद ॥ ५९ ॥ रेचनविषै उत्तम मध्यम हीन ऐसी मात्रासे युक्त करनी ॥

नस्यकर्मणिदातव्यंशाणैकंतीक्ष्णमौषधम् ॥ २६० ॥ हिंगु स्याद्यवमात्रंतुमाषैकंसैंधवंस्मृतम् ॥ क्षीरंचैवाष्टशाणंस्यात्पानीयंचत्रिकार्षिकम् ॥ ६१ ॥ कार्षिकंमधुरंद्रव्यंनस्यकर्मणियोजयेत् ॥

अर्थ–नस्यकर्ममें तीक्ष्ण ओषध चार मासेभर देना ॥२६०॥ हींग एक जवकेप्रमाण सेंधानमक एकमासा दूध बत्तीस मासे पानी तीन तोले ॥ ६१ ॥ खांड अनार आदि मधुर द्रव्य प्रत्येक एक तोला ऐसे योजना कर नस्यकर्ममें युक्त करै ॥

अवपीडःप्रधमनंद्वौभेदावपरौस्मृतौ ॥ ६२ ॥
शिरोविरेचनस्थानेतौतुदेयौयथायथम् ॥

अर्थ–तिस विरेचननस्यके अवपीड १ प्रधमन २ ऐसे दो भेद अन्य कहे हैं ॥ ६२ ॥ शिरके विरेचनविषै ये दोनों यथायोग्य युक्त करने ॥

कल्कीकृताद्दौषधाद्यःपीडितोनिःस्रुतोरसः ॥ ६३ ॥ सोऽवपीडःसमुद्दिष्टस्तीक्ष्णद्रव्यसमुद्भवः ॥ षडंगुलाद्विवक्त्राया नाडीचूर्णंतयाधमेत् ॥ ६४ ॥ तीक्ष्णंकोलमितंतवक्त्रवातैः प्रधमनंहितत् ॥

अर्थ–ओषधका कल्क बनाय तिस्से निकासा हुआ ॥ ६३ ॥ और तीक्ष्ण

ओषधसे उपजा ऐसा रस अवपीड कहा है छः अंगुलोंकी और दोमुखोंवाली ऐसी जो नाडी तिसकरकै चढावै ॥ ६४ ॥ तीक्ष्ण ओषधका आठ मासेभर चूरणको मुखकी वायुसे नाकमें चढावै वह प्रधमन होता है ॥

ऊर्ध्वजत्रुगतेरोगेकफजेस्वरसंक्षये ॥ ६५ ॥ अरोचकेप्रतिश्यायेशिरःशूलेचपीनसे ॥ शोफापस्मारकुष्ठेषुनस्यंवैरेचनं हितम् ॥ ६६ ॥ भीरुस्त्रीकृशबालानांनस्यंस्नेहेनदीयते ॥

अर्थ–ऊपरला जोताके रोगमें कफसे उपजे स्वरक्षयमें ॥ ६५ ॥ और अरोचक जुखाम शिरका शूल पीनस सोजा मृगीरोग कुष्ठ इन्होंमें रेचन ओर नस्य हित है ॥६६॥ भयवाले स्त्री कृश बालक इन्होंको नस्य तेलकेसंग वा घृतकेसंग दिया जाता है ॥

गलरोगेसन्निपातेनिद्रायांविषमज्वरे ॥ ६७ ॥
मनोविकारेकृमिषुयुज्यतेचावपीडनम् ॥

अर्थ–गलरोग सन्निपात नींद विषमज्वर ॥ ६७ ॥ मनका विकार कृमिरोग इन्होंमें अवपीडन नस्य हित है ॥

अत्यंतोत्कटदोषेषुविसंज्ञेषुचदीयते ॥ ६८ ॥
चूर्णंप्रधमनंधीरैस्तद्धितीक्ष्णतरंयतः ॥

अर्थ–अत्यंत बलवान् दोष हो वा मूर्च्छाआदि उपजै तब ॥ ६८ ॥ वैद्योंनें प्रधमन चूरण देना क्योंकि वही अत्यंत तीक्ष्ण है ॥

नस्यंस्याद्गुडशुंठीभ्यांपिप्पल्यासैंधवेनच ॥ ६९ ॥ जलपिष्टेनतेनाक्षिकर्णनासाशिरोगदाः ॥ हनुमन्यागलोद्भूतानश्यंतिभुजपृष्ठजाः ॥ २७० ॥

अर्थ–सूंठको पानीसें पीस गुड मिला नाकमें चढावै अथवा पीपल और सेंधानमकको पानीमें पीस नाकमें चढावै ॥ ६९ ॥ तिसकरकै नेत्र कान नाक शिर ठोडी कंधा गल भुजा पृष्ठ इन्होंमें प्राप्त हुये रोग नष्ट होते हैं ॥ २७० ॥

मधूकसारकृष्णाभ्यांवचामरिचसैंधवैः ॥ नस्यंकोष्णजलेपिष्टंदद्यात्संज्ञाप्रबोधनम् ॥ ७१ ॥ अपस्मारेतथोन्मादेसन्निपातेऽपतंत्रके ॥

अर्थ–महुवाका सार पीपल वच मिरच सेंधानमक इन्होंको अल्पगरम किये

पानीमें पीस नस्य लेवै यह संज्ञा उपजाता है ॥ ७१ ॥ मृगीरोग उन्माद सन्निपात अपतंत्रक इन्होंमें हित है ॥

सैंधवंश्वेतमरिचंसर्षपाःकुष्ठमेवच ॥ ७२ ॥
बस्तमूत्रेणपिष्टानिनस्यंतंद्रानिवारणम् ॥

अर्थ–सैंधानमक सुपेद मिरच सरसों कूठ ॥ ७२ ॥ इनकों बकराके मूत्रमें पीस नस्य लेवै यह नस्य तंद्राको दूर करता है ॥

रोहीतमत्स्यपित्तेनभावितंसैंधवंवचा ॥ ७३ ॥ मरिचंपिप्पलीशुंठीकंकोलंलशुनंपुरम् ॥ कट्फलंचेतितच्चूर्णंदेयंप्रधमनंबुधैः ॥ ७४ ॥

अर्थ–रोहितसंज्ञक मछलीका पित्तामें भावित किया ॥ ७३ ॥ सैंधानमक वच मिरच पीपल सौंठ कंकोल ल्हशन गूगल इन्होंका चूरण वैद्योंने देना यह प्रधमन नस्य है ॥ ७४ ॥

अथबृंहणनस्यस्यकल्पनाकथ्यतेऽधुना ॥ मर्शश्चप्रतिमर्शश्च द्वौभेदौस्नेहनेमतौ ॥ ७५ ॥ मर्शस्यतर्पणीमात्रामुख्याशाणैःस्मृताष्टभिः ॥ मध्यमाचचतुःशाणैर्हीनाशाणमितास्मृता ॥ ७६ ॥ एकैकस्मिंस्तुमात्रेयंदेयानासापुटेबुधैः ॥ मर्शस्य द्वित्रिवेलंवावीक्ष्यदोषबलाबलम् ॥ ७७ ॥ एकांतरंद्व्यंतरं वानस्यंदद्याद्विचक्षणः ॥ त्र्यहंपंचाहमथवासप्ताहंवासुयंत्रितम् ॥ ७८ ॥

अर्थ–अब बृंहणनस्यकी कल्पना कहते है मर्श वा प्रतिमर्श ये दो भेद स्नेहनमें माने है ॥ ७५ ॥ मर्शनस्यकी मात्रा तर्पणी जाननी बत्तीस मासेकी उत्तम मात्रा कही है सोलह मासेकी मध्यममात्रा कही है चारमासेकी हीन मात्रा कही है॥७६॥ नाकके एकएक पुटमें वैद्योंनें यह मात्रा देनी मर्शनस्यकी मात्रा दोवार अथवा तीन वार दोषका बल और अबल देखकै देनी ॥ ७७ ॥ वैद्य एक दिनके अंतरमें वा दोदिनके अंतरमें वा तीन दिनके अंतरमें वा पांच दिनके अंतरमें वा सात दिनके अंतरमें नस्यको देवै ॥ ७८ ॥

मर्शेशिरोविरेकेचव्यापदोविविधाःस्मृताः ॥ दोषोत्क्लेशात्क्ष-

याश्चैवविज्ञेयास्तायथाक्रमम् ॥ ७९ ॥ दोषोत्क्लेशनिमित्ता-सुयुंज्याद्वमनशोधनम् ॥ अथक्षयनिमित्तासुयथास्वंबृंहणं मतम् ॥ २८० ॥

अर्थ–मर्शनस्यमें वा शिरोविरेचननस्यमें अनेक प्रकारकी पीडा कही है दोषके अधिकपनेंसे वा दोषके क्षयसे क्रमकरकै जाननी ॥ ७९ ॥ दोषोंकी अधिकतासे उपजी पीडाओंमें वमन वा शोधन देना और दोषोंके क्षयसे उपजी पीडाओंमें यथायोग्य बृंहणनस्य देना ॥ २८० ॥

शिरोनासाक्षिरोगेषुसूर्यावर्तार्धभेदके ॥ दंतरोगेबलेहीनेम-न्याबाह्वंसजेगदे ॥ ८१ ॥ मुखशोषेकर्णनादेवातपित्तगदे तथा ॥ अकालपलितेचैवकेशश्मश्रुप्रपातने ॥ ८२ ॥ यु-ज्यतेबृंहणंनस्यंस्नेहैर्वामधुरद्रवैः ॥

अर्थ–शिररोग नासिकारोग नेत्ररोग सूर्यावर्त अर्धभेदक दंतरोग बलकी हानि कंधारोग बाहुरोग मन्यारोग ॥ ८१ ॥ मुखशोष कर्णनाद वातपित्तरोग अकालमें बालोंका सुपेद हो जाना बाल, वा डाढी मूछका उड जाना ॥ ८२ ॥ इन्होंमें स्नेहके संग अथवा मधुर द्रवकेसंग बृंहण अर्थात् धातुओंको बढानेवाला नस्य देना ॥

सशर्करंपयःपिष्टंभ्रष्टमाज्येनकुंकुमम् ॥ ८३ ॥ नस्यप्रयोग-तोहन्याद्वातरक्तभवारुजः ॥ भ्रूशंखाक्षिशिरःकर्णसूर्यावर्ता-र्धभेदकान् ॥ ८४ ॥ नस्यंस्याद्बुतैलेनतथानारायणेनवा ॥ माषादिनावापिसर्पिस्तत्तद्भेषजसाधितैः ॥ ८५ ॥ तैलंकफे स्याद्वातेचकेवलेपवनेवसा ॥ दद्यान्नस्यंसदापित्तेसर्पिर्मज्जा-नमेवच ॥ ८६ ॥

अर्थ–खांडको दूधमें घाल तिस्से नस्य लेवै अथवा घृतमें केशरको खरल कर ॥ ८३ ॥ नस्य लेनेसे वातरक्तसे उपजी पीडा दूर होवै भृकुटी कनपटी शिर कान इन्होंके रोग सूर्यावर्त अर्धभेदक इनको ॥ ८४ ॥ अरंडके तेलका नस्यसे अथवा नारायण तेलसे अथवा माषादि तेलसे अथवा तिसतिस औषधमें सिद्ध किया घृतसे नाश होता है ॥ ८५ ॥ कफवातमें तेलका नस्य केवलवातमें वसाका नस्य पित्तमें सदा घृत वा मज्जाका नस्य देना ॥ ८६ ॥

माषात्मगुप्तारास्नाभिर्बलारूबुकरोहिषैः ॥ कृतोऽश्वगंधया क्वाथोहिंगुसैंधवसंयुतः ॥ ८७ ॥ कोष्णोनस्यप्रयोगेणपक्षाघातंसकंपनम् ॥ जयेदर्दितवातंचमन्यास्तंभापबाहुकौ ॥ ८८॥

अर्थ–उडद कौंचके बीज रासना खरैंहटी अरंडकी जड रोहिषतृण आसगंध इनका काढामें हींग और सेंधानमक मिला ॥८७॥ गरमगरम नस्यके प्रयोगसे कंपसहित पक्षघात अर्दितवात मन्यास्तंभ अपबाहुक इन सबका नाश होता है ॥८८॥

प्रतिमर्शस्यमात्रातुद्विद्विबिंदुमितामता ॥
प्रत्येकशोनस्तकयोःस्नेहेनेतिविनिश्चितम् ॥ ८९ ॥

अर्थ–घृतआदि जो स्निग्ध पदार्थ तिसकी दोदो बूंद एकएक नाकके पुटमें घालै प्रतिमर्श नस्यकी दो बिंदुरूप मात्रा है ॥ ८९ ॥

स्नेहेप्रंथिद्वयंयावन्निमग्नाचोद्धृताततः ॥ तर्जनीयंस्रवेद्बिंदुं सामात्राबिंदुसंज्ञिता ॥ २९० ॥ एवंविधैर्बिंदुसंज्ञैरष्टभिःशाणउच्यते ॥ सदेयोमर्शनस्येतुप्रतिमर्शोद्विबिंदुकः ॥ ९१ ॥

अर्थ–घृत तेल आदि जो स्नेह तिसमें छोटी अंगुलीको डवोयकै उठानेसे जितना बूंद टपकता है उसे बिंदु कहते हैं ॥ २९० ॥ ऐसे आठ बिंदुओंसे एक शाण कहाता है वह मर्शनस्यमें देना प्रतिमर्श नस्यमें दो बूंद देवै ॥ ९१ ॥

समयाःप्रतिमर्शस्यबुधैःप्रोक्ताश्चतुर्दश ॥ प्रभातेदंतकाष्ठांते गृहान्निर्गमनेतथा ॥ ९२ ॥ व्यायामाध्वव्यवायांतेविण्मूत्रांतेंऽजनेकृते ॥ कवलांतेभोजनांतेदिवास्वप्नोत्थितेतथा९३ वमनांतेतथासायंप्रतिमर्शःप्रयुज्यते ॥

अर्थ–वैद्योंनें तिस मर्शनस्यके चौदह काल कहे हैं प्रभातमें १ दांतनके अंतमें २ घरसे निकसनेमें ३ ॥ ९२ ॥ कसरतके अंतमें ४ मार्गसे आकै ५ मैथुनके अंतमें ६ मल त्यागनेके अंतमें ७ मूत्र त्यागनेके अंतमें ८ अंजनके अंतमें ९ ग्रासके अंतमें १० भोजनके अंतमें ११ दिनके शयनसे उठकै १२ ॥ ९३ ॥ वमनके अंतमें १३ सायंकालमें १४ ऐसे प्रतिमर्शयुक्त करना ॥

ईषदुच्छिंदनात्स्नेहोयदावक्त्रंप्रदह्यते ॥ ९४ ॥ नस्येनिषि-

क्तंतंविद्यात्प्रतिमर्शप्रमाणतः ॥ उच्छिदंनपिबेच्चैतंनिष्ठीवे-
न्मुखमागतम् ॥ ९५ ॥

अर्थ—नस्य देनेसे छींक थोडी आवै और स्नेह थूकमार्गमें होकै मुखमें दाह करै ॥ ९४ ॥ जब मुखसे गिरै तो अच्छा और मुखमें प्राप्त हुआको पीवै नहीं किंतु वारंवार थूकता रहै ॥ ९५ ॥

क्षीणेतृष्णास्यशोषार्तेबालेवृद्धेचयुज्यते ॥ प्रतिमर्शेनशाम्यं-
तिरोगाश्चैवोर्ध्वजत्रुजाः ॥ ९६ ॥ वलीपलितनाशश्चबल-
मिंद्रियजंभवेत् ॥

अर्थ—धातुक्षीण मनुष्य वा तृषाकरकै वा मुखशोषकरकै पीडितमनुष्य बालक वा वृद्ध इन्होंको प्रतिमर्शनस्य देवै इस्से उपरला जो ताके रोग शांत होते है ॥ ९६ ॥ वली और सुपेद वाल दूर होते है और इंद्रियोंमें वल उपजता है ॥

बिभीतनिंबगंभारीशिवाशेलुश्चकाकिनी ॥ ९७ ॥
एकैकतैलनस्येनपलितंनश्यतिध्रुवम् ॥

अर्थ—बहेडा नींब कंभारी हरडै भोंकरी मकोहभेद ॥ ९७ ॥ इन्होंमांहसे एक-एकका तेलकी नससे निश्चय सुपेद वाल नष्ट होते हैं ॥

अथनस्यविधिंवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे ॥ ९८ ॥ देशेवातरजो-
मुक्तेकृतदंतनिघर्षणम् ॥ विशुद्धंधूमपानेनस्विन्नभालगलं
तथा ॥ ९९ ॥ उत्तानशायिनंकिंचित्प्रलंबशिरसंनरम् ॥
आस्तीर्णहस्तपादंचवस्त्राच्छादितलोचनम् ॥ ३०० ॥ स-
मुन्नमितनासाग्रंवैद्योनस्येनयोजयेत् ॥ कोष्णमच्छिन्नधारं
चहेमतारादिशुक्तिभिः ॥ १ ॥ शुक्त्यावायत्रयुक्त्यावाप्लोतै-
र्वानस्यमाचरेत् ॥

अर्थ—अब नस्य लेनेके अर्थ नस्यकी विधि कहते है ॥ ९८ ॥ जिस जगह वायु और धूली नहीं हो तहां दंतधावन कर और धूमपान कर मस्तक और गलको शुद्ध कर पसीनासे युक्त कर ॥ ९९ ॥ पीछे सीधा शयन कराय और कछुक शिरको लंबा कर हाथ और पैरको फैलाय और वस्त्रसे नेत्रको आच्छादित कर ॥ ३०० ॥ नाकके अग्रभागको ऊपरको कर वैद्य नस्य देवै कछुक गरम और नि-

रंतर धारसे युक्त ऐसे नस्यके ओषधको सोना वा चांदीका पात्र और सींप आदिसे देवै ॥ १ ॥ अथवा युक्तिसे कौडी आदिसै देवै ॥

नस्येष्वासिच्यमानेषुशिरोनैवप्रकंपयेत् ॥ २ ॥ नकूप्येन्नप्रभाषेतनोच्छिंदेन्नहसेत्तथा ॥ एतर्हिविहितःस्नेहोनैवांतःसंप्रप्रपद्यते ॥ ३ ॥ ततःकासप्रतिश्यायशिरोक्षिगदसंभवः ॥

अर्थ—नस्यको लेनेके समय शिरको नहीं कंपावै ॥२॥ न क्रोध करै और न बोलै न छींक लेवै और न हंसै ऐसे करनेसे स्नेह अच्छीतरह भीतर नहीं प्राप्त होवै ॥३॥ तब खांसी जुखाम शिरका रोग नेत्रका रोग ये उपजते हैं ॥

शृंगाटकमभिप्लाव्यस्थापयेन्नगिलेद्द्रवम् ॥ ४ ॥ पंचसप्तदशैवस्युर्मात्रानस्यस्यधारणे ॥ उपविश्याथनिष्ठीवेन्नासावक्त्रगतंद्रवम् ॥५॥ वामदक्षिणपार्श्वाभ्यांनिष्ठीवेत्संमुखेनहि ॥

अर्थ—मनुष्यको नस्यसे संयुक्त कर नासिकाके वंशके पुटमें स्थापित करै और द्रवको निगलै नहीं ॥ ४ ॥ नस्यके धारणेमें पांच वा सात वा दशमात्रा कोल है पीछे बैठकर नाकमें प्राप्त हुआ द्रवको थूकता रहै ॥ ५ ॥ वामे वा दहिनें तर्फ थूकता रहै और सन्मुख नहीं थूकै ॥

नस्येनीतेमनस्तापंरजःक्रोधंचसंत्यजेत् ॥ ६ ॥ शयीतनिद्रां त्यक्त्वाचउत्तानोवाक्शतंनरः ॥ तथावैरेचनस्यांतेधूमोवा कवलोहितः ॥ ७ ॥

अर्थ—नस्य लेनेके पीछे मनका संताप धूल क्रोध इनको त्यागै ॥ ६ ॥ और नींदको त्याग कर सौ १०० गिनती होसकै इतना कालपर्यंत सीधा सोवै और रेचननस्यके अंतमें धूमा अथवा ग्रास हित है ॥ ७ ॥

नस्येत्रीण्युपदिष्टानिलक्षणानिसमासतः ॥
शुद्धिहीनातियोगानिविशेषाच्छास्त्रचिंतकैः ॥ ८ ॥

अर्थ—नस्यमें शुद्धिलक्षण हीनयोगलक्षण अतियोगलक्षण ये तीन लक्षण विशेषसे वैद्योंनें कहे हैं ॥ ८ ॥

लाघवंमनसःशुद्धिःस्त्रोतसांव्याधिसंक्षयः ॥
चित्तेंद्रियप्रसादश्चशिरसःशुद्धिलक्षणम् ॥ ९ ॥

अर्थ–शरीर हलका होवै मनकी शुद्धि होवै मुख आदि स्रोतोंकी शुद्धि हो रोगका नाश हो अंतःकरण और नेत्रआदि इंद्रिय प्रसन्न हों तब नस्यकरकै शिरकी शुद्धिका लक्षण जानना ॥ ९ ॥

कंडूपदेहोगुरुतास्रोतसांकफसंस्रवः ॥
मूर्ध्निहीनविशुद्धेतुलक्षणंपरिकीर्तितम् ॥ ३१० ॥

अर्थ–खाज चलै शरीरपर चिकटपना और भारीपन हो और मुखआदि स्रोतोंसे कफ झिरै ये हीनयोगके लक्षण कहे है ॥ ३१० ॥

मस्तुलुंगागमोवातवृद्धिरिंद्रियविभ्रमः ॥
शून्यताशिरसश्चापिमूर्ध्निगाढंविरेचिते ॥ ११ ॥

अर्थ–माथाका स्नेह झिरै वातकी वृद्धि होवै इंद्रियोंमें भ्रम उपजै शिरमें शून्यपना हो ये लक्षण नस्यको असंत योगके है ॥ ११ ॥

हीनातिशुद्धेशिरसिकफवातघ्नमाचरेत् ॥
सम्यग्विशुद्धेशिरसिसर्पिर्नस्येनिषेचयेत् ॥ १२ ॥

अर्थ–हीनयोगमें वा असंतयोगमें कफवातको नाश करनेवाला औषध देवै अच्छीतरह शुद्ध हुये शिरमें नस्यविषै घृतको देवै ॥ १२ ॥

कफप्रसेकःशिरसोगुरुतेंद्रियविभ्रमः ॥
लक्षणंतदतिस्निग्धेरूक्षंतत्रप्रदापयेत् ॥ १३ ॥

अर्थ–कफ गिरै शिर भारी रहै इंद्रियोंमें भ्रम रहै ये लक्षण असंत स्निग्धमें होते हैं तहां रूषापदार्थ देना ॥ १३ ॥

भोजयेच्चानभिष्यंदिनस्याचरिकमादिशेत् ॥

अर्थ–दही आदि अभिष्यंदीपदार्थ देना नहीं और नस्य लेनेमें जैसा शिष्ट आचरण करते हैं तैसा करै ॥

वमनंरेचनंनस्यंनिरूहमनुवासनम् ॥
एतानिपंचकर्माणिकथितानिमुनीश्वरैः ॥ १४ ॥

अर्थ–वमन विरेचन नस्य निरूहबस्ति अनुवासनबस्ति ये पांच कर्म मुनीश्वरोंनें कहे हैं ॥ ११४ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे नस्यविधिर्नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ नवमोऽध्यायः ।

धूमस्तुषड्विधःप्रोक्तःशमनोबृंहणस्तथा ॥
रेचनःकासहाचैववामनोव्रणधूपनः ॥ १५ ॥

अर्थ–शमन बृंहण रेचन कासहा वामन व्रण धूपन इनमे दोंसे धूमा छः प्रकारका है ॥ १५ ॥

शमनस्यतुपर्यायौमध्यःप्रायोगिकस्तथा ॥ बृंहणस्यापिपर्यायौस्नेहनोमृदुरेवच ॥ १६ ॥ रेचनस्यापिपर्यायौशोधनस्तीक्ष्णएवच ॥

अर्थ–मध्य वा प्रायौगिक ये दो शमन धूमाके पर्याय हैं स्नेहन वा मृदु ये तो बृंहण धूमाके पर्याय हैं ॥ १६ ॥ शोधन वा तीक्ष्ण ये दो रेचन धूमाके पर्याय हैं ॥

अधूमार्हाश्चखल्वेतेश्रांतोभीरुश्चदुःखितः ॥ १७ ॥ दत्तबस्तिर्विरिक्तश्चरात्रौजागरितस्तथा ॥ पिपासितश्चदाहार्तस्तालुशोषीतथोदरी ॥ १८ ॥ शिरोऽभितापीतिमिरीछर्द्याध्मानप्रपीडितः ॥ क्षतोरस्कप्रमेहार्तःपांडुरोगीचगर्भिणी ॥ १९ ॥ रूक्षःक्षीणोऽभ्यवहृतक्षीरक्षौद्रघृतासवः ॥ भुक्तान्नदधिमत्स्यश्चबालोवृद्धःकृशस्तथा ॥ ३२० ॥ अकालेचातिपीतश्च धूमःकुर्यादुपद्रवान् ॥

अर्थ–निश्चय ये रोगी धूमाका पानके योग्य नहीं है परिश्रमवाला डरप्पोक दुःखवाला ॥ १७ ॥ बस्तिकर्म किये हुयें जुलाब लिये हुये रात्रिमें जागा हुआ प्यासवाला दाहसे पीडित तालुशोषी उदररोगी ॥ १८ ॥ शिरमें तापसे पीडित तिमिररोगी छर्दि और अफारासे पीडित छातीके फटनेसे पीडित प्रमेहरोगी पांडुरोगी गर्भिणी ॥ १९ ॥ रूषा क्षीण और दूध शहत घृत आसव अन्न दही मछली इनको खानेंवाला बालक वृद्ध कृश ॥ ३२० ॥ अकालमें असंत पानकिया धूमा उपद्रवोंको करता है ॥

तत्रेष्टंसर्पिषःपानंनावनांजनतर्पणम् ॥ २१ ॥ सर्पिरिक्षुरसं

द्राक्षांपयोवाशर्करांबुवा ॥ मधुराम्लौरसौवापिशमनायप्र-
दापयेत् ॥ २२ ॥

अर्थ–तहां घृतका पीना नस्य अंजन तर्पण ये वांछित है ॥ २१ ॥ घृत ई-
षका रस दाख दूध अथवाखांडका शर्बत मधुर अथवा खट्टारा से सब शांतिके-
अर्थ देना ॥ २२ ॥

धूमश्चद्वादशाद्वर्षाद्गृह्यतेशीतिकान्नरः ॥ कासश्वासप्रतिश्या-
यान्मन्याहनुशिरोरुजः ॥ २३ ॥ वातश्लेष्मविकारांश्चहन्या-
द्धूमःसुयोजितः ॥

अर्थ–वारहमां वर्षसे लेकै अश्शीवर्षपर्यंत धूमाको पीता रहै अच्छीतरह यो-
जित किया धूमा खासी श्वास जुखाम मन्यापीडा ठोडीपीडा शिरकी पीडा
॥ २३ ॥ वात और कफके विकार इनकों नाश करता है ॥

धूमोपयोगात्पुरुषःप्रसन्नेंद्रियवाङ्मनाः ॥ २४ ॥
दृढकेशद्विजश्मश्रुःसुगंधवदनोभवत् ॥

अर्थ–धूमाकों सेवनेसे प्रसन्न इंद्रिय वाणी मनवाला ॥ २४ ॥ और दृढरूप
वाल दंत और डाढीवाला और सुगंधसहित मुखवाला ऐसा पुरुष रहता है ॥

धूमनाडीभवेत्तत्रत्रिखंडाचत्रिपर्विका ॥ २५ ॥ कनिष्ठिका-
परीणाहाराजमाषागमांतरा ॥ धूमनाडीभवेद्दीर्घाशमनेरो-
गिणोंऽगुलैः ॥ २६ ॥ चत्वारिंशन्मितैस्तद्वद्द्वात्रिंशद्भिर्मृदौ
स्मृता ॥ तीक्ष्णेचतुर्विंशतिभिःकासघ्नेषोडशोन्मितैः ॥२७॥
दशांगुलैर्वामनीयेतथास्याद्व्रणनाडिका ॥ कलायमंडलस्थू-
लाकुलित्थागमरंध्रिका ॥ २८ ॥

अर्थ–धूमपानकी नलीके तीन खंड हों और तीन ठौर डेढी हो ॥ २५ ॥
छोटी अंगुलीके समान मुटाई हो और भीतर जायसकै ऐसी हो शमनमें रोगीके
॥ २६ ॥ चालीस अंगुलकी हो मृदुमें बत्तीस अंगुलकी हो तीक्ष्णमें चौवीस अं-
गुलकी हो कासहामें सोलह अंगुलकी हो ॥ २७ ॥ वामनमें दश अंगुलकी हो
घावमें धूमा देनेकी दश अंगुलकी हो और पूर्वोक्त नलियोंसे मिहीन हो और
तिसमें छेद कुलत्थीका प्रवेश करनेंयोग्य हो ॥ २८ ॥

अथेषिकांप्रलिंपेच्चसुश्लक्ष्णांद्वादशांगुलाम् ॥ धूमद्रव्यस्यक-ल्केनलेपश्चाष्टांगुलःस्मृतः ॥ २९ ॥ कल्कंकर्षमितंलिस्वा छायाशुष्कंचकारयेत् ॥ ईषिकामपनीयाथस्नेहाक्तांवर्तिमा-दरात् ॥ ३३० ॥ अंगारैर्दीपितांकृत्वाधृत्वानेत्रस्यरंध्रके ॥ वदनेनपिबेद्धूमंवदनेनैवसंत्यजेत् ॥ ३१ ॥ नासिकाभ्यांत-तःपीत्वामुखेनैववमेत्सुधीः ॥ शरावसंपुटेक्षिप्त्वाकल्कमंगा-रदीपितम् ॥ ३२ ॥ छिद्रेनेत्रंसुवेश्याथव्रणंतेनैवधूपयेत् ॥

अर्थ–छिलकासहित बारह अंगुलकी सींकपर धूमाकी ओषधियोंके कल्कसे आठ अंगुल लेप कहा है ॥ २९ ॥ एक तोलाभर कल्कका लेप कर छायामें सु-खावै पीछे सींकको दूर कर स्नेहमें बत्तीको भिगोय ॥ ३३० ॥ और जलाय नलीके छिद्रमें धर मुखसे धूमाको पीवै और मुखसेही त्यागै ॥ ३१ ॥ पीछे ना-कसे पीकै मुखसे निकासै इस कल्कको अग्निसे जलाय सकोराके संपुटमें घाल ॥ ३२ ॥ छिद्रविषै नेत्रको स्थापित कर तिस्से घावपर धूप देवै ॥

एलादिकल्कंशमनेस्निग्धंसर्जरसंमृदौ ॥ ३३ ॥ रेचनेतीक्ष्ण-कल्कंचकासघ्नेक्षुद्रिकोषणम् ॥ वामनेस्नायुचर्माद्यंदद्याद्धूम-स्यपानकम् ॥ ३४ ॥ व्रणेनिंबवचाद्यंचधूपनंसंप्रचक्षते ॥

अर्थ–शमन धूमामें एलादिगणके ओषधोंका कल्क देना मृदु धूमामें रालको घृतमें भिगोय देना ॥ ३३ ॥ रेचन धूमामें तीक्ष्ण ओषधोंका कल्क देना कासहा धूमामें कटेली वा मिरचका कल्क देना वामन धूमामें स्नायु वा चामआदिका धूमा देना ॥ ३४ ॥ घावमें नींब और वच आदिका धूमा देना ॥

अन्येऽपिधूमागेहेषुकर्तव्यारोगशांतये ॥ ३५ ॥ (सयथा) मयूरपिच्छंनिंबस्यपत्राणिबृहतीफलम् ॥ मरीचंहिंगुमांसी-चबीजंकार्पाससंभवम् ॥ ३६ ॥ छागरोमाहिनिर्मोकंविष्ठा बैडालिकीतथा ॥ गजदंतश्चतच्चूर्णंकिंचिद्धृतविमिश्रितम् ३७ गेहेषुधूपनंदत्तंसर्वान्बालग्रहान्जयेत् ॥ पिशाचान्राक्षसा-न्जित्वासर्वज्वरहरंभवेत् ॥ ३८ ॥

अर्थ–रोगोंकी शांतिके लिये अन्यभी धूमे घरोंविषै करने ॥ ३५ ॥ मोरकी पांख नींबके पत्ते बडी कटेलीका फल मिरच हींग बालछड कार्पासबीज ॥ ३६ ॥ बकराके रोम सांपकी कांचली बिलावकी विष्ठा हाथीदांत इन्होंके चूरणको कछुक घृतसे मिलाके ॥ ३७ ॥ घरोंमें धूप देनेसे सब बालग्रह पिशाच राक्षस सब प्रकारके ज्वर इन सबका नाश होता है ॥ ३८ ॥

परिहारस्तुधूमेषुकार्योरेचननस्यवत् ॥
नेत्राणिधातुजान्याहुर्नलवंशादिजान्यपि ॥ ३९ ॥

अर्थ–धूमाके सेवनमें रेचन नस्यकी तरह परिहार करना नलीके मुख सोना आदि धातुके और नड वांश आदिके बनावे ॥ ३९ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे धूमपानविधिर्नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ दशमोऽध्यायः ।

चतुर्विधःस्याद्गंडूषःस्नैहिकःशमनस्तथा ॥
शोधनोरोपणश्चैवकवलश्चापितद्विधः ॥ ३४० ॥

अर्थ–स्नैहिक शमन शोधन रोपण इन भेदोंसे गंडूष अर्थात् कुरला कवल अर्थात् ग्रास चार प्रकारका है ॥ ३४० ॥

स्निग्धोष्णैःस्नैहिकोवातेस्वादुशीतैःप्रसादनः ॥ पित्तेकट्वम्ल-
लवणैरुष्णैःसंशोधनःकफे ॥ ४१ ॥ कषायतिक्तमधुरैःकटु-
ष्णोरोपणव्रणे ॥ चतुःप्रकारोगंडूषःकवलश्चापिकीर्तितः ॥ ४२ ॥

अर्थ–स्निग्ध वा उष्ण पदार्थोंकेसंग स्नैहिक वातमें देना स्वादु वा शीतल पदार्थोंकेसंग शमन पित्तमें देना और चर्चरा खट्टा सलोना इन्होंकेसंग संशोधन कफमें देना ॥ ४१ ॥ कसैला कडुआ मधुर कछु गरम इन पदार्थोंकेसंग रोपण घावमें देना ऐसे चार प्रकारका गंडूष और कवल कहा हैं ॥ ४२ ॥

असंचारीमुखेपूर्णेगंडूषःकवलश्चरः ॥
तत्रद्रव्येणगंडूषःकल्केनकवलःस्मृतः ॥ ४३ ॥

अर्थ–मुखको पूरितकरकै संचार नहीं हो सकै वह गंडूष होता है और जि-

सका संचार हो सकै वह कवल कहता है तिन्होंमें द्रवपदार्थसे गंडूष होता है कल्कसें कवल कहा है ॥ ४३ ॥

दद्याद्द्रवेषुचूर्णंचगंडूषेकोलमात्रकम् ॥
कर्षप्रमाणःकल्कश्चदीयतेकवलेबुधैः ॥ ४४ ॥

अर्थ–गंडूषमें द्रवपदार्थोंविषै आठ मासेभर चूरण देना कवलमें एक तोलाभर कल्क देना ॥ ४४ ॥

धार्यतेपंचमाद्वर्षाद्गंडूषकवलादयः ॥ गंडूषान्सुस्थितःकुर्यात्स्विन्नभालगलादिकः ॥ ४५ ॥ मनुष्यस्त्रीस्तथापंचसप्तवा दोषनाशनात् ॥

अर्थ–गंडूष वा कवल आदि पांचमां वर्षसे धारण किये जाते हैं मस्तक और गलआदि विषै पसीना देकै अच्छी तरह स्थित हुआ ॥ ४५ ॥ मनुष्य तीन वा पांच वा सात दोषका नाश होनेंपर्यंत धारै ॥

कफपूर्णास्यतांयावच्छेदोदोषस्यवाभवेत् ॥ ४६ ॥
नेत्रघ्राणश्रुतिर्यावत्तावद्गंडूषधारणम् ॥

अर्थ–जबतक कफसे मुख पूरित होवै अथवा दोषका नाश होवै ॥ ४६ ॥ जबतक आंख वा नाक झिरै तबतक गंडूषको धारै ॥

तिलकल्कोदकंक्षीरंस्नेहोवास्नैहिकेहितः ॥ ४७ ॥

अर्थ–तिलोंका कल्क पानी दूध अथवा स्नेह ये स्नैहिकमें हित हैं ॥ ४७ ॥

तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच ॥
सक्षौद्रोहनुवक्त्रस्थोगंडूषोदाहनाशनः ॥ ४८ ॥

अर्थ–तिल नीलाकमल घृत खांड दूध शहत इन्होंका गंडूष बनाय ठोडीसहित मुखमें धारै तो दाहको नाश करता है ॥ ४८ ॥

वैशद्यंजनयत्यास्येसंदधातिमुखव्रणान् ॥
दाहतृष्णाप्रशमनंमधुगंडूषधारणम् ॥ ४९ ॥

अर्थ–शहतका गंडूष धारण करना मुखमें सुंदरपनाको उपजाता है मुखके घावोंको अच्छा करता है दाह और तृषाको नाश करता है ॥ ४९ ॥

विषक्षाराग्निदग्धेचसर्पिर्धार्यपयोऽथवा ॥

अर्थ-विष खार अग्नि इन्होंसे जलनेमें घृत अथवा दूध मुखमें धारण करना ॥

तैलसैंधवगंडूषोदंतचालेप्रशस्यते ॥ ३५० ॥

अर्थ-दंतचालमें तेल और सैंधानमकका गंडूष श्रेष्ठ है ॥ ३५० ॥

शोषंमुखस्यवैरस्यंगंडूषःकांजिकोजयेत् ॥

अर्थ-कांजीका गंडूष शोष और मुखके विरसपनेको जीतता है ॥

सिंधुत्रिकटुराजीभिरार्द्रकेणकफेहितः ॥ ५१ ॥

अर्थ-सैंधानमक सोंठ मिरच पीपल इन्होंको अदरकके रससे धारण किया गंडूष कफमें हित है ॥ ५१ ॥

त्रिफलामधुगंडूषःकफासृक्पित्तनाशनः ॥

अर्थ-त्रिफलाका काढामें शहत मिला किया गंडूष कफ वा रक्त पित्तको नाश करता है ॥

दार्वीगुडूचीत्रिफलाद्राक्षःजात्याश्वपल्लवाः ॥ ५२ ॥ यवास-श्चेतितत्क्वाथःषष्ठांशःक्षौद्रसंयुतः ॥ शीतोमुखेधृतोहन्यान्मु-खपाकंत्रिदोषजम् ॥ ५३ ॥

अर्थ-दारुहलदी गिलोय त्रिफला दाख जावित्री ॥ ५२ ॥ धमासा इन्होंका काढामें छठा हिस्सा शहत मिला शीतलकोही मुखमें धारण करै यह गंडूष त्रिदो-षके मुखपाकको हरता है ॥ ५३ ॥

यस्यौषधस्यगंडूषस्तथैवप्रतिसारणम् ॥
कवलश्चापितस्यैवज्ञेयोऽत्रकुशलैर्नरैः ॥ ५४ ॥

अर्थ-जिस औषधका गंडूष है तिसी ओषधका प्रतिसारण वा कवलभी कु-शल मनुष्योंनें जानना ॥ ५४ ॥

केशरंमातुलिंगस्यसैंधवव्योषसंयुतम् ॥
हन्यात्कवलतोजाड्यमरुचिंकफवातजाम् ॥ ५५ ॥

अर्थ-विजोराकी केशर सैंधानमक सोंठ मिरच पीपल इन्होंका कवल जडप-नाको और कफवातकी अरुचिको नाश करता है ॥ ५५ ॥

कल्कोऽवलेहश्चूर्णंचत्रिविधंप्रतिसारणम् ॥
अंगुल्यग्रगृहीतंचयथास्वंमुखरोगिणाम् ॥ ५६ ॥

अर्थ–कल्क अवलेह चूरण ऐसे तीन प्रकारका प्रतिसारण है सो मुखरोगवालोंको जैसा दोष हो तिसके अनुसार अंगुलीके अग्रभागमें ग्रहण कर चाटना चाहिये ॥ ५६ ॥

कुष्टंदार्वीसमंगाचपाठातिक्ताचपीतिका ॥ तेजनीमुस्तलोध्रंचचूर्णंस्यात्प्रतिसारणम् ॥ ५७ ॥ रक्तस्रुतिंदंतपीडांशोथंदाहंचनाशयेत् ॥

अर्थ–कूठ दारुहलदी लज्जावंती पाठा कुटकी मजीठ हलदी नागरमोथा लोध इन्होंका चूरण बनाकर प्रतिसारण करै ॥ ५७ ॥ यह रक्तस्रुति दंतपीडा शोजा दाह इनको नाश करता है ॥

हीनयोगात्कफोत्क्लेशोरसाज्ञानारुचीतथा ॥ ५८ ॥
अतियोगान्मुखेपाकःशोषस्तृष्णाक्लमोभवेत् ॥

अर्थ–गंडूषआदिके हीनयोगसे कफकी अधिकता मधुरआदि रसका अज्ञान अरुचि ये उपजते हैं ॥ ५८ ॥ और अतियोगसे मुखका पकना शोष तृषा ग्लानि ये उपजते है ॥

व्याधेरपचयस्तुष्टिर्वैशद्यंवक्त्रलाघवम् ॥
इंद्रियाणांप्रसादश्चगंडूषेशुद्धिलक्षणम् ॥ ३५९ ॥

अर्थ–व्याधिका नाश संतोष मुखमें निर्मलपना और हलकापना इंद्रियोंकी प्रसन्नता ये लक्षण होवै तो गंडूषकी शुद्धि जाननी ॥ ३५९ ॥

इति वेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे गंडूषादिविधिर्नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ एकादशोऽध्यायः ।

आलेपस्यचनामानिलिप्तोलेपश्चलेपनम् ॥ दोषघ्नोविषहावर्ण्योमुखलेपस्त्रिधामतः ॥ ३६० ॥ त्रिप्रमाणश्चतुर्भागास्त्रिभागार्धांगुलोन्नतः ॥ आर्द्रोव्याधिहरःसस्याच्छुष्कोदूषयतिच्छविम् ॥ ६१ ॥

३५

अर्थ-लिप्त लेप लेपन ये तीन नाम लेपनके जानने दोषघ्न विषहा वर्ण्य इन तीन भेदोंसे मुखलेप तीन प्रकारका है ॥ ३६० ॥ ओला लेप रोगको हरता है सूखा लेप कांतिको दूषित करता है ॥ ६१ ॥

पुनर्नवांदारुशुंठींसिद्धार्थंशिग्रुमेवच ॥
पिष्टांचैवारनालेनप्रलेपःसर्वशोथहा ॥ ६२ ॥

अर्थ-साठी देवदार सोंठ सिरसम सहोंजना इनको कांजीमें पीस किया लेप सब प्रकारका शोजाको हरता है ॥ ६२ ॥

बिभीतफलमज्जाक्तलेपोदाहार्तिनाशनः ॥

अर्थ-बहेडाकी गिरीकों बारीक पीस किया लेप दाहकी पीडाको नाश करता है ॥

शिरीषंमधुयष्टीचतगरंरक्तचंदनम् ॥ ६३ ॥ एलामांसीनिशायुग्मंकुष्टंवालकमेवच ॥ इतिसंचूर्ण्यलेपोयंपंचमांशघृतप्लुतः ॥ ६४ ॥ जलेनक्रियतेसुज्ञैर्दशांगइतिसंज्ञितः ॥ विसर्पान्विषविस्फोटाञ्शोथदुष्टव्रणाञ्जयेत् ॥ ६५ ॥

अर्थ-शिरस मुलहटी तगर लालचंदन ॥ ६३ ॥ इलायची वालछड हलदी दारुहलदी कूठ नेत्रवाला इन्होंका चूरण कर पानीमें पीसा पांचमां हिस्सा घृत मिला ॥ ६४ ॥ लेप करै यह दशांग संज्ञकलेप विसर्प विषदोष विस्फोट शोजा दुष्टव्रण इनको नाश करता है ॥ ६५ ॥

अजादुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः ॥
शोथमारुष्करंहंतिलेपोवाकृष्णमृत्तिकैः ॥ ६६ ॥

अर्थ-बकरीके दूधमें तिलोंको पीस नौंनीत घृत मिला किया लेप अथवा काली माटी और तिलोंको पीस नौंनीत घृत मिला किया लेप भिलावासें उपजा शोजाको नाश करता है ॥ ६६ ॥

लांगल्यतिविषालाबूजालिनीबीजमूलकैः ॥
लेपोधान्यांबुसंपिष्टःकीटविस्फोटनाशनः ॥ ६७ ॥

अर्थ-कलहारी अतीस तूंबीके बीज कडवीतोरीके बीज मूलीके बीज इनकों कांजीमें पीस किया लेप कीडाका डंक वा विस्फोटको नाश करता है ॥ ६७ ॥

रक्तचंदनमंजिष्ठालोध्रकुष्ठप्रियंगवः ॥
वटांकुरामसूराश्चव्यंगघ्नामुखकांतिदाः ॥ ६८ ॥

अर्थ–लालचंदन मजीठ लोध कूठ कांगणी वडके अंकुर मसूर इन्होंके लेप मुखके व्यंगको नाश करते हैं और मुखकी कांतिको देते हैं ॥ ६८ ॥

मातुलुंगजटासर्पिःशिलागोशकृतोरसः ॥
मुखकांतिकरोलेपःपिटिकाव्यंगकालजित् ॥ ६९ ॥

अर्थ–विजोराकी जड घृत मनशिल गायका गोवरको रस इन्होंका लेप मुखपर कांतिको करता है और पिटिका व्यंग नीलिका इनको नाश करता है ॥६९॥

लोध्रधान्यवचालेपस्तारुण्यपिटिकापहः ॥ तद्वद्गोरोचनायुक्तमरीचंमुखलेपनात् ॥ ३७० ॥ सिद्धार्थकवचालोध्रसैंधवैश्चप्रलेपनम् ॥

अर्थ–लोध धनियां वच इनका लेप जवानीकी पिटिकाओंको दूर करता है गोरोचन और मिरचको पीस लेप करनेसे ॥ ३७० ॥ अथवा सिरसम वच लोध सेंधानमक इनका लेप मुखकी पिटिकाको दूर करता है ॥

व्यंगेषुचार्ज्जुनत्वग्वामंजिष्ठावासमाक्षिकः ॥ ७१ ॥
लेपःसनवनीतोवाश्वेताश्वखुरजामषी ॥

अर्थ–कौहवृक्षकी छालका चूरण अथवा मंजीठका चूरण ॥ ७१ ॥ अथवा सुपेद घोडाके खुरकी स्याही इन्होंमें शहत और नौनीत घृत मिला किया लेप व्यंगको दूर करता है ॥

अर्कक्षीरहरिद्राभ्यांमर्दयित्वाविलेपनात् ॥ ७२ ॥
मुखकार्ष्ण्यंशमंयातिचिरकालोद्भवंध्रुवम् ॥

अर्थ–आकके दूधमें हलदी मिला मर्दित कर लेप करनेसे ॥ ७२ ॥ बहुत दिनोंसे उपजी मुखकी कृष्णता निश्चय शांत होती है ॥

वटस्यपांडुपत्राणिमालतीरक्तचंदनम् ॥ ७३ ॥ कुष्टंकालीयकंलोध्रमेभिर्लेपंप्रयोजयेत् ॥ तारुण्यपिटिकाव्यंगनीलिकादिविनाशनम् ॥ ७४ ॥

अर्थ–वडके पीले पत्ते चमेली लालचंदन ॥ ७३ ॥ कूठ दारुहलदी लोध इन्होंका लेप करै यह जवानीकी पिटिका व्यंग नीलिका इन आदिको नाश करता है ॥ ७४ ॥

पुराणमथपिण्याकंपुरीषंकुक्कुटस्यच ॥
मूत्रंपिष्टःप्रलेपोयंशीघ्रंहन्यादरुंषिकाम् ॥ ७५ ॥

अर्थ–पुराणी तिलोंकी खल मुर्गाकी वीष्ठा इन्होंको गोमूत्रमें पीस किया लेप अरुंषिकाकों शीघ्र नाश करता है ॥ ७५ ॥

खदिरारिष्टजंबूनांत्वग्भिर्वामूत्रसंयुतैः ॥
कुटजत्वक्सैंधवंवालेपोहन्यादरुंषिकाम् ॥ ७६ ॥

अर्थ–खैर नींब जामन इन्होंको गोमूत्रमें पीस किया लेप अथवा कूडाकी छाल और सैंधानमकको गोमूत्रमें पीस किया लेप अरुंषिकाको नाश करता है॥७६॥

प्रियालबीजमधुककुष्टमाषैःससैंधवैः ॥
कार्योदारुणकेमूर्ध्निप्रलेपोमधुसंयुतः ॥ ७७ ॥

अर्थ–चिरौंजी मुलहटी कूठ उडद सैंधानमक इनको पीस शहतमें मिला दारुण रोगमें शिरविषै लेप करना ॥ ७७ ॥

दुग्धेनखाखसंबीजंप्रलेपाद्दारुणंजयेत् ॥ आम्रबीजस्यचूर्णंतु शिवाचूर्णसमंद्वयम् ॥ ७८ ॥ दुग्धपिष्टःप्रलेपोयंदारुणंहंति दारुणम् ॥

अर्थ–दूधमें खसखसकों पीस किया लेप दारुण रोगको जीतता है अथवा आंबकी गुठलीका चूरण वा हरडैका चूरण ये दोनों बरावर ले ॥७८॥ दूधमें पीस किया लेप दारुण रोगको नाश करता है ॥

रसस्तिक्तपटोलस्यपत्राणांतद्विलेपनात् ॥ ७९ ॥
इंद्रलुप्तंशमंयातित्रिभिरेवदिनैर्ध्रुवम् ॥

अर्थ–कडुआ परवलके पत्तोंका रसके लेपसे ॥ ७९ ॥ तीन दिनोंकरकै इंद्रलुप्त निश्चय शांत होता है ॥

इंद्रलुप्तापहोलेपोमधुनाबृहतीरसः ॥ ३८० ॥
गुंजामूलफलंवापिभल्लातकरसोऽपिवा ॥

अर्थ–वडीकटेलीके रसमें शहत मिला लेप करना ॥ ३८० ॥ अथवा चिरमठीके जडका अथवा फलका रसमें शहत मिला अथवा भिलावाका रसमें शहत मिला किया लेप इंद्रलुप्तको हरता है ॥

गोक्षुरस्तिलपुष्पाणितुल्येचमधुसर्पिषी ॥ ८१ ॥
शिरःप्रलेपनंतेनकेशसंवर्धनंपरम् ॥

अर्थ–गोखरू तिलोंकेफूल ये दोनों बरोवर भाग ले शहत और घृत मिला ॥ ८१ ॥ तिसकरकै शिरपर किया लेप वालोंको बढाता है ॥

हस्तिदंतमषींकृत्वाछागीदुग्धंरसांजनम् ॥ ८२ ॥
रोमाण्यनेनजायंतेलेपात्पाणितलेष्वपि ॥

अर्थ–हाथिदांतकी स्याही वना और रसोतको वकरीके दूधमें पीस ॥ ८२ ॥ हाथके तलवोंपरभी लेप करनेसे रोम उपजते है ॥

यष्टींदीवरमृद्वीकातैलाज्यक्षीरलेपनैः ॥ ८३ ॥
इंद्रलुप्तःशमंयातिकेशाःस्युःसघनादृढाः ॥

अर्थ–मुलहटी कमल दाख इनको तेल घृत दूध इन्होंमें पीस लेप करनेसे ॥ ८३ ॥ इंद्रलुप्त शांत होता है घन और दृढ वाल होजाते हैं ॥

चतुष्पदानांत्वग्रोमनखशृंगास्थिभस्मभिः ॥ ८४ ॥
तैलेनसहलेपोऽयंरोमसंजननःपरः ॥

अर्थ–बकराआदि चौपायोंकी खाल रोम नख शींग हड्डी इन्होंकी भस्म॥८४॥ तेलमें मिला किया लेप रोमोंको प्रगट करता है ॥

इंद्रवारुणिकाबीजतैलेनाभ्यंगमाचरेत् ॥ ८५ ॥
प्रत्यहंतेनकालाग्निसन्निभाःकुंतलाअलम् ॥

अर्थ–इंद्रायणके वीजका तेलमें मालिस करनेसे ॥ ८५ ॥ निसप्रति अत्यंत काले वाल होजाते हैं ॥

अयोरजोभृंगराजस्त्रिफलाकृष्णमृत्तिका ॥ ८६ ॥
स्थितमिक्षुरसेमासंलेपनात्पलितंजयेत् ॥

अर्थ–लोहाका चूरण भंगरा त्रिफला कालीमाटी ॥ ८६ ॥ इनको ईखके रसमें एक महीना स्थित कर लेप करनेसे सुपेद वाल काले होजाते हैं ॥

धात्रीफलत्रयंपथ्येद्वेतथैकंबिभीतकम् ॥ ८७ ॥ पंचाम्रमज्जा-
लोहस्यकर्षैकंचप्रदीयते ॥ पिष्ट्वालोहमयेभांडेस्थापयेद्वुषितं
निशि ॥ ८८ ॥ लेपोऽयंहंतिनचिरादकालपलितंमहत् ॥

अर्थ–आंवलाके फल तीन हरडै दो वहेडाका फल एक ॥ ८७ ॥ आंवकी गुठली पांच लोहाका चूरण एक तोला इनको लोहाके पात्रमें पीस रात्रिभर स्थापित करै ॥ ८८ ॥ यह लेप अकालमें उपजे सुपेदवालोंको शीघ्र काले वनाता है॥

त्रिफलानीलिकापत्रंलोहंभृंगरजःसमम् ॥ ८९ ॥
अजामूत्रेणसंपिष्टलेपात्कृष्णीकरंस्मृतम् ॥

अर्थ–त्रिफला नीलके पत्ते लोहका चूरण भंगराका चूरण ये सव वरावर भाग लेकै ॥ ८९ ॥ वकरीके मूत्रसे पीस लेप करनेसे सुपेद वाल काले होते हैं ॥

त्रिफलालोहचूर्णंचदाडिमत्वग्बिसंतथा ॥ ३९० ॥ प्रत्येकं
पंचपलिकंचूर्णंकुर्याद्विचक्षणः ॥ भृंगराजरसस्यापिप्रस्थष-
ट्कंप्रदापयेत् ॥ ९१ ॥ क्षिप्त्वालोहमयेपात्रेभूमिमध्येनिधा-
पयेत् ॥ मासमेकंततःकुर्याच्छागीदुग्धेनलेपनम् ॥ ९२ ॥
कूर्चेशिरसिरात्रौचसंवेष्ट्यैरंडपत्रकैः ॥ स्वपेत्प्रातस्ततःकुर्या-
त्स्नानंतेनचजायते ॥ ९३ ॥ पलितस्यविनाशश्चत्रिभिर्लेपै-
र्नसंशयः ॥

अर्थ–त्रिफला लोहका चूरण अनारकी छाल कमलकी डंडी ॥ ३९० ॥ ये सव पांचपांच पल लेकै वारीक चूरण कर भंगराके रसकी छः प्रस्थ मिलाकै ॥ ९१ ॥ लोहाके पात्रमें घाल पृथिवीविषै एक महीनापर्यंत गाडै पीछे वकरीके दूधसे ॥ ९२ ॥ मस्तकपर रात्रिमें लेप करै पीछे अरंडके पत्ते लपेट शयन करै पीछे प्रभातमें स्नान करै तिसकरकै ॥ ९३ ॥ तीन लेपोंकरकै सुपेद वालोंका नाश होता है इसमें संशय नहीं ॥

शंखचूर्णस्यभागौद्वौहरितालंचभागिकम् ॥ ९४ ॥ मनःशि-
लाचार्धभागास्वर्जिकाचैकभागिका ॥ लेपोऽयंवारिपिष्टस्तु
केशानुत्पाट्यदीयते ॥ ९५ ॥ अनयालेपयुक्त्याचसप्तवेलं
प्रयुक्तया ॥ निर्मूलकेशस्थानंस्यात्क्षपणस्यशिरोयथा ॥ ९६ ॥

अर्थ-शंखका चूरण दो भाग हरताल एक भाग ॥ ९४ ॥ मनशिल आधा भाग साजी एक भाग इनको पानीसे पीस किया लेप वालोंको उडाता है ॥९५॥ सात वार करी इस लेपकी युक्ति करकै मूलसे रहित वालोंका स्थान होजाता है जैसे संन्यासीका शिर ॥ ९६ ॥

तालकंशाणयुग्मंस्यात्षट्शाणंशंखचूर्णकम् ॥ द्विशाणिकं पलाशस्यक्षारंदत्वाप्रमर्दयेत् ॥ ९७ ॥ कंदलीदंडतोयेनर-विपत्ररसेनवा ॥ अस्यापिसप्तभिर्लेपैर्लोम्नांशातनमुत्तमम्॥९८॥

अर्थ-हरताल आठ मासे शंखका चूरण छः मासे पलाशका खार आठ मासे इनको ॥ ९७ ॥ केलाके रससे अथवा आकका पत्तोंके रससे मर्दित करै इसको सात वार लेप करनेसे रोम नष्ट होजाते हैं ॥ ९८ ॥

सुवर्णपुष्पीकासीसंविडंगानिमनःशिला ॥
रोचनासैंधवंचैवलेपनाच्छ्वित्रनाशनम् ॥ ९९ ॥

अर्थ-पीली चमेली कसीस वायविडंग मनशिल गोरोचन सेंधानमक इनका लेपसे श्वित्रकुष्ठका नाश होता है ॥ ९९ ॥

त्रायस्येडगजाकुष्टकृष्णाभिर्गुटिकाकृता ॥
बस्तमूत्रेणसंपिष्टाप्रलेपाच्छ्वित्रनाशिनी ॥ ४०० ॥

अर्थ-मकोह भेद पुवाडके बीज कूठ पीपल इनको बकराके मूत्रमें पीस करी गोली लेपसे श्वित्रकुष्ठको नाश करता है ॥ ४०० ॥

बाकुचीवेतसोलाक्षाकाकोदुंबरिकाकणा ॥ रसांजनमयश्चू-र्णंतिलाःकृष्णास्तदेकतः ॥ १ ॥ चूर्णयित्वागवांपित्तैःपिष्ट्वा चगुटिकाकृता ॥ अस्याःप्रलेपाच्छ्वित्राणिप्रणश्यंत्यतिवेगतः॥२॥

अर्थ-बावची अम्लवेतस लाख काला गूलर पीपल रसोत ॥ १ ॥ इनका चूरण कर गायका पित्तमें पीस गोली बनावै इसके लेपसे शीघ्र श्वित्रकुष्ठका नाश करता है ॥ २ ॥

धात्रीसर्जरसश्चैवयवक्षारश्चचूर्णितैः ॥
सौवीरेणप्रलेपोऽयंप्रयोज्यःसिध्मनाशने ॥ ३ ॥

अर्थ-आंवला राल जवाखार इनका चूरण कर कांजीसे पीस किया लेप सीं-पको नाश करता है ॥ ३ ॥

दार्वीमूलकबीजानितालकंसुरदारुच ॥ तांबूलपत्रंसर्वाणि कार्षिकाणिपृथक्पृथक् ॥ ४ ॥ शंखचूर्णशाणमात्रंसर्वाण्ये- कत्रचूर्णयेत् ॥ लेपोऽयंवारिणापिष्टःसिध्मनांनाशनःपरः ॥ ५ ॥

अर्थ—दारुहलद्दी मूलीके बीज हरताल देवदार नागरपान ये सब एकएक तोले ॥ ४ ॥ शंखका चूरण चारमासे इन सबको मिला चूरण करै पीछे पानीसे पीस किया लेप सींपरोगको नाश करता है ॥ ५ ॥

हरीतकीसैंधवंचगैरिकंचरसांजनम् ॥
बिडालकोजलेपिष्टःसर्वनेत्रामयापहः ॥ ६ ॥

अर्थ—हरडै सेंधानमक गेरू रसोत इनको पानीमें पीस डोलोंके बाहिर लेप करनेसे सबप्रकारके नेत्ररोग दूर होते हैं ॥ ६ ॥

रसांजनंव्योषयुतंसंपिष्टंवटकीकृतम् ॥
कंडूपाकान्विताहंतिलेपादंजननामिकाम् ॥ ७ ॥

अर्थ—रसोत सोंठ मिरच पीपल इनको पानीसें पीस गोली बना लेप करनेसे खाज वा पाकसे युक्त हुई अंजननामिका दूर होती है ॥ ७ ॥

प्रपुन्नाटस्यबीजानिबाकुचीसर्षपास्तिलाः ॥ कुष्टंनिशाद्वयं मुस्तंपिष्ट्वातक्रेणलेपतः ॥ ८ ॥ प्रलेपादस्यनश्यंतिकंडूदद्रू- विचर्चिकाः ॥

अर्थ—पुवाडके बीज बावची सिरसम तिल कूठ हलदी दारुहलदी नागरमोथा इनको तक्रमें पीस ॥ ८ ॥ लेप करनेसे खाज दाद विचर्चिका ये दूर होते हैं ॥

हेमक्षीरीविडंगानिदरदंगंधकस्तथा ॥ ९ ॥ दद्रुघ्नःकुष्टसिंदू- रंसर्वाण्येकत्रमर्दयेत् ॥ धत्तूरनिंबतांबूलीपत्राणांस्वरसैःपृथ- क् ॥ ४१० ॥ अस्यप्रलेपमात्रेणपामादद्रुविचर्चिकाः ॥ कं- डूश्चरकसश्चैवप्रशमंयांतिवेगतः ॥ ११ ॥

अर्थ—चोक वायविडंग शिंगरफ गंधक ॥ ९ ॥ पुवाडकेबीज कूठ सिंदूर इन सबको मिला धत्तूरा नींव नागरपान इनके स्वरसोंमें खरल करै ॥ ४१० ॥ इसके लेपसे पाम दाद विचर्चिका खाज चरकस कुष्ठ इनका नाश होता है ॥ ११ ॥

दूर्वाभयासैंधवंचचक्रमर्दःकुठेरकः ॥
एभिस्तक्रयुतोलेपःकंडूदद्रुविनाशनः ॥ १२ ॥

अर्थ–दूब हरडै सेंधानमक पुवाडके वीज रानतुलसी इनको तक्रमें पीस किया लेप खाज और दादको नाश करता है ॥ १२ ॥

चंदनोशीरयष्ट्याह्वाबलाव्याघ्रनखोत्पलैः ॥
क्षीरपिष्टैःप्रलेपःस्याद्रक्तपित्तशिरोरुजि ॥ १३ ॥

अर्थ–लालचंदन खस मुलहटी खरैंहटी वाघका नख कमल इनको दूधमें पीस किया लेप रक्तपित्तसंबंधी मस्तकपीडाको दूर करता है ॥ १३ ॥

सिद्धार्थरजनीकुष्टप्रपुन्नाडतिलैःसह ॥
कटुतैलेनसंमिश्रमुदर्दघ्नंप्रलेपनम् ॥ १४ ॥

अर्थ–सिरसम हलदी कूठ पुवाडके वीज तिल इनको कडुआतेलसे पीस किया लेप उदर्दकुष्ठको नाश करता है ॥ १४ ॥

रास्नानीलोत्पलंदारुचंदनंमधुकंबला ॥
घृतक्षीरयुतोलेपोवातवीसर्पनाशनः ॥ १५ ॥

अर्थ–रासना नीलाकमल देवदार लालचंदन मूलहटी खरैंहटी इनको दूध वा घृतमें पीस किया लेप वातके विसर्पको नाश करता है ॥ १५ ॥

मृणालंचंदनंलोध्रमुशीरंकमलोत्पलम् ॥
सारिवामलकंपथ्यालेपःपित्तविसर्पनुत् ॥ १६ ॥

अर्थ–कमलकी डंडी लालचंदन लोध खस कमल सारिवा अनंतमूल आंवला छोटी हरडै इनको पानीमें पीस किया लेप पित्तके विसर्पको नाश करता है॥१६॥

त्रिफलापद्मकोशीरंसमंगाकरवीरकम् ॥
नलमूलमनंताचलेपःश्लेष्मविसर्पहा ॥ १७ ॥

अर्थ–त्रिफला पद्मकाष्ठ खस धायके फूल कनेर नडकी जड धमासा इनका लेप कफके विसर्पको दूर करता है ॥ १७ ॥

मूर्वानीलोत्पलंपद्मंशिरीषकुसुमैःसह ॥
प्रलेपःपित्तवातास्रेशतधौतघृतप्लुतः ॥ १८ ॥

अर्थ–दूव नीलाकमल पद्माख शिरसके फूल इनको १०० वार धोया घृतमें मिलाके किया लेप पीत वात रक्तकों दूर करता है ॥ १८ ॥

आमलंघृतभृष्टंतुपिष्टंकांजिकवारिभिः ॥
जयेन्मूर्ध्निप्रलेपेनरक्तंनासिकयास्रुतम् ॥ १९ ॥

अर्थ–आंवलाको घृतमें भूनकर कांजीके पानीके पीस मस्तकपर किया लेप नाकसे झिरते हुये रक्तको दूर करता है ॥ १९ ॥

कुष्टमेरंडतैलेनलेपात्कांजिकपेषितम् ॥
शिरोऽर्तिवातजांहन्यात्पुष्पंवामुचकुंदजम् ॥ ४२० ॥

अर्थ–कूठ अथवा मुचकंदके फूलको कांजीमें पीस किया लेप वातसे उपजी शिरकी पीडाकों हरता है ॥ ४२० ॥

देवदारुनतंकुष्ठंनलदंविश्वभेषजम् ॥
सकांजिकःस्नेहयुक्तोलेपोवातशिरोर्तिनुत् ॥ २१ ॥

अर्थ–देवदार तगर कूठ नडकी जड सोंठ इनकों कांजीमें पीस घृतसे अथवा तेलसे युक्त कर किया लेप वातसें उपजी शिरकी पीडाको नाश करता है ॥२१॥

धात्रीकसेरुह्रीबेरपद्मपद्मकचंदनैः ॥ दूर्वोशीरनलानांचमू-
लैःकुर्यात्प्रलेपनम् ॥ २२ ॥ शिरोर्तिंपित्तजांहन्याद्रक्तपित्त-
रुजंतथा ॥

अर्थ–आंवला कसेरु नेत्रवाला कमल पद्माक लालचंदन दूव खस नलसलकी जड इनका लेप करै ॥ २२ ॥ यह पित्तसे उपजी शिरकी पीडाको और रक्त पित्तको नाश करता है ॥

हरेणुनतशैलेयमुस्तैलागरुदारुभिः ॥ २३ ॥ मांसीरास्नारुबू-
कैश्वकोष्णोलेपःकफार्तिनुत् ॥ शुंठीकुष्टप्रपुन्नाटदेवकाष्ठैः
सरोहिषैः ॥२४॥ मूत्रपिष्टैःसुखोष्णैश्चलेपःश्लेष्मशिरोऽर्तिनुत् ॥

अर्थ–रेणुका तगर लोवान नागरमोथा इलायची अगर देवदार ॥ २३ ॥ बालछड रासना अरंडकी जड इनको पानीमें पीस अल्प गरम कर किया लेप कफसें उपजी शिरकी पीडाकों हरता है सूंठ कूठ पुवाडकेवीज देवदार रोहिषतृण ॥२४॥ इनकों गोमूत्रमें पीस सुखपूर्वक गरमगरम किया लेप कफसे उपजी शिरकी पीडाकों हरता है ॥

सारिवाकुष्टमधुकंवचाकृष्णोत्पलैस्तथा ॥ २५ ॥
लेपःसकांजिकस्नेहःसूर्यावर्तार्धभेदयोः ॥

अर्थ–सारिवा अनंतमूल कूठ मूलहटी वच पीपल कमल ॥ २५ ॥ इनकों कांजीमें पीस घृत अथवा तेल मिलाय किया लेप सूर्यावर्त वा अर्धावभेदकों हरता है ॥

वरीनीलोत्पलंदूर्वातिलाःकृष्णापुनर्नवा ॥ २६ ॥
शंखकेऽनंतवातेचलेपःसर्वशिरोऽर्तिजित् ॥

अर्थ–शतावरी नीलाकमल दूव तिल पीपल साठी ॥ २६ ॥ इनका लेप शंखकरोग अनंतवातरोग शिरकी पीडा इन्होंको नाश करता है ॥

अथलेपविधिश्चान्यःप्रोच्यतेसुज्ञसंमतः ॥ २७ ॥
द्वौतस्यकथितौभेदौप्रलेपाख्यप्रदेहकौ ॥

अर्थ–अब वैद्योंकरकै मानी हुई दूसरी लेपकी विधि कहते हैं ॥ २७ ॥ तिसके दो भेद हैं एक प्रलेपाख्य दूसरा प्रदेहक ॥

चर्मार्द्रमाहिषंयद्वत्प्रोन्नतंसमितिस्तयोः ॥ २८ ॥ शीतस्तनुर्निर्विषीचप्रलेपःपरिकीर्तितः ॥ आर्द्रोघनस्तथोष्णःस्यात्प्रदेहःश्लेष्मवातहा ॥ २९ ॥

अर्थ–तिन दोनोंका प्रमाण भैंसाका आला चमडाके समान ऊंचा है ॥ २८ ॥ प्रलेप शीतल है सूक्ष्म है पीडासे रहित है प्रदेह गीला है घन है गरम है कफवातको नाश करता है ॥ २९ ॥

रोमाभिमुखमादेयौप्रलेपाख्यप्रदेहकौ ॥
वीर्यंसम्यग्विशत्याशुरोमकूपैःशिरामुखैः ॥ ४३० ॥

अर्थ–रोमोंके सन्मुख प्रलेपाख्य वा प्रदेह देने क्योंकि नाडियोंके मुख जो रोमकूप हैं तिन्होंकरकै वीर्य शीघ्र प्रवेश होता है ॥ ४३० ॥

नरात्रौलेपनंकुर्याच्छुष्यमाणंनधारयेत् ॥
शुष्यमाणमुपेक्षेतप्रदेहंपीडनंप्रति ॥ ३१ ॥

अर्थ–रात्रिमें लेपको नहीं करै और सूखता हुआ लेपको नहीं धारै क्योंकि सूखता हुआ प्रलेप पीडा करता है इसकारण त्याग देना ॥ ३१ ॥

तमसापिहितोह्यूष्मारोमकूपमुखेस्थितः ॥
विनालेपेननिर्यातिरात्रौनोलेपयेत्ततः ॥ ३२ ॥

अर्थ–रात्रिमें तमोगुणसे आच्छादित हुआ ऊष्मा रोमकूपोंके मुखोंमें स्थित है लेपकेविना निकसता है इसकारण रात्रिमें लेप नहीं करना ॥ ३२ ॥

रात्रावपिप्रलेपादिविधिःकार्योविचक्षणैः ॥
अपाकिशोथेगंभीरेरक्तश्लेष्मसमुद्भवे ॥ ३३ ॥

अर्थ–जो शोजाका पाक नहीं हो वा रक्तकफसे उपजा व्रण हो तिसपर रात्रिमेंभी वैद्योंनें लेपकी विधि करनी ॥ ३३ ॥

आदौशोथहरोलेपोद्वितीयोरक्तसेचनः ॥
तृतीयश्चोपनाहःस्याच्चतुर्थःपाटनक्रमः ॥ ३४ ॥

अर्थ–व्रणसंबंधी जो शोजा तिसको दूर करनेंकेलिये प्रथम लेप करना रक्त निकासनेंके अर्थ दूसरा लेप करना तीसरें उपनाह देना चौथें पाटनक्रम करना ॥ ३४ ॥

पंचमःशोधनोभूयात्षष्ठोरोपणइष्यते ॥
सप्तमोवर्णकरणोव्रणस्यैतेक्रमामताः ॥ ३५ ॥

अर्थ–शोधनेवास्ते पांचमां लेप देना छठा रोपणवास्ते लेप देना सातमां वरण करनेंको लेप देना व्रणके इतनें क्रम कहे हैं ॥ ३५ ॥

बीजपूरजटाहिंस्रादेवदारुमहौषधम् ॥
रास्नाग्निमंथोलेपोऽयंवातशोथविनाशनः ॥ ३६ ॥

अर्थ–विजोराकी जड बालछड देवदार सोंठ रासना अरनी इनका लेप वातका शोजाकों नाश करता है ॥ ३६ ॥

मधुकंचंदनंमूर्वानलमूलंचपद्मकम् ॥
उशीरंवालकंपद्मंपित्तशोथेप्रलेपनम् ॥ ३७ ॥

अर्थ–मुलहटी लालचंदन मरोडफली नारसलकी जड पद्माक खस नेत्रवाला कमल इन्होंका लेप पित्तका शोजाको नाश करता है ॥ ३७ ॥

कृष्णापुराणपिण्याकंशिग्रुत्वक्सिकताशिवा ॥
मूत्रपिष्टःसुखोष्णोऽयंप्रदेहःश्लेष्मशोथहृत् ॥ ३८ ॥

अर्थ-पीपल पुरानाखल सहोंजनाकी छाल खांड हरडै इनको गोमूत्रमें पीस अल्प गरम कर किया लेप कफका शोजाको नाश करता है ॥ ३८ ॥

द्वेनिशेचंदनेद्वेचशिवादूर्वापुनर्नवा ॥ उशीरंपद्मकंलोध्रंगैरिकंचरसांजनम् ॥ ३९ ॥ आगंतुकेरक्तजेचशोथेकुर्यात्प्रलेपनम् ॥

अर्थ-हलदी दारुहलदी सुपेदचंदन लालचंदन हरडै दूब साठी खस पद्माक लोध गेरू रसोत ॥ ३९ ॥ इनका लेप आगंतुक और रक्तसे उपजा शोजापर करना ॥

शणमूलकशिग्रूणांफलानितिलसर्षपाः ॥ ४४० ॥
सक्तवःकिण्वमतसीप्रदेहःपाचनःस्मृतः ॥

अर्थ-शणके वीज मूलीके वीज सहोंजनाके वीज तिल सिरसम ॥ ४४० ॥ जव लोहाका मैल अथवा मदिरासे वचा द्रव्य अलसीके वीज इन्होंका लेप व्रणको पकानेवास्तै करै यह प्रदेहसंज्ञक लेप है ॥

दन्तीचित्रकमूलत्वक्स्नुह्यर्कपयसीगुडः ॥ ४१ ॥
भल्लातकश्चकासीसंसैंधवंदारणेस्मृतः ॥

अर्थ-जमालगोटाकी जड चित्रककी जड थोहरका दूध आकका दूध गुड ॥ ४१ ॥ भिलावा हीराकसीस सेंधानमक इन्होंका लेप व्रणको फोडता है ॥

चिरबिल्वोग्निकोदंतीचित्रकोहयमारकः ॥ ४२ ॥
कपोतकंकगृध्राणांमलंलेपेनदारणम् ॥

अर्थ-करंजुआके वीज भिलावा जमालगोटाकी जड चित्रक कनेरकी जड ॥ ४२ ॥ कपोतपक्षी कंकपक्षी गीधपक्षी इन्होंका मल ये सब बराबर भाग ले लेप करनेसे व्रण फूटता है ॥

स्वर्जिकायावशूकाढ्याःक्षारालेपेनदारणाः ॥ ४३ ॥
हेमक्षीर्यास्तथालेपोव्रणेपरमदारणः ॥

अर्थ-साजीखार जवखार इनका लेप व्रणको फोडनेविषै करना ॥ ४३ ॥ चोकका लेप व्रण अर्थात् घावको फोडनेमें उत्तम है ॥

तिलसैंधवयष्ट्याह्वनिंबपत्रनिशायुगैः ॥ ४४ ॥
त्रिवृद्घृतयुतैःपिष्टैःप्रलेपोव्रणशोधनः ॥

अर्थ–तिल सेंधानमक मुलहटी नींबके पत्ते हलदी दारुहलदी ॥ ४४ ॥ निशोत इनकों घृतमें पीस किया लेप घावकों शोधता है ॥

निंबपत्रघृतक्षौद्रदार्वीमधुकसंयुतः ॥ ४५ ॥
तिलैश्चसहसंयुक्तोलेपःशोधनरोपणः ॥

अर्थ–नींबके पत्ते घृत शहत दारुहलदी मुलहटी ॥ ४५ ॥ तिल इनका लेप घावकों शोधता है और अंकुर लाता है ॥

करंजारिष्टनिर्गुंडीलेपोहन्याद्व्रणकृमीन् ॥ ४६ ॥
लशुनस्याथवालेपोहिंगुनिंबभवोऽथवा ॥

अर्थ–करंजुआ नींब संभालू इनका लेप घावके कीडोंको नाश करता है॥४६॥ वा लहशनका लेप अथवा हींग और नींबके पत्तोंका लेप घावके कीडोंको नाश करता है ॥

निंबपत्रंतिलादंतीत्रिवृत्सैंधवमाक्षिकम् ॥ ४७ ॥
दुष्टव्रणप्रशमनोलेपःशोधनरोपणः ॥

अर्थ–नींबके पत्ते तिल जमालगोटाकी जड निशोत सेंधानमक इनकों शहतमें मिला ॥४७॥ किया लेप दुष्ट घावकों शांत करता है शोधता है और रोपता है ॥

मदनस्यफलंतिक्तांपिष्ट्वाकांजिकवारिणा ॥ ४८ ॥
कोष्णंकुर्यान्नाभिलेपंशूलशांतिर्भवेत्ततः ॥

अर्थ–मैनफल कुटकी इनको कांजीमें पीस ॥ ४८ ॥ अल्प गरम कर नाभीपर किया लेप शूलकी शांति करता है ॥

शिग्रुशेफालिकैरंडयवगोधूममुद्गकैः ॥ ४९ ॥
सुखोष्णोबहलोलेपःप्रयोज्योवातविद्रधौ ॥

अर्थ–सहोंजनाकी छाल संभालूके पत्ते अरंडकी जड जव गेहूं मूंग ॥ ४९ ॥ इनको पीस अल्प गरम कर किया गैहरा लेप वातकी विद्रधीमें हित है ॥

पैत्तिकेसर्पिषालाजामधुकैःशर्करान्वितैः ॥ ४५० ॥
प्रलिंपेत्क्षीरपिष्टैर्वापयस्योशीरचंदनैः ॥

अर्थ–धानकी खील मुलहटी खांड इनको घृतसें ॥४५०॥ पीस अथवा क्षीरकाकोली खस चंदन इनकों दूधमें पीस किया लेप पित्तकी विद्रधीमें हित है ॥

इष्टिकासिकतालोहकिट्टंगोशकृतासह ॥ ५१ ॥
सुखोष्णश्चप्रदेहोऽयंमूत्रैःस्याच्छ्लेष्मविद्रधौ ॥

अर्थ–इंट वालूरेत लोहका मैल गौका गोवर ॥ ५१ ॥ इनकों गोमूत्रमें पीस अल्प गरम कर किया प्रदेहसंज्ञक लेप कफकी विद्रधीमें हित है ॥

रक्तचंदनमंजिष्ठानिशामधुकगैरिकैः ॥ ५२ ॥
क्षीरेणविद्रधौलेपोरक्तागंतुनिमित्तजे ॥

अर्थ–लालचंदन मजीठ हलदी मुलहटी गेरू ॥ ५२ ॥ इनकों दूधमें पीस किया लेप रक्त दुष्ट होकै उपजी वा अभिघातसे उपजी विद्रधीमें हित है ॥

निचुलःशिग्रुबीजानिदशमूलमथापिवा ॥ ५३ ॥
प्रदेहोवातगंडेषुसुखोष्णःसंप्रदीयते ॥

अर्थ–जलवेत सहोंजनाके वीज इन दोनोंको पानीमें अल्प गरम कर अथवा दशमूलकों पानीमें पीस ॥ ५३ ॥ अल्प गरम करे किया प्रदेहसंज्ञक लेप वातके गलगंडमें हित है ॥

देवदारुविशालाचकफगंडेप्रदेहकः ॥ ५४ ॥

अर्थ–देवदार इंद्रायण इनका प्रदेहसंज्ञक लेप कफके गलगंडमें हित है ॥५४॥

सर्षपारिष्टपत्राणिदग्ध्वाभल्लातकैःसह ॥
छागमूत्रेणसंपिष्टमपचीघ्नंप्रलेपनम् ॥ ५५ ॥

अर्थ–सिरसम नींबके पत्ते इनकों जलाकै वकराके मूत्रसें पीसकर किया लेप अपचीरोगको नाश करता है ॥ ५५ ॥

सर्षपाःशिग्रुबीजानिशणबीजातसीयवान् ॥ मूलकस्यचबी-जानितक्रेणाम्लेनपेषयेत् ॥ ५६ ॥ गंडमालार्बुदंगंडंलेपेना-नेनशाम्यति ॥

अर्थ–सिरसम सहोंजनाके बीज शणके वीज अलसीके बीज मूलीके बीज इनको तक्रमें पीस ॥ ५६ ॥ किया लेप गंडमाला अर्बुदरोग गलगंड इनकों नाश करता है ॥

तक्षयित्वाक्षुरेणांगंकेवलानिलपीडितम् ॥ ५७ ॥ तत्रप्रदे-

हंदद्याच्चपिष्टंगुंजाफलैःकृतं ॥ तेनापबाहुजापीडाविश्वाची गृध्रसीतथा ॥ ५८ ॥ अन्यापिवातजापीडाप्रशमंयातिवेगतः॥

अर्थ-केवल वायुसे पीडित हुआ मनुष्यके अंगको उशतरासे साफ कर न्वा-लोंको दूर कर ॥ ५७ ॥ तहां प्रदेहसंज्ञक लेपको चिरमटीके कल्कसें करै तिस करकै अपबाहुककी पीडा विश्वाची वात गृध्रसी ॥ ५८ ॥ अन्य सब वातकी पीडा वेगसें शांत होती है ॥

धत्तूरैरंडनिर्गुंडीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः ॥ ५९ ॥
प्रलेपःश्लीपदंहंतिचिरोत्थमपिदारुणम् ॥

अर्थ-धत्तूरा अरंड संभालू साठी सहोंजना सिरसम ॥ ५९ ॥ इनका लेप वहुत दिनोंसे उपजा और दारुणरूपी श्लीपदरोगको नाश करता है ॥

अजाजीहपुषाःकुष्टमेरंडबदरान्वितम् ॥ ४६० ॥
कांजिकेनतुसंपिष्टंकुरंडघ्नप्रलेपनम् ॥

अर्थ-जीरा हाऊवेर कूठ अरंडकी जड वडवेरकी छाल ॥ ४६० ॥ इनकों कांजीसे पीस किया लेप अंडवृद्धिरोगकों दूर करता है ॥

करवीरस्यमूलेनपरिपिष्टेनवारिणा ॥ ६१ ॥
असाध्यापिजरत्याशुलिंगोत्थारुक्प्रलेपनात् ॥

अर्थ-कनेरकी जडकों पानीसे पीस ॥ ६१ ॥ किया लेप असाध्यरूपी लिंगकी पीडाकोभी नाश करता है ॥

दहेत्कटाहेत्रिफलांसामषीमधुसंयुता ॥ ६२ ॥
उपदंशेप्रलेपोयंसद्योरोपयतिव्रणम् ॥

अर्थ-त्रिफलाको कढाईमें जलाकै स्याही वनाय तिसमें शहत मिला ॥ ६२ ॥ किया लेप उपदंशरोगमें शीघ्र घावको भरता हैं ॥

रसांजनंशिरीषेणपथ्ययाचसमन्वितम् ॥ ६३ ॥
सक्षौद्रंलेपनंयोज्यमुपदंशगदापहम् ॥

अर्थ-रसोत शिरस वाल हरडै ॥ ६३ ॥ इन्होंको पीस शहतसे संयुक्त कर किया लेप उपदंशरोगको नाश करता है ॥

अग्निदग्धेतुगाक्षीरीप्लक्षचंदनगैरिकैः ॥ ६४ ॥ सामृतैःस-

पिंषास्निग्धैरालेपंकारयेद्भिषक् ॥ तंदुलीयकषायैर्वाघृतमिश्रैः प्रलेपयेत् ॥ ६५ ॥

अर्थ-वंशलोचन पिलषन चंदन गेरू ॥ ६४ ॥ गिलोय इनकों घृतमें मिला लेप करै अथवा चौलाईके काढेमें घृत मिला तिसका लेप करै तो अग्निसे जला-हुवामें सुख होता है ॥ ६५ ॥

यवान्दग्ध्वामषीकार्यातैलेनयुतयातया ॥
दद्यात्सर्वाग्निदग्धेषुप्रलेपोव्रणरोपणः ॥ ६६ ॥

अर्थ-जवोंकों जलाकै स्याही बना तेलमें मिला कर सब प्रकारके अग्निसें जले-हुवोंपर किया लेप घावकों भरता है ॥ ६६ ॥

पलाशोदुंबरफलैस्तिलतैलसमन्वितैः ॥
मधुनायोनिमालिंपेद्गाढीकरणमुत्तमम् ॥ ६७ ॥

अर्थ-पलाशके पत्ते गूलरके फल तिलोंका तेल इन्होंमें शहत मिला योनिपर किया लेप योनिको दृढ करता है ॥ ६७ ॥

माकंदफलसंयुक्तमधुकर्पूरलेपनात् ॥
गतेपियौवनेस्त्रीणांयोनिर्गाढातिजायते ॥ ६८ ॥

अर्थ-कोमल आंवा कपूर इनका चूरण कर शहतमें मिला किया लेपसें यौ-वन अवस्थाके बीतनें पीछेभी योनि अत्यंत करडी हो जाती है ॥ ६८ ॥

मरीचंसैंधवंकृष्णातगरंबृहतीफलम् ॥ अपामार्गस्तिलाः कुष्टंयवामाषाश्वसर्षपाः ॥ ६९ ॥ अश्वगंधांचतच्चूर्णंमधुना सहयोजयेत् ॥ अस्यसंततलेपेनमर्दनाच्चप्रजायते ॥४७०॥ लिंगवृद्धिस्तनोत्सेधःसंहतिर्भुजकर्णयोः ॥

अर्थ-मिरच सेंधानमक पीपल तगर वडी कटेलीका फल ऊंगा तिल कूठ जव उडद सिरसम ॥ ६९ ॥ आसगंध इन्होंका चूरण बना तिसमें शहत मिला निरं-तर लेप वा मालिस करनेसें ॥ ४७० ॥ लिंगकी वृद्धि चूंची हाथ कान इनकी वृद्धि होती है ॥

सिताश्वगंधासिंधूत्थाछागक्षीरैर्घृतंपचेत् ॥ ७१ ॥
तल्लेपान्मर्दनाल्लिंगवृद्धिःसंजायतेपरा ॥

अर्थ–सुपेद फूलोंकी आसगंध सेंधानमक इन दोनों ओषधोंके कल्कमें चौगुना घृत औ घृतसे चौगुना बकरीका दूध मिला घृतको पकावै ॥ ७१ ॥ तिसकी मालिस करनेसें लिंगकी वृद्धि होती है ॥

इंद्रवारुणिकापत्ररसैःसूतंविमर्दयेत् ॥ ७२ ॥ रक्तस्यकरवीरस्यकाष्ठेनचमुहुर्मुहुः ॥ तल्लिप्तलिंगसंयोगाद्योनिद्रावोऽभिजायते ॥ ७३ ॥

अर्थ–इंद्रायणके पत्तोंका रससे पाराको मर्दित करै ॥ ७२ ॥ परंतु लाल कनेरका सोटासें वारंवार मर्दित करै पीछे इस लेपकों लिंगपर लगानेसें योनि झिरनें लगजाती है ॥ ७३ ॥

तांबूलपत्रचूर्णंतुचूर्णंकुष्ठशिवाभवम् ॥
वारिणालेपनंकुर्याद्गात्रदौर्गंध्यनाशनम् ॥ ७४ ॥

अर्थ–नागरपान कूठ हरडै इन तीनोंका चूरण कर पानीसे लेप करनेमें शरीरकी दुर्गंध दूर होती है ॥ ७४ ॥

कुलित्थसक्तवःकुष्टंमांसीचंदनजंरजः ॥ सक्तवश्चणकस्यैव त्वक्चैवैकत्रकारयेत् ॥ ७५ ॥ स्वेददौर्गंध्यनाशश्चजायतेस्यावधूलनात् ॥

अर्थ–कुलथीकी पीठी कूठ बालछड चंदनका चूरा चनाकी पीठी चनोंका फोलर इन सबकों मिलाकै किया ॥ ७५ ॥ अवधूलन पसीना और दुर्गंधिकों दूर करता है ॥

वचासौवर्चलंकुष्टंरजन्यौमरिचानिच ॥ ७६ ॥
एतल्लेपप्रभावेनवशीकरणमुत्तमम् ॥

अर्थ–बच संचलखार कूठ हलदी दारुहलदी मिरच ॥ ७६ ॥ ये सब ओषध समान भाग ले जलमे पीस शरीरकों लेप करनेसें लोक वश होते हैं ॥

अभ्यंगःपरिषेकश्चपिचुर्बस्तिरितिक्रमात् ॥ ७७ ॥
मूर्धतैलंचतुर्धास्याद्बलवच्चयथोत्तरम् ॥

अर्थ–अभ्यंग परिषेक पिचु बस्ति इस क्रमसे ॥ ७७ ॥ शिरमें तेल देना चार प्रकारका है इन्होंमें उत्तरउत्तर क्रमसें बलवान् है जैसे अभ्यंगसे परिषेक ॥

त्रयोऽभ्यंगादयःपूर्वेप्रसिद्धाःसर्वतःस्मृताः ॥ ७८ ॥
शिरोबस्तिविधिश्चात्रप्रोच्यतेसूज्ञसंमतः ॥

अर्थ–अभ्यंगआदि तीन पहले प्रसिद्ध हैं और सब प्रकारसे कहे है ॥ ७८ ॥ वैद्यजनोंकरकै मानी हुई शिरोबस्तिविधि यहां कही जाती है ॥

शिरोबस्तिश्चर्मणःस्याद्विमुखोद्वादशांगुलः ॥ ७९ ॥ शिरः-
प्रमाणंतंबध्वामस्तकेमाषपिष्टकैः ॥ संधिरोधंविधायादौस्ने-
हैःकोष्णैःप्रपूरयेत् ॥ ४८० ॥

अर्थ–माथाके ऊपर धारण करनेके योग्य जो बस्ति तिसकों शिरोबस्ति कहते है वह चमडाकी बनानी तिसका आकार बारह अंगुल प्रमाण ऊंचा ॥ ७९ ॥ टोपीकी तरह कर शिरके प्रमाण तिसको मस्तकपर बांध उडदकी पीठीसें संधियोंकों रोक प्रथम अल्प गरम किया तेल वा घृतसे पूरित करै ॥ ४८० ॥

तावद्धार्यस्तुयावत्स्यान्नासानेत्रमुखस्रुतिः ॥
वेदनोपशमोवापिमात्राणांवासहस्रकम् ॥ ८१ ॥

अर्थ–नासिका नेत्र मुख इन्होंसें स्राव निकलनेतक वा मस्तककी पीडा दूर होनेतक एक संहस्र मात्राकालपर्यंत मस्तकमें बस्ति धारण करनी ॥ ८१ ॥

विनाभोजनमेवात्रशिरोबस्तिःप्रशस्यते ॥
प्रयोज्यस्तुशिरोबस्तिःपंचसप्ताहमेववा ॥ ८२ ॥

अर्थ–भोजन करनेके विनाही शिरोबस्ति श्रेष्ठ है पांचदिन अथवा सातदिन शिरोबस्तिकों प्रयुक्त करै ॥ ८२ ॥

विमोच्यशिरसोबस्तिंगृह्णीयाच्चसमंततः ॥
ऊर्ध्वकायंततःकोष्णनीरैःस्नानंसमाचरेत् ॥ ८३ ॥

अर्थ–शिरोबस्तिको खोलकै सब तर्फसे ग्रहण करै पीछे ऊपरके तर्फ शरीरवालाकों अल्प गरम पानीसे स्नान करावै ॥ ८३ ॥

अनेनदुर्जयारोगावातजायांतिसंक्षयम् ॥
शिरःकंपादयस्तेनसर्वकालेषुयुज्यते ॥ ८४ ॥

अर्थ–इस शिरोबस्तिकरकै शिरका कंप आदि वातके रोग नष्ट होते हैं तिसकरकै सब कालोंमें युक्त करनी ॥ ८४ ॥

स्वेदयेत्कर्णदेशंतुकिंचिन्नुःपार्श्वशायिनः ॥
मूत्रैःस्नेहैरसैःकोष्णैस्ततःकर्णप्रपूरयेत् ॥ ८५ ॥

अर्थ—कछुक करवट शयन करता हुआ मनुष्यके कर्णदेशको गोमूत्र आदि स्नेह रस इन्होंको अल्प गरम कर स्वेदित करै पीछे कानको पूरित करै ॥ ८५ ॥

कर्णंतुपूरितंरक्षेच्छतंपंचशतानिवा ॥
सहस्रंवापिमात्राणांश्रोत्रकंठशिरोगदे ॥ ८६ ॥

अर्थ—पूरित किये कानको पानसो ५०० मात्राकालपर्यंत रक्षित करै अथवा कान कंठ शिर इन्होंमें रोग हो तो हजार मात्रा कालपर्यंत रक्षित करता रहै ॥८६॥

स्वजानुनःकरावर्तंकुर्याच्छोटिकयायुतं ॥
एषामात्राभवेदेकासर्वत्रैवैषनिश्चयः ॥ ८७ ॥

अर्थ—अपना गोडाके चारों तर्फ चुटकी बजाकै हाथको फेरै यह एक मात्रा है सब जगह यही निश्चय है ॥ ८७ ॥

रसाद्यैःपूरणंकर्णेभोजनात्प्राक्प्रशस्यते ॥
तैलाद्यैःपूरणंकर्णेभास्करेऽस्तमुपागते ॥ ८८ ॥

अर्थ—रसआदिसें कानको पूरित करना भोजनसे पहले श्रेष्ठ है तेलआदिसें कानको पूरित करना सूर्य अस्त होजावे तब श्रेष्ठ है ॥ ८८ ॥

पीतार्कपत्रमाज्येनालिप्तमग्नौप्रतापयेत् ॥
तद्रसःश्रवणेक्षिप्तःकर्णशूलहरःपरः ॥ ८९ ॥

अर्थ—आकका पीला पत्ताको घृतसें चुपड अग्निपर तपावै तिसका रस कानमें घालै तो कानका शूल दूर होता है ॥ ८९ ॥

कर्णशूलातुरेकोष्णंबस्तमूत्रंससैंधवम् ॥
निक्षिपेत्तेनशाम्यंतिशूलपाकादिकारुजः ॥ ४९० ॥

अर्थ—कर्णशूलसे पीडित हुआ रोगीके कानमें बकराका मूत्रविषै सेंधानमक मिला अल्प गरम कर घालै तिस्सें शूलपाकआदि पीडा शांत होती है ॥४९० ॥

शृंगवेरंचमधुकंमधुसैंधवमामलम् ॥
तिलपर्णीरसस्तैलंटंकणंनिंबुकद्रवम् ॥ ९१ ॥
कदुष्णंकर्णयोर्देयमेतद्वावेदनापहम् ॥

अर्थ—अदरकका रस मुलहटी शहत सैंधानमक आंवला तिलपर्णीका रस तेल सैंधानमक सुहागा नींबूका रस ॥ ९१ ॥ इनकों मिला और कछुक गरम कर कानोंमें घालनेंसे कानकी पीडा दूर होती है ॥

कपित्थमातुलुंगाम्लशृंगवेररसैःशुभैः ॥ ९२ ॥
सुखोष्णैःपूरयेत्कर्णंकर्णशूलोपशांतये ॥

अर्थ—कैथके पत्तोंका रस विजोराका रस अमलवेतका रस अदरकका रस ॥ ९२ ॥ इन्होंको मिला और अल्प गरम कर कानमें घालै तो कर्णशूलकी शांति होती है ॥

अर्कांकुरानाम्लपिष्टांस्तैलाक्तांल्लवणान्वितान् ॥ ९३ ॥ संनिदध्यात्स्नुहीकांडेकोरितेतच्छदावृते ॥ पुटपाकक्रमंकृत्वा रसैस्तच्चप्रपूरयेत् ॥ ९४ ॥ सुखोष्णैस्तेनशाम्यंतिकर्णपीडाः सुदारुणाः ॥

अर्थ—आकके अंकुरोंकों नींबूके रसमें पीस और तेलसे भिगोय और नमकसे युक्त कर ॥ ९३ ॥ थोहरके कांडमें भर तिसके सब तर्फ थोहरके पत्ते लपेट पुटपाकका क्रम करकै तिसका रस निकास अल्प गरम कर कानमें घालै ॥ ९४ ॥ तिसकरकै कानकी उग्रपीडाभी शांत हो जाती है ॥

महतःपंचमूलस्यकांडान्यष्टांगुलानितु ॥ ९५ ॥ क्षौमेणावेष्ट्यसंसिच्यतैलेनादीपयेत्ततः ॥ यत्तैलंच्यवतेतेभ्यःसुखोष्णंतेनपूरयेत् ॥ ९६ ॥ ज्ञेयंतद्दीपिकातैलंसद्योगृह्णातिवेदनाम् ॥ एवंस्याद्दीपिकातैलंकुष्ठेदेवतरौतथा ॥ ९७ ॥

अर्थ—बडा पंचमूलके आठ अंगुल प्रमाण कांड ले ॥ ९५ ॥ तिसकों रेशमी कपडासे लपेट तेलमें भिगोय अग्निसे जलावै जो तेल गिरै वह अल्प गरमरूपी कानमें घालना ॥ ९६ ॥ यह दीपिका तेल पीडाकों शीघ्र हरता है ऐसेही कूठ और देवदारसेभी बनाया दीपिका तेल कानकी पीडाकों हरता है ॥ ९७ ॥

तैलंस्योनाकमूलेनमंदेऽग्नौपरिपाचितम् ॥
हरेदाशुत्रिदोषोत्थंकर्णशूलंप्रपूरणात् ॥ ९८ ॥

अर्थ—करीलकी जडके तेलकों मंद अग्निविषैं पकावै यह कानमें पूरनेसे त्रिदोषकरकै उपजा कर्णशूल नष्ट होता है ॥ ९८ ॥

कल्कक्काथेनयष्ट्याह्वकाकोलीमाषधान्यकैः ॥
सूकरस्यवसांपक्त्वाकर्णनादार्तिहारिणी ॥ ९९ ॥

अर्थ–मुलहटी काकोली अभावमें आसगंध उडद धनियां इन्होंका काढा बना तिसमें इतनी ओषधोंका कल्क घाल तिसविषैं सूरकी वसाकों पकाय वह कानमें घालनेसे कर्णनादरोगकों हरती है ॥ ९९ ॥

सर्जिकामूलकंशुष्कंहिंगुकृष्णासमन्वितम् ॥ शतपुष्पाचतै-स्तैलंपक्वंसूक्तचतुर्गुणम् ॥ ५०० ॥ प्रणादंशूलबाधिर्यंस्रावं कर्णस्यनाशयेत् ॥

अर्थ–साजीखार सूखीमूली हींग पीपल सौंफ इन्होंका कल्क और चौगुना सूक्तमें तेलकों पकावै ॥ ५०० ॥ यह कर्णनाद कर्णशूल बहरापना रादआदिका झिरना इनकों नाश करता है ॥

अपामार्गक्षारजलेतत्क्षारंकल्कितंक्षिपेत् ॥ १ ॥
तेनपक्वंजयेत्तैलंबाधिर्यंकर्णनादकम् ॥

अर्थ–ऊंगाका खारके पानीमें ऊंगाकेखारका कल्क मिलावै ॥ १ ॥ तिसकरकै पकाया तेल बहिरापनको वा कर्णनादको नाश करता है ॥

शंबूकस्यतुमांसेनपचेत्तैलंतुसार्षपम् ॥ २ ॥
तस्यपूरणमात्रेणकर्णनाडीप्रशाम्यति ॥

अर्थ–शंखआदिमें रहनेवाले जीवका मांसकरकै सिरसमके तेलको पकावै ॥२॥ तिसको कानमें पूरनेसे कर्णनाडीरोग शांत होता है ॥

चूर्णंपंचकषायाणांकपित्थरसमेवच ॥ ३ ॥
कर्णस्रावेप्रशंसंतिपूरणंमधुनासह ॥

अर्थ–पंचकषायसंज्ञक पांच ओषधोंका रस और कैथका रसकों ॥ ३ ॥ शहतमें मिला कानमें घालनेसे कर्णस्राव दूर होता है ॥

तिंदुकान्यभयालोध्रःसमंगाचामलक्यपि ॥ ४ ॥
ज्ञेयाःपंचकषायास्तुकर्मण्यस्मिन्भिषग्वरैः ॥

अर्थ–तेंदू हरडै लोध मजीठ आंवला ॥ ४ ॥ ये पंचकषाय संज्ञकवृक्ष इस कर्ममें वैद्योंनें जानने ॥

सर्जिकाचूर्णसंयुक्तंबीजपूररसंक्षिपेत् ॥ ५ ॥
कर्णस्त्रावरुजोदाहाःप्रणश्यंतिनसंशयः ॥

अर्थ—साजीका खारके चूरणमें विजोराका रस मिलावै ॥ ५ ॥ तिसको कानमें घालनेसे कर्णस्रावकी पीडा नष्ट होती है इसमें संशय नहीं ॥

आम्रजंबूप्रवालानिमधूकस्यवटस्यच ॥ ६ ॥
एभिःसंसाधितंतैलंपूतिकर्णोपशांतिकृत् ॥

अर्थ—आंब जामन महुवा वड इन्होंके अंकुर ले ॥ ६ ॥ इन्होंसे सिद्ध किया तैल पूतिकर्णकों शांत करता है ॥

पूरणंहरितालेनगवांमूत्रयुतेनच ॥ ७ ॥
अथवासार्षपंतैलंकर्णकीटहरंपरम् ॥

अर्थ—हरताल गोमूत्रमें पीस कानमें डालना ॥ ७ ॥ वा शिरसमको तेल कानमे डालना इससें कर्णसंबंधी कृमि नष्ट हो जाते हैं ॥

स्वरसंशिग्रुमूलस्यसूर्यावर्त्तरसंतथा ॥ ८ ॥ त्र्यूषणंचूर्णितं चैवकपिकच्छूरसंतथा ॥ कृत्वैकत्रक्षिपेत्कर्णेकर्णकीटहरं परम् ॥ ९ ॥

अर्थ—सहोंजनाकी छालका रस सूर्यफूलका रस ॥ ८ ॥ सोंठ मिरच पीपल इन्होंका चूरण वा कोंचके जडका रस इन सबकों मिला कानमें घालै तो कानके कीडे नाश होते हैं ॥ ९ ॥

सद्योमद्यंनिहंत्याशुकर्णकीटंसुदारुणम् ॥
सद्योहिंग्रुनिहंत्याशुकर्णकीटंसुदारणम् ॥ ५१० ॥

अर्थ—मदिरा और हींग दारुणरूप कानके कीडेको शीघ्र नाश करते है ॥५१०॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे लेपादिविधिर्नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ द्वादशोऽध्यायः ।
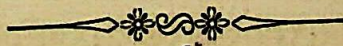
शोणितंस्त्रावयेज्जंतोरामयंप्रसमीक्ष्यच ॥
प्रस्थंप्रस्थार्धकंवापिप्रस्थार्धार्धमथापिवा ॥ ११ ॥

अर्थ-मनुष्यके शरीरमें रक्तजन्य कुष्ठआदि रोगको देखकर एक प्रस्थ अथवा आधा प्रस्थ अथवा चौथाई प्रस्थभर रक्त निकसावै ॥ ११ ॥

शरत्कालेस्वभावेनकुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः ॥
त्वग्दोषग्रंथिशोथाद्यानस्यूरक्तस्रुतेर्यतः ॥ १२ ॥

अर्थ-शरदऋतुमें रक्त काढनेसें त्वचासंबंधी दोष व्रणआदि ग्रंथि वा शोजा इनआदि दूर होते है ॥ १२ ॥

मधुरंवर्णतोरक्तमशीतोष्णंतथागुरु ॥
शोणितंस्निग्धविस्रंस्याद्विदाहश्चास्यपित्तवत् ॥ १३ ॥

अर्थ-रक्तरसकरकै मधुर है वर्णसे लाल है मंद गरम है भारी है चिकना है कचा गंधवाला है रक्तकी दाहशक्ति पित्तसरीखी है ॥ १३ ॥

विस्रताद्रवतारागश्चलनंविलयस्तथा ॥
भूम्यादिपंचभूतानामेतेरक्तगुणाःस्मृताः ॥ १४ ॥

अर्थ-आमगंधपना पृथिवीका गुण द्रवता जलका गुण रक्तपना अग्निका गुण चलन वायुका गुण लीनता अकाशका गुण इस प्रकार पृथिवीआदि पंचमहाभूतोंके पांच गुण रक्तमें कहे हैं ॥ १४ ॥

रक्तेदुष्टेवेदनास्यात्पाकोदाहश्चजायते ॥
रक्तमंडलताकंडूःशोथश्चपिटिकोद्गमः ॥ १५ ॥

अर्थ-रक्त दुष्ट होनेमें पीडा पाक दाह लालमंडल खाज शोजा पीडिकाओंकी उत्पत्ति ये उपजते हैं ॥ १५ ॥

वृद्धेरक्तांगनेत्रत्वंशिराणांपूरणंतथा ॥
गात्राणांगौरवंनिद्रामदोदाहश्चजायते ॥ १६ ॥

अर्थ-रक्तकी वृद्धिमें शरीर वा नेत्रोंका लाल वर्ण होना शिराओंका पूरण अंगोंका भारीपन नींद मद दाह ये उपजते हैं ॥ १६ ॥

क्षीणेऽम्लमधुराकांक्षामूर्च्छाचत्वचिरूक्षता ॥
शैथिल्यंचशिराणांस्याद्वाताद्उन्मार्गगामिता ॥ १७ ॥

अर्थ-रक्तके क्षीणपनेमें खट्टा वा मधुर पदार्थकी इच्छा मूर्च्छा त्वचामें रूखापन नाडियोंका शिथिलपना और वायुका ऊर्ध्वमार्गमें गमन ये होते हैं ॥ १७ ॥

अरुणंफेनिलंरूक्षंपरुषंतनुशीघ्रगम् ॥
अस्कंदिसूचिनिस्तोदंरक्तंस्याद्वातदूषितम् ॥ १८ ॥

अर्थ-लाल हो झागोंवाला हो रूषा हो करडा हो मिहिन हो शीघ्र गमन करनेवाला हो पतला हो सूई लगनेसरीखी पीडा देता हो ऐसा रक्त वातसे दूषित होता है ॥ १८ ॥

पित्तेनपीतंहरितंनीलश्यावंचविस्रकम् ॥
अस्कंद्युष्णंमक्षिकाणांपिपीलीनामनिष्टकम् ॥ १९ ॥

अर्थ-पीला हो हराहो नीला वा काला हो कचा गंधवाला हो पतला हो गरम हो माखी और कीडियोंको वांछित नही हो ऐसा रक्त पित्तसें दूषित जानना १९

शीतंचबहलंस्निग्धंगैरिकोदकसन्निभम् ॥
मांसपेशीप्रभंस्कंदिमंदगंकफदूषितम् ॥ ५२० ॥

अर्थ-स्पर्श करनेमें बहुत शीतल हो चिकना हो गेरूका पानीसरीखा हो मांसकी बारीक ग्रंथिसरीखा हो पतला नही हो मंद चलै ऐसा रक्त कफसें दूषित होता है ॥ ५२० ॥

द्विदोषदुष्टंसंसृष्टंत्रिदुष्टंपूतिगंधकम् ॥
सर्वलक्षणसंयुक्तंकांजिकाभंचजायते ॥ २१ ॥

अर्थ-दो दोषोंके लक्षणोंसे मिला हुआ रक्त दो दोषों करकै दूषित होता है कचा गंधवाला हो सब दोषोंके लक्षणोंसें संयुक्त हो और कांजीके समान कांतीवाला हो ऐसा रक्त तीन दोषोंसे दूषित होता है ॥ २१ ॥

विषदुष्टंभवेच्छ्यावंनासिकोन्मार्गगंतथा ॥
विस्रंकांजिकसंकाशंसर्वकुष्ठकरंबहु ॥ २२ ॥

अर्थ-कृष्णवर्ण हो ऊर्ध्वगामी होकै नाकसे पडै कचा गंधवाला हो कांजीकेसमान कांतिवाला हो सब प्रकारके कुष्ठको करता हो और बहुत हो ऐसा रक्तविषसें दूषित होता है ॥ २२ ॥

इंद्रगोपप्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतम् ॥

अर्थ-प्रकृतिमें रहनेवाला और विकारसे वर्जित ऐसा रक्त इंद्रगोपकीडाके समान कांतिवाला होता है ॥

शोथेदाहेंगपाकेचरक्तवर्णेऽसृजःस्रुतौ ॥ २३ ॥ वातरक्तेत-

थाकुष्ठेसपीडेदुर्जयेऽनिले ॥ पाणिरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते ॥ २४ ॥ ग्रंथ्यर्बुदापचीक्षुद्ररोगरक्ताधिमंथिषु ॥ विदारीस्तनरोगेषुगात्राणांसादगौरवे ॥ २५ ॥ रक्ताभिष्यंदतंद्रायांपूतिघ्राणास्यदेहके ॥ यकृत्प्लीहविसर्पेषुविद्रधौपिटिकोद्गमे ॥ २६ ॥ कर्णौष्ठघ्राणवक्त्राणांपाकेदाहेशिरोरुजि ॥ उपदंशेरक्तपित्तेरक्तस्रावःप्रशस्यते ॥ २७ ॥

अर्थ—शोजा दाह अंगपाक शरीरका रक्तपना नासिकाआदिसे रक्तका झिरना ॥ २३ ॥ वातरक्त कुष्ठ पीडासहित दुर्जयवायु हाथरोग श्लीपदरोग विषसें दुष्टरक्त ॥ २४ ॥ ग्रंथि अर्बुद अपची क्षुद्ररोग रक्तका अधिमंथ विदारीरोग स्तनरोग गात्रोंका शिथिलपना वा भारीपना ॥ २५ ॥ रक्तका अभिष्यंद तंद्रा नाक मुख देह ये दुर्गंधसें युक्त होने यकृद्रोग तिल्लीरोग विसर्परोग विद्रधी पिटिका ॥ २६ ॥ कान ओठ नाक मुख इनका पाक दाह शिरकी पीडा उपदंश रक्तपित्त इन्होंमें रक्तका निकासना श्रेष्ठ है ॥ २७ ॥

एषुरोगेषुशृंगैर्वाजलौकालाबुकैरपि ॥
अथवापिशिरामोक्षैःकुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः ॥ २८ ॥

अर्थ—इनरोगोंमें शींगी जोक तूंबी शिरामोक्ष अर्थात् फस्तका खोलना इन्होंमांहसे एककोईसा करकै रक्तको निकासै ॥ २८ ॥

नकुर्वीतशिरामोक्षंकृशस्यातिव्यवायिनः ॥ क्लीबस्यभीरोर्गर्भिण्यासूतिकापांडुरोगिणः ॥ २९ ॥ पंचकर्मविशुद्धस्यपीतस्नेहस्यचार्शसाम् ॥ सर्वांगशोथयुक्तानामुदरश्वासकासिनाम् ॥ ५३० ॥ छर्द्यतीसारयुक्तानामतिस्विन्नतनोरपि ॥ ऊनषोडशवर्षस्यगतसप्ततिकस्यच ॥ ३१ ॥ आघातस्रुतरक्तस्यशिरामोक्षोनशस्यते ॥ एषांचात्ययिकेयोगेजलौकाभिस्रुतिर्हरेत् ॥ ३२ ॥ तथापिविषयुक्तानांशिरामोक्षोऽपिशस्यते ॥

अर्थ—कृशमनुष्य स्त्रीसे अत्यंत भोग करनेवाला हींजडा डरपोक गर्भिणी सूतिका पांडुरोगी ॥ २९ ॥ वमनआदि पांच कर्मोंसें शुद्ध स्नेहको पीये हुयें ववासीरवाला सब अंगोंमें शोजावाला उदररोगी श्वासरोगी खांसीरोगी ॥ ३० ॥ छर्दिरोगी अ-

तिसाररोगी अत्यंत खेदित किया शरीरवाला सोलहवर्षसें कम आयुवाला सत्तर वर्षसें ज्यादह आयुवाला ॥ ३१ ॥ चोट करकै जिसके नाकसे रक्त गिरता हो ऐसा इन मनुष्योंकै शिरामोक्ष अर्थात् फस्त नहीं खोलना इन्होंकै रक्तको निकासेंविना उग्ररोग शांत नहीं होतादीखै तो जोकोंस रक्त निकसाना ॥ ३२ ॥ विषसें युक्त हुये ये पूर्वोक्त मनुष्य होतो फस्त खोलना श्रेष्ठ है ॥

गोशृंगेणजलौकाभिरलाबुभिरपित्रिधा ॥ ३३ ॥ वातपित्तकफैर्दुष्टंशोणितंस्रावयेद्बुधः ॥ द्विदोषाभ्यांतुसंसृष्टंत्रिदोषैरपिदूषितम् ॥ ३४ ॥ शोणितंस्रावयेद्युक्त्याशिरामोक्षैःपदैस्तथा ॥

अर्थ–वायुसे दूषित हुआ रक्तकों गौके सींगसें निकसावै पित्तसे दूषित हुआ रक्तकों जोकोंसे कफसे दूषित हुआ रक्तकों तूंबीसे निकसावै ॥ ३३ ॥ दो दोषोंसे वा तीन दोषोंसे दूषित हुआ रक्तकों ॥ ३४ ॥ युक्तिकरकै शिरामोक्ष वा पाछनासें निकासै ॥

गृह्णातिशोणितंशृंगंदशांगुलमितंबलात् ॥ ३५ ॥ जलौकाहस्तमात्रंचतुंबीचद्वादशांगुलम् ॥ पदमंगुलमात्रेणशिरासर्वांगशोधिनी ॥ ३६ ॥

अर्थ–सींग दशअंगुल प्रमाणके रक्तकों बलसे ग्रहण करता है ॥ ३५ ॥ जोक एक हाथ प्रमाणके रक्तकों ग्रहण करता है तूंबी बारह अंगुल प्रमाणके रक्तकों ग्रहण करती है पछना एक अंगुलके रक्तकों ग्रहण करता है फस्त खोलना सब अंगोंके रक्तकों ग्रहण करता है ॥ ३६ ॥

शीतेनिरन्नेमूर्छाचतंद्राभीतिमदश्रमैः ॥
युतानांनस्रवेद्रक्तंतथाविण्मूत्रसंगिनाम् ॥ ३७ ॥

अर्थ–शीतकालमें लंघन करनेवालाकों मूर्च्छा तंद्रा भय मद परिश्रम इन्होंसे युत हुये मनुष्योंकै वा जिनकै विष्ठा मूत्र नहीं उतरता हो ऐसे मनुष्योंकै रक्तको नहीं निकासै ॥ ३७ ॥

अप्रवर्तिनिरक्तेचकुष्ठचित्रकसैंधवैः ॥
मर्दयेद्व्रणवक्त्रंचतेनसम्यक्प्रवर्तते ॥ ३८ ॥

अर्थ–जो रक्तकी प्रवृत्ति नहीं हो तो कूठ चित्रक सेंधानमक इन्होंकरकै व्रणके मुखकों मलै तिसकरकै रक्त अच्छी तरह प्रवृत्त होता है ॥ ३८ ॥

तस्मान्नशीतेनात्युष्णेनस्विन्नेनातितापिते ॥
पीत्वायवागूंतृप्तस्यशोणितंस्त्रावयेद्बुधः ॥ ३९ ॥

अर्थ–तिसकारणसे शीतकालमें अत्यंत गरमकालमें स्वेदित कियेकै असंततापितको गुडपाणीको पीकै तृप्त हुआकै रक्तकों नहीं निकासै ॥ ३९ ॥

अतिस्विन्नस्योष्णकालेतथैवातिशिराव्यधात् ॥
अतिप्रवर्ततेरक्तंतत्रकुर्यात्प्रतिक्रियाम् ॥ ५४० ॥

अर्थ–असंत स्वेदितको गरमकालमें वा असंत नाडीके वींधनेसे बहुत रक्त प्रवृत्त होता है तहां चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ५४० ॥

अतिप्रवृत्तेरक्तेचलोध्रसर्जरसांजनैः ॥ यवगोधूमचूर्णैर्वाधवधन्वनगैरिकैः ॥ ४१ ॥ सर्पनिर्मोकचूर्णैर्वाभस्मनाक्षौमवस्त्रयोः ॥ मुखंव्रणस्यबद्धाचशीतैश्चोपचरेद्व्रणम् ॥ ४२ ॥ विध्येदूर्ध्वंशिरांतांवादहेत्क्षारेणवाग्निना ॥ व्रणंकषायःसंधत्तेरक्तंस्कंदयतेहिमम् ॥ ४३ ॥ व्रणास्यंपाचयेत्क्षारोदाहः संकोचयेच्छिराम् ॥

अर्थ–असंत प्रवृत्त हुये रक्तमें लोध राल रसोत इनका चूरण अथवा जवका चून गेहूंका चून धाय धमासा गेरू ॥ ४१ ॥ सांपकी कांचली इन्होंके चूरणोंकरकै वा रेशमी अथवा सूती वस्त्रकी राख करकै घावके मुखकों बांध शीतल पदार्थोंसे घावका उपचार करै ॥ ४२ ॥ अथवा ऊपरकी शिराको वींधै अथवा अग्निसे वा खारसे जलावै लोध आदिका चूरणरूपी कषाय घावकों पुष्ट करता है शीतोपचार रक्तको थांभता है ॥ ४३ ॥ खार घावके मुखको पकाता है दाह शिराको संकुचित करता है ॥

वामांडशोथेदक्षस्यकरस्यांगुष्ठमूलजाम् ॥ ४४ ॥ दहेच्छिरांव्यत्ययेतुवामांगुष्ठशिरांदहेत् ॥ शिरादाहप्रभावेनमुष्कशोथःप्रशाम्यति ॥ ४५ ॥ विषूच्यांपाददाहेनजायतेऽग्नेःप्रदीपनम् ॥ संकुचंतियतस्तेनरसश्लेष्मवहाःशिराः ॥ ४६ ॥ यदावृद्धिर्यकृत्प्लीह्नोःशिशोःसंजायतेऽसृजः ॥ तदातत्स्थानदाहेनसंकुचंत्यसृजःशिराः ॥ ४७ ॥

अर्थ–वामाअंडपर शोजा हो तो दाहिना हाथका अंगूठाके मूलकी शिराको ॥ ४४ ॥ दग्ध करै दाहिना अंडपर शोजा हो तो वामां हाथका अंगूठाके जडकी शिराकों दग्ध करै शिराका दाह करनेसे अंडकोशका शोजा शांत होता है॥४५॥ विषूचिकामें पैरके दाह करकै अग्निदीपन होता है और तिसकरकै रस वा कफको वहनेंवाली शिरा संकुचित होता है ॥ ४६ ॥ जब वालककै यकृत् और प्लीहामें रक्तकी वृद्धि होवै तव तिस स्थानकों दग्ध करनेसे रक्तकों वहनेवाली शिरा संकुचित होती है ॥ ४७ ॥

रक्तेदुष्टेऽवशिष्टेऽपिव्याधिर्नैवप्रकुप्यति ॥ अतःस्राव्यंसावशेषंरक्तेनातिक्रमोहितः ॥ ४८ ॥ आंध्यमाक्षेपकंतृष्णांतिमिरं शिरसोरुजम् ॥ पक्षाघातंश्वासकासौहिक्कांदाहंचपांडुताम् ॥ ४९ ॥ कुरुतेविस्रुतंरक्तंमरणंवाकरोतिच ॥

अर्थ–दुष्ट रक्तको काढकै कछुक शेष रहे दुष्ट रक्तमेंभी रोगकोपकों प्राप्त नहीं हो इसकारणसे अवशेषसहित रक्त निकासना रक्तका अतिक्रम नहि हित है अर्थात् अल्प रक्त छोडकै काढना हित है ॥ ४८ ॥ अत्यंत निकासा हुआ रक्त अंधापना आक्षेपक तृषा तिमिरशिरकी पीडा पक्षाघात श्वास खासी हिचकी दाह पांडुपना ॥ ४९ ॥ इनकों अथवा मरणकों करता है ॥

देहस्योत्पत्तिरसृजादेहस्तेनैवधार्यते ॥ ५५० ॥
विनातेनव्रजेज्जीवोरक्षेद्रक्तमतोबुधः ॥

अर्थ–रक्तकरकै देहकी उत्पत्ति है रक्तकरकै देहधारित है ॥ ५५० ॥ रक्तके विना जीव चला जाता है इसकारणसे बुद्धिमान रक्तकी रक्षा करै ॥

शीतोपचारैःकुपितेवातरक्तस्यमारुते ॥ ५१ ॥
कोष्णेनसर्पिषाशोथंसव्यथंपरिषेचयेत् ॥

अर्थ–जिसका रक्त निकासा जावै तिसकै शीतल उपचारोंसे वातरक्तका वायु कुपित होवै ॥ ५१ ॥ तव अल्प गरम किया घृतसें पीडासहित शोजाकों सींचै ॥

क्षीणस्यैणशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः ॥ ५२ ॥
रसःसमुचितःपानेक्षीरंवाषष्टिकाहिताः ॥

अर्थ–रक्त निकासनेंसे क्षीण हुआ मनुष्यकों हिरण शशा मेंढा काला हिरण

बकरा इन्होंके मांसका ॥ ५२ ॥ रस वा गायका दूध पीनेमें हित है वा साठी-चावलोंका खाना हित है ॥

पीडाशांतिर्लघुत्वंचव्याधेरुद्रेकसंक्षयः ॥ ५३ ॥
मनःस्वास्थ्यंभवेच्चिह्नंसम्यग्विस्राविते‌ऽसृजि ॥

अर्थ—पीडाका नाश शरीरका हलकापन रोगके उत्कर्षका अच्छीतरह नाश ॥ ५३ ॥ मनका स्वस्थपना ये लक्षण अच्छीतरह निकासे हुये रक्तमें होते हैं ॥

व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्नानप्रवातकान् ॥ ५४ ॥ एकाशनंदिवानिद्रांक्षाराम्लकटुभोजनम् ॥ शोकंवादमजीर्णंचत्यजेदाबलदर्शनात् ॥ ५५५ ॥

अर्थ—कसरत स्त्रीसंग क्रोध शीतलपानीसें स्नान वायुका लगना ॥ ५४ ॥ एक वार भोजन दिनमें शयन करना खारा खट्टा चर्चराभोजन शोक वाद अजीर्ण इनको रक्त निकसानेंवाला मनुष्य बल होतेंपर्यंत त्यागै ॥ ५५५ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे रक्तमोक्षविधिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः।

सेकआश्चोतनंपिंडीबिडालस्तर्पणंतथा ॥
पुटपाकोऽञ्जनंचैभिःकल्कैर्नेत्रमुपाचरेत् ॥ ५६ ॥

अर्थ—सेक आश्चोतन पिंडी बिडाल तर्पण पुटपाक वा अंजन ये सात प्रकार नेत्ररोगमें कहे हैं इन्होंके कल्क कर जिस रीतीसें नेत्ररोगमें उपचार कहा है तैसे करना ॥ ५६ ॥

सेकस्तुसूक्ष्मधाराभिःसर्वस्मिन्नयनेहितः ॥
मीलिताक्षस्यमर्त्यस्यप्रदेयश्चतुरंगुलात् ॥ ५७ ॥

अर्थ—मिहीनधारा करकै सब प्रकारके नेत्ररोगमें सेक हित है मीचा हुआ है नेत्र जिसका ऐसे मनुष्यकै चार अंगुलके अंतरसे सेक करना ॥ ५७ ॥

सचापिस्नेहनोवातेरक्तेपित्तेचरोपणः ॥
लेखनश्चकफेकार्यस्तस्यमात्राधुनोच्यते ॥ ५८ ॥

अर्थ—वातरोगमें स्नेहन सेक देना रक्तपित्तके कोपमें रोपण सेक करना कफरोगमें लेखनसेक करना तिसकी मात्रा अब कहते हैं ॥ ५८ ॥

षड्वाक्शतैःस्नेहनेषुचतुर्भिश्चैवरोपणे ॥

अर्थ—स्नेहनसेक छहसौ अंककी गिनतीपर्यंत करना चारसौ अंककी गिनतीपर्यंत रोपणसेक करना ॥

वाक्शतैश्चत्रिभिःकार्यःसेकोलेखनकर्मणि ॥ ५९ ॥

अर्थ—तीनसौ अंककी गिनतीपर्यंत लेखनसेक करना ॥ ५९ ॥

कार्यस्तुदिवसेसेकोरात्रौचात्ययिकेगदे ॥

अर्थ—दिनमें सेक करना और जो रोगकी अधिकता हो तब रात्रिमें सेक करना ॥

एरंडत्वक्पत्रमूलैःशृतमाजंपयोहितम् ॥ ६० ॥
सुखोष्णंसेचनंनेत्रेवाताभिष्यंदनाशनम् ॥

अर्थ—अरंडकी छाल पत्ता जड इन्होंमें बकरीके दूधकों पकाय ॥ ६० ॥ पीछे सुखपूर्वक गरमगरम सेक नेत्रपर करनेसे वातका अभिष्यंद दूर होता है ॥

परिषेकोहितोनेत्रेपयःकोष्णंससैंधवम् ॥ ६१ ॥ रजनीदारुसिद्धंवासैंधवेनसमन्वितम् ॥ वाताभिष्यंदशमनंहितंमारुतपर्यये ॥ ६२ ॥ शुष्काक्षिपाकेचहितमिदंसेचनकंतथा ॥

अर्थ—बकरीके दूधमें सैंधानमक घाल सुखपूर्वक गरम कर नेत्रपर धारा करनी ॥ ६१ ॥ अथवा हलदी देवदार सैंधानमक इन्होंमें सिद्ध किया दूधका सेक वातके अभिष्यंदको नाश करता है वातविपर्यय ॥ ६२ ॥ वा शुष्काक्षिपाकमें हित है ॥

शाबरंमधुकंतुल्यंघृतभृष्टंसुचूर्णितम् ॥ ६३ ॥
छागक्षीरेघृतंसेकात्पित्तरक्ताभिघातजित् ॥

अर्थ—लोध मुलहटी ये बराबर भाग ले चूरण कर घृतमें भून ॥ ६३ ॥ बकरीके दूधमें घाल सेक करनेसे पित्तविकार रक्तविकार वा अभिघातजन्य विकार इन्होंका नाश होता ॥

त्रिफलालोध्रयष्टीभिःशर्कराभद्रमुस्तकैः ॥ ६४
पिष्टैःशीतांबुनासेकोरक्ताभिष्यंदनाशनः ॥

अर्थ–त्रिफला लोध मुलहटी खांड नागरमोथा ॥ ६४ ॥ इनकों शीतल पानीसे पीस सेक करनेसें रक्ताभिष्यंदका नाश होता है ॥

लाक्षामधुकमंजिष्ठालोध्रकालानुसारिवा ॥ ६५ ॥
पुंडरीकयुतःसेकोरक्ताभिष्यंदनाशनः ॥

अर्थ–लाख मुलहटी मजीठ लोध सारिवा अनंतमूल ॥ ६५ ॥ सुपेद कमल इनको पानीमें पीस कियां सेक रक्ताभिष्यंदको नाश करता है ॥

श्वेतलोध्रंघृतेभृष्टंचूर्णितंपटविस्रुतम् ॥ ६६ ॥
उष्णांबुनाविमृदितंसेकाच्छूलघ्नमंबके ॥

अर्थ–सुपेद लोधकों घृतमें भून चूरण कर कपडामांहकैं छान ॥ ६६ ॥ गरम पानींसे पीस सेक करनेसे नेत्रका शूल शांत होता है ॥

अथआश्चोतनंकार्यंनिशायांनकथंचन ॥ ६७ ॥
उन्मीलितेऽक्षिणदृङ्मध्येबिंदुभिर्द्व्यंगुलाद्धितम् ॥

अर्थ–रात्रिमें कभीभी आश्चोतन नहीं करना ॥ ६७ ॥ खुले हुये नेत्रमें दृष्टिके मध्यविषै दो अंगुलके अंतरसें बिंदु छोडना हित है ॥

बिंदवोऽष्टौलेखनेषुस्नेहनेदशबिंदवः ॥ ६८ ॥

अर्थ–लेखनकर्ममें आठ बूंद स्नेहनकर्ममें दश बूंद है ॥ ६८ ॥

रोपणेद्वादशप्रोक्तास्तेशीतेकोष्णरूपिणः ॥
उष्णेचशीतरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः ॥ ६९ ॥

अर्थ–रोपणमें बारह बूंद कहे है शीतकालमें वे बूंद कछुक गरम कर छोडने गरमकालमें शीतलरूप बूंद छोडने सब जगह यह निश्चय है ॥ ६९ ॥

वातेतिक्तंतथास्निग्धंपित्तेमधुरशीतलम् ॥
तिक्तोष्णरूक्षंचकफेक्रमादाश्चोतनंहितम् ॥ ५७० ॥

अर्थ–वातरोगमें कडुआ और चिकना ऐसा आश्चोतन देना पित्तरोगमें मधुर और शीतल ऐसा आश्चोतन देना कफरोगमें कडुवा गरम रूषा ऐसा आश्चोतन हित है ॥ ५७० ॥

आश्चोतनानांसर्वेषांमात्रास्याद्वाक्शतंहितम् ॥ निमेषोन्मेषणंपुंसामंगुल्योश्छोटिकाथवा ॥ ७१ ॥ गुर्वक्षरोच्चारणंवावाङ्मात्रेयंस्मृताबुधैः ॥

अर्थ–सबप्रकारके आश्चोतनोंकी मात्रा सोवाक्पर्यंत हित है पलक मीचकै खोलना अथवा अंगुलियोंकी चुटकी मारना ॥ ७१ ॥ अथवा गुरुअक्षरका उच्चारण करना यह वाङ्मात्रा पंडितोंने कही है ॥

बिल्वादिपंचमूलेनबृहत्येरंडशिग्रुभिः ॥ ७२ ॥
क्वाथआश्चोतनेकोष्णोवाताभिष्यंदनाशनः ॥

अर्थ–विल्वआदि पंचमूल वडी कटेली अरंड सहोंजना ॥ ७२ ॥ इनका काढा बनाय कछुक गरम कर आश्चोतनकेद्वारा वाताभिष्यंदको नाश करता है ॥

अंबुपिष्टैर्निंबपत्रैस्त्वचंलोध्रस्यलेपयेत् ॥ ७३ ॥ प्रताप्यवह्निनापिष्टात्तद्रसोनेत्रपूरणात् ॥ वातोत्थंरक्तपित्तोत्थमभिष्यंदंविनाशयेत् ॥ ७४ ॥

अर्थ–नींबके पत्तोंको पानीमें पीस लोधकी छालपर तिसका लेप कर ॥ ७३ ॥ अग्निपर तपायकै पीछे पीस तिसके रसको नेत्रमें पुरनेसे वाताभिष्यंद वा रक्तपित्ताभिष्यंदका नाश होता है ॥ ७४ ॥

त्रिफलाश्चोतनंनेत्रेसर्वाभिष्यंदनाशनम् ॥

अर्थ–त्रिफलाका काढा वना नेत्रमें आश्चोतन करना सब प्रकारके अभिष्यंदको नाश करता है ॥

स्त्रीस्तन्याश्चोतनंनेत्रेरक्तपित्तानिलार्तिजित् ॥ ७५ ॥ क्षीरसर्पिर्घृतंवापिवातरक्तरुजंजयेत् ॥ पिंडीकवलिकाप्रोक्ताबध्यतेपट्टवस्त्रकैः ॥ ७६ ॥ नेत्राभिष्यंदयोग्यासाव्रणेष्वपि निबध्यते ॥

अर्थ–स्त्रीके चूंचियोंका दूधसे किया आश्चोतन रक्तपित्त वा वायुकी पीडाकों दूर करता है ॥ ७५ ॥ अथवा दूधकी मलाई और घृत वातरक्तकी पीडाकों हरता है ओषधोंको पीस पिंडी बना नेत्रका डोलापर धर पट्ट वस्त्रसे बांधै ॥ ७६ ॥ यह नेत्राभिष्यंदमें योग्य है और घावमेंभी बांधी जाती है ॥

अभिष्यंदेऽधिमंथेचसंजातेश्लेष्मसंभवे ॥ ७७ ॥
स्निग्धस्विन्नोत्तमांगस्यशिरस्तीक्ष्णैर्विरेचयेत् ॥

अर्थ–कफसंबंधी अभिष्यंद वा अधिमंथरोगमें ॥ ७७ ॥ स्निग्ध और स्वेदित किया शिरवाला मनुष्यके शिरको तीक्ष्ण ओषधोंसे विरेचित करै ॥

अधिमंथेषुसर्वेषुललाटेवेधयेच्छिराम् ॥ ७८ ॥
अशांतेसर्वथामंथेभ्रुवोस्तूपरिदाहयेत् ॥

अर्थ–सब प्रकारके अधिमंथरोगोंमें मस्तकविषै शिराकों वींधै ॥ ७८ ॥ सब प्रकारकरकै मंथरोग शांत नहीं हो तो दोनों भृकुटियोंके ऊपर दग्ध करै ॥

अभिष्यंदेषुसर्वेषुबध्नीयात्पिंडिकांबुधः ॥ ७९ ॥
वाताभिष्यंदशांत्यर्थंस्निग्धोष्णापिंडिकाभवेत् ॥

अर्थ–सब प्रकारके अभिष्यंदमें पींडी बांधनी ॥ ७९ ॥ वाताभिष्यंदकी शांतिके अर्थ स्निग्ध और गरम पिंडी बांधनी ॥

एरंडपत्रमूलत्वङ्निर्मितावातनाशिनी ॥ ५८० ॥
पित्ताभिष्यंदनाशायधात्रीपिंडीसुखावहा ॥

अर्थ–अरंडका पत्ता जड छाल इन्होंकरकै बनाई पिंडी वाताभिष्यंदको नाश करती है ॥ ५८० ॥ आंवलाकी पिंडी बना नेत्रपर बांधै तो पित्ताभिष्यंद दूर होता है ॥

महानिंबफलोद्भूतापिंडीपित्तविनाशिनी ॥ ८१ ॥

अर्थ–बकायणका फलको पीस बनाई पिंडी पित्ताभिष्यंद दूर करनेवास्ते नेत्रके डोलापर बांधनी ॥ ८१ ॥

शिग्रुपत्रकृतापिंडीश्लेष्माभिष्यंदनाशिनी ॥

अर्थ–सहोंजनाके पत्तोंकी बनाई पिंडी नेत्रके डोलापर कफाभिष्यंद दूर करनेवास्तै बांधनी ॥

निंबपत्रकृतापिंडीश्लेष्मपित्तहराभवेत् ॥ ८२ ॥
त्रिफलापिंडिकाप्रोक्तानाशनेश्लेष्मपित्तयोः ॥

अर्थ–नींबकेपत्तोंसे करी पिंडी कफपित्तके अभिष्यंदको हरती है ॥ ८२ ॥ त्रिफलाकी पिंडी कफपित्तको नाश करती है ॥

पिष्ट्वाकांजिकतोयेनघृतभृष्टाचपिंडिका ॥ ८३ ॥
लोध्रस्यहरतिक्षिप्रमभिष्यंदमसृग्दरम् ॥

अर्थ–लोधको कांजीमें पीस घृतमें भून पिंडी बनाय ॥ ८३ ॥ नेत्रपर बांधै तो रक्ताभिष्यंद दूर होता है ॥

शुंठीनिंबदलैःपिंडीसुखोष्णास्वल्पसैंधवा ॥ ८४ ॥
धार्याचक्षुषिसंयोगाच्छोथकंडूव्यथापहा ॥

अर्थ–सूंठ वा नींबके पत्तोंको पीस अल्प गरम कर तिसमें थोडासा सेंधानमक मिला ॥ ८४ ॥ पिंडी बनाय नेत्रोंपर बांधनेसे शोजा वा खाजकी पीडा दूर होती है ॥

बिडालकोबहिर्लेपोनेत्रपक्ष्मविवर्जितः ॥ ८५ ॥
तस्यमात्रापरिज्ञेयामुखलेपविधानवत् ॥

अर्थ–नेत्रके पलकोंको वर्जित कर डोलाके सब तर्फ किया लेप बिडालक कहाता है ॥ ८५ ॥ तिसकी मात्रा मुखलेपके विधानकी तरह कही है ॥

यष्टीगैरिकसिंधूत्थदार्वीताक्ष्यैःसमांशकैः ॥ ८६ ॥
जलपिष्टैर्बहिर्लेपःसर्वनेत्रामयापहः ॥

अर्थ–मुलहटी गेरू सेंधानमक दारुहलदी कलखापरी ये सब बराबर भाग ले ॥ ८६ ॥ पानीमें पीस बाहिर किया लेप सब प्रकारके नेत्ररोगोंको नाश करता है ॥

रसांजनेनवालेपःपथ्याविश्वदलैरपि ॥ ८७ ॥ कुमारिकाग्निपत्रैर्वादाडिमीपल्लवैरपि ॥ वचाहरिद्राविश्वैर्वातथानागरगैरिकैः ॥ ८८ ॥

अर्थ–अथवा रसोतको पानीमें पीस लेप करना हरडै सूंठ तेजपात इनको पानीमें पीस लेप करना ॥ ८७ ॥ अथवा कुवारपाठा और चित्रकके पत्तोंको पीस लेप करना अथवा अनारके पत्तोंका लेप करना अथवा वच हलदी सूंठ इन्होंसे लेप करना अथवा सूंठ और गेरूका लेप करना ॥ ८८ ॥

दग्ध्वाग्नौसैंधवंलोध्रंमधूच्छिष्टयुतेघृते ॥
पिष्टमंजनलेपाभ्यांसद्योनेत्ररुजापहम् ॥ ८९ ॥

अर्थ–सेंधानमक और लोधको अग्निपर भून मोंम और घृतको एक जगह मिलाय तिसमें पूर्वोक्तको पीस संयुक्त कर अंजन वा लेपसे नेत्रके रोगको शीघ्र हरता है ॥ ८९ ॥

लोहस्यपात्रेसंघृष्टोरसोनिंबुफलोद्भवः ॥
किंचिद्घनोबहिर्लेपान्नेत्रबाधांव्यपोहति ॥ ५९० ॥

अर्थ–लोहाकेपात्रमें नींबूके रसकों घस कछुक घन होजावै तब बाहिर लेप करनेसे नेत्रकी पीड़ा दूर होती है ॥ ५९० ॥

संचूर्ण्यमरिचंकेशराजस्वरसमर्दनात् ॥
लेपनादर्मणांनाशंकरोत्येषप्रयोगराट् ॥ ९१ ॥

अर्थ–मिरचोंके चूरणको भंगराके स्वरसमें मर्दित कर लेप करनेसे यह प्रयोग-राजशुक्लार्म वा अधिमांसार्म इन आदिअर्मरोग दूर होते हैं ॥ ९१ ॥

स्विन्नांभित्वाविनिष्पीड्यभिन्नामंजननामिकाम् ॥
शिलैलानतसिंधूत्थैःसक्षौद्रैःप्रतिसारयेत् ॥ ९२ ॥

अर्थ–अंजननामिकाको स्वेदित कर फोड पीछे मनशिल इलायची तगर सें-धानमक शहत इन्होंकरकै प्रतिसारण करै ॥ ९२ ॥

अथतर्पणकंवच्मिनेत्रतृप्तिकरंपरम् ॥ यद्रूक्षंपरिशुष्कंचनेत्रं कुटिलमाविलम् ॥ ९३ ॥ शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मी-लनसंयुतम् ॥ तिमिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्यंदाधिमंथकैः ९४ शुक्राक्षिपाकशोथाभ्यांयुक्तंवातविपर्ययैः ॥ तन्नेत्रंतर्पणेयो-ज्यंनेत्रकर्मविशारदैः ॥ ९५ ॥ दुर्दिनात्युष्णशीतेषुचिंता-यासभ्रमेषुच ॥ अशांतोपद्रवेचाक्षिणतर्पणंनप्रशस्यते ॥ ९६ ॥

अर्थ–अब नेत्रकी तृप्ति करनेवाले तर्पणकों कहते है जो रूषा सब तर्फसे सूखा वांकापना डूंघापना ॥ ९३ ॥ पलकोंकेवालोंसे वर्जित शिरोत्पात कृच्छ्रोमीलन तिमिर अर्जुन फूला अभिष्यंद अधिमंथ ॥ ९४ ॥ शुक्राक्षिपाक शोजा वातविप-र्यय इनसे युक्त हुआ नेत्रतर्पणमें योग्य है ॥ ९५ ॥ मेघसे आच्छादित दिन असंत गरम वा शीतलकाल चिंता परिश्रम भ्रम और शूलआदि उपद्रवको नहीं शांत होवे ऐसे नेत्रमें तर्पण करना अच्छा नहीं ॥ ९६ ॥

वातातपरजोहीनेदेशेचोत्तानशायिनः ॥ आधारौमाषचूर्णे-नक्लिन्नेनपरिमंडलौ ॥ ९७ ॥ समौदृढावसंबाधौकर्तव्यौने-त्रकोशयोः ॥ पूरयेद्घृतमंडेनविलीनेनसुखोदकैः ॥ ९८ ॥

अथवाशतधौतेनसर्पिषाक्षीरजेनवा ॥ निमग्नान्यक्षिपक्ष्माणियावत्स्युस्तावदेवहि ॥ ९९ ॥ पूरयेन्मीलितेनेत्रेततउन्मीलयेच्छनैः ॥

अर्थ–वायु घाम धूलि इनोंसे हीनदेशमें सीधा शयन कराकै नेत्रकै चारोंतर्फ जो हड्डी है तिसपर उडदकी पीठीको वांध जैसे कटोरी होती है तैसे ॥ ९७ ॥ समान और करडे और पीडासे रहित कर तहां घृतका मंड वा सुखपूर्वक गरम पानी ॥ ९८ ॥ अथवा सौवार धोया घृत अथवा दूधसे निकासा घृत इनमेंसे एककोइंसा भरै ॥ ९९ ॥ कुछ देरमें धीरेधीरे पलक मिलवावै ॥

धारयेद्वर्त्मरोगेषुवाञ्मात्राणांशतंबुधः ॥ ६०० ॥ स्वच्छेकफे संधिरोगेमात्रापंचशतंहितम् ॥ शुक्लेचषट्शतंकृष्णारोगेसप्तशतंमतम् ॥ १ ॥ दृष्टिरोगेष्वष्टशतमधिमंथेसहस्रकम् ॥ सहस्रंवातरोगेषुधार्यमेवंहितर्पणम् ॥ २ ॥

अर्थ–जो पलक अथवा पोटके रोगपर तर्पण करना हो तो सौमात्राकालपर्यंत ओषधिकों भरकै राषै ॥ ६०० ॥ एकला कफरोग हो वा संधिरोग हो तव पांचसौ मात्राकालपर्यंत ओषधको भरकै राषै नेत्रके शुक्लभागमें रोग हो तो छहसौ मात्राकालपर्यंत ओषधिको भरकै राषै नेत्रके कृष्णभागमें रोग हो तो सातसौ मात्राकालपर्यंत ओषधको नेत्रमें भर राषै ॥ १ ॥ दृष्टिरोग हो तो आठसौ मात्राकालपर्यंत वा अधिमंथरोग हो तो एक हजारमात्राकालपर्यंत वा वातरोग हो तबभी एक हजार मात्राकालपर्यंत तर्पण धारण करना ॥ २ ॥

स्विन्नेनयवपिष्टेनस्नेहवीर्येरितंततः ॥
यथास्वंधूमपानेनकफमस्यविशोधयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ–जो स्निग्ध तर्पणसे कफ उत्पन्न हो तो जवोंकों पीस धूमपान कराकै कफको शोधित करै ॥ ३ ॥

एकाहंवात्र्यहंवापिपंचाहंचेष्यतेपरम् ॥

अर्थ–एक दिन अथवा तीन दिन अथवा पांच दिनपर्यंत तर्पणका प्रयोग करना ॥

तर्पणेतृप्तिलिंगानिनेत्रस्येमानिभावयेत् ॥ ४ ॥ सुखस्वप्ना-

वबोधत्वंवैशद्यंवर्णपाटवम् ॥ निवृत्तिर्व्याधिशांतिश्चक्रिया-
लाघवमेवच ॥ ५ ॥

अर्थ-नेत्रके तर्पणमें तृप्तिके ये लक्षण जानने ॥ ४ ॥ सुखसे नींद आवै और सुखसे जागै नेत्रके डोलोंकी कांति अच्छी हो वर्ण अच्छा हो सुख हो रोगका नाश हो क्रियाका हलकापंना हो ॥ ५ ॥

अथसाश्रुगुरुस्निग्धंनेत्रंस्यादतितर्पितम् ॥

अर्थ-तर्पण करनेसे नेत्र असंत तर्पित होवै तो नेत्रोंमें आंसू निकलै भारा और चिकने नेत्र हो जावै ॥

रूक्षमस्राविलंरुग्णंनेत्रंस्याद्धीनतर्पितम् ॥ ६ ॥

अर्थ-तर्पण करनेसे नेत्र तृप्त नहीं हों तब नेत्रोंमें तेज रहै नहीं रक्तवर्ण होकै डूंघे हो जावै वा रोगसें व्याप्त होवै ॥ ६ ॥

रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोःस्यात्प्रतिक्रिया ॥

अर्थ-तर्पणसे असृंत स्निग्ध नेत्रकी रूक्ष चिकित्सा करनी तर्पणसे हींन रहे नेत्रकी स्निग्ध चिकित्सा करनी ॥

अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिपुटपाकस्यसाधनम् ॥ ७ ॥ द्वौबिल्व-
मात्रौमांसस्यपिंडौस्निग्धौसुपेषितौ ॥ द्रव्याणांबिल्वमात्रंतु
द्रवाणांकुडवोमतः ॥ ८ ॥ तदेकस्थंसमालोड्यपत्रैःसुपरि-
वेष्टितम् ॥ पुट्पाकेनतत्पक्त्वागृह्णीयात्तद्रसंबुधः ॥ ९ ॥
तर्पणोक्तविधानेनयथावदुपचारयेत् ॥

अर्थ-इसके अनंतर पुट पाकका साधन कहते है ॥ ७ ॥ हिरणआदिके मांसकों आठ तोलेभर ले घृतआदि स्नेह पदार्थसे युक्त कर और सूखे ओषध चार तोले-भर ले दूध पानी आदि द्रवपदार्थ सोलह तोलेभर ले ॥ ८ ॥ तिन सबको मिलाकै आलोडित कर गोला बांध कार्यके अनुसार पत्तोंसे वेष्टित कर कपडमाटी चढाय पुटपाकसे पकाय पीछे गोला निकास रस निचोड ॥ ९ ॥ नेत्रपर मेखला बांध रस भरै ॥

दृष्टिमध्येनिषेच्यःस्यान्नित्यमुत्तानशायिनः ॥ १० ॥
स्नेहनोलेखनश्चैवरोपणश्चेतिसत्रिधा ॥

अर्थ–मनुष्यको सीधा शयन कराकै नेत्रके मध्यभागमें निस घालना ॥६१०॥ पुटपाकसंबंधी रस स्नेहन लेखन वा रोपण इनभेदोंसे तीन प्रकारका कहा है ॥

हितःस्निग्धोतिरूक्षस्यस्निग्धस्यापिहिलेखनः ॥ ११ ॥
दृष्टेर्बलार्थमितरःपित्तासृग्व्रणवातनुत् ॥

अर्थ–रूक्षनेत्रमें स्निग्ध पुटपाक करना स्निग्धनेत्रमें लेखनपुटपाक देना॥११॥ दृष्टिका बलके अर्थ रोपण पुटपाक करना वह पुटपाक नेत्रसंबंधी पित्त रक्त व्रण वा वायु इनको दूर करनेंके अर्थ वेगवेग युक्त करना ॥

सर्पिर्मांसवसामज्जामेदःस्वाद्वौषधैःकृतः ॥ १२ ॥
स्नेहनःपुटपाकस्तुधार्योद्वेवाकूशतेदृशोः ॥

अर्थ–घृत हिरणआदिका मांस वसा मज्जा वा मेद और स्वादु ओषध काकोलीआदिका चूरण इन सबको मिला एक गोला बनाय ॥ १२ ॥ पुटपाककी विधि करनी यह स्नेहन पुटपाक दोसौ मात्रा कालपर्यंत नेत्रोंमें धारण करना ॥

जांगलानांयकृन्मांसैर्लेखनद्रव्यसंयुतैः ॥ १३ ॥ कृष्णलोहरजस्ताम्रशंखविद्रुमसिंधुजैः ॥ समुद्रफेनकासीसस्रोतोजादधिमस्तुभिः ॥ १४ ॥ लेखनोवाकूशतंधार्यस्तस्यतावद्विधारणम् ॥

अर्थ–हिरणआदिके कालजाका मांस लेखनओषध ॥ १३ ॥ अर्थात् लोहका चूरण तांवाका चूरण शंख मूंगा सेंधानमक समुद्रझाग हीराकसीस सुरमा इनकों बकरीकी दहीका पानीसे पीस गोला बनावना पुटपाककी विधिसे पकाना॥१४॥ यह लेखनकर्म सौमात्राका कालपर्यंत धारण करना ॥

स्तन्यजांगलमध्वाज्यतिक्तकद्रव्यपाचितः ॥ १५ ॥ लेखनात्त्रिगुणोधार्यःपुटपाकस्तुरोपणः ॥ वितरेत्तर्पणोक्तांतु क्रियांव्यापत्तिदर्शने ॥ १६ ॥

अर्थ–स्त्रीकी चूंचियोंका दूध हिरण आदिका मांस शहत घृत कुटकी इन सबको मिला गोला बना पुटपाककी तरह पकावै ॥ १५ ॥ यह रोपण पुटपाक लेखन पुटपाकसे तीनगुणा धारण करना और व्यापत्ति दीखै तो तर्पणमें कही क्रिया करनी ॥ १६ ॥

अथसंपक्कदोषस्यप्राप्तमंजनमाचरेत् ॥ हेमंतेशिशिरेचैवम-
ध्याह्नेऽजनमिष्यते ॥ १७ ॥ पूर्वाह्नेचापराह्नेचग्रीष्मेशरदि
चेष्यते ॥ वर्षासुनाभ्रेनात्युष्णेवसंतेचसदैवहि ॥ १८ ॥

अर्थ–अच्छी तरह पका है दोष जिसकै ऐसे मनुष्यकै नेत्रोंमें अंजन घालना हेमंतऋतु वा शिशिरऋतुमें मध्याह्नकालविषै अंजन घालना ॥ १७ ॥ ग्रीष्म वा शरदऋतुमें पूर्वाह्न वा अपराह्न विषै अंजन घालना वर्षाऋतुमें जब बादल नहीं हो और अत्यंत गरमी नहीं हो तब अंजन घालना वसंतऋतुमें सबकाल विषै अंजन घालना ॥ १८ ॥

लेखनंरोपणंचैवतथातत्स्नेहनांजनम् ॥ लेखनंक्षारतीक्ष्णा-
म्लरसैरंजनमिष्यते ॥ १९ ॥ कषायतिक्तरसयुक्सस्नेहंरो-
पणंमतम् ॥ मधुरस्नेहसंपन्नमंजनंचप्रसादनम् ॥ ६२० ॥

अर्थ–लेखन रोपण वा स्नेहन इन भेदोंकरकै अंजन तीनप्रकारका है ॥१९॥ तिन्होंमें खारा तीक्ष्ण खट्टा हे रस जिस अंजनमें हो वह लेखनांजन होता है कसैला कडुआ रस और स्नेहसहित हो वह रोपणांजन होता है मधुर रससे और स्नेहसे युत हो वह स्नेहनांजन होता है ॥ ६२० ॥

गुटिकारसचूर्णानित्रिविधान्यंजनानिच ॥
कुर्याच्छलाकयांगुल्याहीनानिचयथोत्तरम् ॥ २१ ॥

अर्थ–गोली रस वा चूरण ऐसे अंजन तीन प्रकारका है गोलीसे कम रस और रससे कम चूरण ऐसे उत्तरउत्तर क्रमसे हीन है शलाईकरकै अथवा अंगुलीकरकै अंजन घालना ॥ २१ ॥

श्रांतेप्ररुदितेभीतेपीतमद्येनवज्वरे ॥
अजीर्णेवेगघातेचनांजनंसंप्रचक्षते ॥ २२ ॥

अर्थ–परिश्रम कियें रोदन किये भयभीत हुये मदिराकों पीये नयाज्वरवाला अजीर्णरोग मूत्रआदिवेगका घात इनमें अंजन अच्छा नहीं है ॥ २२ ॥

हरेणुमात्रांकुर्वीतवर्तितीक्ष्णांजनेभिषक् ॥
प्रमाणंमध्यमेध्यर्धाद्विगुणंतुमृदौभवेत् ॥ २३ ॥

अर्थ–तीक्ष्ण अंजनमें रेणुका अर्थात् मेवडीका बीजके प्रमाण अंजनकी बत्ती

बनानी मध्यम अंजनमें इस्से आधी बत्ती बनानी मृदुअंजनमें रेणुकाके बीजसें दुगुनी बत्ती बनानी ॥ २३ ॥

रसक्रियातूत्तमास्यात्रिविडंगमिताहिता ॥
मध्यमाद्विविडंगास्याद्धीनात्वेकविडंगका ॥ २४ ॥

अर्थ-रसक्रिया अर्थात् द्रवरूपी अंजन तिसकी उत्तम मात्रा तीन वायविडंगके प्रमाण है मध्यममात्रा दो वायविडंगके प्रमाण है हीनमात्रा एक वायविडंगके प्रमाण है ॥ २४ ॥

वैरेचनिकचूर्णंतुद्विशलाकंविधीयते ॥
मृदौतुत्रिशलाकंस्याच्चतस्रःस्नेहिकेंऽजने ॥ २५ ॥

अर्थ-वैरेचनिक चूर्णरूपी अंजन दो शलाईभर घालना मृदुअंजन तीन शलाईभर घालना स्नेहिकअंजन चार शलाईभर घालना ॥ २५ ॥

मुखयोःकुंठिताश्लक्ष्णाशलाकाष्टांगुलोन्मिता ॥
अश्मजाधातुजायास्यात्कलायपरिमंडला ॥ २६ ॥

अर्थ-पत्थरकी अथवा सोना आदि धातुकी शलाई आठ अंगुल प्रमाण कर तिसके मुखकों गोलदार बनाय मटरका दानाके समान परिमंडलवाली बनानी २६

ताम्रलोहाश्मसंजाताशलाकालेखनेमता ॥ सुवर्णरजतोद्भूताशलाकास्नेहनेमता ॥ २७ ॥ अंगुलीचमृदुत्वेनकथितारोपणेबुधैः ॥

अर्थ-लेखन अंजनमें तांबाकी वा लोहाकी वा पत्थरकी शलाई बनानी स्नेहन अंजनमें सोना वा चांदीकी शलाई बनानी ॥ २७ ॥ रोपण अंजनमें कोमलताकरकै अंगुलीसें कार्य करना ॥

सायंप्रातश्चांजनंस्यात्तत्सदानैवकारयेत् ॥ २८ ॥ नातिशीतोष्णवाताभ्रवेलायांसंप्रशस्यते ॥ कृष्णभागादधःकुर्यादपांगंयावदंजनम् ॥ २९ ॥

अर्थ-सायंकालमें वा प्रातःकालमें अंजन घालना और वह सब कालमें नहीं घालना ॥ २८ ॥ अत्यंत शीतलकाल अत्यंत गरमकाल वायु वा बादलसे युक्त हुआ काल इन्होंमें अंजन आंजना उत्तम नहीं है नेत्रके कृष्णभागसें नीचै कटाक्षपर्यंत अंजन आंजना ॥ २९ ॥

शंखनाभिर्बिभीतस्यमज्जापथ्यामनःशिला ॥ पिप्पलीमरिचंकुष्ठंवचाचेतिसमांशकम् ॥ ६३० ॥ छागीक्षीरेणसंपिष्य-वर्तिंकुर्याद्यवोन्मिताम् ॥ हरेणुमात्रांसंघृष्यजलैःकुर्यादथां-जनम् ॥ ३१ ॥ तिमिरंमांसवृद्धिंचकाचंपटलमर्बुदम् ॥ रात्र्यंधंवार्षिकंपुष्पंवर्तिश्चंद्रोदयाजयेत् ॥ ३२ ॥

अर्थ–शंखकी नाभि बहेडाकी गिरी हरडै मनशिल पीपल मिरच कूठ वच ये सब बराबर भाग लेकै ॥ ६३० ॥ बकरीके दूधमें पीस जवके प्रमाण बत्ती बनाकै रेणुकाकाबीजके प्रमाण पानीमें घिस पीछे अंजन करै ॥ ३१ ॥ यह चंद्रोदयावर्ति तिमिर मांसवृद्धि काचबिंदु पटलगतरोग अर्बुद रातोंधा एकवर्षका फूला इनको नाश करती है ॥ ३२ ॥

पलाशपुष्पस्वरसैर्बहुशःपरिभाविता ॥
करंजबीजवर्तिस्तुशुक्रादीन्शस्त्रवल्लिखेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ–करंजुवाके बीजोंके चूरणको बहुतवार पलाशके फूलोंका स्वरसमें भा-वना देकै कीनी वर्ति फूला आदिकों शस्त्रकी तरह दूर करती है ॥ ३३ ॥

समुद्रफेनसिंधूत्थशंखदक्षांडवल्कलैः ॥
शिग्रुबीजयुतैर्वर्तिःशुक्रादीञ्शस्त्रवल्लिखेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ–समुद्रझाग सैंधानमक शंख मुरगाके अंडाका छिलका सहोंजनाके बीज इन्होंकी बत्ती फूला आदिको शस्त्रकी तरह दूर करती है ॥ ३४ ॥

दंतैर्दंतिवराहोष्ट्रगोहयाजखरोद्भवैः ॥ शंखमुक्तांभोधिफेन-युतैःसर्वैर्विचूर्णितैः ॥ ३५ ॥ दंतवर्तिःकृताश्लक्ष्णाशुक्रा-णांनाशिनीपरा ॥

अर्थ–हस्ती शूर ऊंट गौ घोडा बकरा गधा इन्होंके दांत शंख मोती समुद्रझाग इन सबके चूरण करै ॥ ३५ ॥ बत्ती बनावै यह दंतवर्ति फूलोंको अच्छी तरह नाश करती है ॥

नीलोत्पलंशिग्रुबीजंनागकेशरकंतथा ॥ ३६ ॥
एतत्कल्कैःकृतावर्तिरतितंद्रांविनाशयेत् ॥

अर्थ–नीलाकमल सहोंजनाके बीज नागकेशर ॥ ३६ ॥ इन्होंका कल्क बनाकै करी वत्ति अति तंद्राको नाश करती है ॥

तिलपुष्पाण्यशीतिःस्युःषष्टिसंख्याःकणाकणाः ॥ ३७ ॥ जातीकुसुमपंचाशन्मरिचानिचषोडश ॥ सूक्ष्मंपिष्ट्वाजलेवर्तिःकृताकुसुमिकाभिधा ॥ ३८ ॥ तिमिरार्जुनशुक्राणांनाशिनीमांसवृद्धिहृत् ॥ एतस्याश्चांजनेमात्राप्रोक्तासार्धहरेणुका ॥ ३९ ॥

अर्थ–तिलोंके फूल अश्शी पीपलके दाने साठ ॥ ३७ ॥ चमेलीके फूल पंचास मिरच सोलह इनकों मिहीन पीस पानीमें बत्ती करै यह कुसुमिकावर्ति ॥ ३८ ॥ तिमिर अर्जुन फूला मांसवृद्धि इनको दूर करती है ईसका अंजनमें रेणुकाके डेढबीजके प्रमाण मात्रा है ॥ ३९ ॥

रसांजनंहरिद्रेद्वेमालतीनिंबपल्लवाः ॥
गोशकृद्रससंयुक्तावर्तिर्नक्तांध्यनाशिनी ॥ ६४० ॥

अर्थ–रसोत हलदी दारुहलदी चमेलीके पत्ते नींबके पत्ते इनको गौके गोवरका रसमें पीस वत्ती बनावै यह रातोंधाको दूर करती है ॥ ६४० ॥

धात्र्याक्षपथ्याबीजानिएकद्वित्रिगुणानिच ॥ पिष्ट्वावर्त्तिजलैःकुर्यादंजनंद्विहरेणुकम् ॥ ४१ ॥ नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजंतथा ॥

अर्थ–आंवलाके बीज एक भाग वहेडाके बीज दो भाग हरडैके बीज तीन भाग इनको पानीमें पीस वत्ती बनाय रेणुकाका दो बीजाकेसमान पानीमें घिस अंजनेसे ॥ ४१ ॥ नेत्रस्रावकों वा वातरक्तकों शीघ्र नाश करती है ॥

तुत्थमाक्षिकसिंधूत्थसिताशंखमनःशिलाः ॥ ४२ ॥ गैरिकोदधिफेनौचमरिचंचेतिचूर्णयेत् ॥ संयोज्यमधुनाकुर्यादंजनार्थंरसक्रियाम् ॥ ४३ ॥ वर्त्मरोगार्मतिमिरकाचशुक्रहरांपराम् ॥

अर्थ–नीलाथोथा सोनामाखी सेंधानमक मिश्री शंख मनशिल ॥ ४२ ॥ गेरू

समुद्रझाग मिरच इनका चूरण कर शहतमें मिला अंजनके अर्थ रसक्रियाकों करै ॥४३॥ यह वर्त्मरोग अर्मरोग तिमिररोग काच फूला इन सबको नाश करती है ॥

वटक्षीरेणसंयुक्तोमुख्यःकर्पूररजःकणः ॥ ४४ ॥
क्षिप्रमंजनतोहंतिकुसुमंचद्विमासिकम् ॥

अर्थ—वडके दूधमें सुंदर कपूरकों पीस ॥ ४४ ॥ अंजन करनेसें शीघ्र दो महीनोंका फूला दूर होता है ॥

क्षौद्राश्वलालासंघृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमंजयेत् ॥ ४५ ॥
अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योदयेयथा ॥

अर्थ—शहत और घोडाकी लालमें मिरचोंकों पीस नेत्रमें अंजनेसे ॥ ४५ ॥ अत्यंत निंद नष्ट होती है जैसे सूर्यके उदयमें अंधेरा ॥

जातीपुष्पंप्रवालंचमरिचंकटुकीवचा ॥ ४६ ॥
सैंधवंबस्तमूत्रेणपिष्टंतंद्राघ्नमंजनम् ॥

अर्थ—चमेलीका फूल चमेलीके अंकुर मिरच कुटकी वच ॥ ४६ ॥ सैंधानमक इनकों बकराके मूत्रसे पीस किया अंजन तंद्राको नाश करता है ॥

शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैंधवैः ॥ ४७ ॥
अंजनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिलावचैः ॥

अर्थ—शिरसके बीज गोमूत्र पीपल मिरच सैंधानमक ॥ ४७ ॥ ल्हसन मनशिल वच इन्होंका अंजन सन्निपातमें मूर्च्छाकों दूर करता है ॥

दार्वीपटोलंमधुकंसनिंबपद्मकोत्पलम् ॥ ४८ ॥ सपौंडरीकंचैतानिपचेत्तोयेचतुर्गुणे ॥ विपाच्यपादशेषंतुश्रृतंनीत्वापुनःपचेत् ॥ ४९ ॥ शीतेतस्मिन्मधुसितांदद्यात्पादांशकांनरः ॥ रसक्रियैषादाहाश्रुरक्तरोगरुजोहरेत् ॥ ६५० ॥

अर्थ—दारुहलदी पटोल मुलहटी नींब पद्माक कमल ॥ ४८ ॥ सुपेदकमल इनकों चौगुना पानीमें पकावै जब चौथाई भाग शेष रहै तब ग्रहण कर फिर पकावै ॥ ४९ ॥ शीतल होनेपर शहत और मिश्रीको चौथाई भाग मिलाकै देवै यह रसक्रिया दाह स्राव रक्तविकारसे नेत्रकी लाली इनकों नाश करता है ६५०

रसांजनंसर्जरसोजातीपुष्पंमनःशिला ॥ समुद्रफेनोलवणं

गैरिकंमरिचानिच ॥ ५१ ॥ एतत्समांशंमधुनापिष्ट्वाप्रक्लिन्न-
वर्त्मनि ॥ अंजनंक्लेदकंडूघ्नंपक्ष्मणांचप्ररोहणम् ॥ ५२ ॥

अर्थ–रसोत राल चमेलीका फूल मनशिल समुद्रझाग सेंधानमक गेरू मिरच ॥ ५१ ॥ ये सब बराबर भाग ले शहतसें पीस प्रक्लिन्नवर्त्मरोगमें किया अंजन क्लेद और खाजको नाश करता है और पलकोंकों उपजाता है ॥ ५२ ॥

गुडूचीस्वरसःकर्षःक्षौद्रंस्यान्माषकोन्मितम् ॥ सैंधवंक्षौद्र-
तुल्यंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् ॥ ५३ ॥ अंजयेन्नयनंतेनपिल्ला-
र्मतिमिरंजयेत् ॥ काचंकंडूंलिंगनाशंशुक्लकृष्णगतान्गदान् ५४

अर्थ–गिलोयका स्वरस एक तोला शहत एक मासा सेंधानमक एक मासा इन सबको मिलाके मर्दित करै ॥ ५३ ॥ पीछै नेत्रमें अंजन करनेसे पिल्लार्म तिमिर काचबिंदु खाज लिंगनाश नेत्रके शुक्लभागगतरोग नेत्रके कृष्णभागगतरोग इन सबका नाश होता है ॥ ५४ ॥

दुग्धेनकंडूंक्षौद्रेणनेत्रस्रावंचसर्पिषा ॥ पुष्पंतैलेनतिमिरंकां-
जिकेननिशांधताम् ॥ ५५ ॥ पुनर्नवाजयेदाशुभास्करस्ति-
मिरंयथा ॥

अर्थ–दूधकेसंग खाजकों शहतकेसंग नेत्रस्रावको घृतकेसंग फूलाको तेलकेसंग तिमिरको कांजीकेसंग रातौंधाको ॥ ५५ ॥ साठी शीघ्र जीतती है जैसें सूर्य अंधेराकों ॥

बब्बूलदलनिःक्काथोलेहीभूतस्तदंजनात् ॥ ५६ ॥
नेत्रस्रावंजयत्येषमधुयुक्तोनसंशयः ॥

अर्थ–बंबूलके पत्तोंका काढाको घनरूप कर तिसकों शहतमें मिला अंजन करनेसे ॥ ५६ ॥ नेत्रस्रावका नाश होता है इसमें संशय नहीं ॥

हिज्जलस्यफलंघृष्ट्वापानीयेनित्यमंजनम् ॥ ५७ ॥
चक्षुःस्रावोपशांत्यर्थंकार्यमेतन्महौषधम् ॥

अर्थ–हिंगणवेटकों पानीमें पीस नित्यप्रति अंजन करनेसे ॥ ५७ ॥ नेत्रस्रावकी शांति होती है ॥

कतकस्यफलंघृष्ट्वामधुनानेत्रमंजयेत् ॥ ५८ ॥
ईषत्कर्पूरसहितंस्मृतंनेत्रप्रसादनम् ॥

अर्थ-निर्मलीके फलकों शहतमें घिस नेत्रविषैं आंजै ॥ ५८ ॥ और आंजनेके समय कछुक कपूर मिला आंजै तो नेत्र प्रसन्न होता है ॥

सर्पिःक्षौद्रंचांजनंस्याच्छिरोत्पातस्यशांतये ॥ ५९ ॥

अर्थ-घृत और शहत मिलाकै अंजन करना शिरोत्पातकों शांत करता है ५९

कृष्णसर्पवसाशंखःकतकाफलमंजनम् ॥
रसक्रियेयमचिरादंधानांदर्शनप्रदा ॥ ६६० ॥

अर्थ-कालासर्पके मांसका स्नेह शंख निर्मलीके बीज इनकों मिलाकै खरल कर अंजन करै यह रसक्रिया आंधे मनुष्योंकों शीघ्र दृष्टि देती है ॥ ६६० ॥

दक्षांडत्वक्शिलाकाचैःशंखचंदनगैरिकैः ॥
द्रव्यैरंजनयोगोऽयंपुष्पार्मादिविलेखनः ॥ ६१ ॥

अर्थ-मुर्गाके अंडाका छिलका मनशिल सुपेदकाच शंख सुपेदचंदन गेरू इनकों पीस अंजन करनेसे फूला और मांसार्म आदि रोगका नाश होता है ॥६१॥

कणाच्छागयकृन्मध्येपक्त्वातद्रसपेषिता ॥
अचिराद्धंतिनक्तांध्यंतद्वत्सक्षौद्रमूषणम् ॥ ६२ ॥

अर्थ-बकराका कालजाके मध्यमें पीपलको पका और तिसके रससे पीस शहत और मिरचोंका चूरण मिला अंजन करनेसें रातौंधाका शीघ्र नाश होता है ॥ ६२ ॥

शाणार्धंमरिचंद्वौचपिप्पल्यर्णवफेनयोः ॥ शाणार्धंसैंधवंशाणानवसौवीरकांजनात् ॥ ६३ ॥ पिष्टंसुसूक्ष्मंचित्रायांचूर्णांजनमिदंशुभम् ॥ कंडूकाचकफार्तानांमलानांचविशोधनम् ॥ ६४ ॥

अर्थ-मिरच दो मासे पीपल और समुद्रझाग आठआठ मासे सेंधानमक दो मासे सुरमा नव मासे ॥ ६३॥ इनकों चित्रानक्षत्रमें पीस अंजन बनावै यहसे खाज काचरोग दूर होते है कफसे पीडित नेत्रवालोंके मलकी शुद्धि होती है ॥ ६४ ॥

शिलायांरसकंपिष्ट्वासम्यगाप्लाव्यवारिणा ॥ गृह्णीयात्तज्जलं सर्वंत्यजेच्चूर्णमधोगतम् ॥ ६५ ॥ शुष्कंचतज्जलंसर्वंपर्पटीसन्निभंभवेत् ॥ विचूर्ण्यभावयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः

॥ ६६ ॥ कर्पूरस्यरजस्तत्रदशमांशेननिक्षिपेत् ॥ अंजयेन्नयनेतेनसर्वदोषहरंहितत् ॥ ६७ ॥ सर्वरोगहरंचूर्णंचक्षुषोः सुखकारिच ॥

अर्थ—खपरियाकों खरलमें घाल पानीसे अच्छी तरह पीस संपूर्ण जलको ग्रहण करै और नीचै प्राप्त हुआ चूरणको त्यागै ॥ ६५ ॥ जब सूखकै वह जल पालासरीखा हो जावै तब चूरण कर तीनवार त्रिफलाके रसमें भावना देवै ॥ ६६ ॥ तिसमें कपूरका चूरण दशमां हिस्सा मिलाकै नेत्रमें आंजै तिसकरकै सब दोषोंका नाश होता है ॥ ६७ ॥ यह चूरणरूपी अंजन सब दोषोंको हरता है और नेत्रोंमें सुख करता है ॥

अग्नितप्तंचसौवीरंनिषिंचेत्रिफलारसैः ॥ ६८ ॥ सप्तवेलंतथास्तन्यैःस्त्रीणांसिक्तंविचूर्णितम् ॥ अंजयेन्नयनेतेनप्रत्यहं चक्षुषोर्हितम् ॥६९॥ सर्वानक्षिविकारांस्तुहन्यादेतन्नसंशयः ॥

अर्थ—अग्निमें तपाया हुआ सुरमाकों त्रिफलाके रसमें ॥ ६८ ॥ सातवारसे चित करै पीछे स्त्रीके दूधसें सींच चूर्ण कर निसप्रति नेत्रोंमें आंजै यह नेत्रोंमें हित करता है ॥ ६९ ॥ सबप्रकारके नेत्रविकारोंकों नाश करता है संशय नहीं॥

त्रिफलाभृंगशुंठीनांरसैस्तद्वच्चसर्पिषा ॥ ६७० ॥ गोमूत्रमध्वजाक्षीरैःसिक्तोनागःप्रतापितः ॥ तच्छलाकाहरत्येवसर्वान्नेत्रभवान्गदान् ॥ ७१ ॥

अर्थ—त्रिफला भंगरा सूंठ इन्होंका रसोंमें और तैसेही घृतमें ॥ ६७० ॥ और गोमूत्र मध बकरीका दूध इन्होंमांहसे एकएकमेंसे चित किया तपाया सीसाकी शलाई बनाकै नेत्रमें फेरनेसे सब प्रकारके नेत्ररोग दूर होते हैं ॥ ७१ ॥

गतदोषमपेताश्रुसंपश्यन्सम्यगंभसि ॥
प्रक्षाल्याक्षियथादोषंकार्यंप्रत्यंजनंततः ॥ ७२ ॥

अर्थ—तिस शीशाकी शलाईसे अंजन कर दोषकों दूर कर नेत्रोंमांहसे आंशु गिरनेके पीछे क्षणभर शीतलपानीमें अवलोकन करनेके अनंतर नेत्रको पानीसे धोकै फिर नेत्रमें प्रसंजन करना ॥ ७२ ॥

नवानिर्गतदोषेक्ष्णिधावनंसंप्रयोजयेत् ॥
प्रत्यंजनंतीक्ष्णतप्तेनेत्रेचूर्णःप्रसादनः ॥ ७३ ॥

अर्थ-जिस नेत्रमें दोष बाकी रहै तिस नेत्रको धुवावै नहीं तीक्ष्ण अंजनसें तप्त हुये नेत्रमें प्रत्यंजन वा प्रसादन चूरण करावै ॥ ७३ ॥

शुद्धेनागेद्रुतेतुल्यंशुद्धंसूतंविनिक्षिपेत् ॥ कृष्णांजनंतयोस्तुल्यंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥ ७४ ॥ दशमांशेनकर्पूरंतस्मिंश्चूर्णे प्रदापयेत् ॥ एतत्प्रत्यंजनंनेत्रगदजिन्नयनामृतम् ॥ ७५ ॥

अर्थ-शुद्ध किया शीसाकों गुलाय कर तिसमें शुद्ध पारा बराबर भाग मिलावै तिन दोनोंके बराबर सुरमा मिला कपूर चूरण ॥७४॥ दशमां हिस्सा मिलावै यह प्रत्यंजन नेत्रके रोगोंको जीतता है और नेत्रोंमें अमृतसरीखा है ॥ ७५ ॥

जयपालस्यमज्जांचभावयेन्निंबुकद्रवैः ॥ एकविंशतिवेलंतत्तोवर्तिंप्रकल्पयेत् ॥ ७६॥ मनुष्यलालयाघृष्ट्वाततोनेत्रेतयांजयेत् ॥ सर्पदष्टविषंजित्वासंजीवयतिमानवम् ॥ ७७ ॥

अर्थ-जमालगोटाकी गिरीकों नींबूके रसमें इक्कीसवार भावना देकै पीछे वत्ती बनावै ॥ ७६ ॥ तिसकों मनुष्यकी लालमें घिसकै नेत्रमें आंजै सर्पके विषको जीतकर मनुष्यको यह वत्ती जिवाती है ॥ ७७ ॥

भुक्त्वापाणितलंघृष्ट्वाचक्षुषोर्यदिदीयते ॥
जातारोगाविनश्यंतितिमिराणितथैवच ॥ ७८ ॥

अर्थ-भोजन करनेके पीछे हाथोंके तलुओंको घिसकर जो नेत्रोंविषै देवै तो उपजे रोग और तिमिररोग नष्ट होते हैं ॥ ७८ ॥

शीतांबुपूरितमुखःप्रतिवासरंयःकालत्रयेणनयनद्वितयंजलेन ॥ आसिंचतिध्रुवमसौनकदाचिदक्षिरोगव्यथाविधुरतां भजतेमनुष्यः ॥ ७९ ॥

अर्थ-प्रतिदिन दिनमें तीनवार शीतल पानीसे मुखमें कुरले करता है और मुखको धोवता है और नेत्रोंको सींचता है वह कभीभी नेत्ररोगको प्राप्त नहीं होता ॥ ७९ ॥

आयुर्वेदसमुद्रस्यगूढार्थमणिसंचयम् ॥ ज्ञात्वाकैश्चिद्बुधैस्तैस्तुकृताविविधसंहिताः ॥ ६८० ॥ किंचिदर्थंततोनीत्वाकृतेयंसंहितामया ॥ कृपाकटाक्षविक्षेपमस्यांकुर्वंतुसाधवः ॥८१॥

अर्थ–समुद्रके समान आयुर्वेदसंबंधी जो मणिसदृश गूढार्थ तिसके समुदायकों अच्छी तरह जान कितनेंक मुनियोंने अनेक प्रकारकी संहिता करी है ॥ ६८० ॥ तिन्होंमांहसे किसीक सार प्रयोजनकों ग्रहण कर मैंनें यह शार्ङ्गधरसंहिता करी है इसकों साधुजन कृपासें अवलोकन करो ॥ ८१ ॥

विविधगदार्तिदरिद्रनाशनंयाहरिरमणीवकरोतियोगरत्नैः॥
विलसतुशार्ङ्गधरसंहितासाकविहृदयेषुसरोजनिर्मलेषु ॥ ८२ ॥

अर्थ–योग अर्थात् काढा चूरण आदि रूप रत्नों करकै अनेक प्रकारके ज्वर आदि जो रोग तिन्होंका संबंधी पीडारूपी जो दरिद्र तिसकों दूर करनेके अर्थ यह शार्ङ्गधरसंहिता विद्वानोंके कमलसरीखे हृदयमें शोभाकों प्राप्त हो जैसे लक्ष्मी अनेकप्रकारके रत्नोंकर अपने आश्रितोंके दरिद्रकों दूर कर शोभाकों प्राप्त होती है ॥ ८२ ॥

अल्पायुषामल्पधियामिदानींकृतंसमस्तश्रुतिपाठशक्ति ॥
तदत्रयुक्तंप्रतिबीजमात्रमभ्यस्यतामात्महितंप्रयत्नात् ॥ ६८३ ॥

इति श्रीमद्विद्वच्छिरोमणिशार्ङ्गधरेण विरचिता शार्ङ्गधरसंहिता समाप्ता ।

अर्थ–इस कलियुगमें विशेषकरकै मनुष्य अल्पआयुवाले वा अल्पबुद्धिवाले ऐसे होते हैं इस कारण संपूर्ण आयुर्वेदको पठन करनेमें समर्थ नहीं होते इसिसें इसयुगमें अपना हितके अर्थ योग्य और सारांशरूपी यह संहिता जतनसें अभ्यास करना ॥ ६८३ ॥

षट्चतुर्नवभूम्यब्दे १९४६ मासेभाद्रेतथासिते ।
रविदत्तकृताटीकादीपिकेयंसमाप्तिगा ॥ १ ॥

इति श्रीवेरीनिवासिबुधशिवसहायसूनुवैद्यरविदत्तशास्त्रिविरचितशार्ङ्गधरसंहितार्थदीपिकायां तृतीयखंडे नेत्रचिकित्साविधिर्नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥